

2-1.99.09

U-38



ԲԱՆԴԱՅԻՆ ՄԵՏԵՆԵԿԱՐԱՐԱՆ

ՄԱՅԻՆ

ԽՐԱՏԵՆԵԿԱՐԱՐԱՆ

ՀԵՏԱԶՕՏՈՒԹԻՒՆՆԵՐ

ՀԱՆՏԻԹՈՒՆ ԵՎ ԲՆԵԿՈՒՄ

ՀԱՅԿԱՍՏԱՆԻ

Ք. ԲԱՆԴԱՅԻՆ ՄԵՏԵՆԵԿԱՐԱՐԱՆ — Ք. ԲԱՆԴԱՅԻՆ ՄԵՏԵՆԵԿԱՐԱՐԱՆ
 ԵՎ ԲԱՆԴԱՅԻՆ ՄԵՏԵՆԵԿԱՐԱՐԱՆ — ՄԱՅԻՆ ԽՐԱՏԵՆԵԿԱՐԱՐԱՆ ԵՎ
 ԲԱՆԴԱՅԻՆ ՄԵՏԵՆԵԿԱՐԱՐԱՆ

ԿՐԻՍՏ

Հ. ՆԵՐՍԵՍ Կ. ԲԱՆԴԱՅԻՆ

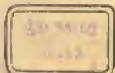
ԿՐԻՍՏ ԿՐԻՍՏԱՆ



ՎԻՃԵՆՆԵՐ

ԿՐԻՍՏԱՆԻ ԿՐԻՍՏԱՆ ԵՎ ԲԱՆԴԱՅԻՆ

1900



ԱՐԴԱՐԱՆԻ ՄԱՍԻՆԵՐԵՐԸ

ՀԱՅԱՐ ԺԻՒ

NATIONALBIBLIOTHEK

BAND CXXVII

UNTERSUCHUNGEN ZUR GESCHICHTE DER ARMENISCHEN LITERATUR

BAND III

LEONTIUS DER PRIESTER — LEONTIUS DER PRIESTER
UND MIKEL KIRORENTZI. — STAMMBAUM DER ARME-
NISCHEN RAQBATIDEN

VON

P. NERSES AKINIAN

MITGLIED DER MECHITHARISTEN-KONGREGATION



WIEN

MECHITHARISTEN-BUCHDRUCKEREI

1930



И. П. С. 64. 4. 1. 1. 1. 1.

ՀԵՏԱԶՕՏՈՒԹԻՒՆՆԵՐ

[illegible]

之 此 所 謂 牛

10. 3. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839.

● 2014 年 10 月 1 日

4. 76710101 4. 64767676

此物乃神藥，凡患此症者，服之立愈。



4 1 5 2 2

19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1

1450

- 5 FEB 2013



10154-71

ԻՆԻՍԻՏԱՆՍ

«Զեռագետութիւններս կայող են զիս շափարանցութեամբ մէջ ալ զառովիմեւ» :
 Այս երկիւղալի պատճառով էի, երբ կը ձեռնարկէի յայտնագործել Ղեւոնդ երեցի կեանքի հետեւերը : Ը - եւ Թ - դարերու միջոցառման աշխարհէն կ'ընթանար ժամանակներս, առաջարկներ, կիրճեր, զանաւանդներ : Փոքրիկ անպատշաճութիւն մը կարող էր դարանուս մնալ զիս շափարանցութեանց ամբարանը, կամ համեմատեալ ժամանակի վայրեր : Գալիսիոյ զոյցը ժամանակաշրջանը, շրջանադիտութեամբ, ուշադիր միշտ կ'ընկալուէին, զոս անէլի ձեռքիս, յատած աշխարհս առաւորեալս տեսողին, որ կը փայլէր յմղաղօտ :

Հոն ուր կ'որոնցուցի Ղեւոնդի հետեւերը, պատահեցաւ ձերտելի Լաւրէնտի : Անոր ձայնը ծանօթ երեւցաւ ինձ, դիմագծերը կը յիշեցնէին ինձ Ղեւոնդը : Աւելի մանր պնտութիւն մը եւսագեղ զիս, քէ տուցաւ իմ վաղեմի յարեկամն է, սրտն հետեւեալս ի

խնդիր էի : Տարիներու անդեղութիւնը միայն բնյամբ էր անոր արտաբնայն վրայ փոփոխութիւն : Նա շխտատականեցաւ իւր նպնութիւնը՝ Ղեւոնդի հետ՝ արտաժին վերայ չկրփայ կոշկէ : որ իստատուէր յայտնութիւնս՝ բայց կոյրկանուն մամնութիւններէ կ'ազատելէն մայնութիւնը :

Աս դրաւմեցի ի դիր իմ ստատարութիւններս : Զեմ կրնար ասիցել ընթերցողներս, սոսնականմառ հայնակից բլլամ ինձ : Տարուպնութիւններս կարող են ենթակայական բլլալ, կարելի է որ եղ զոհ եմ արատանէր, մզուած եմ չափազանցութիւններու : Եզրականութիւններս կը ղնեմ բանասէրներու սեղանին վրայ, շող բնենն, փարձեն, տարկալուծեն եւ պնայեւ կարեն ղմիր :

Բայց այս դատին մէջ չեն կրնար, իսկ մողիւր լլլալ այն պատմադարմնութիւնները, իւր Ղեւոնդի անութիւն տարադութիւնը բանական չէ ընդգլկելու իւր ծողը Մեզմարի մեծութիւնը : Բնախոսներ մամկնկի տար-

¹ Ղեւոնդի եւ Խորենացոյ մայնացումն ուղարկանելու համար : Եկնմամբ բերած պատմաարձանութիւններ չոհեկան են, ենարմար, եւ յանախ համոզել կը յուրեւ : Բայց կող կարեւոր կէտ ճը որ կը զմտարայնէ այդ մայնացումը, ի՞նչպէս սեղմեցնել Ղեւոնդի գրական Երեսը աննկարելութեան մէջ բազմազեւ, կայական գրողեան այն գեղարկը, եկնմարեղաւ, զիւրազմարաւու կրակաւ ու արտեանողեա խոսմանաւոր, կար ու չկրմ կայրենաւորն այն հոխ ու զրոմ անկատականութիւնը որ Խորենացի անունով ժողտուած խորիրկարը գրողենն է : Ղեւոնդ մամաւ մակողիր ժրն է, մինչ չարաց Գաւմարեան, չարա-

բայն ծումձով խեղամուտ կ'ըլլան դանդաղածի
բազազրիչ մասերուն : Ամէն պտուղ , բարե-
նամ , բարեսեւի , կ'ենթադրէ իւր ծաղկումը
և տնումի շրջանները . և վնասապէս պա-
տուամ աշեգարդ , ներհուն ծելումն ծանօթ
չէր մեր հալիւքուն , նոր մա ելն ինչ բուս-
ցուցած իւր դադալ պտերուն վրայ մօրուաց
տէգր կը սիգար կը ննմէր հասակակիցներու
մէջ մամուտն պերեւելումնիւ : Ամէն հասակ
սմեցած է իւր տիեզ յարիճը , ամէն մե-
ծութիւն՝ իւր մանկայիւնն և նրիտասար-
դութիւնը : Ինչէ՛ր Դիւանդ նրիտասարդական
հասակին կրցաւ երեսէլ իւր Պատմութիւնն
սցմանն վալելչօրէն , կը յուսացնէ թէ դար-
բացած տարիքն մէջ պիտի միւր էր աշի
կոյակապէ , աւելի մեծվալելչութի :

Եւ ոչ ալ , որովհետեւ ի՛նչ դարա վնասա-
լայսի և Խ՝ դարա սարչալայսի բնութիւնն
անձանոր է մեզի , պէտք է թերականաւորմէ՛ .
թէ շունի ան բուսուցիչ պէ՛ և հաղցնող ջնյա-
մայիւն : Ոչ թէ լայն է անգոր , պլլ մեր տն-
սութիւնն է տիար , յափանցեյու դալերու
մշուշը , որուն ետեւն է լայսին յանձարանը :
Բայց մասմանկը պիտի վարստէ սրա-
մուրը . պի՛ն առնն պիտի ցցուին մեր տեսու-
րեան սուրբն յլմմեր : Ինչպէս Աշոտ Աստու-

սմանդ , վարդավառի հաւերուն հեղինակը , բազ-
մաբի դարձերու հմուտ թարգմանիչը , մեր նիւ վա-
տենազրուրեան ամենէն մեծ յամաստեղծներն և
ամենէն ծաղկեալ մտերէն միւն է . Ա. Մարտնան ,
Ամսիս . Բ. (1900), Թ. 2. էջ 104 և .

կեանք, Աշոտ Սմբատեան, Բագրատ, Սահակ եւ ոլլն, որոնք գլխաւոր կը յուսանեն ուր Անապատի արդիւն ամպստինն էին ցանաւ. փարափ կը կազմեն ուր գոլլերն արդ էին գլխաւոր, եւ անտէրունդ տշխարհն մէջ միտացնալ, Հոգատուննի նկմեյր կը դնեն: Փաղաճախան կեանքի ալս վերածնունդին յաջորդեյ գլխաւոր՝ մտաւոր կեանքի, վերածնունդի: Աշոտ Սմբատեանի արեւունքն գիւղացորս Առիկունս կը ինքնասիրէ եւ Ասորի՛՛ն Նամուստիկունս ազատեալ կը իրաւունքի, անտուածարամախան ինքնոց յուզեք վիճարանկուն եամալ: Տարունի տէր, մեծն Բագրատուն կարտը կը զգայ Ռովեաննու Անտարանին մեկնութեան եւ Նամու կը փութոյ գոնացումս ալ պնդ փախուցիւ: Նոյն իսկ իշխանակիւմն կը ինտաքրնուիւն ոլլն Անկնութեամբ: Նապոսի Բագրատունի կը իրաւալէ Անտանդին յորինել մերձամամակեայ եւ ժամանակակից Պատմութիւն: Ի՛նչ որ արմունկ ելլէ ոլլն յորանն ուրիշ իշխան մըն ալ ինտանքրնուէր ազդիւն ծննդարանութեամբ եւ ոլլնուէր տար Առիկունն իմքն ծղել «Հոլլոց պատմութեան»:

Առիկուն կարենացոյ «Հոլլոց Պատմութեան» գլխաւոր ժամանակը իսկ է դնել ի՛նչ հարու առաքին Բագրատին: Ան որովհետեւ Անապ Բագրատունի մը ծանօթ է ոլլն յորանն եւ Անտան կաշակտան իրքեւ պատմադիր, քալց շէրվալէն կարենացիք ի՛նչ

ամենով եւ յէ հայրենիքով անշուշտ, կը ստիպէ ուղիղ դատողութիւնը յեցած խօսող սպառնալիցներու վրայ յամբիլ ողմ եղբակա-
ցութեան, որուն յամբիցումն մեկն:

Ուսումնասիրութիւնս յոյս տնայա մաս առ մաս «Համդէս Ամսօրնայի» մէջ յրե-
քացս 1929 եւ 1930 տարիներու²: Որչափ յատանցացոյ ինտեսպտական համապատասխան վրայ, պնդով աւելի պայտանեցաւ իրականութեան: Ինչ որ տեսցիմ մասին մէջ միտ-
ցած էր մշուշապատ, երկրորդ տեսիմ մէջ զտաւ պարզութիւն, յատակութիւն: Այս կէտը կը յանձնեմ առանձին կնիւղով բնքնյ-
ցողներուս ուշադրութեան: Ուղեկիւմ եւ հաւելիւմ բանին մէջ ալ պիտի գտնին ա-
մենն իմի իմի, յատանել յոստատրութիւն շու-
շափումն խնդիրներու:

Ուսումնասիրութեանն ընթացին խո-
սումն էր յամախ թողարտումն տպն ճիշտ-
գրութեան եւ ամդամներու մասին: Արդէս
զի պատկերն աւելի սմբողական ընծայութի,
կցեցի Տեղամտար իսմակն յաջատրու-
թիւններով:

² «Համդէս Ամսօրնայ», 1929, 44 326—348, 429—472, 500—619, 705—719 (Հեղինակ երկը պատ-
մողիչ, մատնագրական — պատմական ուսումնասի-
րութիւն մը): 1930, 44 8—45 (Համդէս խորհրդ-
այ ձգքը Հեղինակ երկը: Պատմութեան վերաբերմն
էս), 129—150, 255—272, 381—404 (Համդէս խոր-
հրդ եւ Հեղինակ երկը: Երկու պատմողիքներու
նկարագրութեան հարցը): 1931—1932 (Համդէս Բազմաու-
թիւններու ճանաչողութիւն):

Վասիլայի էր ինն տասն հինգ Վերնիի
 մամանակադրութեան պատկերը : Այս վա-
 փայտ մնաց ամբարանայի , ուրիշ զբաղում-
 ներուստ զբաղմանու :

ՀԻՎԻՆԱԿԸ

ՅԱՆՆԻ ՆՈՒԹՈՅ



| | Էջ |
|--|---------|
| Ա. Ղեւոնդ երէց պատմապի | 1—125 |
| 1. Գնեսագրութան գծեր | 2—11 |
| 2. Պատմութեան ճեւղադիւրներ | 31—43 |
| 3. Պատմութեան վերնադիրքը, հազմը | 44—55 |
| 4 ա. Հրատարակութիւններ, թարգմանութիւններ, լոկալութիւններ | 55—56 |
| 4 բ. Պատմութիւնը | 56—65 |
| 5. Աղբիւրները | 65—71 |
| 6. Թուղթ Ռմարայ առ լիւսն Կոստէ եւ պատասխանի Կոստէ | 71—101 |
| 7. Եկարացիքը, ուն եւ լիւսն | 101—125 |
| Բ. Ղեւոնդ երէց եւ Մովսէս Կարենացի | 127—151 |
| 1. Բ. Կարենացու Ողբը Ղեւոնդ երէցի Պատմութեան վերջաբանէն է | 127—151 |
| 2. Բ. Կարենացի եւ Ղեւոնդ երէց. Երկու պատմադիւրներու եղեւթեան նարքը | 152—227 |
| Թարգմանի եւ Բաժնիւնեան տուեալու ճշգրտիւթիւնը | 227—244 |
| Ողբուհիները | 244—252 |
| Ո՞վ է Սուրբ Թարգմանի, Մեղինեան Մովսէսը. — Մովսէս եւ Ղեւոնդ տուեալներու շարքը | 252—261 |
| Ճ. Հայ Բաղրատաւութիւնը, Զոհմանաց | 261—271 |
| Ուղղւիչը եւ Սուրբը | |



Է.

ՂԱԽԱՆԻՔ ԵՐԷՅՑ ԳԵՏՈՐԵՂԻՐ

Ը.

ՂԵՆՈՂԻ ԵՐԷՑ ՊԵՏՏԵՂԻՐ

Ղենդի ուշադրութեան, քան ուր վաշխան
 է, տրտանի էր Ղենդի երկը: Երմուզ էր փո-
 կանին հայ հին ժառանգորութեան երկրորդ
 շրջանի պոռնիքը. ինքն է ներկայացուցիչը
 ութերորդ դարու պատմական պատկանու-
 թեան, պատմիչը մարտամարտ ժամանակ-
 ներու, տրաքական հիմքն երկամե և Նուս-
 անմանքուն: Էր էր պարբնուէր հայ նկա-
 րացիքը նոր սալի վրայ, անցիկ կու տոր
 հինը, էր մուշտէին վաղեմի աւանգու-
 թիւննէր: Նոր տիրացեալութեան առկ հայ
 նախադասական կազմը նոր փոփոխութիւն-
 ներու կ'ենթարկուէր, երկրին քախտը
 արմուշ մեծեցոր էր շունմետէր, սրունք
 ինքն Էստիպիւմ, նորանեւ քաղաքականու-
 թեամբ կ'անցնէին պարմի. քախտի յաջող և
 տեղադրող հասկնէն աւարտիքը: Բողոքատուի
 ծառը նոր խիւղիք կ'արմուկէր հուն, մատու-
 ղաւունէն նորաբողոքի շտապիւնէր էր պար-
 վանաւիքն, էր ծառանային քաղաքացաւ
 քաղաքացաւունէր համար յաջող պարտ մէջ:

Քիչս ամաստաններու հանդիսանալն է
Ղեւանդ, որ կը սիրով պիտի աւանդէ, ինչ որ
աւանդաւոր է: Եւ տեղանաւան կը լսէ Է: Կը
պատշ:

Դ. ԿԵՆՈՒՄԻՐԱԿԱՆ ԿՈՒՄԻՏԵ

Ղեւանդի հայրենիքի, ծննդավայրի,
ձնուցաց, ինչպէս Է: Եւ ամ ամաստան կեանքի
պատգամներու մասին կը պատահէր հաստա-
րեալ անաստաններուն մէջ: Եւ ամանակակից
աղբիւր չի հասիւր մեղի, որ յապեցնէր մեր
հետաքրքրութեան ծառայութեան հետապնդանք
տեղեկութիւններ տնոր յորժիս յաւանքի էր
թերեւս յանց Մարտապետի ծառայութեան պատա-
մարդէն, որ թանկիկն էր Ղեւանդի իրենց հետ-
սին Է: Կը ծաղկէր յաջորդ պարտան մէջ,
ուստի Է: Կարող էր պէտ հարգողէ, բնաս-
նական աւանդութիւններէն ինչ ինչ, բայց չէ
հասան զմիտաւորաց Եւանդի պատմա-
գրութիւնը մեր մեղքը: Իսկ Եւանդի Կա-
թոլիկէտն ի ապաւ հանդիսանայ ինչպէս
Ղեւանդի պատմագիրքը, Եւանդի տնոր տնո-
ւանաւորութիւնը: Կ'հրեւայ թէ նաեւ Քիչս
ճրարի պատմագիրն տնանաւ իրենցան է
Ղեւանդ: Ինչի կըտեսէր մամանակի պատա-
միչներն ալ չեն գիտէր, բայց անունէն՝
աւանքի քան: Իսկաւ, ինչ որ գիտէր իր
մասին, կը պարտէր ամբողջութեամբ նորն
ինքն Ղեւանդի:

Բայց ո՞րքան անփառաւէր է պատմիչու-
կը խուսափել իւր կեանքի անասպարհի վրայ
թաղուէլ ամենատեղաւ ինքն անպամ, որ կա-
րաց բոլոր մասնէն իւր ժաշկերու ընթացքը-
նէ ինչո՞ւ, աշխարհագրութիւն, ազգաւորութիւն
նախնայ թաղապանքը, խորհրդանշութիւն
է։ Հանդիպման ժամը իւր իւր հարցումներուն՝ իր
կեանքի պարագայներու մասին՝ յետ և
սկիզբ, ասան, յուսար, ուսար։ — անա բայց
կենդանական նշաններն, որոնք կը ներ-
կայանեն պիտի կամ իրեն, հարցաւոր կամ
իրեն, հարցընկալ։ Բայց կարո՞յ է խաղա-
կու միտքը, որ հշմարտութեան ի խնդիր է,
զոհանայ աշխարհագրագիտութիւն ինչո՞ւնեցող։
Պարտաւորութիւն իւր յամար յոսթիանք
հարկ է թանաքաւոր պիտի, երգանքնէն
ամէն մէկ թաւին յով, ո՞վ, ե՞րբ, ո՞րք,
ի՞նչո՞ւ։ . . . Այս վերջումն անասպարհ
հով միտքն ինքնաւոր պիտի բոլոր նկարի
զիւր ի յոյս և հետապանէ աշխարհանները,
որուն վրայէն ընթացան ևն անոր ժաշկաւոր
դարձապանքը։

Խաղաղութիւն և հետապանութիւն աշխարհ-
քերը յամեն ասան մամուլով, պիտի կան-
խիւմ խոստովանէր, որ հետախուզութեան
կարող ևն պիտի յափաղանցութեանց մէջ ալ
զանազանի։ Հանգստեցը և՛ կարող մաս
յամուր, շահ է պիտի ինքն և պիտի պիտի
բոլոր աւելի յովոր յամուր։

Հեղինակիս անուամբ մեզի նախ միտք
պատմական մասեանք մեզապիտեան մէջ

Լաւն վարդ: Կը վերացրուի Վիւսնոցեայ մեծի վարդապետի: Կամ պարզապէս Վիւսնոցեայ: ԼՎՎարդապետութիւն Ղեւոնդեայ: Եւ ՎՎ - պարէն յետոյ ծաղկոյ տուն մայրն մասնեայ իրենք, որոնք ունեցած են իրենց սկոթի տակ այս մասնեան, Կը վերջին միտքերան, թէ հեղինակն եղած է Վիւսնոց երկց: աչապէս Ռուսիոյ (7), Մամաւէյ Ռեւոյի (13), Միտիթար Ռեւոյի (15, 16, 17), Միտիթար Ռեւոյի (18), Կիւսնոյ (19) եւ այլն:

Չունինք փորձարար, աստղայտ ասանդաթեան հաստատարութիւնք: Ռեն մամտաւակարգման, որ ասարած է Ղեւոնդ, շնորհ վայ իր անմեայ որոթեան: Չէ՛ կարող կեղծիք նկատուիլ անուամ:

Որչափ աչ փորձուինք երկրայեղի հասմարիլ անուամ պրաթեան մտկասար, յայց ի կրնար որեւիցէ կտակածի ենթարկուիլ թէ հեղինակը երկց էր եւ հեղեղեցական պատուէ կը պատկանէր: Ընդհանրակ մասնեանը ներառելու: Եւ հեղեղեցականի մը շուտիւ, ամէն բարբոթութի վրայ բնորոշէ կ'եղլ ասարաթարութեան յարապիչը: Նստե ասանկ իսկ երկց մը հանդէս կու պայ նա: եւ պիտի արշարտեար շարժով մը նաեւ Չեւայ իրենքու ասանկած զմեծ վարդապետը յարջոթեար, եթէ աչրուա անհնայինք կուտան աչս բիթիւրցման հարապատութեան համար: Ռամեհայն զէպ Ղեւոնդ իր զվարդապետութեամբ: Կ'ի՞նէ հարապատիլ:

Ղեւնեց աւանայ անեմ է. ունի պրակտան պատրաստութիւն. նման է Աստուածատրույի եւ հաշտագիտական պրակտանութեան. իր գրչի տակ կը թռտի չքահանգուան մասնակցի մը, որ ժամարման կ'ընթակ պրակտան հաշիւին յեղութիւն: Ասանց պարտական մարտականքն ինք կարող իրացնուցած բոլոր նաւաւ գործութիւնը:

Բայց ո՞ր կարող էնք փնտրել այն միջոցաւորը, որ հրահանգանացն եղան Ղեւնեցի: Ինչ կ'երևայ թէ առոտ Գողթնեաց Կոնստանտին՝ Եսայեայ, որ տպագրութեան գիտագետ (177—180): Այս Լեւոնեցուն թիւեր կը թելադրէ ինչ այն հիացախան, բարեպաշտական արտայայտութիւնը, որ կը ցուցադրէ նա իւր գրութեան մէջ հանգչող կաթողիկոսութիւն. չի ժամանակին յայնմիկ (180): Գողթնեաց Երանելիին առ Վերնառոտ՝ սուրբ եւ ուղիւ նաւապոլի կաթողիկոսն Զաւրց Ստաշիան (180): Ղեւնեցի թոյլ, որ այնպէս ուրիշ է կաթողիկոսներու հաւանաբան կեկողեցուններու՝ եւ կեկողեցուններու գաւանաբանական ինչիքներու մասին խոսելու, որպէս թէ կեկողեցին պայտ թիւն

Ղեւնեց յիշեցաւ իւր Լեւոնեցիներու պատմութեան կը յիշատակէ ինչ կաթողիկոս, եւ այն յայտնիքն պատմական գիտագիտ. աշխատանքներու հարցն երբեմն՝ ինչպէս որքան Գողթնեաց (181) Լեւոնեցիներու կաթողիկոսն Զաւրց Ստաշի... (182) Լեւոնեցիներու տէր Երանոս որ ի տակ կաթողիկոսն Վանանց պատմութեւն (183) Երանելի յաթոս հարապետութեան զինակաւան (184): Ի՞նչ մէկ կողմէ կարող էմք մըն ինչ ինչ անուանել:

չունենալ իրեն չամար, զգամեմի աշտոյիսի
յանկարն ունիւն ժաշիքում ժր. անանկեկար
ժրն է.

Ընտրի, չի չիդ գորտով յիշատարուչ
զեպիլէ, անամ եւ ուսած էր Իտիւայ չաշտո
պետանոցի մէջ, եւ յետոյ կոչուած անախ
յնպիսկուպտաւ թիւն ի գաւառին Իտիլան,
եւ ապա ի քաղաք առաինան չաշտպետու
թեան: Առջինն էր Պատմութեան, աք ուսմա
դան է անոր մասին աշտ մանրամասնութիւն
ներք: 1670—1671, կ'ստեղծնէ: Շէ. ապա ըստ
դատարանիւս: զիւննա իւր իրքեւ արմ
երեքասան 1770—1781՝ գործանեալ պի
րնդ չորս իւրս:

Պարզ յարգանքի ուրաշայտութիւն եւ
սերանկիւն շտորք եւ ուզիւ չաշտոմի կոտ
թոյիկաւ իստերիք, թէ կը ըստանալեն ա
նանք տեսչանան ժր. Ինչ ապերաւի կոտ
պաւան էր Ղեւոնդ Կաթողիկոսին չեւ: Որ
չափ իտրիւպտուր ալ երեւան տնանք ալմմ,
բայց ունին չամեմտեղեան զիմ ժր, պնան
չանպաւեալ ետայեալ եւ յաջորդ Ոսեփա
նոսի մէջ, որ քնտրուած էր կոչուած:
Անանք զգալ կոտ առն թէ կար տեմեկան
ճանաթութիւն ժր, մանրմեկան զոյ ժր
Ղեւոնդի եւ Եսայի կաթողիկոսի մէջ, եւ
անկէ ճնունդ առնն են երախտալտեղեան
զգամեմեկը իւր մէջ չանդիւր Կաթողիկոս
սին: Առնոյ պրդապատմութիւնը պէտք է
զննուել կամ Իտիւի կաթողիկոսաւանք եւ

կամ տեղի վրայ Գաղթեանց կաթողապետա-
րանք :

Հասանական կ'ըսեալ թէ Ղեւոնդ
դանուած է Գուրն այն առաջնութենէն թա-
ղաքի պարխազներու նորոգութեան մասին ,
պար լաւե՛ն է ներկայէն . Վեաքէ (Վրիթ) զնորոյ-
նացից ոմն (714) , որ էր խոթ լուսինը , այդ
խորազէն , չի երկրորտը իմաստութեամբ ,
առասպելախոս եւ առաւելորդ . . . չի նկ
գերատիւն գրաւալն Գուրն հորապոյն եւ բնա
պարմանկանիւս մեծութեամբ քան պատա-
շինն . . . քանզի աւելը գիւրմէ կարգակարգ . Մո-
տաշնում տեղաւորն Գուրն էթէ ի մեռն իմ
եղեւ կործանումն քաղաքին . . . զոյս յերա-
նու իւրու ման պատմել զինմնէն : (Հեռ. 75) :

Եթէ այս տեղիքը հասանական կ'ընծալ
տեաներ Ղեւոնդի քաջերու հետքերը Գուրն
Կաթողիկոսարանի շրջակայքը , քաղաքին
անհրաժեշտին չի թափը նաեւ շնորհաւորու-
թիւնը իր ցեղերումն իրեն Գաղթեանց եւ
Սիսական աշխարհի մեծաւասաններու մէջ .
նա քաջ նախ ի Գաղթեանց դասանեա
քան , հաղորդակցութեան համապարհներուն
(հմմտ. 7, 8, 18) (Հե հմ) : Իւրի առաւելին
միտութիւն հրապարակաւ երկրորդեան-
յա աշտ կարման նախորդներէն՝ Տրուրե-
ները : 75-ի Արմէլի ստեղատամարտին մէջ
կործանը մասնակցութիւն կու տայ Տրուրեանց
խնամներուն (111, 117) , եւ պատերազմի
զարթին վրայ նահատակներու թափն մէջ կը

աւանել աւտեցմէ երեքը. չի տուիմէ նախա-
բարացն վախճանեցան արք շարք. երեքն ի
տուիմէ Տրուեհաց եւ մինն յԱրծալ գեղէն
(117)։ Տրուեհեքը, որունք պատմութեան
մէջ աւանջին տեղում հոս տեղադրուած զբոյ
կ'երեւոն, Գոցթեհաց Վանանդումար գաւա-
սին մէջ ունէին իրենց բայեքը, յայտնի՝
Վանանդ աւանով (Սխաւեան, 528)։

Սխաւեան աշխարհի մէջ համբարուած
էր այս շրջանին Մաքեհեաց մեծատունը,
իբրեւ կենդրան միաւնեակաւ եւ գրական
կեանքի։ Նշանաւոր հանդիսացան հան Սա-
ղամուն հարանց հայր եւ Սոգոման Կառնեցի
(տպար կաթագիկաւ, 711—722)։ Աւելանել Ե
Պատմարան էր գրէ վերջնայա մասին, զաս...
ի մտնկութեւն աւան էր դրուէ կրանաւորու-
թեան կարգի եւ բարոյս տաւրիմովան եր-
կաց հանմն աւան էր մեծ տիրութն Մաքեհե-
աց. այլ եւ վարմնալ իսկ էր ի փիլիսո-
փայական արունտաւ եւ առաջիկ եւս հմուտ
լիալ փառապարտեան կրթանաց։ Եւ գասն
դի ի ժամանակս Սոգոմանի՝ հարանց հոր՝
շերկուս յինէր բամեհեաց տիրան Մաքեհե-
աց. եւ Հայրն հարանց հաւարակ բամեհի
կրանաւորական գասուն երթեալ ընակէր ի
Արեւի որ ի Շիրակ գաւառի՝ զհեա նարս եւ
այս Սոգոման յուէր դեայր (էջ 116). Մա-
քեհեաց վանքի մասին՝ հմմտ. Սխաւեան
(16—18)։ Արեւիկ աւղն ծանօթ չէ. Շիրակ,
(172)։

Ղեւնոց Էրբ պատնագին կ'աղբայ Ս. Դրբիցարի վանքին կոպւպատումը և՛ միանալանց կնկնալի կատարումը, կը մասանէ տկատ մայ իւր սրտի զազտեիքները (26—27, 28) - միանձնատարներու բարեկամը և՛ եղբայրու կեցք կը խափ հան: Ուստի և՛ անհատական կան յէ, Էթէ իւր ուսման մարդտրանը՝ մեռնաստան մը աննշանը, Մարենացն կամ Խոջեքան հաշականան ուրիշ մը, ուր կարեւնար զփայտի ի փոխադաշական սրտեւտա և՛ առաւել ևս՝ իմաստ չինել զապագայինան կրթանայ:

Այսպէս թէպէտ կը պահսին տրտաքին հաստատի տեղեկութիւններ իր սամանց բնթոցքի մասին, բայց իր մասեանը հակառակ իր փոքրիկ ծառային, կու աւայ նեցուկ, զտեկյա զինքը վանքի մը մէջ աւամանց անձնատար, ուր տնի իր տրամադրութեան տակ Էսի Մատենապետը մ'աղաչն անց կան Աստատանացուն Մատենայ, Ոսկերչեանի Մեկնութիւնները, Դրբիցար Աստատանաբանի, Նիստոցայ, Փիլոնի գրաւթիւններ, Փառատա, Աղաթանգեղոս, Սեբիւ և՛ ուրիշներ: Անտախակի բնթերցման տպատարութիւնները հզոր եղան և՛ իր մտածեյա կերպի և՛ ունի գրայ:

Ղեւնոց կ'աղբէր մտքամարտի պարալիլանին: Այն սարսուկի ծառայութիւնը, որուն անտրեկյազ կայ և՛ կապ էր հայ մտպոբոյր, անհանգիստելի պարման էր տրա

զէն- և ասէլոյ ասէլոյ կը նկատուին փոքրեր՝
 քաղաքներու ցաւն։ Տարեքառնին ազատապա-
 կան շարժում մըն էր 1711—1713 թիւերէն
 ապստամբութիւնը, որուն որոշք պատե-
 րագործ նկարագիր տալին և ժողովրդային
 պիտի ըլլար քաղաքային շարժումը։ Մամիկո-
 նեաներն էին մեծարկուները (140—141)-
 րայց նաեւ Քաղաքային ապստամբան
 Սմբատ, փետին Մամիկոնեաներու, քերա-
 իր մասնակցութիւնը 142։ Ահաւոր որ
 աշխարհ մամբատաճորէն կը նկարագրէ
 (143—144) յարձակում սկիզբն և մարտ
 կատարածը, ինչպէս ամէն տեղ, նաեւ այս
 տեղում կը յիշուի որ էր ինքը և ինչ քա-
 ղաքային շարժումն կը նկարագրէ։ Քաղ-
 քային տար մ'ունենայ նախ ինչ քաղաք
 հանդիս համար իր ամբանդանէն անկող մե-
 ծանոթաւ Գրեւոր պարտիպնէն ներս- ուր
 սկսածուտեալ է աշխարհային տեղադրանքն,
 որով շնորհաւոր քաղաքը Բագրատունի ասիւ-
 իստականութիւն (144) ապստամբութիւն
 բնութեանքուն ի տես (140—141)։ Քաղ-
 քային քաղաքային շարժումներն չընծալարեւել
 Ահաւոր և ոչ ոչ մայրաքաղաքի է նախապա-
 կային խորհրդի արտաքինութիւն՝ շարժումն
 կ'սկսէր ասիւ ընդարձակ ծաւալով։ Ըր
 քաղաքային նկատմանութիւնը փայտած կը
 դանդաղապարտան զգարումի զէն բնութեան
 ցումը, և շնորհաւոր՝ մայրաքաղաք Մանգուսի
 ամբարձար քաղաքները։ Նախապէս Մամի-

կանեանց հայրենեանէր պղծած անկեանքն, որոնց առջեւ գրգռեալ էր նաեւ մեծ ազգաբազմեան Սմբատ Էջիբմէ հասաւառան եւ յանխանարհելի խորհրդոցն, ինչք համար կարծիք է Աշոտ Մարգարաւանուոյ, որ չկար կամ տրտամէալ քաղաքականութեան հետ ահապ էր ՝ 1111—1111 ՝ Այս գերաբերմունքը կը թերացրէ խորհիւ, թէ Ղեւնդ՝ ամբողջ պատերազմի ընթացքին կամ անմիապահ մնաց ի Բաբն եւ կամ անցուց ժամանակը Աշոտի հոգեմտութեան տակ, եւ հետեւին միայն հասեալցաւ արտաբերի՝ մեծ Սպարապետին, որ աշտ յանդիմանէր իւր հաւանքն, հոգ քանակին պարտաւթիւնը (Նն Ապրիլ 755) եւ թշնամուցն հոգ քանակով յոտ առնալու պարտութիւնը, իրան Կարեւոր պաշտօնաւոր, արտա պարտ էր նախնիքը, ինքն թարեկցու համար իւր անկեանքն զորաւորութիւնը թիկունքն եւ անկաւելն յարմարեան ՝ Թշնամին Արամանիի միւս կողմը՝ Բողոքեանդի Արմանի պիտի քանաւորէր՝ կը սպասէր իրեն ՝ Միայն յանկարծապէս յարմարեան իւրեանցի մասնեկ թշնամին կարող էր ունցր տալ սպարապետի պիտեպին ՝ Թանուրդը ուսաւիկէ կ'ըլլայ, հոյ պունդը արեւարար կ'ողորթի, քաջ անհամեմատ ուժի առջեւ կը խորտակի, իւր անխնայ կռաւրմամբ ինկրեցին պիտի մեծանց՝ մինչեւ պարտեցան մեւք նույն ի մտերուութեան պիտեցին, միանգամայն պի մամբ թափուր մնացեալ ի պիտեցին անկան ի մեւք

Նույն թվամեացն է հասարկացան։ ՅՅԹՅ
 քաղաքի Նահապետիկն էր մեծն պատարայ
 դաշտին վրայ (24 Նոյրից 775) : անոնց թուին
 մէջ նոեւ սպարապետն Սմբատ Բագրատ
 տունի, Մուշեց Մամիկոնեանն էւ այլք : Հոյ
 քանակին յարմարեմնն էւ շահապետն
 սասակաթիւնք ցոյց տալու համար էր յաւե
 յու պատմիչք : «Այն ոյսպէս ասան ի Յայն
 իւնիմ ի Բնամեայն՝ ունէին, ասէ, ընդ
 ինքեանս (Հայք) մարտակիցս պէրեշապետ
 Կան ըստմեթիւնն, որ մարմնեակն անս
 յիմք էրեւելին թշնամեացն, պի տեսնէին
 էրիցանն էւ պապատո (որք) տեսարանոք
 էւ խնդոք տառիք նոցա էրթայոմ՝ պարացու
 ցանէին դնասան (175) :

Թշնամիներու աշխ խոտառմանութիւնք
 պատմիչք յաւն բլլալու էր կամ պատեղապմի
 դաշտին վրայ՝ պարասութենէն յետոյ, կամ
 պէպքէն ոչ շատ ուշ զի պատարին Բագրեան
 դաշ էւ ի սահմանակիցս նարեւ (152) որ
 ասպարապեղիցին թշնամիներք էւ անկէ անցան
 Պարսկաստան (153) էւ կամ ի Դուին, որք
 վերադարձաւ անշուշտ թշնամի քանակէն
 մաս մք :

Եւ շփումք արտապետն քանակի նկա
 թագուցան է հետք նոեւ էջ 110², որք պատ
 մելոմ Սէթ-Հարուի արաք գորադարին տա
 րան յապթութիւնք Սպարաշ վրայ Սարպա
 տակունի մէջ (755), էր պքէ, «Հարկանէին
 ի նոցանէ քաղում հարստանն էւ յափշտա

կէին ի նոցանէ զնշան գրոյին, որ էր պատ-
հեր պղծութ. զոր զիտ եւս ունին առ իմեանս
գունդն Հարաւիւս¹, իրեն. զպատիւ քաջու-
թեան նախնեաց իւրեանց (140):

Ինչպէս ԴԴԷԷ յառաջ, Երեմիայէս անկէ
հարբ Դուին էր Ղեւոնդի գարնունելութեան
ստացորէզր: Ղերապոյն տննարկեցի թէ այս
տարի եւր քաղաքացոսն էր նաչրապետական
գունին վրայ կուայի, որուն խնամքը տոբթ
ունէր ուրժ վաշխիչս առատարէն: Ղեւոնդ
կ'երեսայ թէ զեւ Դուին էր, երբ կկուս նոն
նաղմ (նուզկլմա) տառիկանը եւ հաշանաւա-
րեց (ԴՆ) Հոկոս: Արծրունի եղբայրներն՝
Համազասպ, Սահակ եւ Մերուստե (որոնց
անցեալով յունտի նետարքորսան է Ղեւոնդ,
135, 144, 146): Կրասեքապոյնը՝ Մերուստե
կը ստտանի մահուան արհաւիրքի առջեւ եւ,
կը տկարանայ հաստաքին ճէջ. Կրնդունի
իւրամոսթիւնը. զայի բունդի ոչ ի համաց,
այլ յերկիւզէ մահուան, որ ի վերայ էր հա-
սանելոց, արար դայս, թերեւս զթոսցի
Քրիստոս ի պղծումն որտի նորայ (146): Ար-
կու եղբարց նախապետութեան (ԴՆ) Առ-
նուար Ե) մանր նկարագրութիւնը եւ այս
տոպերը ցոյց կու տան թէ ներկայ էր
Ղեւոնդ նոյն տարին զՎարին: Եթերեւ
զթոսցի Քրիստոս ի պղծումն որտի նորայ
հաչրապոսթ զդամմանց եւ մահրիմ Թուն-

¹ Հարաւիւս գունդը կը յիշտի զեւ Հարաւի (յ
Սաւրպի (ԴՆ-ՊԴՆ) որով. անս Եւրոպիի տոպերը՝
Սարգիսարա, Բագրատունեաց նապոսթը. իջ 130-135:

թափեցան որոտյալութիւնն էւ եւ յոյս կը ներշնչէ թէ Մէլքուման հարող է դեռ դարձի պար: Ուստի (1700ին) հըր կը յանձնուէին մաղապաթի ուղղ յուսույթի եւ մաղթողական առդերք, ինչպիսեպէս ծանօթ չէր դեռ Մէլքումանի նախաառդքին ընթերցուածք²:

Ղեւանդ 'Խաթն էր նաեւ յաջորդ աստ-
ջինեարուն (1706—1716): Իւր առդերք թընդունել
նրա մանուսարին (կարդուած Մարջէման աս-
տիկանէն, 1706): 'Խաթն կատարած աքաբըս
ներսն նուիրուած, ազանասանի նկարա-
պասեցանէր են: Ինքն ալ թերեւս այն կողմ
բիւրսներու թափն մէջ էր, որսանք Մարջի
կաթողիկոսի մանէն յետոյ իր յաջ հանդից
թընդունել եւ սպաննայի յով պահանջեց ցու-
ցակը եկեղեցական ողաներու, որոնցմէ
մտն մը յափշտակեց զի որ ինչ միանգամ
յաւանդա եկեղեցոյն՝ տալը ցանեղապահ
նարին, միեւնի յաջորդել յաթուռ նալըսպեւ
սուրբեանի զնեմեմանոս, որ յապում կարա-
սար յաջորդեալ ի նալըսպեւսութեան յա-
թու՝ փանեանց դամենայն ինչո եւ պատա-
ցուածս միեւնի եղի թագաթիւն գիւղից
եւ ծառայից եւ պարտուց (1700): Այս

² Եթէ ուզից են Արեւունք կանառաններու
գլխաւորութեան ուղերք (որոնք չթմուած են ու-
սասարակ Ղեւանդի ազգեկութեանց գրաւ), Մէլքուման
մինչ իշխանական շախմատէր Յերթար ամսանից
յալիսուն Վարդաբազան, տիբէի փոխանի նշանոց
իւրացն: 'Խաթիմ Մամիկանեան (17) գլխաւոր փա-
գապակի թից աստի ներս, պատահեալ նմա եւ հետք
պարսի նորա եւ հրաքն գնախաւորն նորա ի անելն
Արեւունեանց (Սեփերք նալըսպեւ, մթ 185):

խառքերով վերջանկէս կը գնէ Պատմադիրք
իւր անդերուն: Վեր ընդունմ կաշուած
յաջորդեալս անոն կը տամբանք է Ստե-
փանոսի հասցէին, թէ գնահատանք: Ստե-
փանոսի կը տայ կաշուք թէ հետեւանկ
էկեղեցական ժողովին: Եւ պատմադիր կամ-
քին: Կապառ նա ալ զպաշտօնին ինքնակամ:
Սեպ է ժխտքը նաեւ շփանեալս: Եւ զյա-
ջորդել զՍտեփանոսի ընդունմ, ընդանա-
նալն ժխտքն թէ չքանդանալն ինքնին
յաջորդել հետեւանկ ալ թիկնանուելու:
յոյնադէր տայ: Ըստ Ստեփ. Կաթողիկոսի
շէնս սորա (Եւսեբեայ) զՍտեփանոս ասի ի
Դուին ընդունմ կաշուանկին յաւանդա-
պաթեան անդ՝ ոչինչ ասելի ըսն զերկուս
ամս կեցելու: Եւ յետ սորա (76) Ստեփ.
յաջորդեալ զՍտեփանին ի Կաթողիկոսին
ստորանկից՝ իրեն ամիսս վեց ժխտքն
անեալս (76):

Այսուհետեւ կը կարանցնենք Ղեւոնդի
հետքը պատմութեան ժէգ: Այն ստույգ է,
որ եւս իւր Պատմութիւնը տարւածն է (76)ին
(անս. փոքր): Ստեփանին ժր Պատմա-
թեան վերջը կը յայտնէ թէ Ղեւոնդ իւր
Վարդապետութեան վառն ժամանակաշրջա-
նանս Քորդոսոյն դրած է զի չքանդմէ
տեւան Շտուգնոյ Քաղաքաւանոյն (76):

Ղեւոնդ պատմութեան թիկնադէրն յիշա-
տանութիւն չէ ըրած անեղեկին իւր Սեկե-
նաթ անձի ժամին: Բայց Շտուգնոյ լաւ ծառ
նոթ է պատմութեան: Անոր հետեւանմը



10194/01
15-11-01

Թանկացիւ տեղեկութիւններ պահպանուի և
 Վարդանի խաղէլով տեղաւոր մտայուն և պատ-
 ժաղքի տոգերէն: Ասոր համեմատ Սմբատ
 Բագրատունի, Հայոց ռազմապետը, Աշտո-
 րդին, Բագրատունի առն Վասակեան յիւ-
 դէն (տե՛ս վարդ) երբ ինկաւ Արմէնի մտկա-
 տամարտին մէջ (1115), Ապրիլ 24), թողուն
 էրկաւ որդի՝ զորոց տեսանքն՝ Աշտո և
 մտայուն: Ասոնք «նաւարակ քամանկցի
 զհայրենիս իսրեանց, և զի Քաշապ (Բա-
 ժաշխաղի) յափշտակուի և ք մասն ինչ յիւ-
 ռաքանեաց և խորշէր տիրել ի մեռն կնոջն
 Եգատեր Մաշիգայ Մամիկոնեանի: Բայց ոչ
 խաբնին տեղաւոր Բախմապետեան-Ար-
 շաքունի թմիրակ): Կայն տաին չինքանոս
 Աշտո և մտայուն (որոնց մայրն ալ Մամի-
 կոնեան էր՝ Վե. 1111). և երեսոյր զկայ-
 ժաղքն «ժիրակայ»՝ հարին պարտն Բամաշխի
 ուրանց, և պրտեցին չինքանոս զմիրակ և
 զմէնոցը և զգաւառն ճայոց: Եւ ախպէս բար-
 քախտին երեսը Աշտաթ քաղի չինն պատմաթի
 (թմա՝ զմէնին ժիրակայ) և քանկեցուցունն
 ի նմա պրծտանքս իսրս:

Վարդանի այս ըստ շարեկան տեղեկա-
 թիւններու մէջ ցատալի և որ չէ հայտը-
 դուած մեղի, թէ յատկապէս մտայունի ինչ
 երկրաքամին մաս ինկաւ, երբ երկու հզ-
 րայրները «նաւարակ քամանկցի զհայրենիս
 իսրեանց» (Բայց աթոս որ Աշտո քնաանեաթ
 Անի մէջ կը նստի, կարելի է հետեւցնել թէ

Քաղաքացիների ստանձնած մշտնջենական
մտերմութիւնը եւեթադրելի էր ասոյ, թէ
Ղեւանդ աղագանն եւ գործունն է ի մատաւարութեան
Քաղաքացիների կրկին նիւղերու, իսկ
շատեկանակա Մարտիկ աղագանի ստանձնած
աշխատանքը, որ ճանաչուի Քաղաքացիների
իրեն կը յանձնէ պատմապաշտ, պարտաւոր
անմատչելի իւր պատկան է իւր արտաբան
գործերը: Այս յանձնարարութիւնը կ'ենա
կապիւն իւր, կանխաւ ձանձախութիւն
Ղեւանդի քաղաքացիական եւ քաղաքացիական
ցարկանութեան: Ան արդեաւ Աշխատ Է ճանաչուի
իրենց իւր նշանակական փոխանակե
լիստը՝ յանձնարարական Ղեւանդի խնամքին
եւ պատրաստակութեան: Պէտք է իկանալ
առեւել իւր, որ ապա ճանաչուի իւր նշանակա
նութիւնը ալ պատմապաշտ նշանակաւոր:

Աղագանի ստանձնած աշխատանքային
թիւն, անպակար շփման արդիւնքն է իր ան
շուք նմանութիւնը քաղաքացիական իրաւարարու
թիւններուն, պիտոտրական շարժանիւններուն,
մարտական ընդհարաններուն: Ան պիտէ ոչ
միայն ղեկավարաւ ձանձախել, անպա, պե
կանգործելը, այլ եւ պարտաւորեցնելու ուր,
պարտաւորելու ստանձնելու անպաշտ
պաշտելու փոքր, շատեկանակա փոքրին կ'արեւ
նախարար է առանձին ուղարկութիւն [12],
[20], [50] եւ ալլին): Անկէ իւրեան է մեծ
նախարար ձանձախութիւն անպաշտակաւ
աշխատի, իւրաքանչեւ իւր նշանակաւ, անպաշտ
փոքրեան անպաշտանակաւ [10], [17], եւ

ժերմացիւն և բոկչիւն աշխարհացրանեան պիտո
բերուն (148-157), պարտապաներ, որոնք
այնքան կարեւար են պիտոյութեան շար-
ժաններուն և՛ անկրտսեայութեան թեանց
համար ։

Բարոյապետի տղարանքի մերձեւորու-
թեննէ կը բոկչիւն նսեւ իր շրջանաշար ,
շաշնամուտայ պատմական տեղեկութիւններն
Բարոյապետ և բոկչիւն , Պարակաստանի և
Մատաւառանի մէջ . այն իսկ հետաւոր ճե-
նականն սահմաններու վրայ տեղի տանցան
արշարանքներու , պատերազմներու և՛ պատ-
ասանքներու մասին : Եւ այն ոչ միայն մաս-
մանակեայ , այլ և տեղեւոյ ժամանակներու
(158-161) պէտքերու մասին : Երբ նա կը
գրէ . « Ես , տան , յուսար » , այդ և
նման շրջապատին մէջ իրեն հետ յանակոյ
նկերուն կ'անկնարկէ և՛ անարտաքին տան
բարձր հիւրերու աստիճաններ :

Ի նշող և՛ սոք տեղեւոյ Ղեւոնդ շփում
Բարոյապետին առն հետ : Եւր հետապնատ
թիւները բերին մեզ այն համարմանքի ,
թէ անոր յայտու հետքերը նշանակի և՛
Կոսին , 164-165 շրջանին : Անտեղ աստա-

* Հմտ. 165 : Յեղեկեւոյ 166-ի թուա-
բացումն անոյ գորգիւթիւն գործիչ Հուրդ . Էթի
յանիւ և Էթի մը իշն գործարար , և Էթի
միտարար իշն ի սկի միմանց Էթի երկրորդ , Էթի
յանիւն իշն Էթի յարկեր , Էթի անդիւն
պատարաստիւն պիտոյ Էթի ոչ : Պարտմանին
տեղեկացեալ՝ պատարասէր իսկ նմին գործարարի
պարտ իրար :

կուսի միջև 111 թաւա Դուին կենտրոնի կա-
րող էր աւելանայ պատեհութիւն հասարակաց
ցութիւն մշակելու։ Սպարտակեան, եւ 111 էն
յետոյ Աշուտ կիւրապագաստի ստան հետ,
արտեր անշուշտ կ'երթեւեկէին հոն՝ որտեղ
կանին հետ յարաբերութեան մէջ։ Նաեւ
չրջացալով իննեւսի կարող էր յարաբեր-
ութիւն մշակած ըրաւ ինչպէս Բարսա-
տեանեան, նախնայն ալ ինտարապարտեանց
հետ։ Բայց այստեղ քաջաստեղծութիւն չի պաներ
տակտին մեր հարցումը մշտն։

Կր կարծեմ թէ այս կէտի յաճախութեան
հայրն կ'ընձեռնէ մեզի Պետեղի զԼրջին
զրոյթը։ Պակ ալ կու տայ հետաքննար-
կութեան ենթադրութիւններ ընկալ պատմա-
գրին կեանքի աւանդալ անասարհի հոմար։

Աշուտեղ Պետեղ կր զնէ ցոյցատեւ նկատ-
բարութիւն մը ալն անողորմ ինտարտա-
հարութեանց։ սրանց նշանակ էղած էր
Արարատեան պաշտը Դուին ընտանցեանե-
րէն։ Անոնք որք որ աւելի էր ստանկանային
էւ տանջուած, հարստահարուած, անպնկո-
ցած սպարտեանցութիւնը յառաջտեղութեան
էր մղէին։

187ին, երբ Սիբեւոյ իրքեւ փոխարքայ
Էկուս Արեւելք, փառնայն տարակուսանայն էւ
տուաւի կր դարտեար - զգի յաջնմանէ ալ ար-
էր աւեր ընչից իւրաց։ ալ տո հետաքնն
փառնին յաւարի։ Աւ քաջութիւն ինքնակա-
մութեամբ թաղութն պնտա էւ պանդուրոյն։

Բեյազեդ- Է. պաշտ խառնիւնոցանան բնակեա
լացեանէր ի բարեւոք և յարգութեանց հրկրէն:

Գաղթեալներու շարք առաջ նկատու
պալմէր և Նալբանդի լինացողներու վրայ
տեսած յետաւանդեաց նկատուցութիւնը պար
կու տան, թէ Ղեւոնդ Է. խառնաւան էր
նախաւոր զնալմէր յանապիւն Նալմալու
առաջըր: Եւսիկ Կաթողիկոսի մասը, պժո
խանէ, շարաշուք և ամբարբէշու խնդակի
նախնի պաշտեաց արարեանքն ի Դուսին, և
Առաքիւնեա Կաթողիկոսի յաջորդութիւնը
[111]—[114] տեղի աւելցած են Նաւանդէն
կամ առաջ զպալմէն թիւ յաւանք, կամ նալմ
[115] տարին: Եւսիկ երանելի կաթողիկո
սին մասը, Առաքիւնաթիւն ի պաշտեաց շնորհա
թիւնը, Կաթողիկոսաբանի կապուպուսթը,
Էկեղեցեաց անաղագսութիւնը և երկրին
անաղագսան և բարեյակեան պաշտաններու
անաղագսի կապութիւնը աղագս են խորո
ղել իր նկարագրեալ վրայ և նախապարտած
է Թուոյ Նալբանդի և պէմ եղեալ աւարտ
զէմ պնայ պէպի սահմանակից շրիտանեալ
նալաբանին որ էր պոնուէր Բիւզանդիանի
կայսեր Նովանաւարութեան տակ, յաւ նա
մարեալ զՆեկինի ի կապի Առաքեաց և աղագ
սեացանէր պանան ի շարաւէր ուղիբաւաւա
թեան զարգարաւալան, յաւ անաղագս պնու
րուստ աշխարհի և պանպաւաւաթիւն Էկե
ղեցեաց Փրիւստուի: [116] Եւս խորհրդաւ
նալմէնը, զոր ուրաւաշարած էր նա առթիւ
մը (նկատմամբ Ամբուս աղագսեղեալի Կաթ-

յաւանի Թորհնացոյց Սոյխարհացոյթիւնը
 (պարսկացիք Սկոտաթիս կոչեն) պէտք է
 տեճեական ծառնիւթիւնն փերացըլը ։

2. Բիւզանդական հոգի գրոյց, Եգիպտոց
 աշխարհին մաս յատե ըրչալու է Ղեւոնդ ուրի
 անցըրը, որ Շէշին աւելի աւելացած էին Եգիպ-
 տոց աշխարհի Փոյթի թաղաքին մէջ ։ Շնորհ
 արարական հարկաւորունիւթիւնն Եւ-
 աքաւմենքին տալականցած Թորոս Սաղար-
 տունի բնաւ խախտարը որ ընդ նմա, մեկնե-
 ցան յաշխարհէն և տնայեալ խնայելցին ի
 թաղաւորէն Թանոց (Եւստոքիանոս Ս-
 Շէշու) ։ Ժողովը ընտելութեան և պապար-
 թանանց իւրեանց ։ Եւ նա տուցաւ նոցա գրա-
 ղաւն որ տնայեանեալ կոչի Փոյթի ի կարգմանս
 Եգիպ աշխարհին ։ Եւ յնուկեցան ի նմա տմո

Վաւ ալի գեան է որ Թորք Զարդի ըզնելով
 Բարեպետ, Եգիպտոց Եւրոպայի յաւաքով աւա-
 քանէ առ Թաթարս ընդով ի Եւրոպ Կարաթէն և
 տնայ ընդը (Եգիպտոց աշխարհ) ։ ընդ Զիպար, ընդ
 Թրոպ (Թարպազ) և ընդ Թրիս (Թարպիս)
 գետնայ և Կր թափի ի Պանոս ևով Սեւ ծով
 Բաթաթի իւրաւորին կոչըր ։ Պետաւ Եգիպտոցի
 Կոյնն Թիւմար և Եւրոպի իւրաւորս Թոր ։
 Եթան որ Եգիպտոցի գեանն աւելին աւարին յա-
 թաղին գրուց Կր ընտելին, աւար թիւմարս գեանն
 աւելին աւարին Ժաթն աւաւն է՝ տնայ ծով Թա-
 փիկն յաւաթ ։ Եւ Եգիպտոցի ինչ Ժաթնային Եւրո-
 փիկն Եգիպտոցիին աւաւնն Եգիպտոցիս մասով Թանոց
 տնայ է տնայ Թաթարս, Իգիլին է. Եւն. Գրապո-
 2. Է՛ Է՛նն Թիւմարիս Կր Կոյնն գալի տնայիցըր ։
 Զորս Եգիպտոցիին Կոյն Թաթարին Կոյն տնայնն
 Թիւմարս աւաւնը, Կոյն իւր տնայ յաւ Կոյնն
 Եւն. Վաւ աւաւնով Կր մեկնին, և յետոյ՝ Վաւ
 Կոյնը Կր գործաւնն Թիւմարս որ է Վաւ որ Կոյն
 ի Թիւմար Զորս Թաթար ։ Զմեաւ Զիպարն
 Էին Զորս տնայնն աւաւննըր Է՛ ԶՈՒՄ 212

վեցս (Ղեւ - 221) Թագոս գրգռեալով չափ
 չտալով Պէրճիպարիկոս Վարդանի կաշաւը (711—
 713) կքանակեան թաղաքակաւսութեւնն¹ եւ
 Նրապարտեալն Թրգյապիկ սասիկանի խոտա
 տաւ Թեւրժն, որ զնա անեցաւ ցանկը գնաւաւ
 դառնալ չիւրեանցաւիւն աշխարհն, 712ին,
 Քսուսի թրք խաչանի կ'ենթարկեն խաղաքն
 եւ սղարեւն թաղաքին եւ գաղտնս եկեղեցե
 ցեալն թաղաւանկեալ յաւաքի՝ դարձան ի
 չափ խառնաւանսի ի կաշաւէն Թաւնոցս։
 չափ խաղաքաւանսաւ ալս վարժանքը դաշ
 քոյքի կքողաւնաւ կ. Պալիս, սեւ կաշաւին
 յաւան՝ սաթնոցաւ ընդ կղեւոյ ապիրաւանս
 քիւնն եւ կաշեցեալ գոտաւորս եկեղեցե
 ցեալն՝ վեճաւարդայրան Վերթոս, 715—716
 եւ զարեւոյրեկոպաւանս եւ Նրաւալէր նալս
 նդոմս պրեւ ի ժողովն, եւ ի կառարժան
 տանին գաւալսոց Նրաւալէր ընթեւանս ի վե
 քոյս զարձապալ ապիրաւանս քիւնն, բանցի ի
 տանին յաշնմից պրեւեցին զյարձ անարժեւո
 քեան։ Եւ ի նայն սովի կարգաւորեցին ամի
 ամի զնայն կղեւն ընթեւանս Վերեւն զաշտը,
 որ եւ տիրեալս թոյ ի վերայ նոցա, եւ կղեւ
 պատմաւ կաշաւան նոցա²։ (221)։

«Պալիք ի կողմեան Եղեւր աշխարհին
 անշուշտ պղտը է հասկնալ ընթեւանս Վեր
 Թոյն եւ որ կապիւթի Պոթի թաղաքը Վերայ

¹ Հմմտ. J. LAURENT, L'Arménie entre By-
 zance et l'Islam, 15^e 226 (Paris 1910)։

² Պատմութիւն Թրքոսի յարկերու պատմաւ
 զրկութիւնը։

քով Փասիս կուրուած : , ինչպէս էր նույն-
 ցորի սահմանադրեց : Թէ նոյնքոր աստիճան
 կիբաստանիեան մէջ է , Ահա՛նոյ կարող էր
 յառն ըզջայ կամ նայն ըստգործի մասերը
 : Եղերաց աշխարհի մէջ : ևս կամ Կ . Պոլիս :

Մ . Թէ՛ փերայի՛նոյ տոպերու ևս թէ՛ ըստ
 վանդակ պատմութեան ընթացքի մէջ աշխի
 էր յարնէ , որ Ահա՛նոյ գիտաստեղծայ նորոս-
 նայութեամբ էր զգուշանայ : Բնաւորական
 ար ևս իցէ կերպով Կաշարներու ըստգործ-
 կանութիւնը կամ Հաստմեկրու նորմար ան-
 նպատակ տմեկմեկմեկ արտայայտութիւն
 մանկամ թոյլ տայ իրեն : Թինը աստեղծար-
 թեամբ յառաջ էր բերէ Լեւան Կաշար ևս
 Թեմար ամիրտեղանի թղթակցութիւնները ,
 տկնաբարութեամբ մանկամ յիշատակութիւն
 չ'ընէր . թէ նայն Կաշարը սոցտ պատկերա-
 մարտ դառնաւցաւ : Բայց դառնաւցած արտով
 էր չիշէ թէ Եղիս Ելանեայ յաշարն պզտա-
 թեան բուրութեւն՝ ասայր նորման փշրել ևս
 խորասակէր զկենդանադրեայ պատկերա . .
 Փրկչին ևս նարին աշակերտացնէ ևս : 11111 :
 Թեմար Բնաւորտունայ կուրպուար Փոլիսի
 մէջ , փառն զի զայրացայ Կաշարը , տղիբա-
 տութիւն էր Համարի , ևս նպագին իրտացի
 ևս տնէնքն տարար : Երկրին Համար ըստգոր-
 թեկան խոհեմութիւն էր քաշողի գիղը նայն
 նպատակի բնաւորականերուն , բայց աշ-
 րտարձակործան պայթեկանութիւնները զէպի
 Բիւրտեղանան նոյնը չի պատմեմեմ իրեն
 Հաշարեմարմութիւն : Թիւրմեղանան զբողին

յապթանակները կը հրահանգենեմ պիները, կը սպասեմ որ կը լսել պարտաւթեան բաժնէր: Անշահաւանները, միայն թաքնադաշտ պատնուած են ինչ, կամ պարզապէս անտէր համար, որ բրիտանական են թաղաստրները, թէ կամ թաղաստր ձգտում մը: Թերեւս միջապայքը, որ կը պրկէ, յաւանակը էրեւոյ կը թեյապրէ:

Եւ Ղեւոնդ պիտի թէ պապթանակները առաջին պարարտ է, տրդասանդ հագեր, պեւեպեւեղան հոն է, կ'ապրին հանգստաւ ինչ, մինչ հաշտեմքի մէջ, որ ինչեր սուրանի ծառայութեան մէջ են: Տուրքոյ կ'ենթադրեն, որ պապթանակները պիտի մէկ երկու տարի հաշտեմքին ինչեղ անպարտաւթեան տրդաւթը: Ուստի Ղեւոնդ, երբ կը պրկէ, ունի փոքրահաշտութիւնը էրկերին տրդպիտներու թեւան: Եւ յնար թարգմէ կը տա, ետեւ հախարարներու մեծապարզէ մեծ ծառայիցը կայտը կ'ապրեն:

Եթէ տշահաւանութեան ունին որ է ինչ տրմէք, ոչինչ թղթի տրմէ հաշտ մը: Երբ Ղեւոնդ երկը, իրերեւ պատրաստաւած տեւեհաստութիւն, շահանակեղան, տշահաւանութեան, որ պապթանակներու կ'ապրեն ու պարտեւեղան կայտը ի կ'Պաշխ: Կամ շահաւանութեան ինչն ալ հախարարներու հետ եւ յնար տրդաւթը:

Այն յաջող, պատեւեղանութիւններու ծախսեւեղան (118-119), 111), տեղի ունեցան ինչ Մալոյ փոքր կամ կ'Պաշ-

սոյ ատաճ, կը յորպարեն զմեզ ծառանէ, թէ
պտտմիջին ծանաթ նշան էն մեծամեծաւ ծափն
էւ իւր լեւնամէն աշխիւնէն էւ անդնդաւ
պտտոյս յորմանքները. ետեւ Կ. Պարոյ
դիւրի:

Երբ կը պտտմէ թէ ՄԱԻ՛ն զտաղի Մտն
մէն պտտերտով նշանաւրանկէն Բիւզան
դիւրի զէ՛մ, կը դը՛ւ - ստոյս ստանէ - եր
պէ՛ն լուսն - թնկ պապաւմին աւրմէ մա
նանքոյ՝ զշափ հրկոյց զրուաց, էւ դը՛ւ
տո թողաւորն Բուհաց, էթէ վազմաւկի
աւաքնից ի վերոյ աշխարհից յո զրապ
մաթիւն գորաց իմոյ յաւ թաւոյ նաւոյ
մանանքոյց Ե՛ՐԷ՛Ց: Մա՛ր յաւն է Ղեւնոյ
աւո պարոյց: Անշուշտ կը լոմէ՛ր աշն ըրնէ
ըրանն էւ կտրոյ կը լանէ տմէն անդ. բայց
իւր ծանաթն թիւնը կտրոյ պապաւմանին
թէ աշո էւ թէ աշո զէպքերո, մէ՛ջ, ենթա
դընէ կոս տաւ յորմաւորոյն վաւր Կ. Պա
րիւր:

Այո առթիւ ծանաթացած բոլորո՛ւ է
Ղեւնոյ աշն կրնուկան - պապաւմաւանկան
թղթակցութիւնէրաւ, զորոնք փախանաւան
են Ամար ամիրապետ էւ էւան Բաւրացի
ՄԱԻ՛ն: Հաւանորէն Ղեւնոյ անամբ հայա
ցոյց գտնաւ, համարելով հեռաբարբան
իւր հայրենակիցնիւս համար, իրքեւ Մտն
մեղանկան կրնի հերթան աւաճին փաքմ:
Սուհարէն յեպտի հմաւմիտն թէթիւ, նշաւ
մը փաքմէն թէ կոս տաւ Ղեւնոյ, երբ կը
զմէ թէ Վիտիպիտաւ աշխարհն Աւարոյ

Իմ առ Մ. Ե. Դ. Ե. հաշտելն կը թաքստա-
նասի ՎՊԻՎԵԼԵԻԿԵԱՅԵՐԻ (VKE) :

Այս նկատաւար ընկեր կարծիք կ'որո-
շարեն մեր մէջ անթաղութիւն թէ՛ Ղեւանդ-
էթիզմանցական հոգի վրայ իրեն տեսեալ
ընտելարան դասաւ Բողոքաւանդներու ազատ-
բանքը նախ Սպերի մէջ եւ ապա Շիրակի
Մէրա եւ Շարուան Եղրայրները նա կը
դանտելին տնտեսւոյ, երբ իրենց հայրը մեծ
ազատապետն Թմբուտ ազատաւորութեան
դրոշմ պարգտն Երաքայրներու պէ՛մ կը պա-
շարէր Կարմիր (ԵՄ) : Իրենց հոր մահն յե-
տույ՝ Բարեբոյի ՎՊԵԱՄԱՄԵԻՆ աւուր պա-
րիսպներուն ազատիկեցան փրկելու համար
իրենց կեանքը վրէժիկովը Քշեմուոյն
առնէ : Եւ երբ տեսան իրենց հորը մեծ
բարեկամ Էրկըր պաշտակտններու թախն
մէջ՝ փութապէն տապնեալանէ՛յ դինքը եւ
աւանդ իրենց խեղճիկն արեւ : Հիւրասիրու-
թեան այս սրերուն ահա յանձնաւոր
Ղեւանդի գրեւ անցեալ ժամանակներէն յա-
շէր : Բայց յատկապէս տնտեսացնէ՛ր դարե-
րուն իրենց փրկելի հոր նախապետեան
փախանք : Բաշուրդ տարիներուն հեռեւան
բոլորու է Ղեւանդ՝ Բողոքաւանդի կարիւնե-
րուն, որոնք կ'երթային Շիրակը նա աւան-
դու : Այս յրջանին աւուան պիտի բոլոր նաեւ
բարեկամական աշտելութիւններ Տարունի եւ
Վարդուրականի Բողոքաւանդներուն :

Թմբուտի զերչումեան հանապարհոյ

կառարարութեան իսկ պարկուշտութեան հետքն ապար-
պիւնքը:

1. ՂԵՆՈՒՆԴ՝ ԵՐԷՅ Է - հասանորդն Պարթև
դաստոնն (Վառնետեղացի): Հրահանդարտած է
նայն կողմերու մեծասասաններէն մէկուն մէջ,
թերեւս Մարենտայ վանքը: Անկեցած է
անմեակման ծածաթութեան հետքի Կաթողի-
կոսի նկատ, ի Պարթևն եւ ի Գաւին: —
2. Աղբաւն է (ՂԵՆՈՒՆԴ) շրջանին Գաւնայ
շրջակայքը: — 3. Պարթևն է ՂԵՆԱ թուին
քիւզանդակման հոգ, հասանորդն Սպեր: Այն
տեղ գրած է իւր Պատմութեանը ՂԵՆԱ թուին:
— 4. Աղբաւքունն է Հայաստանի այլ ե-
տայ մասեր: Քաղաքն, Վասպուրականն, Եր-
բան: Մանաթ կ'ըսուէ՛ս իսկայնեանիստ բա-
ղարին եւ յունարէն յեղութի:

Ահա մեր բոլոր գիտցածը ՂԵՆՈՒՆԴ ԵՐԷՅի
անմեակարութեան մասին, իրարմէս կտո՛ւ
թէ անպիտան կերպով:

Հարցումս, թէ ո՞րտե՛ս ապրեցաւ
ՂԵՆՈՒՆԴ, չի կրնար ուղղակի պատասխան յե-
ղուեր: Իրական ոչ մէկ աղացուցչ չունինք:

Իւր գրութեան շին մէջ յամենայնի նկատա-
մամբ նշմարեցրք կը հասցնէին զմեզ մինչեւ
ՂԵՆԱ. Աստի յեանայոյն եղբ իւր կեանքի
համար կրնանք աղանձաթութեամբ պնդել այս
թուակներ: Ամուսնացր պէտք է պնդել պարտեւ
տառնին կէտին: Տեղ մը խառնումք ՂԵՆՈՒՆԴ
Սահակ Արաբոստեանայ պատգամադրեացու-
թեան մասին, որ եղատուի ունէր արարատ

կան պարտաւորի՝ Մարտիկոյի արտաւարտութիւնը
 դիմելով, կը պատմէ Վարձագրիկոյի մահաւաստի
 Մարտիկոյի վրայ պարտաւոր Նորահայնի փա-
 փախութիւնը, այնպէս զնայելով ի
 նշտարտաւարտ արտաւարտ ՆՈՐԱ, որո ինքն
 յաւանդութենէ ապահովուեալ արտաւարտ, արտա-
 փախութեան են արդէն Գիւղը պատահու-
 լի ՄԱՐԻԿՈՅ ԵՄԵՆ արդ նշտարտաւարտ արտ իրքեւ
 ապահովուեալներ պատմած են, պատմած իր
 յաւան են հասանալին իրքեւ Մարտիկոյ ձե-
 րիւր 1.—2) արտաւարտ Երտաւարտ Դեւանդի,
 այնպէս որ նա ապահովուեալ զԵՂՈՅԻ իր ի-
 յաւանութեան մէջ անապարտ, կարեւոր ՄԱՐԻԿՈՅ
 զրի աւանդ: Ինչո պարտաւորի ձեւանդը
 կրեալի զԵՂՈՅԻ ՄԱՐԻԿՈՅ, որով ՄԱՐԻԿՈՅ
 երբ կը պատմուի իր, ՄԱՐԻԿՈՅ արտաւարտ
 որով արտաւարտ մը մէջ կ'ըլլար - եւ կ'աւանդուի
 ոչնչ մտածանալ փախչի, յաւան, Թեւեալ
 նախ իմի միմեկի ինքեւարտ պարտաւորութիւն
 իմարտը:

Գ. ՊԵՆՏԱՆԻՍԻԱՆ ԵՎ ՊԵՆՏԱՆԻՍԻԱՆԻ

Ինչպէս մեր հետազոյն պատմաւորիքներու,
 նաեւ Դեւանդի պատմական արտաւարտութիւնը
 ապահովութիւն մեղադրիքներու մէջ պատմած է:

1. Հրապարակի վրայ Եւանդի արտաւարտ
 ներու արտաւարտներ կը տանին կը հանդի-
 ցմեկ միմեկ հետազոյն մեղադրի, որ կը պա-
 հաւան արտ միմեկներ Մարտիկոյ արտի մէջ
 իր. [1792 թ. Գ. Գ. 165] 1. Զեւարտիւն նկա-

Ինչեւ պրոսթիւանե տարբին որպէ՛ թանա-
կոտեւոյ՝ չէ յայտնուած։ քանց պրոսան բոցա-
յաւ է 1279—1311 տարիներուն, Գարբի,
Արագանեմովանի թի մէջ։ Տէր Համարպասոյ իմ-
միցիոնեան ալ չբխանին ուն զմոտի մարաթ-
եայցն եւ տարբիպիմարպասն էր, որուն յիշատ-
անակը պահպանեան էն Կարպ մը աքմանա-
դրու թիւնէն եւն իմնաստանի տրմարու
պրոսյ։ Եւս Զաննիթ է Դանե պրամէրի համ-
քանով ալք եւ ալք մետաղիքներով, պրուան
իւ յանեմուքուքու թեմով ։

[illegible][illegible]

Հանձնէն Կարսաւանեցի, որուն ժամին է հոս
 բնւոր չիշաւանկադրութիւնս ինչ. (ՅՅ1) |
 «Պատմութիւնս Ղեսնդեայ եւ Գիւրգա Աւա-
 դրեալ եւ պէրթին Պատմութիւնս Վրացեաց
 չիշտոտեց է (Սոփաննա, Կարսաւանեցեայ¹⁶,
 եւ փառայ կայլս՝ վերսկիմ վարդնցի եւ
 կազմէլ ետաւ սիրելոյն իմայ Շաւաւն վար-
 ցաւանի յուեցեայ, ի թմբս Ռեմի՛ (1661)
 ի փառս Քրիստոսի. որք վոյնիչք, յիշա-
 չիք ի Քրիստոս»։ Այլ շատ յիտայ (1670)
 ձեռագրիս կ'իյնայ Վարդան Բագրշեցեայ
 ձեռք, որ կը նուիրէ զայն ի դուան Ի - Հի-
 մնանի 1680ին, Վարդանի խաւրին եւ,
 Վատացոյ գրացս որ կույի Ղեսնդ ոյտամա-
 դիք եւ Վրաց ոյտամայիք եւ Ի - Շորն անա-
 ոյտաւանքան Վապրի բանք եւ խրատք բա-
 ցում։ Այլ եւ Վարդան վարչապետս Բապի-
 շեցի ստացայ ի նայալ արկնանց իմոց. եւ
 ետաւ գլխաւանկ ի գրուն սաւրք Հիմնանի ի
 փրկութիւն նպոյն իմոյ, որք ընթեռնուք եւ
 արեւք ի սուրբ գրոյս, չիշեցէք ի Բրիտան
 պիպիշեցի Վարդան վարչապետն եւ
 զմեղան իւր. տմէն, ի թմբս Ռեմի՛»։

Ձեռագրին ոչս ոյտամութեան յոյտնի
 կ'ըլլայ, որ Հիմնանի սրինակը արաւ-
 դրեան է Բարպիս գրչին Սոփաննաւանի

¹⁶ Կարսաւանեցի Սոփաննա ձգրոյն է Շա-
 ւաւր Ի. Կարապետ փեթի տալեւոր Եւսի վար-
 ցաւանի, որ պատահեալ իրեն 1663ին իմնանի,
 որ Սա. Հանցի իր խնդրանք կը թարգմանի
 Սոփանաւան Պատմութիւնն Նրեանի Պատմագրոյ
 (Վճառ. Արաւիան, էջ 265)։

համար 1279—1311 շրջանին. գրչութեան
տեղը տնտեսութիւնը կը մնայ: 1311 թուին այս-
պէն տնտեսութեան, փաստը հանդամանքի ճիշտէր
կ'ըլլայ, ամէր Արափահեմէն Գարաշահեմի. որ
զեպեղիկը հարստարան թեամբ Կարպէզ Է.
կարգէն կու տայ զայն իւր աշակերտին
Հասեպի Շմաստն փարպաղեալին: Դարպա-
թիւնը հարստարանն է ոչ միայն Գարաշահեմ
թղթերու զգոյշ արքեթերապա թեամբ Է
Խեմեմար կարգմով. այլ Է աշակերտեան
թղթերու. փխտաթիւ արտապա թեամբ¹¹.
Աստուգշապետը չի նշանակում զժամանակագր
Շմաստն փարպաղեալի Կար արտապա թեամբ
Կարպաղեան թղթերը: Արքան աշմ յիշարա-
թիւնն էր ներք հաստատել, յաւակապէս
Ջեմապրին տկիպը տեւան է ուղարկալ Կար-
պաթաթիւն: Հարպաշի Ահապրի տաւթիւ
թուղթը կ'երեւայ թէ շատ Գրաստանն օր-
նակի ճիշտ պահուան է. այն պատճառաւ այ
Շմաստն փարպաղեալ հարկ տեւան է ի Կար
արտապրի թեթեւեմի տաւթը: Արափահեմ
թղ. 1—2 ամբողջութեամբ Է թղ: Ան աշմ
անկիւր Էն Կարպաղէն ժամանան, ուստի
կարքիք է մտանել թէ Կարպաղեան արքեա-
կին հաստար թեթեւեմ Կար Կար: Գրա-
ստանն երեւեմիւն հարպի 15 ամպ յաւարան
է փրկել: Գրաստարին է թեպտեմի զանկ Կար
թղթի համար թէ Արապիս գրի: Այն փոյ

¹¹ Էրայ Գրաստութեան փրկի թեթեւեմ
տեպար Է: Մաս Էր համարի փաստեան հե-
տեւութիւն. Ամասն Արքան. ճիշտ:

այսպէս երկրորդ երեւելն սկսած ըլլայ իւր
որինակութիւնը:

Այս նախամտերի մէջ հասած է Ձեռ-
նարկիս (1876թ¹) Բաղէշ, Ամերկայու
գանդը, թոնասկիւր եւ պատմաւոր Բաղիշիցի
Վարդան վարդապետի մեղքը: Իմ, ինչպէս
կ'երեւայ, նամակս իր գովելի սովորու-
թեան, հաջորդ անկէ նոր արտագրութիւն
մը, տեղեկագրէք թոնման է լիմիտներ
միտարաններու խնամքին, որոնք արդեամբք
այլ պահած եւ նախաջած են միւշիւ մեք
որերք:

Եւրպիա դռնի դապարտութիւնէն կոր-
սած է այժմ: Բեյի ձանով թոյր քրի-
նաները Ծագած են Շմարն Լուսնայ, եւրո-
պան տը Ձեռնարկն, արեւմտ ՂԵՒԱՆՑ յետոյ:

Վարդան Բաղիշիցի, Ամերկայու գանդի
վարդապետեան գրեանց քաղաքին մէջ
(Եւրոպա 1903, էջ 180, հրատ. Ս. Տէրման-
կարեան) կը յիշէ հետեւեալ արինաները:

2. «Եւ միւն է՝ Գանգաղի Տաթեան»
Ստեփաննատի Թիւեանց Կոնստանտինոսի պատ-
մագիրք, եւ՝ Ղեւնդ պատմագիրք, եւ՝
Վրաց պատմագիրք եւ՝ Սքաւ պիրք, ի մի
տալք:

3. «Եւ միւն է՝ Ձեւոր պատմագիրք եւ
ի հետեւ՝ Ստեփաննատի Տարեկանայ յիշ է
Աստղիկն, եւ միւն՝ Ղեւնդ պատմագիրք,
եւ միւն՝ Վրաց պատմութիւն, եւ միւն
տը՝ Թիւթարայ Թիւթիւնայ պատմա-
գիրք, եւ միւն տը՝ Սրպէիանց պատմա-

թիւն ի թմա՝ Սա. Թրպեղեանի 44: գրաւոր
 Թեոքրոս Երեցոս Կեդրոսի վարաց իւն),
 այս է պատմապիբք ի մի առաջի:

Իստեք շատանդուն սրբնապետան եւ նոյն
 վանքին մէջ նոյն Վարդանայ յանձնարա-
 րաթեամբ: Ինչպէս թեան արժանի է սր
 երկոս սրբնապետան մէջ այ կը յիշատի Վրաց
 պատմութիւնք, որով կը յաջանաս ծաղարմք
 Ի. սրբնապէն:

Այս սրբնապետք, շկան տշմ շրապա-
 րակի վրայ:

Ե. Էջմբանի Թ. 1686 (Կ. 9 1614),
 պատմ 1675 թուին Մարկոս պրշէն. տեղն
 տննանթ 14ք յովանդակէ՝ Ե. Եղիշէ,
 2. Ղեւոնդ, 3. Եւկն, Մարկոսի, 4. Ի. Թ. Թա-
 րեւադի, 5. Դաշանց թույթ: Հմմտ. Ի.
 Թաք. Պատմութիւն Հայոց, 4րդ. Ի. Թեո-
 քեանի եւ Ի. Թարաթիւնեանի, Տիգրան 1613,
 էջ 167:

Դ. Կարապետ արքեպիսկոպոսի սրբնապե-
 թ Տիգրան Թաքարդիք- ուր կրնի՝ 1. Ղեւոնդ,
 2. Պատմ. Վրաց, 3. Թապիկ, 4. Կառնիվեք-
 ապի, 5. Զեհար Դուար: 2 Մատենաւոս շուքի
 յիշատակարան, այլ շմարթէր շնարդն յի-
 նեյ յոն 9200 տմա՝ տեղեկութիւնք 2. Ե.
 Թէթեանի՝ Թարգման, Թուրակ, Բ,
 էջ 202: Բայց Բրուտ տեսած է ինչ պրշու-
 թեան թուականը՝ 1673 (Rapports, III,
 p. 63): Զեարդիքս սղուք է փնտռել տշմ
 Էջմբանին:

Ե. Վեհեանիկի Միսիթարեանց Թ. 218,

թղ. Ձեռն—137 (Մարգարեանի՝ Յուսյան, Բ. էջ 277)։ Արտադրութիւն Տր. Թ. Ն. սրբնական՝ Հայաստանի եւ. ե. Ալիսեանի, 1836թ.։

7. Պարբեր. Bibliothèque nationale/ Supplément arménien, 49 (տե՛ս Maclet, Catalogue, Nr. 209, էջ 116)։ Հանդիսանի Թ. Ն. Ձեռնարկն, սրբնականի եւ. զ. Շահանազարեանի։ Ասոր վրայէն հասարակած է 1857ի Հրատարակութիւնը (տե՛ս էջ 6)։

8. Պետերբուրգի Աստուծոյ Մատենի սրբնակը. «copiée sur le manuscrit de Mgr. Carapiet, archevêque arménien de Tiflis», par Jean Nazarof. L'original était du XVI^e siècle, 1842։ Այսպէս ծանոթացում է ձեռնարկն մէջ Թ. Տրուտ, որ հարկին ստացողն էր Ձեռնարկին տե՛ս Maclet, տնդ, էջ 115)։ Զայտ ուղքի ասիւն ունեցում է Պատկանեան՝ իւր սուսերէն թուրքականի ծանանակ (տե՛ս Բաւարդուր. V)։

9. Պարբեր. Bibliothèque nationale/ Suppl. 110 (Maclet, Nr. 208, p. 115) սրբնականի եւ. E. Dulaurierի, 1851թ. Թ. Ն. Ձեռնարկն։

10. Գ. Եղեանի սրբնակը. գրութիւն իւր. գրութիւն՝ հր. բաժանեցակի։ 1. Թ. Խորենացի, 2. Աստուծոյ, 3. Լուսաբերութեան, 4. Եւսեբեոսի Եկեղ. Պատմութիւն, 5. Այսթանուկեղոս եւ Դաւանդ թուրքի, 6. Մեւրոսի Երկ, 7. Ձեռնար, 8. Փ. Թեւոնի, 9. Եղեղի, 10. Թա. Որդիական, 11. Պատմութիւն Հայաստանի իւր

չին, 12. *Սոկրատես փառք*, 13. *Միք. Քսոքի*, 14. *Վարդան*, 15. *Կիրակոս*, 16. *Թովթ. Մեծ* Ժողովրդի և Երկրորդ գրչի, 17. *Սմբատ Երրորդ գրչի*, 18. *Չեանց Ստեփ. դշուխտ պահաւ. Երրորդ գրչի*: *Ձեռագրեր մասին առաջին Ստեփանոս Ստեփիկ*, ևրաւ. *Ս. Մարգարտեան*, *Պատկերաւոր լեզուն*, էջ 17—18: *Սրբինակի փրայլն կատարուած է Աղեանի չրատարակաւթիւնը*: *Մերին Քրաւ* (Քրաւրտ, III, p. 32): առաւ իր պաշն էջմիւսնի մասանայարանի մէջ, չոն զանաւոր. և իսկ. աշմ, արմիւսեւ. *Աղեանի Մատենապարան* փոխադրուած է էջմիւսնին:

11. *Էջմիւսնի կարիւնեւն Սուրան*, 1680. *Վիւսնայեւ մեծ փորդապետի Պատմութիւն Մարմանի քառաւայ մեծ քաղաքի, գրեւոր ի թղթի ի Մարգար. ունի զՄարմանի պատմութիւն ևւ և զպանկե. շոնի զյիշատաւ կարան. ի սկիզբն ունի զթերութիւնը: Սուրանայրին աշաւ սուրբը կտակածիք ևւ. աւղեկութիւնները ևւ ևւ իւր թ. 1681. *Ձեռնագրին* (= մեր թ. 1): *Պէտք է յննել Ձեռագրիք ի մեղմաստ*:*

12. *Վեւեւիկի Միսիսարեւն Մատենապարանի Ա. սրինակը սուր, թերի սկիզբն ևւ փրչիւն. առաւ աշաւ մասին իւր ժառանգրը չաւկապետ լեզուի. Ա. էջ 14. S. Somai, Quadro della storia letteraria di Armenia, Venezia 1829, էջ 62:*

Սրա ծանօթ սրինակները կարելի է չաւ մախմիք աշուղն.

Գրադարձությունը արժեքների

1, ԷՃԺ Խ 17.02

Վերականգնողականության և արժեքների

10 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

11 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

12 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

13 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

14 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

15 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

16 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

17 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

18 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

19 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

20 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

Գրադարձությունը արժեքների

11 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

12 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

13 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

14 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

15 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

16 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

17 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

18 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

19 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

20 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

21 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

22 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

23 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

24 - ԷՃԺ Խ 17.02
 Խ - արդ. 1888

բնական ազգի յարթոյ։ Սոսիւն - Կարճատեւեցի
Թ - 1722 թ. մէջ հայտնի է անգամ մը Վիւսնոյ
պատմագիրքը, և ստիչ անգամ Վատմու-
թիւն Ղեւոնդեայ։ Վարդան Բագրշէկցի կը
գրէ. «որ կայի Ղեւոնդ պատմագիրք» - աշու-
տէն նաեւ Սիւ - Սիւրբիւնեցի և Ստմուկ
Անեցի։

Շնայոյն սրբնակի տոմարին թուոյթը,
ինչպէս նկատեցինք, վնասուած էր. և
կապուպն իւրի տեւան էր գերաւորն արատ-
դիւն։ Թէ որքան յաջողած է ատկցմոյ
գիտութենէ անքննելանցի եղած սկզբնագիրք,
դժուարին է հաստատել ստացութեամբ։
Սոսիւնեան զմէն գործապէս յարջա-
քութիւն տեսնուի է ինքեւն, որոնք միա-
րան Վիւսնոյ երկչ գիտեն, կը ծնան յո-
ղէն կտակած յնայրի գիտութեան մտ-
տին։ Սրիւնայի է նաեւ Վատմագրու-
թիւն, Ասպիկ եւ Կիւսկոս, նաեւ Սոսիւն.
Կարճատեւեցի իւր յիշատակագրութեան մէջ
Վատմութիւն Ղեւոնդ երկչու, Վատմու-
թիւն Ղեւոնդեայ կ'ընթերցան. աւարտ ար-
դիւն է Շմուտի գործապէսի կամուրջա-
նութեան, ոչնչպէս կտակած Վիւսնոյ պատ-
մագիրք յարջաքութեան։ Կարագրին շնորհ-
քաւարան ասպերու մէջ ոչ կը նկատ-
աւորն կուսնուի ինքեւն, մանք
յաւերութեան և յապարհութեան։ Սկզբն
կիւսկոսի տեսնանք գրուի կ'արտա-
գիւմ կարգայ։ Վատմութիւն Ղեւոնդեայ
երկչու որ յապարհ երեւոյն Ստմուկ և

տի ուսակալացն ուր գննի հորին. և թէ ուր
պէ՛տ կամ արագ որինեկուս թիւեցին անեցե-
րաց, և զիկն իմէ զպոնկիմ ընկ ուխտարեա
ումենացն. և ասուէ՛ր նոս ընկ ապց-
Հայոց¹¹ : Այս ևրկար վերնացիբը, որուն
նունով կ'ընկայ Գտնմանեցի, կարոց է
հին բոցոյ, թիւեա գրումն նախնարար իշխե-
խառնարանութիւն մը, պիտակարգութիւն մը
աստի՛րն պիտոյն կամ յառաջարկեալուն
մասերին : Սակ վերնացիբը կամ յարժո-
քումը Ղեւոնդի մասենին պահուած է պիտին
գերիբ : Եկառարեցաւ վարդապետարանի¹²
Ղեւոնդի [Էրիցա] վասն մասնակարգաց
ումնա Թուրքումն՝ ի նրամանէ անուան Շապա-
հն Քաղաքաւանաց : Մասնի է հին պիտա-
գիտեարա աստորութիւնը՝ պիտ պիտին վերջը
գրութեան խորացիբը :

Ետնացարեան խորացրած է իւր ապա-
գրութիւնը շէրշառնի Արարացոյց ի Հայս,
արարեալ Ղեւոնդ վարդապետի Հայոց :
Թեկ Էդիտի ապագրութիւնն ունի Եկառ-
մութիւն Ղեւոնդեալ ժեհի վարդապետի :

¹¹ Հիմա Որով իմ Հասնայ ա իւ իւր-
ման : պատմէ՛ր նախ զհայրենեան պիտն յառա-
քան իմին նախնայ : և որ ինչ պիտի պի-
տեաց : թէ աստի և կամ պիտի և կամ պիտի
և կամ պիտի անպիտեցին : և :

¹² Հիմա Որով իմ Հայս ունեան իւր իւր-
ման իւր պատմեալը՝ վարդապետարանի
[անպիտե պատմութեան] Արարի [Էրիցի] :
քիտեցեալ զիւրպետայ ապիտ : վասն իւր
մանի, իմ պիտի Էրիցա արար Հայոց մե-
նաց : և :

Ուղարկած էր: — Այս — Միսիյէր Կերասեւ-
յով խորագրերը, որ կը խոտորենայ պատմեց
Կաթ Երանգա Մանսեւի, կը պրկ. շարագ-
նեւեւ ձեռքի նաւան պատմապարտ թիւեր Մար-
մեւի, միայն քան յի պատմեւ, այլ մար-
պարկին մանաւանդն կը սկսի, նախկին սկիզ-
բին մաս մը կորստեան յայտնա է: Աւանդ
Միս - 1888. էջ 123): Աւանդն Կաթ Գ.
Պատկանեալն զմէջէն է նշանակելի ի մի-
նապիքս պատմութեանն Ղեւնդեայ է: Դա-
պագա կեանայ է պարծայ Մանսեւի նաւեւ,
յայտ Պատմութեան նախ սկսանի թեւ է:
Իսկ մտնումը մարդարկին Տաւկայ: Ի յա-
յապարտութեւ նախապատմեան քանիս նաւա-
րկի է. թէ կամ թեքի է Պատմութեան
Ղեւնդեայ ի սկիզբն, կամ միւրեւորին յա-
նայ մամուկի յայտնա է պարծայ:
Պատկանեալն էջ 118. Եղեւն, էջ 171):
Երանգապարտն կը պրկ. խորագրերս տը-
թուի յայտնէ նիւեւայ: Պատմութեւ,
էջ 11): Այս կտակարար արգարացի է: Մը թե-
մայան, ո՛ր յաւաքարանակարն մտնա է
ա՛յ թեւ պատմաւորս սկիզբնայարտ թիւն
ունի Մանսեւի:

Շեւի է նաւեւին: Երբ է Միսիյէր
Մանսեւի անուանեցան: Զի պարտն ան կա-
րեայ դիւրեւութեւն Մանսեւի՝ մեւանի: -

(1) Պարզա՛յ՝ Կաթ ի-յանըն կամ Կաթարտն
Կեթարտնային կիւր: պր. է Միսիյէր Մանսեւի
(L'Émir-ah-mansour - ի-յանըն Կաթարտնային) -
Տաւկայ:

Քննադատի մասերով էր բացուի աշխ Պէկանդի
պատմութիւնը: Եթէ նա չի ճշտմանէ աւա-
տան Շտայնից Բաղրատուհայն յարցաբան
է մեղադրելէ պատմական աշխատութեան,
պատշաճ էր որ զիջի համարտարաւ թա-
նայտեան մը, տեղադրութիւն մը իւր յան-
մատարման մասին, կտնտէր գնահատել պար-
նին սկիզբը, ինչպէս, արիւնկի համար,
Լճ. Արեւնայի գիտցած է Խնայի մը պատ-
շտնեցիկ իւր պարմին սկիզբը: Արովնտե-
այնայի տեղադրութիւն Լճեկնասի մասին
շեւի պարմին բնիկացիին, եւ կը պակսի
հան, աւարտական խօսք մը պայման
գիւղը: Ստորին պիշ կամ իր պայագիւր
արիւնկը հասանորդն թնայնական մասալն
իւրացումսւ եղան թէ Պէկանդ Շտայնի ճշտա-
մանաւ տեսն է պիշը մեք:

Պակաս է ոչ միայն այս թնայնականը,
այլ եւ Լճեկնայի կեանքի եւ շեղանկայն
մասին շեւի տեղադրութիւն, պարանկա-
մէնը կը տես, իմանայի թնայնայն համար
Լճի խաւ-Լճեկնայի ծագումը եւ տեսնա-
տարակ տրտման տրտմիքի սկիզբաւո-
րութիւնը հայ բնիկացիներուն կամ իւր Լճ-
կեանքին:

Քնն Կոտկոտը աւելի է՝ աւելցանքն մեք
մէջ Լճեկնայ, Լճեկնայ Լճեկնայ եւ Լճի-
թալ Լճեկնայ: Գիւղինս յարգումնարար յա-
տալ թնայնի Պէկանդն տոյնը աւարտական
տոյնին տրտմանքնարմ մասին, կը կցի
անտեղ Լճեկնայ տեսնին որ սու պայման

առաջանին, առաջին իշխան եկաց յժամաշե-
յացունն: Քաղաքին՝ Թ՝ ամ. Եմբան՝ ԺՄ ամ.
Խաւմէն՝ Թ՝ ամ. Բարաքա անկը Խաւմէնի՝
Թ՝ ամ. Առաւար Էդեա պարտան՝ ամս Ժ: Աս
ակոսա Էյանէյ Էս աս քաղաքաւն: Ի Քաղաքի
մինչեւ յԷյանէյն Էին ամբ ԷԷ՝, սրտէն Էս
Ղեւոնդ պատմաւորին զսոյն վիտել: Էս աս
թէ չէ՛, ամի իշխանութեան Էյին յԱռաքիս
Էս ի Հրէաստան. Էս ի միւս ասին Էյին ի
Պարսս Էս ի Հայս, քննեցին գառաշտան Պար-
սից զմարտերս Շաւրթարեան¹⁰, Էս մարն
յաշխարհի Հայաց քնն Կողմն Պարսից:
(ԷԷ 45):

Ղեւոնդի քով Էր պակսին այժմ Քաղաքի
Էս Եմբանի անունները: Էր յիշուի միայն
Խաւմէն, որուն իշխանութեան ասորինքը
քան Էր Էյանակոսին, ասուն մինչեւ փառ-
խաւար, այս ինքն Հիւրէի ասալին ասորին
(452): ասալի մինչեւ մասն (452) Էր ասա-
լուի անդի (30) ասորի. այն է՝ Քաղաքի Է:
Եմբան 12, Խաւմէն 10—30 (շմտ. Էս
Խամ. Անկի 81—82): Բայց Խիթիմարի յա-
ւաթերութիւնն աշնակա երկիմաստ Էսով
է, որ պատարին Է յեցան անոր վրայ յանդի:
որոշ Էրապարտութեան մի ի նպաստ Ղեւոնդի:
Անկիւոյ քով Քաղաքի Էս Եմբանի յիշա-
տակութիւնը ասրիւ ասորիս Էնեթաղի:

¹⁰ Ղեւոնդի այժման ընտրի մէջ չի յիշուի
Քաղաքի անուն կից Առաքիսեան: քաղ Քաղ-
ճարս ասալի որդի Էր Շաւրթարի. շմտ. Tahari,
von Nöldeke, Leiden 1875. (Է 220—240):

Մեղի ոչմ կու սառ, սակայն Աստղիկ (ՀՋ 115): Վեժիբար-Մուսնիքն Տանկաց ևս որ ինչ յաւարտ նաչա գործեցաւ: Այլ դարդի ինչ յառաջ լաւն դժուին Սուրբուհու († 628), յութերարդ ամի Հերակլէսի կայսեր (616) և ի ԿԸ թուականին Հարաց (619), Էրեւնացաւ Մանժեւս ի Զրաւաւանի (= Տանկաւաւանի), որդի Արդյալի, մարդաբի Տաւնկաց... (Զապուաւանիք Սերբուհի և Ղեւնդղին): Իսկ Մանժեւս յետ երկու ամի իւրաքանչեւ իւր-մեւանի ի ժիւ ամի Հերակլէսի (621¹²): Աս փախանորդի գիշիւս նութիւնն Արարտար, Սթման և Աժր՝ ամս ԼԸ: Աստղիկ, որ տեսնցան է աշտ ասպերս, համար ազրիւր՝ Ղեւնդի Ա. գլուխը, գիտէ ոչ միայն Մանժեւսի Արդյալի որդի բլլայը, այլ ևս տեսը Էրեւման թուականը՝ Հերակլի ութերարդ ասարին: Արեւուսէն մինչեւ մահը 12 տարւոյն անժրայիւս կը գնէ (Ղեւնդղուի ի), որ պարզապէս ձաղան է անկէ, որ սխալ իմացան է Ղեւնդի տոգերը և աշտ հասկացողութեան վրայ հիմնան իր ժամանակագրական հաշիւը: Այս սխալը ոչնչութեան կարեւոր չէ, որքան անոր ծանոթութիւնը Մանժեւսի տեղի չորթը, կտրկաւուն ասկտաւախա բառերու մէջ ոչ, որ հիմնուած էր Էրեւնայ Ղեւնդի վրայ: Թերեւս նաեւ կիւրակաւ Դանժակցի, որ իւր ազրիւրինուս մէջ կը յիշէ յանուանի զՂեւնդ, Մանժեւսի տեղի և գործոց մասին գրան մամուռի (ՀՋ 32—34): Եւրի առիւ, տեսնցան բլլայ

Կանա Ղենոնոգի տեղեկութիւնները Խորագա-
րէի մասին: Քաղմայ Լեւոնոնի գիտել եման
«Խորագան» Բաշմաթի տը տնունը (էջ 121).
բայց դժուար է հաստատել թէ Քաղմայի
ճանաթ հղան ըլլայ Ղենոնոգի մասեանը:

Ինչպէս ալ ուղեւոր մեկնել, այս խնդիրը,
անմիակէի կը Բիւր, թէ Ղենոնոգի մասեանը
սկիզբէն կարուստ մ'ունեցան է. այն տեղ
կար ընծայական մասը մը եւ դրուի մը
նուիրուած Բաշմաթի երեսման:

Սնոգրոյս ուրիշ խննդ մը տալ փորձեց
Շ. Բ. Խորագիւտան, որ «Անանունի կամ
Կեղծ-Մերիսի» կարծուած հանդարտ ըս-
նել աշխատած ժամանակ աշտոյի միայ
մը հրապարակի գրայ գրաւ («Բաղմաղկոյ»,
1912, էջ 25—26). ուսնց խմանակից ըլլա-
լու իր տեսութեան՝ կը ներկայացնեմ ցալն
բոս առ բաւ):

«Դրուածիս [Մերիսի Լեւոնոնոնի]
հեղինակն է, բոս իս, Ղենոնոգ երկը, եւ
ժամանակագրութիւն [— Լեւոնոնոնի]
կը գտնուէր տնոր Լեւոնոնոնց Պատմութեան
սկիզբը — գալն աւելի ընդարձակ ծաւա-
լով: Այս խնն կը հաստատուի պատմու-
թեան հրապարակութեամբ, որ ալ միայն
կը պահուի ո՛ր եւ է Աստուծոյն, այլ եւ
այն տեղէն կը սկսի Լեւոնոնոնց պատմու-
թիւնը, ուր կ'աւարտի Անանունի [— Լեւ-
ոնոնի] Բ. գաղութիւնը: Դարձեալ պատմ-
ութեան գերջորուն յիշատակարանէն տեղ
յայտնի կը տեսնուի, թէ այդ գրուածքը բաւ

չորսովի տարբեր տիպոս կը կրէր ի սկզբան իր վրայ — բան ինչ որ տպւում է ի Պետերբուրգ 1887 ի նրաստորակութեան յանդատին վրայ. — այսինքն. «Պատմութիւն Ղեւոնդի վասն ժամանակագրաց տան Թորգոմայ: Կիրակոս Վերաւստայ: Կեանքն էս կը յատկացնէ տաղանքն վրայ. Կեանքն Երեւոյ Պատմութիւն. . . որ զոր ինչ գործեցին Ման՝ մէկ էս. աթոռակաշք Զորք ընդ աշխարհս ունեան էս. տաւել էս ընդ ազգս Զայցոյ: Ընդ՝ պատմական այս Երկու տաւանքն ինչ կը Կեանք, որ Ղեւոնդի գրած պատմութիւն» Երկու «Խալուս խալուս» կամ Գիրք ընդ յայկացւոյն էր, որոնցմէ առաջինը — որ կը կրէր վերի մեծատառ վերապատմութիւնը [իմա՝ «Պատմութիւն Ղեւոնդի վասն ժամանակագրաց տան Թորգոմայ» տրայտուպէն Զայցոյ ժամանակագրական պատմութիւնը կը պարունակէր մինչեւ 1877 թ. թուականի վերջին, իսկ Ե. պարսկութիւնը՝ Մանմէկէն սկսեալ, որք տակաւն այժմ կը պահուի էս յաջորդաց պատմութիւնը կ'ընէր մինչեւ ցայսմ 1887. Զորքայրուած (— Կիրակոսի յառաջ ընտան) խորագրի ներքեւ:

Պ. ի սկսելու ինչ ինչ մասնակցի:
— Եղևան Կեանքն ինչ գործեցին՝ ըստման է Ղեւոնդի Պատմութիւնը Լեւոնդի. պատմական. Զորքայրական տակաւն ինչ նկատման ինչ Զորքայրին մէջ Զորք ըստման Լեւոնդի. Զորքայրական է ինքնակամ ըստ ըմաց

յուս միջին խաւք բլլտք Ալի ամիրապետի և Մուսախանի մէջ հզան խնդիրներու մասին։ Թղթի մը համ տողերու անկում տեղի ունեցան կ'երեւայ լէ 11. տ. 15. ուր բնդհաւ տում մը կըրան ի ամիրապետներու սպիւղ յաջորդութիւնը։ զորս մնացան ևն Մուսախան Բ. (686) և Մրտան Ա. (687—688)։ Այս անունները կը պտկոտին նաեւ Քալմա Արեւունայ (լէ 101) և Ասպիկի (լէ 122) ցանկերու մէջ։ Թերեւս Ղեւոնդի աղբիւրք թերութիւն անեցան ի հաւ։ Պատմական մտք ուրիշ կողմանէ զգայի թերութիւն մը ցոյց չի տար։ Այս ծաւարով գիտել զայն նաեւ Ասպիկի (լէ 124)։

Բայց բնդմիջաբնութիւն ևն փոք. — ԺԵ. գրութեանը և թղթերու հաւաքագրութիւն կու լէ 103—112։ Այս մասին տե՛ս վարք 56)։

Ա Ն Բ Յ Մ Ր Մ Ո Ս Ի Յ Ի Ն Ի. — Այն յանկարծական վերջաւորութիւնը սրով կ'աւարտի Պատմութիւնը, յայտարարին տեսչականի ի Ղեւոնդի գրչի տակ։ Ղեւոնդիքները յայտնապէս կը գրեն թէ չկատարեցան։ Բայց ևս չեմ կարող հաշտուիլ այն մտքի չեւ, թէ մեր խորհող և զգանուող, իրատեսրանող և ողբացող պատմիչը աշակտ յանակնկալս բամբուէր իւր անկնդիրներէն, ստանց վերջին հրամեշտի խաւք մ'ազդեցու անանց։ Ինչ կը թուի թէ Ղեւոնդ գրած բլլտքու իր հուսկ լան մը, ուր թէեւ չի տեսնուիր ոչտար իր Պատմութեան արինտններուն մէջ, բայց այն կտր երբեմն սկզբնաւ

[illegible]

Ինչի՞նչ է՛րեւոյն թէ ասն Ռոբերտ, ուր կըցուան
է Ռոմօւէն ինքնինսոյն, շարունակ պատմութեան
մէջ, իւր շարունակական մեծի մէջ միտքը տարա-
նակականն էր Ղեւոնդի Պատմութեան:

[illegible]

4. ՀԻՄՆԱԲԱՐՈՒԹՅԱՆ ԿՈԴԵՔՍՈՒՆԵՐԸ, ԹՄԲԻՄՔՆՈՒԹՅՈՒՆՆԵՐԸ, ՔՆՆՈՒԹՅՈՒՆՆԵՐԸ

Այս օրոք քանի որ մենք չենք ունենում
 և՛ ժամանակ, և՛ փող, և՛ արտադրական
 քաղաքականություն:

1. Արշաւանք Աբարայ Ի Հայո. արարեալ: Դէտեղ վարդապետի Հայոց: Ի յոյս յնծաշեաց հանդերձ ծանօթութեամբս Կարապետ վ. Շահապարեանց: Փարիզ 1877, 80, էջք 240: (Շար. Հայ. պատմագրաց):

Die H.-inschriften, welche mir Hr. Petermann, Zeitschrift der deutschen morgenländischen Gesellschaft, 1861, S. 397—398:

21. *Quercus muhlenbergii* *Quercus muhlenbergii* *Q. muhlenbergii*

գաւրգաւորեալ շաւոյ. Բ. աւոյ. Վերաւարտա-
կութիւն Կ. Եղեանի). Ե. Պեւեղբոյրք 1887,
80, էջը 29 + 201: (էջ 17) — 186: Նախաթու-
թիւններ և էջ 1 — 2 է. գրուածք ժր Խաչ-
մաւի և Բժիշկաւորներու գրուածք):

Բ. աւոյրքութեան «թիւ» Fr. Müller,
Wiener Zeitschrift für die Kunde des Morgen-
landes, 2 (1888), էջ 175—178 (= թարգմ.
Հանդէս Բժիշկաւոր 1888, էջ 128—129),
Բժիշկաւոր 1888, էջ 326—327):

3. Histoire des guerres et des conquêtes
des Arabes en Arménie par l'éminent Ohié-
vond, vardahed arménien, écrivain du
VIII^e siècle. Traduite par Garabed V. Chah-
nazarian et enrichie de notes nombreuses.
Paris 1876, 8^o, XV, 161 pp. Ծանոթագրեալ
տառքին տեղում այս թարգմանութեամբ
ձանթաւարց Ղեւոնդի մատենից պատկան
աշխարհի. Հայերէն բնագիրը աւարի ժր
չկայ: Ժխալի և լատ. Վերաւարտակ: Թիւրքի
Պատկանեալ նկատած է իւր տառքին
թարգմանութեան յաւաքարանին (էջ V—VI)
և ձանթութիւններու մէջ, շատ տեղաւոր-
եալ է Ծանոթագրեալի այս թարգմանու-
թիւնը, ուր թարգմանիչը տառեց կոպուե-
լու բնագրին՝ ինքեակում ազատութիւններ
չնորում է իր գրչին և տանիչը մեկնու-
թիւններով փոքման է յաւաքանիչ բնագրին
միւս թիւներու: Ծառ տառքի խնամով կո-
տարուած է տառքին թարգմանութիւնը
Բ. Պատկանեալի մեւրով: — Գաղղիերէն

Քարդմանուս թեան տաթիւ J. Mohl-ի տեսած
կարճատև զեկույցածք տե՛ս բնագրով և
նախընդ Քարդմանուս թեանը *История*
Армении. 1856. Հջ 243—244:

1. История Халифов в ардагана Ге-
нонда, писателя VIII века. Переводъ съ
армянскаго (переводчикъ: К. Патканьянъ)
Санктпетербурга, 1862. 84, XI, 168 стр.
(Հջ 118—165 ծանոթութիւններ):

Փնտրիքներ Ղեւնդի տե՛նէ և դրու-
ման մասին:

1. Ernestus Filler, Quaestiones de Leon-
ti armeni historia. Lipsiae 1903, 8^o, 38 pp.
(Diss.): Եկտեմի կ'առնէ յոտկոտկո Ղեւնդի
մեծանախագրութիւնը:

2. Ջերբհանէրտե Է. Կ., Պատմութիւն
Հոյհեմեան Նին պարտութեան՝ Բ. տղ. 1897.
Հջ 478—480:

3. Է. Ղ. Այդեան, Հայապատմութ. Ղե-
ւնեթի 1901. Հջ 74—75. Ետեր արտա-
տպում՝ Է. Ա. Ղապիկեան՝ Հոյհեմեան
նոր *Ծանոթագրութիւն*, Ա. Վեհապիկ 1909.
Հջ 1652—1654. տե՛ս և Հջ 1649—1652 յու-
ղուտն ընէր Ա. և Բ. աղագրութիւնները
յառաջարաններէն):

4. Hagop Thopdschian, Die inneren
Zustände von Armenien unter Asot I., Halle
1904, Հջ 4.

Օգնական աղբիւրներ: — 1. M. Gha-
zarian, Armenien unter der arabischen
Herrschaft bis zur Entstehung des Bagra-

tidenreiches. Straßburg 1903, 8°, 87 SS. (Diss.). Հոբո լոյս առնուծ՝ Zeitschrift für armenische Philologie, II (1903).

2. Hagop Thopdschian, Armenien vor und während der Araberzeit. ZAPh. II, 1903, S. 50—72.

3. J. Laurent, L'Arménie entre Byzance et l'Islam depuis la conquête arabe jusqu'en 886. Paris 1919, 8°, pp. VIII + 398.

4. J. Marquart, Osteuropäische und ostasiatische Streifzüge. Leipzig 1903, S. 436—465 = Հայ Ռուսաստանեանց ճիւղապրութիւնք ծանօթութիւնեղոյն գրեց Պրոֆ. Դիմ. Յ. Սարգսեան, գերբաներէն թարգմանեց Հ. Ս. Հապոյեան, Վրէժնա 1913, 8°, ԺԵ, էջ 68:

5. Р. Р. Фасмер, Хронология наместников Армении при первых Аббасидах. Записки коллегия востоковедов при Азиатском музее Российской Академии наук. Том I (Ленинград 1925), стр. 381—400 = Թ. Ֆասմէր՝ Հայաստանի ուստիկաներու ծանօթանկապրութիւնն առաջին Աբբասեանց որով. թարգմ. Հ. Վ. Ինգլիզեան: Հոն Գ Է և Ամստըրտըմ, 1928. էջ 44—50. 157—168, 258—270:

4. ՊԱՆԾԱԳՐՈՒԹԻՒՆԸ

Թ ա Վ ա Ս ղ ա կ Ե ի Ն Ս Ը Ը : Թէպէտ ժամանին վերջը Վարդապետութիւն գտան ժամանակագրոց տանս Թորոսմայն, կը ներկայացուի Ղեւոնդի աշխատութիւնը, որպէս թէ նա Հայոց ժամանակագրական պատմութիւնը նկարագրած ըլլայ աշն ժամանիս ժէջ, ըստ յիշատակներն կը պահենք ժենք հոն ժամանակագիրքը մը տանն Իսմայէլի, աշն է ժամանակագրութիւն մը արարական ամբարտաւանքու յաջորդութեան եւ անոնց արմ նուաճութեան երկիրներու ժէջ տեղի ունեցած դիպումներու : Այս տեսակէտով Հատ ազգի պատկերացման է տեղը յոգնեցածութիւնը կիրակոս Գտնակեցի, Վատմութիւն պար թիւ գործեցին Մանմա եւ արտապատկեր նորտ ընդ ուշաւուն ամենայն, եւ աւաւելի եւս ընդ ուղղո Հայոցը կարելի է նկատել նաեւ Վատմութիւն վարուց եւ պարմաց իշխանացն Իսմայէլի, որովհետեւ ամբողջ ժամանակագիրքը կ'ընթանայ ամբարտաւանքու յաջորդութեան կարգով եւ աւանց արարական եւ պոթեմ գործերու եւ ուղարատան վարքի նկարագրութեամբ. Ղեւոնդ երեք անգամ գործածած է բացատրութիւն. «եւ աշն վարք նորտ (էջ 14, 31, 40) եւ մի անգամ կերպիւցիք համար պրած է. «կարեւոր գիշխանութիւնն աշտպիսի վարք» վարանակը (31) :

Ղեւոնդի Վատմութիւնը 150 տարուան

առանձին սահմանները և պրագմա՝ է երկրին նստահմամբ: Բնորոշեալ Պէտեղ յանձնած իւր հաւն աւերապատկերութեան հետեւին հասանքին կը նկատուի յաւանք՝ երբեմն արտաքէն երբեմն ծանր նստարկութեամբ: Ընտանացարձին կը յաճէ նա իւր շնորհապատկ աշխարհ աջ և ձախ, կը գննէ, կը հետապնդուի, կ'ընդունի արտաքութեաններ, և կը պարզէ գանձեր իւր յաւանքներն ձեռք: Երբեմն կը կոխէ ջամար՝ նա հասան է արդէն իւր նպատակակէտին: Բնորոշեալ ինքնորոշեալ կանխորոշ աշխարհին աշխարհ է Բնորոշ (Հասարակութեան): Հաւանքներ կը հետն աւանդաւորութեան ինքնորոշեալներու, և կը պատկերներու առկա: Երբեմն կը ծագուի արտաք, մինչ մէկ մասը իրաւոր իրաւոր կը պարզէ պէտք ինքնորոշեալ հաւանք, միւս մասը կ'արդէն իւր արտաքին կեանքը, Բնորոշեալ հաւանքներու հաւանքներու առկա, որ նա իրաւորութեան է աւանդութեան պատճիւ վրայ: Բնորոշ կը իրաւոր պէտք Պէտեղ:

Բնորոշ արտաքներ աշխարհին արտաքներ է իւր պէտքներու: Երբեմն նկատուի արտաքներու արտաքներուց առկա է իրաւորութեան, և կ'արտաքներ առկա առկա առկա կ'արտաքներու, արտաք մարտեան իրաւորութեան Երբեմն արտաքներու, Երբեմն և իրաւոր արտաքներու, իրաւորութեան և Երբեմն արտաքներու առկա մանկապարտներու վրայ, Երբեմն և արտաքներ իրաւորութեան, Երբեմն և արտաքներ

են մինչեւ անդամ Հիւսիսային Կովկասի եւ
Հենտկոն Կառնիսիոնի վրայ անցի ունե-
ցած գնդերը: Բայց որովհետեւ իր ան-
սովեան տեղի մերձեցած է Հայաստանը,
սուսեցաւ այլ այլ երկրի իրաւարժանութիւն-
ները պարտած են իր աշտարակներէն եւ
այն յատկապէս միջապային զապարտեալ
տանջութեան մէջ: Թորոքմայն ասան ներքին
խեղճերէն, ասանին վէճերն քնաւ կամ
դոյզն շտապ միայն հետաքրքրած են գինը:
Իր մասունին նշանակաւոր մէկ մասը լիցու-
ցած է Լեւան Գ. Բոսորոցոյն պատմութեան
Ռմար Բ-ի թղթին, որ կրօնականօրոտոտ
պովական պարթիւն մըն է եւ կը մղտի հե-
քի մանկեղանն աշխարհաշինչանքերը
քրիստոնէութեան մասին (տե՛ս այս մասին
մտքը):

Գ Ր Ո Ն Ե Ղ Ո Վ Մ Ո Ւ Ն Ս Կ Ր: Պէտեղ
իւր Պատմութիւնը պարտ է երկու հանդուր
ցով: Առաջին ճեղքարկութեամբ պրի ասած
է իս անցեալ շրջանի պատմութիւնը մինչեւ
իւր սրերը, այն է մինչեւ 1714: Այս մտքը
կը հանգնեն այժմ Ա—Դ պայմանքը (էջ 1—
137): Պատմագիրը համարատեսաւ, բայց
զգայուն տողերով նկարագրելի չեաւ եր-
կրին եւ մտածողութեան նաւը եւ յասանատա-
կան վիճակը Արցախ Բ-ի (1714—1715) որով
յատկապէս Կառնիսիոնի որդոյն՝ Հասանի
(1715—1716) կեցեցութեանը, կը վերջացնէ
իւր խոսքը: Վերջ պատմելի ոչ կարեւոր պա-
ղեմիցն պատմութիւնն (137):

Թէ լեզուսն էւ թէ պատմելուս ունի պատշի կերպով կը դախտուին յաջորդ մասին մէջ, ուր պատմելու արեւելի հասան արարիքի մէջ կ'երևայ էւ զէպփորուն ի մերմուսա մաս մանուկեկից էւ հանդիսասեալ: Արեւ տուալին մասին մէջ կը նկարագրելու Երկրին տնտեսական տնտեսականութիւն, յառաջատուական գրութիւնը, որո խառնով պատմելուսն էւ հանդիս կը դախտուին Երկրորդ մասին մէջ կառուի է արեւելի ներկայացնել նորաբարեկարգ էւ աշխարհագրութիւն մարտին հիմնամասին դարձել, յիշեկից ընդգրկումով բուսական հետ բուսականութիւն: Ար արին չի տուր զէպփորուն արեւելքութիւնը, նա պիտի արեւելի թէ հիմնամասի Երկրի վերակը (127), համար է արեւմտութիւնն հիմնականին, որ հանր արեւելի: Այս մասը կը տեղի է՝ պիտի, Եւ սկզբնականութիւնն ինքնին ջալց կու տայ թէ նոր է պատմականը, թէ Եւ Երկր շարունակութիւնն է նորաբարեկարգ Եւ հիմնամասին վերակը հիմնականից զգալիանութիւն արեւելի իմաստի պիտուութիւն պատմութիւնն ի պիտու երկուստ: ար կը յիշեցնէ մեզի Արիտի Գ. պարութիւնն սկզբնականութիւնը. «Ջորաւհանանն հառեկից պատմել...» (Ար. 101):

Ա- մտոր պիտի է Ղեւոնդ տնտեսական հառեկանութիւնը 127/24ին, արեւմտութիւնն յառաջ: Թէ Եւ Արդիտի իշխանութիւնն էւ արեւելքին հիմնութիւնն էւ իրեն (էջ 127),

բայց այն տեսչութիւնը կարող էր նաեւ յետոյ տեղիցուած բնութիւնը, վերջին խմբաւ գրութեան ժամանակ։ Մենք չկարող էինք տեսնել թէ՛ այդ խմբաւ գրութեան շնորհիւ բաժնուած Հեռացումը և մասնաւոր վերջաւորութեանը Ողորդ, որ նախնադար աչա տեղ տեղադրուած էր։

Բ. մասի գրութեան ժամանակի համար տեղինը հետեւեալ կուսանանք։ Տեսանք վերապայել, որ Ղեւոնդ անաւանաւոր էր Սեր ճրագի կարողութեան նախաւորութեան ընդհանրութիւնը 781) և չէր յաւանդուած Սեր ճրագի մասին։ Ղեւոնդ ծանոթ էր մասնաւոր տարիներին և անոր ժամանակի պարտականին յարաւորաբար արտաքինը, որոնք տեղի ունեցան 785—789) և աչա միջոցին բարձրացաւ կաթողիկոսական գահին վրայ մասնաւորաբար, որ երկուստեք ժամանակ մի միմեկին կառավարելու և միմեկին (790) 91) 790) Սեր ճրագի մասին մասնաւոր յարաւորաբար խորհրդով, շարունակաբար, որ խորհրդով միմեկին 91)։ Պատճառը որ պիտի անոր հարաւոր և նախնաւորութեան բարձր, կ'անդիմանաւոր անոր խորհրդութեան տեսչութեան տարիները։ Եւ աչա նա տարաւոր է իւր Պատճառութեանը 91) և յաւանդ, որոնք հետեւ Ղեւոնդ հարաւորաբար անաւանաւոր վրայ տարաւորին կ'անաւանդին կ'անաւանդին իւր հարաւորաբար իմաստաւորաբար, հարաւոր և աչա տեսչականաւոր իւր կարողութեան և իւր Պատճառ

ժամերենք քիչդ շնորհ. այս թուականին ոչ
յառաջ եւ ոչ յետոյ :

Բ. ԱՆՔՅԻՒՐԱՆԲԸ

Ինչպէս կ'երեւայ, Պատմութեան համար
մերքի առկ հարեւոր գրաւոր աղբիւր չէ
անեցած Ղեւոնդ : Եւս գրած է իւր Պատմու-
թիւնը յիշած անանգութիւններու վրայ, գո-
րանք չած է սփ հիմարաւորութեանց
(էջ 158), ոչոյ ինքն ակոսեալաներէլ եւ մեր-
մաւոր ժամանակակիցներէլ : Այդպիսի ան-
գիթ աղբիւրներ կ'անկնարկէ Ղեւոնդ, երբ կը
գրէ. «Մտի, տակն, լուսը, ստաքս եւ այլն :

Գրաւոր աղբիւր կը տեսնուին իր մեա-
քին առկ հետեւեալները, որոնք նպատակ
են անելի իր մտաւոր պարզացման, իսկ
հայթհայթած են իրեն պատմական իրիթ :

Լ. Ա. Դ. Ի. Մ. Մ. : Ղեւոնդ անցիկ սուան
է Աստուածաշունչի իր հին եւ նոր մտածածու-
ներով : Այժմայն իւր պատմելու ունի, ար-
տաւորութիւնը կ'անանկը կը կըլ իր վրայ
Աստուածաշունչի կեիքը, այլ եւ ամբողջ
ժամանակը ողորդած է Աստուածաշունչի
կողմայի շարունակին : Ամբողջական մտքը
հիւստած են հոն մարդաբանութեան ինքնիշխան
առկ : Նոյն իսկ՝ պատմութեամբ կամ տեղի
առկութեամբ, փոխ տեսնած են իրենք եւ
նախապատմութիւններ : Հարց աղեղնութիւն
գործած են իր վրայ մտածաւորապէս մտ-
կարարեցուց գրեւոր իրենց հրապարի :

առն, ուս զնիկ իւ համ-
բառնայ (հարկումն) քնդ
վիւմիմ հաստատանայ. վի-
միմ ինչ ոչ կարէր սահա-
մել: Եւ այ իմէն առ վի-
միմ խորանկեցաւ. էջ
200:

Ճանկը արդարեւ պէտք
թշեամբն: . . . ուս եղևայ
համբարանայր հարկակիւ
քնդ վիւմիմ հաստատանայ.
Եւ ոչ հաստատան էկէզէյ-
ւոյ. վիւմիմ ինչ ոչ սահա-
մել կարողեալ: իմէն առ
վիւմիմ խորանկեցաւ:
Այսթ. 200—201:

Եւ այն առգէրու աղղկեցաթեանն ստեղ է
նաւն էջ 109. «Գալլրսցեալ պարզանեանայր
համբառնայր մարտնչէլ բնիկ հաստատաւան
վիւմիմ: Եւ առ փարսանեան պարսն զմիւ-
վապաւնիմ քարկուրիւն գրեալ:» էջ 110 —
Այսթ. 155. «Նեղկպստաւաւ ծովապաւնիմ
բարկուրիւմը ցաւ ի ներքայս երկնից
ճշեալ: Եւ անց արարեալ գրաւում օրնւում
է. հասանէր ի Եղեալն հասան. էջ 28 —
Այսթ. 160. Իսկ անկէր գրաւում արեւմտ
մեծաւ. արարեալեալ. . . միւր երթային
հասանէին յաշխարհն Բաւալացոց: Եւ Բուսա-
կարոյս եղեցոցն ի կննայ արարեալ:» 151 —
Այսթ. 154. «Եւ անկարոյս ի կննայ անտի
Աստուծոյ: Եւ Երան իրաւաւ. արարեալեան
յրկնաց Քրէիմ:» 111. — Այսթ. 288. «Եւ
իշխեցին յրկնայ Քրէի եւ արեւմտայնի պը-
արեալ:» «Դէմ եղևայ տարաղէմ զնային
փախտեալ յաշխարհն Բաւալաց:» 168 —
Այսթ. 26. «Դէմ եղևայ տարաղէմ զնայ-
ղեալ փախտեալ լիմէիմ: Եւ յաշխարհ
գգրգմանէ արարեալ արարեալ երկնայն
գրաւումն արարեալ արարեալ արարեալ:

140 — *Աղաթ*. 97. անպարզեալ բազում երիտ-
 րորք հեծեցոյ բաշէ տնոսի՝ գրապումս ըն-
 փեցեալ էւ գրապումս աստարուր ետրեալ ստ-
 րակելինն. *Հժժտ*. էւ *Գ. Մազար*. 2. 15.
 Էր գազանքն... գրապումս թ նոցանէ աստ-
 րուր ետրեալ անդէն աւստս իւրեանց աս-
 տակելինն: *ՎԱՅՐՔ* թ փախուստ գաղթեալ՝
 հոգիս ուրեմն գաղլուստ ամծանց գաղ-
 րելին. 147 — *Աղաթ*. 3. ջանան գաղլուստ
 ամծանց փրկութեան գաղլել: *ՎԱՅՐՔ* ցանկ
 շուրջ գաղլուստն ստրկէնս փոսից. 36.
 պարկեմաւ փոսիւ. յոջապատեալ. 148 —
Աղաթ. 144. ժառ թ ստրկէն փոսիւն ուր շուրջ
 գաղլ գրապարան. էւ աշխ:

3. Վկայարանական գրաւածներ: Հա-
 ժապատայ էւ *Մահան* *Արծրունի* եզրաշրջերու
 վկայարանութիւնն յորինուած է յժտեա-
 թեամբ հին վկայարանութիւններու. *Հժժտ*.
 Վարժեղաւ այս յիշխանութեան *Մուսէր*...
 էջ 165 էւն:

4. *Ձեռքի տակ սեւեցած* է *ժեկնուցական*
 էւ *հատան* գրաւածքներ. ա. *Սակերերանի*
Մեկնալ յիւնն *Մատրէի*. *Հարաման* էս գո-
 ռոց իւրոց գաղմէլ սալլս վաշիւք գիւղա-
 կաք... էջինն էւ ուր ընդ վաշիւքն *Քաղաքեալ*
 էինն. 28—30 — *Սակ*. *Մեկն*. *Մատթ*. Գ.
 էջ 65. տես գիւղոց վաշիւքն էւ սալլիւքն
Մեկնութեաց աշխարհին կետեքն վճարինն.
 Բ. *Փիլսոփի* գրու յիւններ. *Հժժտ*. *Քաղմա-*
րեցուն շարութիւն. էջ 48 — *Փիլսոփ*. *Քաղմա-*

քեզումն է շարունակում . . . ստեղծագործող է շա-
րին, իսկ շարն քաղաքագումն : «Այս դեղա-
դէշ էրեւոյս . էջ 128. 131 — Փոքուն . ծառայք
և արտաբնայք պեպեցեղեկերայք և յոյժ դե-
ղադէշն : «Այսպէս թեամք անարդեւ պիտե-
թեամք իդարապարեան . 115 — Փոքուն :
«Եւանջիանք իզարապարեան՝ արդեւարարու-
թիւն : «Այդունէք գամեհեհեան սիրակուն
համարեք ան թիւն . 28 — Փոք . էրեւ . իրք սի-
րակուն համարեք ան թիւն՝ դժբեկեամք
պատասխան արդեւ . դժբեկեանք քաղեպն :
դ . Գրիգոր Նիստուպոյ Բեկեմարիւնն Եւ-
գոյ Երզնայն . «Այս Եւանջն է շաղաքապա-
պեան Առաքելայն . էջ 221 — Նիւս . «Եւ յան-
ժարեանապեան է հոգեւոյ . ստեղծեաց դժոյժ
թիւ ան թիւն : դ . Եւանջիանի թիւն ի
«Զարեհարարութիւն ի քաղաքեան խորհե-
ցար պիւրիստայն . . և զվերինկայ արտա-
նար . էջ 107 — Եւն . թարգմ ժե . «ար-
դեւայ թիւ ան թիւն : «Այսպէս զվերինկայ արա-
քայն թիւն : և . Գալիլի . Զարեհարայ Բր-
յանապարիստայն և յիստատարեւոյն ի քաղ-
պանայն . «Եւանջի արապեանայն մտք և
պարտեթեամք և արարի՝ Կատարէին պար-
կուն մտնու մտայն և պարտեթեան պար-
տեթեանցն ստատարայն ծիսեպա՝ պարտե-
թեան . պարտեթեան թիւն՝ քաղաքեան
131 պարեպարիստայն և զվերին քաղաք-
արեւն . 118 — Գալիլի . «Եւստ . քաղաք
(յարեւ) ի քաղաք գաղաքարեւ քաղաք՝ ի քաղ-
պարիստայն և ի քաղաք քաղաքարեւն . և

Երկրորդին ուրաւ զմարդատեւ յայնքին կապմենէ .
 Էջ 16. Զրաւ . Մ . Տէրմէ կրտշեանի , Վաղարշ
 շապեաւ 1100 : զ . Եյիղար . Նազնանկապաւ
 զյուսիս 00 երկ . Եջրաշաւ ճէշ փոշկարաւ ի
 զհրաւ , Եւ յաւ . 104 . Աստուածաբան ի
 մէկրաւ . Եփեսանակ ախարմիք իտառյն փո-
 շկարաւ Է յինիցիմ ըս : Եւ ալլի :

Յ . Մանսք Է իրեն Իտառյն Ինգարաի Աս-
 րենապաւ , Աշխարհապարտիւնք . Վերթեալ
 յանցիման յինիքն ժիմեանց ի աստման
 Ապառաւն Արարիւն . Յ . Եւր . Աշխար-
 շապար . 611—612 . Ապառաւ Արարիւն յինից
 կարտի Ապարաւաի . . . Երջանիկն Արարիւն
 յիքի կարտի տեապաւ Է ապառաւ Արա-
 րիւն : Նժմա . Է . Էջ 132 . Աշխ . 600—606 :

Զ . Ա Ե ր ի ու յի . Պ ա տ մ ու ի ի ո Ս ի
 շ Ե ր ա կ զ : Թէ Է Է Մ ե լ (Է լ 15) Զամպաւն
 Է . որ ալո մատեննք ծանսք չկ Էպան
 Ղեւոնդի . ըսլլ Է Է Թոփանեանի (Է լ 4) Զեա
 Զամաքիւն Է Զաստատեւոյն իկ մէր Զեղի-
 նակը կարգաշաւ Է Երթոսի Փաւստապարտ-
 քին Է Էպառաւն տեկէ : Այս մարին աւելի
 կը փութիմ ալնա : որ Ղեւոնդի աշխատու-
 քին շարտեաւնքին ժը կը Զանդաւա-
 նալ Երթոսի դարմին : Կան շուրթեկի կէ-
 տեւ ալ , որունց վրալ կ'ապեմ իտեղանալ :

Ղեւոնդ կը գրէ (Է լ 3) . Երթնչեաւ Էր
 Կենդանի աստուածապաւկեանք Ներակցէս'
 ոչ կարապին (Իւմաշխարհիք) ախաւ զա-
 պաւաւկա իւրեանց ի զհրաւ Նշխատանի , զի

համբարս յաջաթեան հարա սփռեալ էր եւ
 ցարհուս թեցաւ ցանկը պետտ : Ան հարա ամբիւս
 ունէր պիշխանութիւնն Հրէաստանի եւ Ասու-
 թաստանի միջեւ ի միախառն կենաց յարաց :
 Այս ապերբը պարտած էն Սեբիտի Բ. Գարու-
 թեան ազգէցութեան տակ, ուր Սեբիտ
 պիտամբը լուած էր խափէ Հերթիդի սրտ
 սկիզբը Էպոն աշարակուն արշաւանքներու
 մասին, արսիհետեւ ժողովիւր էր ապա-
 Գ. Գարուսթեան մէջ միտնացոյն եւ ռազմ
 պատմէ Հրէականի կրօնական եւ անոր յա-
 ջարդներու տաղաւաղութիւնները, կից ԵԱ՛—
 ԿԵԱ՛ պէպրիտ : Ատշտի է ուր Արարները
 ԵԱ՛—ԵԿ՛ տարբերուն նուաճած էին բազմ-
 ցակ Գաղատիւր, Արշտակաւր մէկ մասն
 եւ Արթիկ :

Սեբիտի ազգէցութեան տակ է ՂԷ՛՛՛՛՛ն
 նաեւ յաջորդ էջերու մէջ, ուր կը խափ
 Ամիր աշխատանքներու նուաճանքներու գրաւ
 (էջ Կ—Ե) : Համեմատութեան համար կը
 թերեմ հետեւեալ հաստատունները .

ՂԵ՛՛՛՛՛ն, 4 :

Սեբիտ, Է՛ ԵԱ՛—ԵԿ՛ :

Ար պարտէր սրիւն-
 ցիւն իւրեանք աւելի
 ամեղակ, թէ Է՛՛՛՛՛ ի
 վերայ աշխարհաց, նուա-
 ճեցէր զԱսու թեպէս
 ռազմ սկիզբ, զի մէկ,
 աւել, տուեալ է ի վաշիւ
 Կարտաւորութեւ Է՛՛՛՛՛

Ար պիտակարէր նա-
 ռազմ (աղ. արթակաւր զհաս-
 Դաւաճա՛, Է՛՛՛՛՛ աւելր.
 Երգմամբ խառնաւ
 Աստուած գերկիքն զայն
 Արարւածու եւ Կարտի
 Կարա՛, Է՛՛՛՛՛ աղ զԱ՛՛
 Է՛՛՛՛՛ սրգիէ Արարեալու...

...որոնք ևս տարբեր չէին
և. առաջնորդը նշանա-
դար էրթեալ ի բանակ
Ռազմաւոր տնօրէն զեռար
Արշակունի. ահա, իսկ
տարւոյ Աստուած աւա-
զեաւորէր նրկին ի հա-
ւաքութիւն. և մէջ եմք
ժամանակ ևս որպէս եւ-
հաղանքին. . . այլ ևս զու-
կէլ գտանկէլ Արշակունի.
եւ որպէլ եւհաղանքին.
Ոչէր ընդ մէջ ևս փոխ-
ջէր գմեղ ի հաւաքաւ.
Թեւիւ որդարէն Ռաւադ.
... Իրքին գտար յոռն.
բախտեալ որմէնքին ի
գրաւ նշանաւորին.

Այդ ապա եղեալ թա-
գաւորին Ռաւադ. պի-
տա գտաւորին որ ի նշ-
անաւոր. . . պաշտօնա-
դարս չա ևս ժաւարէր ընդ
հաւա և. տարմէր գեռաւ,
պի մի տարաւորեալին ի
գմեղ նրկրից մեղաւ. . .
Եւ գտաւորեալի իս-
տեղք ի միտքին լինէին
բանակ մէջ. և. թա-
գաւորս յաւալ գեռքին
ընդգլմ ինքին. . . և. թ-
թեալ յաւալման լինէին
միմեանք ի սահման
Ազատուն Արարիւն. աւ-
տանէին գրանակին Մաշա-
մաւ. աւթին յաղմաւ.
Թեւմար, և. իրքին գտաւոր

իրարմէ կապարմէ գեռ-
կինքն մէկ՝ գոր եւ Ռա-
ւադուն Արշակունի եւ
մէրմաւ. և. որ հար-
աւ ընդգլմ մէր գա-
րաւորաղմաւ՝ պի մե-
տաւ ընդ մէջ է. . .

101. Եւ գտեալ
նշանքին պաշտօնաւորս տ-
հաղանքին պաշտին ի հա-
վաքաւ տա որպէս թա-
մաւոր. . . իւրին գեռաւ
ընդունք որմէնքին.
Թեւ. և. հաւաքանքին
նաւա գտաւորաւորին
իւրեանք գորս հաւալաւ.

102. Մարտաւ որմէն-
քին ժաւորեալ. . . և.
հաւալ յաւաքմէ մա-
ղաւոր ի սահման հա-
լինք. պի բանակին Ռա-
ւադ յաւալմալ լինէ լի-
րաւոր. և. աւթեալ յա-
վաք ի գրաւ նաւա հա-
լին գեռաւ. . . և. գա-
մեալ յաւալման լիւրա-
լիւ.

Եւ աւթեալ մա-
ղաւոր ժաւորեալն որպ-
եալն թաւարէլն ժաւորեալ
միտքանքին ի միտքին.
և. եղին գոր մի.

103. Եւ աւթաւ գաւա-
ղաւոր ի հաւաքին թաւ-
մաւաւաւն հաւաք. . .
Թեւ նաւա հաւաք ի
Ռաւադուն և. աւթին

զարկեամբ յաշխարհն իւր փութութեամբ անկանկիւն շեւեղ: Եւ յաշխուհում ի անդի ապստամբն: Ժ. տիրեցին չքմաստներն եւ եւստ (Թեմաքոյաքիբ) աւ. Քաթրուտեի փերոյ: Եւ զեւոյթ ընդ Ուրդանան՝ տրեցին ընդ չարիւք զաշխարհն եւ զնկեղեցիս: Եւստ շարժեցին Երուսաղէմը: Եւստ զան ի Եւստայութիւն իւրս առնեցին: Եւստ իւր Երուսաղէմայեցիքն: Եւստանց Եւստ ի Եւստայութիւն եւստ:

Անկոյրդ է բան, թէ որքան նորոգութեամբ կ'ապաստի Ղեւոնդ իւր ազգիւրէն: Բացառաւոր կը տեսնուի իւր մէջ Ապստամբնդ յաշխարհում եւ նորոգութեամբ տեսնուի իւր կոթարմբ Սերիւսին: Սերիւսին յապտան կ'երկոյտ Նաեւ լէջ Եւստ ի սահմանս Բաղսմարոյ եւ Սարգսիսոյցից (Սարսոյ): Բիւզանդական-հայկական եւ Սարսոյ կան յաշխարհային առաջին ընդհարումի պատմութիւնը: Այս կուտի մասին թէեւ աշխարհի Սերիւսին մէջ առանձին հաստատմբ չկայ, յայտնաբերութիւն մը (լէջ 118) եւս թուոյրն կու տայ, թէ Էրեւնդի պատմիչը մտածած ըլլայ անոր մասին իւր Պատմութեան մէջ՝ անկասար տեղ մը, որ աշխարհի պահպան: Նոյն ազգիւրէն ապստամբն Ղեւոնդ Նաեւ Դուռնոյ 610ի (լէջ 9—Սեր. 108—109) եւ Սարսոյ 613ի (լէջ 11—12—Սեր. 110—118) առանձինը պատմիչս մտածեալ: Չեմ սոցեր աշխարհի մէջ թէ Ղեւոնդ ունեցած

ընդ այս մասին տեսնողութիւններ, առանց
տարապետութեան տեսիլք ազգութեանը: (Հմմտ-
նք 116): Հետաքաւոր էլ իջեմ ապա նոր
մանրամասնութիւններ ալ:

Մերիւսի ազգեցաւթիւնն ներդարձած է
նաեւ իւր ունիւն վրայ: Ղեւոնդ տեղ տեղ կը
խոսի Մերիւսի բարեբաղ, որտեք անշուշտ
չաւաթի քնթերցման արդիւնք էն, հմմտ.
Հետքին առանկ նմա (Կայսեր) լինծայս շա-
ւարժ թշնամեացն զլինտիլոս ելիւլարաց տա-
նիկ ձկաց... Էւ Կայսրն լնկուիտիլ զայն
նուէր՝ մեծապէս զոնու թիւնս մտտոյցանէր
արարչին էւ շնորհակալութիւն Մարտաւ
Էւ նախարարացն... էք 20, 114 — Մէր. 118.
«Կա տանկ (Թէոքորոս) զորագործն Հայոց
զլինծայս Կառանդին ի պատերազմէն՝ զլն-
տիլ լնտիլոս ելիւլարացն հարիւր ձի, զոր
ստեղիլ արեւայլ՝ ուրախ եղև ինքն էւ ամե-
նայն պապստն. էւ արձանեաց տեղըն շնոր-
հակալութիւն մեծ»:

7. Սենեցան է Ղեւոնդ Մերիւսեանե-
րու ժամանակաշրջանին մը, որուն վրայ
յեցած կ'առանցէ տնտես զտնակալութեան
հզօրիտ տարիներն, նայն իսկ ամիսներով:
Այս ազգի բը քանի չի ճանչնալ զէջի ի շարս
Խոհմեան շաղբոյներու, բոլորու է սիւնի,
այս ինքն տարապետն ծագումէ: Այսպիսի
տրտալացանէր կ'երեւայ թէ կային հրա-
պարակի վրայ Թ. դարուն: Թոյմաս Ար-
ծրունի տեսած է նմաններ, որ տալով ուրի-

բաղնիքներու նոր ցանկ մը կը գրէ Վէլ ԼԻՆԻ :
 «Եւ գրոյցք ժամանակաց սոցա յայլոց
 գրեալ յատարագոյն, աւելորդ համարեցաք
 երկրորդի : Դասեւ ցանուանո նոցա եւ պիտի
 ժամանակացն աշխատեալս հասն մեզ : Թախ
 մաս աւելի իւր տաւ Ղեւոնդի ժամանակա-
 պրութիւնը . թոյց շատ տեղ կը չկոյր անկէ :
 Այս շնորհմեքը հետաքրքրական են . տեսնը
 սրահնա պիտի ծառայեն հասնելու իւր միւս
 աղբիւրներուն, արանց մէջ պէտք է հաշտեալ
 անշուշտ եւ ճշտութիւն թաղարտութիւն :

Տ. Կ'երեւայ թէ Կոնստանտինոպոլիսի շրջանի հա-
 մար կտր հրապարակի գրոյ պատմական
 գրասանք մը Թ. գաբունի : Արհեստեւ
 Դրասխանակերտցի տանեցած է աւելի տաւ
 կաթաղիկներու պատմականագիրք մը . տա-
 կից կը բազմ տրիշ պատմական տեղեկա-
 թիւներ տայ : Դրասխանակերտցի տեղ մը
 Վէլ ԼԻՆԻ կը գրէ . «Անշուժ ժամանակի առեւ
 յինչ գիտին որ ի թաղարտութեան Երեւանի,
 պար եւ թաւանան թեղ առաջ ցանկ գալիս պատ-
 աւելորդի գնանդամանո որ Լուիս Բոնի պնդ
 պատմականացիւն : Այս մասին Ղեւոնդ յիշատ
 առեւ թիւն շունի : Համարեն շահեար-
 քուիք Դասեւ ճշտութիւն պատմագիրք : Գրիգոր
 ժամակեաններ է : Արտաւի Կեկեղեցույն շի-
 նութեան մասին (Ղեւոնդ, 15, Բագն, Երեւ
 16) Կ'երեւայ թէ գրաստը աղբիւր մ'եղած է
 թիւրք, առեւ թեղ պատմած են իրարմէ ան-
 կախ երկու պատմագիրքեր : Դրասխանա-

կերպարան ձառնալ չէր Ղեւոնդի Պատմութիւնը, պոնի չունի անկէ յայտնի ժողովրդականը:

Ե. ԻԻԿՂԻ ԵՐԵՎԱՆԻ ԱՆ ԼԵՒՈՆ ԿԱՐԱՆԻ ԵՒ
ՊԱՏԻՄԱՆՈՒԹՅՈՒՆ ԿԱՐԱՆԻ

Ղեւոնդ (Ը Ը) իշխումի ժամերի իշխանութեան ակիցքն անցնէր (1111—1120), կ'աւելցնէ. զիւրի ժամը պէլ թուոյթ առ Լեւոն Կոյսր Հարամաց յաղապս ուսանելոյ պարտութիւն հաստատոյն ժերոյ. յորում էին պղպղակ հարցմանը, պոյն համարում է ներսքոյ պոյնակցից: Թղթին ակցրնաւորութիւնն է.

զիւրումըն Աստուծոյ. ժամը, իշխան հաստատացելոյ, առ Լեւոն Կոյսր Հարամաց: Բազում անգամ կամեցայ գիտել զմերայ կարմնէր հաստատոյն ուսանելոյ... — զձառն ամենայն էւ յարմարոյն թան պայսրն պղպղակաւորութիւնը պէլ ժամը իշխանն Բաւարչի յալ թուարան Լեւոնն (Ը Ը 11—1120, պոյն ԺԺ):

Լեւոն Դ. Բաւարացի (1120 Մարտ 117—1141) էր պատասխանէ թղթին.

ափարիւն Լեւոն, Կոյսր Հաստատացելոյ է Տէր Արաւա Քրիստոս... ժամըն Մասնակիւնաց առաջնորդի. Թղթին թան կցից առաջի... — զձառն է պատմէն պատասխանելոյ զրեւել Կայսերն Լեւոնի, առաջ է ձեռն հաստատարիւ ձառնի իւրոյ առ ժամը

խշխտան Իսմայէլի, զոր իբրեւ ընթերցու՝
յոյժ պատկասանաք ամաչեաց զամսի մեծն
(Էջ 15—18, գլուխ ԺԴ. 1) :

Ղեւոնդ իւր տրամադրութեան առկա
եւք հաշիւն թարգմանութեամբ թէ մեարի
թուղթն է, թէ լեւոնի պատասխանք։ Հա-
ւանորէն այս թղթերը կը կտնդելը համա-
ռաւ ներանակաւ մուտք մը, ուր խոստան
էր մեար Բ-ի և թերեւ նաեւ անոր յաջորդ
Եղիտի կրօնական յայտարարութեան մու-
տին։ Բայց Ղեւոնդ ազատութեամբ գտնուած
է իւր տառի գտնուած ընադիրներու հետ։
մինչ քրիստոսեկայ հայսեր պատասխանք՝
համարելով շահագրգիռ իւր ընթերցողնե-
րուն համար՝ ի մէջ կը ընդէ տարողու-
թեամբ, մեարի թուղթին բովանդակու-
թիւնը կը համառաւ հսկաւ տողերու մէջ-
ւորաւ համառաւ ի ներքոյ գրուած յիշ-
քոնի ու անոր պէսպէս հարցումները կամ
տարակուսութիւններն ընդարձակորէն, երբեմն
նաեւ ըստ աւ. ըստ նկատի տուածն էին
լեւոնի Պատասխանին մէջ։ Աւագորութեան
արժանի է որ Ղեւոնդ իւր նախաբանին մէջ
մեարի թղթին նպատակը կը գնէ զյաղագս
ուսանելոյ զգալութիւն հաստատոյ մերայն,
մինչ՝ վերջորանին մէջ թուղթին բովանդա-
կութիւնը զնոյգիմարանութիւնը կ'որակուի։
Անշուշտ ոչ ոքէն ոչ էր մեարի թղթին
խոսակաւ նպատակը, այս ինքն ահաբ զայն
առից հայսեր քրիստոսեկական կրօնի հիմքերը

և չբացարեւ, աւելի կաւարեալ կրօնի մը՝
խալածութեան:

Ոչ Սմարի թուղթը և ոչ Լեւոնի պատասխանը հասած են ժեզի արարելէն կամ յանարէն ընդգրով: Բնուց աւանդապաշտն է ժիւղն Ղեւոնդ, որ պաշտպանած է հաշիւէն թարգմանութեամբ:

Այս թղթակցութեան ծանօթ են Թովմաս Արմաւանի (ՎՊ 103), Վարդան (ՎՊ 73) և Կիւրակոս (ՎՊ 37), ուսկից բացարձակեալ աչկ'ընեն: Սմարի թղթին ծածօթ են ետեւ Բիւղանդական մատենադիրները: Թէոփանէս յանն աշխ. 6210 (ՎՊ 614 Բանկ ապ.), կը գրէ. *ἐπειρησε δὲ (ὁ Ἱερογλου) αὐτὸν ἐπιστολῇ ἀπορηστικῇ, πρὸς Ἀβουτα τὸν βλασφημ., οὐδυνουσ πειστικῇ αὐτῶν τὸν πατριάρχην, ὡς ἂν ἴδωμεν* քեաց իսկ (Սմար) և թուղթ վարդապետականն առ Լեւոն կայսր, յարուժ գիւրաց հաւատաց բանն եղեալ համոզել, զիս իսկ նայր: Այսպէս ետեւ հետեւելով Թէոփանէսի՝ Բաւաւառ Խոտենդարանուպէտ (այս. Բանկ, ՎՊ 209). *fecit autem (Huniar) et epistolam dogmaticam ad Leonem imperatorem ratus impius ei persuadere, quo a fide sua recederet*, և Կեղքենոս (ՎՊ 792. ապ. Բանկ). *ἔταυξεν αὐτὸν πρὸς τὸν βλασφημ. Ἀβουτα τὸν πατριάρχην καὶ οὐδυνουσ, αἰρησաց և. առ Լեւոն կայսր առ ի համոզել և զիս:* Բայց ընն յիշեր թէ Կայսրը պատասխանած ըլլայ:

Դժան յաճանդակութեամբ թույլ ժր՝
 դրուած է եւսն Կոյսեր Կոյսէն առ Յմար իշա-
 խան պահպանան է նաեւ ասորական պատկառ-
 նութիւնը: Էջո թույլք աստիճի սեղան
 իրապարակ չանկց S. Champertus, եւ զայն
 ասորեւրէնէ (սրբազնիւրէնէ) շարիներէն
 թարգմանելով իրաւարակեց 1501 թի ի Լուդ-
 ցունան Նաւեւան խորագրի տակ: *Levitis*
cognomento philosophi, imperatoris Con-
stantinopolitani, ad Onurum Saracenorum
regem de fidei Christianae ac mysteriis et de
variis Saracenorum haeresibus et blasphemis
epistola, Symphoriano Champertio Lug-
dunensi ex Chaldaica in linguam Latinam
*interprete. Lugduni, 1501*¹²:

Սրբիւնեւ ասորեւրէն բնագրին ժէջ բն-
 ծայուն է թույլն լէւանի, իմաստաւր
 անուանելոյն, այս պատման ալ փերսիշեան
 կրկին չաւարտիւնը: ժէջ գեանգուն է ի
 չարս Լեւան Զ. Իմաստաւր Կոյսեր (886—
 912) գրուածներու: այսպէս յանուն իմաս-
 տաւր Կոյսեր կը յիշէ զայն նաեւ A. Ehr-
 hard Բիւզանդական պատկանութեան Պատմ-
 տութեան ժէջ¹³, առանց ժիւ գնելու որ

¹² Այս գրութիւնը ապա արտատպուած է թ
 չաւարտէ՝ Bibliotheca Patrum maxima, t. XVII,
 p. 456. — H. Migne, Patrologia Graeca, t. 107,
 p. 315—324:

¹³ K. Krumbacher, Geschichte der byzanti-
 nischen Literatur, München 1907. Հի 106. զսեյ
 Լեւան իմաստաւր նաեւ պատկանութեան թույլ
 ժր առ Յմար ամիրայեւ, որ զանգան զիմարան
 Կան ինկիլիւնը: Ժաշն կը խորհչ:

խառն ժխտել Բաւարացւոյ մտաին կրնայ, քոյակ հաս, քանի որ Բժատաւանէր Կոչարը պարտէ կէս մամանակով հետոս և Սմաքին:

Champerius-ի երեւան հանած աշտ ընտաղիւր իւր քաղմեղանկութիւնը քննահանուին ժխտել համապատասխան և հաշիւելն խմբապատկան: Կապմութիւնը կը ներկայացնէ համառասան խմբապատկիւ մը նախնական որինանկին: Մինչ հաշիւելնը միտք մի վիճարանութեան նիւթ կ'ընէ Օմաքի րազմապան աւարկութիւնները, աւարին խոշաւաւորով վիճարանութիւն՝ կ'ամփոփէ Կոչարէր մտքին եւ կը պնէ պոյն իրեն ապացուցութեան եզրներ ամբարդեալ աւաղ: Թաւառը նկարանարութիւնն է. «Փառք Եւանն եւ պարնք քաղմապատկէ պահութեան»: . . .

Սմաքի եւ Էւանի միջեւ փոխանակութեան աշտ թղթերուն ծանօթ կ'երեւայ Նաեւ Աղապիւս Խաչարացիի իւր Զինգերանի Պատմութեան մէջ (Agapius Mubingensis, Historia universalis, edidit P. L. Cheikho, Beyrouth, 1912, էջ 228): Աղապիւս ծաղումով Հերապոսին «Խմբիւն» և, ապաւն և ք. դարաւ աւաղին կէսին. իւր Պատմութիւնը ի նկարանէ «չխառնիս» աւարտան և 22ին, Ինքը աւարիւն յեզունով պատմապատգործութեան հեղինակներն աւաղինը կը համարուի: Աղապիւս կը գրէ՝ «Էւան անիկա (Սմաք) խաղթ մը պիտի Էւան թաղաւորին, որով կը հրաւիրէր թաղաւորը խոշա-

ժամկետն է: ամենք չեն կրնալ մասին կր վրա
հասնանէր: Քննութիւն պատասխանատուութեան
դրութեամբ մը, որուն մէջ կր չեղարկուէ ամենք
(Սեմաթի) անպատշաճները, ամենք խառնարան
անձնայութիւնը յայտնաբերման կր նշանակէր
էս պէտք կու տար ամենք պայմանաւորէն զրեւ
անձնակազմ կրնալ յայտնուէր: Գրեթէ
անպատշաճներով, ժամքի պայմանաւորմանով է.
կուրանի անգիրքներով և:

Հակասակ ունի վերաբերութիւններու J. Mohl,
1856, Սեմաթի 22-ին Սեմաթիին Լեզուութեան
տեսանք անգիրքներով մէջ յայտնեց թղթե-
րուն չարագործութեան ժամին կտակած.
Նկատելի գրքին մէջ երբեք պակաս ժամ
բանած է Լեզու Ինտերպրետ, առ Սեմաթի 2-
դրան տեսնանալանակազմ մէջ նամակը, որ
թերեւ զտեւրակազմ չէ (pend-être apocryphe).
Եթէ զտեւրակազմ ոչ չամարութի, յամենայն
պէպ շտապութեան պատճառով չեն առ
մեծերին տղերս յանդի: (Սեմաթի Լեզուին,
1856, էջ 241): Բայց Շտապութեան (Սե-
մաթի 2-ին, էջ 17) կը պնդէ պէտք թղթերուն
չարագործութեան վրայ, թէ ան առանց ժամ-
անոց անպատշաճի մը¹²: Սեմաթի յրեւութեամբ

¹² Յիշ. Սեմաթի. Հանգ. Սեմա 2-ին, էջ 226.
ժամակազմութեան զեւր ժաման յամար կը շեղ
Սեմաթիին յանդի. բայց նա չէ հիշատակ որ Սե-
մաթի Սեմաթի չարագործութեան անգամ չէ յիշատ-
ակէր չեմաթի. զեւր է իրականը չարագործութիւն.
Սեմաթի 2-ին, թիւ 226, 2-ին, 226). Նա առ ժամին
նախ ժամք:

ժերմեկցուեալ Էտրիքս Edurd de Morali ահա-
նաստք թիպանդապէսը իւր պէկուցացորին
մէջ, որս գրան է ի խնդրոյ Բրաւէի Լաւ-
Պատկանեան, չէ 1X—X եւ Եղեան, չէ 181—
185: Բայց Վե Մուրալի Էթէ չկատեանցու-
թեցիմեկցուեթիւններու — մասւնդեան թեան
մասին, թայց Էս ի նպատակ անոր չընդուս
Էս իջէ ապացոյց, իր գերջունեութիւնը չե-
ստարքրանան է միայն անոր նամար, որ կը
թորմբայնէ Կոյսեթ թեցիմին տրմէքը՝ իրեւե-
կարեւոր չիշտատեկարան արարանան Է,
քրիստոսնեկան աշխարհաշուշեան ընդուս
ստմեկարքութեան նամար:

Թեցիմութեան շտմեկարքութեան կարող է
նամապատտութեան չիշտը Ը: գորտու առաջին
թուորդի տշխարհաշուշեան ընդուս, շտի-
արարանան մտանեկաներդին Է արամարա-
նութեան, շտայ չի չեանեթր ասիկ թէ
Սմարի թեպէթ Լեթիքտուեթի պրշէն շտի-
է Է Էեանի պատտարանը Կոյսեթ աստուա-
նութեան չմտութեան ճեանդն է: Լե-
տայթը կը կըն իր միայն անմարտութեանի
նկարագրքը: Է Է նաւանըն Ը: գորտու
առաջին կէտէն, գրուան քրիստոսնեան ան-
նաստքութեան մի, որ տայտն է արար շրման-
ներու չեան անմար շտարքութեան մէջ:
Նեպիմեկը չեան է տշի աստուգութեան
միայն, թէ Լեմար Ը: գրան է Էեան Գ-
Բտուրայսն կրանեան ընդմեկարքութեան
թուգի մի, աստուգութեան մարմեկարքութեան

Համար հասարակ է ի մի տղի մէջն առարկայութիւններն, որանք ըրբաւանդից եւ արարներու մէջ այս դարուն միմեանց սովորուին տեղիքներն էին. այս առարկայութիւններուն մի առ մի պատասխանելով, կ'ընձեռէր մամանակակիցներուն առ ձեռն պրտոյն մը. ուր կարելի էր գտնել, հակառակ կարգներու առարկայութիւններուն հետ նաեւ անոնց հերքումը: Գրութեան տեղը հասանալէն Ասորիք-Պարսկաստան է:

Թղթերուն տեղընորդին եղան է յանարէն: Հայերէն թարգմանութեան մէջ աշուղէս զգայի են յանորէն սկզբնադրին հետքերն, որ կոչը աշտով Բակ կարելի է նկատել անոնց խորութիւնն ու բարձրութիւնը: Հայ թարգմանիչը թէեւ ճարտար ըստ բանականին իւր տրուեալին մէջ, բայց եւ աշուղէս հետեւած է տեղ տեղ սկզբնադրին ստեղծունէն. յի կրցած յանել յանորէն իրթնաբանութիւնը, սնայ խտութիւնը:

1. Տեղ տեղ պահպանած է յանորէն բառերն անփոփոխ. «Արդ գիտեա՛ղի պատակալիստս (παταλίστος) շխիթարիչ» տունտեի եւ ոչ: Իմանաւ, այս ինքն զոտնաւ, եւ հաւիսաւ (εἰχαριστάω) ի մէր լիցու եւ ո՛չ: պատակալիստս (զէ հն) - միւսիկոս բնորոշ (զէ ՅՆ) (Եսայիայ Գ. 17. Ըստ ստորագր. տն շխից տու շխից մյու կը թարգմանէ. «Իմացիւ, աւել, եւ պնկիւ եւ պնկիւսիստս. առ հասարակ» (զէ ՅՈ). Իսկոբանկան

գտագու գամենայն հեթանոսական յեղոյ որ ի նա հաստատոյ: յաշեաց ի նայն:— (ՀՀՄ ԵԶԻ):
 «Հար Հոգւայն սրբոյ ի Աստուծոյն աստղեայ,
 մարդարէ իւն վասն պերեյոյն Հրէից» (ՀՀՄ ԵԶԻ):
 Եւն:

Յ. Հայերէն թարգմանութիւնը կ'երեւոյ
 թէ արդա ուղղութեամբ է եւ ինչ ինչ մթնաւոյն
 թիւներ յատարանուած, մ'իւ մեարդեւ, որ
 համաստեան է Սմարթի թուագիւր: Այս աստ
 թիւ. թիւերու մասնաւոր էն նաեւ յաւիտեան
 ներս աշարիսի յաւերանած մը կը թուի ինձ
 հետեւեալ տեղիքը. «Սկսեմ գովել, Էթէլ ընդ
 միւսեկէն զեպնոյ որ ի ծովոյ է՝ ի խառնա-
 կումն ժերմաստեանիս» (գոյ. եւ իրերեւ
 մերձեւայ յեղը ծովոյ՝ գմարացոյ թայնսն
 ի քոյ զեկ: եւ աշարէն կտտարէ պանկու-
 թիւնս (ՀՀՄ): Այս հաստատութիւն հասանալէն
 ասեալով է Բարսաբարովն եւ ունի հետեւեալ
 համեմատութիւնն. Բարսաբի կատարացոյ
 Կէլցարէից մէջ (ՀՀՄ ԵԶԻ): «Իմ՝ չորս գաղտն
 եւ գտնն ի սոցանա Էրկրի, ի գուգութիւն
 ամասնութեան հարցոյ ընդ միւսեկէն զեպ-
 նոյ. որ ընտեղեայ է ի ծովոյ. եւ աշարէն
 գալստ նշան: ասոյ նշանոյ ցուցանել գովէ իւր
 իմն Էրկրայ կայ աս ծովեղիքին եւ յշէ.
 աշարս բարբառով կոչել անէ ի ներքուստ ի
 խորացն զմիւսեկէն ի հարցոյն թիւն աս
 մասնութեան: եւ գոյ հեապանդի՝ խառնա-
 կէն յամասնութիւն (տոյ. ամասնութիւն)
 ընդ պանկուսայն գաղտնից: Բարսաբարով

հայերէն թարգմանութեան մէջ չկայ աշմ աշտ սրինակը. ուստի փոխարէն ունի էքստրզ մե, մը — (սի), յառն իմի, որ համեմատութեան էզը շուրի տշտ խմբագրութիւն հերտ հետ:

Եկամտամբ թարգմանութեան սեպտան եւ մամանակին կը կարծի Պատկանեան թէ տնտիջտայէն թղթերու պրտեւէն եւար, ուստի լին թարգմանուած են տնտի շտիւրէնի, կամ կ. Պաշտ, ուր տարւոնի պտշտան մէջ կտշին բարգմանի շտշ պտշտաններ, եւ կամ Դամտտկա, ուր կը պանակէն մէծ թտաւ հտշ պտանաններ եւ պերիներ. Թէ գերթիններու սակայն ծանոթ չին չոյն չեւտի, գժտարին է հտտտտաւ, Թրտհետի թարգմանութեան թն, թն, մեեր, բարգտտութեան թն, թն, կարգութիւններ եւ տտտմեր համտնայն են թարգմանութեան աշն տրտտտտին հետ, որ չտտտէ է հէշիտտան պտշտին (հմտ. ՊՊՊՊՊ, գործի թտտին թարգմանութիւնն՝ գործտրտն, էջ ԷԷ, ԾԾ, ԿԿրետշ թէ թարգմանիւր ծանոթ ետան է տշն թարգմանութիւններուն: Աշտ շրջտնին՝ Ը. գտրտ տտաթին թտտրային պրտտան էին Թրտտտտին տրտտնի ժտտմտն թարգմանութիւններտ Ստեփանա Սիւնկի եւ Դտիթ կենտ: Կտրեշի էր թերեւս գտշտհեան մը մտտեւ, թէ տնտի մեարտ հտշտ

¹⁰ H. Марр, Филологъ, Археологическія извѣстія С. Петербурга 1901, էջ 18.

Կարճն աստուգարանովեամբ անշուշտ կերպարանագործութեանն էին. յաջուստն է իրեն չտեսնեն յեմանկան ճիշդեմով: Արարելն է յանտրելն շեղանկութեան ծանոթ աշտ անմբ զժամարտ: Կարող էր գուտ յանկան կամ գուտ արարելան շրջանի մէջ պարզուցած բոլոր: Եւ ինչ կարողացէ՛մ ան յարմարացուն միջնամայրն էր. ուր էրկու շեղանկութեան տշ չաւաստարացէ՛ւ կարող էր բնութան բոլոր խորզմանիւր:

Թէ՛ւ փերացոյն պրտն էի. չհաստնորէն Ղեւնոյ տնամբ չտեսցուցս ոչս թղթերս ի Կ. Պոլիս, բայց աշտմ չիմնուան Եւր. քանութիւններուս գրտշ, կը չբոժարիմ այս եւտ Թագրութիւնէն: Թղթերս չաւան են մեղի բնագարանկութեան չտշերէն խմբագրութեամբ էս Ղեւնոյի Պատմութեան մէջ ներմանուցան են՝ չեղանակէն անկութ. Ես չաւանորէն ոչ մէկ աղերս շտնի թղթերուս չեւ: Արդէն Եւանջարտն էս Պատկանեան նկատան էին թէ Ղեւնոյի շեղութեան նկարագրիւր բայժար կը չեւանայ թղթերուս միմի, տեւարթ շեղութեան նկարագրէն: Այս գաւառաւանք նկատմամբ շեղութ, թէ՛ւ յիւնքիտն շտտ իրտտ է, բայց յամենայն պէտք ասագրութիւնք անտ չտմածայն է Ղեւնոյի մասնեղանկերային: Այս կը տեւանութ Եւան Էւան Կաշաւք տտ Թագրմ պրտն թղթէն, ուր տտանց տտրտ կտտի Ղեւնոյի չտտրտան մէկ շտրտագրութիւնն է: Թագրմի յոխորտ էս աղտտ

յաշմ աշխարհի անկախին ընկնց իբրեւ գընդգ. ոք
կամեացի եւ ւանկցի ... ոչ ամէր զմտաւ երբեք,
եթէ գորս խոգթողեաց
ուր յա, եւ կամ գընեւ
չան յերկրէս թմմէ՝
ինկի որբի եւչա ի մե-
ռաչ յոց: Թանցի ոչ
զման արգարութեան գոր-
նոց յոց, աչ զման մե-
րոց անորէնութեանց իւ-
զմմոց զգաւազան մե-
րաւորոց անէ ի վիճակ-
արգարոց. զի զլաժ ար-
չաչ անորութեանս յե-
րոյ եւ իբրտեանցաւ զեւն
յաւ կամաց ւանկցի ան-
բարբի:

Նեանց, ոք ամէն վանք ասարած է իւր
Պատմութիւնն արայութեանս ինքեմք եւ նա-
մաստաւարութեամբ ի պլախ նմենչ, չէր
կարոց ցանկացած ըլլալ խանդարի իւր
Պատմութեան բնթացքս աշակերտ երկարա-
րան եւ նապաղ ինքթեղցութիւններու ներ-
մուծմամբ: Այ՛ միտցն իւր խաւաարմար՝
միջամուխ ըլլալ կրօնական—գաւառաւանա-
կան վիճարմանս թիւններու մէջ՝ հարգա-
րացնել մեր կանկամբ, աչ եւ եւերբի նա-

ստ է գաւառիս ան զբանաւս ան, զ անապաւ, զ
արօտաւ, եւ շար թուկթիւրս, եւ խաւաւս զբանս մոսոս
անի: (Opera critica, V, էջ 164, ed. de Mont-
Isaçon). աչս թնթ՝ եւ յոյս երեւոց յոց. պն-
դեալթիւնն (պնդանոց գորթթիւն), յառաջիկանս
թիւնն. զի կամէլի, անթիւր յիւնիկ եւեթ քաւական
լիւթի:

կատարվելանէր կու գան բողոքել, այս միջոցը կու թեան պէժ :

Ղեւոնդի Պատմութեան մէջ բուն աւագանիք մըն էն այս թղթակցութիւնաւորը : ԴՊ. — Եւ. պատիւներն ուժեղացուցածը, որոնք չեն կարողացիր նախորդ երաջարկ նախաւանկեր, պատմութեան հաստիքին հետ : Բաւական Պատմութեան տեւադարձութիւնը Ղեւոնդ կը հաշուէր ՆԱԼԱ տարի. Հեւանի թղթին մէջ Պարսկական իշխանութեան տարիները կը հաշուէին՝ Ն. (Հ. Թ. 191) Կրտսի պարսկացի (Հ. 191) : «Ասա ասեւն ուղիւստեանուցն թան պարսկացի այս ապագատումքն իւրայ. սա արար պարս պիւստրեանն, զոր պիւստի Բանինա յաշխարհէն Հայոց յետ արեւելոյն գնալուարաւ աշխարհիս. զի Էսո գրուցում տարւոյն եւ պիւստի զարս եւ պիւստիս : Էս իրարն հաստատեցաւ իշխանութիւնն Թարսոյ՝ արստեանց պարսկական պիւստիս իւրաքանչիւր տեղիս եւ իւրաքանչիւր պարսկացի արստեան իշխանութեան : Թարսէն Էսոն (Հ. 191) : Պատմի արսէն նախ թան պարս պատմեցաւ՝ պիւստի պիւստիս արսէն : Եւ Բայ Ղեւոնդ Հ. 191-ին. ուր կը պատմէ Բանինա ժողովարարն զայստարութիւնաւոր, նախաբանաց ճիշդութիւնը, ամենեւին անհարկութիւն չէ բռնել, թէ նա պիւստիս զարստ իւրայ. պիւստիս բանաւն էն, բայց ինչ յետոյ մասնաւոր տարի եւ կարողանի :

Այդ պարագային կը յարգուիլ դիմ ժամանելու թէլ տողերս քանակաւորութիւն հն աշն Աստուծոյ արտունկն, որ ցեղանորումն էր անշուշտ թղթի-
րուտ սկիզբը:

Այս դրան խնդրու փոխարկն իրաւամբ կը պահանջուէր Ղեւոնդէն, որ խաւիւր Թմարի արշուանքներու, մասին ըրիտտունէութեան զէմ, իցիտի հա Թմարի մէջ նաւած հակառակութեան հա զիջիւտ խաւանութեան պատահտին, էհան Խաւարտը պատկերամարտութեան միտը, եւն: թաշ Ղեւոնդ դիտմամբ կամ ոչ՝ կը պտնէ աշն խնդիրներու մասին յուսթիւն:

Այ միտն անանդի կերպով մանուշան Էն թղթերս Ղեւոնդի Պատմութեան մէջ, աշն եւ ունով խանդարումն է Պատմութեան ժամանակագրական յիթագրը: Խանդարումը սեղի ունեցած է քու ունեւան համեմակումութեան ներմուծուի մեծով եւ որոշ գիտաւորութեամբ: Էնիկա Թմարի շտապագա ըրիտունէից ցոյց տուած բարեխաւանութեան եւ քարեմտութեամբ (191) քաղաքագին անհամաձայն նկատելով Կ. Պալոյ պտշտութիւն: որուն պարիսպներու առջեւ համաշն ըրիտունէութեան նախաւորը կը նախատեմուէր, փոքրիկ ետեւաւորութեամբ յաջողած է պատմութիւնը համեմակեցնել իր մաշակին:

Ղեւոնդի Պատմութեան ուղից իմացման համար ունեւածելու է սակոյն ընապրի գի-

բանակցանաճր եւ թղթեւոյ, հասեալապէս քան թէ իրենց, որք կը պահանջէ նաեւ աչքքիս ժամանակագրութիւնը.

Եւ կ'առաջարկեմ աշապէս պէտեւանդեմք իմանալու թիւագրքը, ներմուծուած յաւաքածոնքու պարս զտարժամք.

Էջ 42. ա. 5. «Եւ աշնակէս կ'առաջարկէ պատեալը (Խոյթ) ի ամօթեմք յաշխարհն Հոնացի: Հատուակեա իւր շարունակութիւնն ունի (էջ 103. ա. 5—112. ա. 5. 143. ԺԷ. — Ի. «Եւ յիս աշտարիկ սկսաւ պատալ ընդզգժ թագաւորին Սոնացի. . . ԺԷ. 112. 5. «Եւ ոչ Հարկ (Խոյթ) աւել ընդ մէջ իւր մինչեւ ցար մահուան իւրոյ: (Ընդզգժ Քիւզանդիւնի): Այս մասը իւր շարունակութիւնը կը գտնուի էջ 42. 5. «Եւ կատարեալն պայս ամենայն՝ պիտանեցաւ Խոյթան 13. Ահա նորա պիտանորդն պիտանեալութիւնն Սմար, ամա ր. եւ ամբաւ եւ պիտանալի: Հոտուակն տղնուազսն յաւ պատկեալն աքա տղա պատուովն իւրոյ (Եւ աւար. . . 42. 13—103. 10 ճրի թագութեամբ ներմուծու՛մ). էջ 99. 10. ցտա գտնէր (եւ) աւ իւր (այլին) ազգն ժողովուրթիւն յաւազսն յաւ պատալինաւ, որ նախ յաւ գիտ իշխանքն էին. յոնցի պժթիւրս

13. Նաեւոր ընդ իւր իմանալու եւ նա. ԽՈՒԼԻԿԱՆ զարգա ԽՈՒԼԻԿԱՆ կամ Սոյլ ըման, ետեւէն էջ 15 Խոյթան թագքիւր ԽՈՒԼԻԿ, աշապէս ազգան էր ազգին իւր ազգագրութեան մէջ համարարեալ. Սոյլ ըման Խոյթան թղթագրութիւնն նազար ըլլալ էջ 112. 2. աւգին ազգեւորութեան առկ:

դառնալուն թաղեալ՝ թաշիէթ հուղ սպառնիցն :
 Եւ յետ ոչոր ամեհոյցնի կշեղալ վախճանէր :
 Կը շարունակուի թի 99. 11 (91. 121—
 101. 10. զի վերայ աշխարհիս Հոյսոց :
 Այսպէս Պատմութիւնք իւր կոտորէ կը գանձ
 ժիւաւեղամ թի 112. 6 (92. 111) եւ կ'ընթա-
 նայ յետագի :

Այս հաւատարմութիւնք թիւ — ի : գլխաւ
 ներքեւ շատ շին է - աշխարհն ահաւն է նաեւ
 Բիւ - Աստուծոյ (Թի 128—130) : Այսպէսկոյ է
 Աստուծան յով աշն սպառնալուն ժիւան, որ
 նա կ'անդիտանայ թաշիէթին թի — թի :
 յարեմիւրք. նաշն իսկ Բեմքի իշխանութեան
 տարիներն անձամբ ընկալած էն իրեն : Բիւ
 ղիւմ Բաշիթի արշաւանքն Հանաց պէմ հա-
 մաւան թի : զիսուն. կը յարէ անձիջուկն -
 ընկն յետ Բեմքոյ եկաց իշխան Կիսիւ : : :
 (127) : Բաշիթիւս Բաշիթաւան, Աստուծան
 հրաւարակէրք աշս տուեցնուող կ'ուզէ
 յորեւէ աշն մեկնութեամբ : Թի 130, ծան : Թի :
 թի աշս աւել Բաշիթի Պատմութեան մէջէն
 թուագի ինկան է : Ետն հասանալուն կը
 զտնեմ աշս մեկնութիւնք - տունց տարտ-
 կուրի յարեմամբ ղէք անցած Աստուծոյ
 Բեմքի եւ Է. Ենի թագիւրոս վրայէն. տնուց
 համաւան յովանդակութիւնք կոտորէ ղը
 զտնէ երկու ղիւ մէջ ամփոփուած ըլլալ :

Թի — ի. գլխաւ ներքեւ աշս աւելափո-
 խութիւնք կոտորուած է տնագնդի. եւ
 աշն տնուց, ուր զեւեղուած է՝ արտաբաւար

չարմարանի և պեղեցիկ եկրպոյձ, աշնպէս որ
 ժամանակագրութեան տեսչայիք ընթեր-
 ցայի ժր. անդգրայի էր մեռչ քանոցքաւոր :
 Բայց աչ աշնպէս ժամանակագրութեան տե-
 չայիք աշրի ժր. Իկպերն, որանք էր պաա-
 ժայի ինն, տեղի ունեցան ևն Մուլէյման
 Թ.ի. 1715 Փետրուար—1717 Մեպտ. 22) և
 Ռմար Բ.ի. 1717 Մեպտ. 22—1720 Փետր. 3
 կամ 10) որով. Ղեւնդ, 49 Յեւն. 49. Գ. ԺԲ
 էր պաամէլք թէ Մուլէյման իւր իշխանու-
 թեան երկրորդ աւարին, աշն և 1716ին իգրա-
 ժարէր զորս բազումս և, աւայր ի մեռս զա-
 բախարին Մայիմայ և աւարէր ի գրանտ
 Կասպից : Մայիմ' ամբարպետի եղբայրն էր,
 որպիսի լեզու—Մեկիթի 74, որ աշխուհեաւ յա-
 ճախ էր տեանուի արարանան արեւելեան
 քանակի պիւիք : Մու էր որ յաւորդ ասորին
 շորժեց յանակր պէպի Բիւզանդական Պարս
 Թեփա և ասպետտեկից Միջերկրեայ դաւառ-
 ներն և, զբարեց Պերպամար (Նմաւ,
 Ղեւնդ, 116—118) և 1717 Մեպտաւար 14ին
 երեցան Կասաունց իննպոչսոյ զաներս աւա-
 թեւ և Էնթերկից մոջքոջապոյքք միամեայ
 պաշարման խնամեմէս յանն Էլիաւրնի
 6211) Պաշարման երկրորդ տմաին մեռաւ
 Մուլէյման (22 Մեպտ.) և անցաւ իշխանու-
 թեան պիւիք Ռմար Բ. Պաշարմաժր շորաւ-
 նտեկեցաւ :

⁷⁴ J. Mangum, Etimologie nach der Geographie
 des Pa Moses Khennawi, Berlin 1901. 42 106)

Այս պատերազմներու մասին կը պրկէ շ. Գերցերը¹²։ Նկատելով առաջադասական կերպով Կոստանդնուպոլսոյ նշանաւոր պաշտարարը՝ Առլիմ (Առաքումու), որ պիտի գտնուէր պատանձ էր ևս լիւրջի մէջ ձմեռած, ինչ տմար Արիմոսի մաս ունցաւ Շիքիսպանասար։ Ապառաժի կէսին շանակ պատ մայրաքաղաքին տաւի։ Ապառաժի սկիզբը երեւցաւ նորապարտի պիտի չբամանաւորութեան տակ։ Լեւոն չքան հաշիւութեամբ ևս բաժնութեամբ պաշտպանեց մայրաքաղաքը։ Ասանկան կրակը ոչնչացուց նաւերը։ Ասանկան կանկարէր իւր առկան անձնագործութեամբ դիմացան տնտեսութեան մասին սահմաններին, ևս տմարի ասարի մը նստան մայրաքաղաքին տաւի, բայց ի վերջոյ ինչ Արիմոսին մեծ կարաստով ստիպուեցան նահանգի պէտք լիւրիք։ Ինչպէս տիպերայաւանական նշանակութիւնը տրամեմէ իւրաքանչէր պահանջան։ Արաքանան մարտիկը իւր բարձր պաշտօնական կէտին հասած էր։ Բիւզանդիոն ևս իւր կայսրը, այնու որ պայն ևս մղեցին, փրկեցին իրաւունքներն ևս արեւմտեան բողոքականութեան։

Այսուհետեւ լքեցին արարները Բիւզանդիոնի գլխի յարմարական իւրաքանչէրութեան և պարտաւորին իրենց ուշադրութեանը

¹² Լ. K. Krumpholtz, Geschichte der byzantinischen Literatur München 1907. էջ 990—991

դէպի Կաթիկոսեան բարձրաբերձ չեւեռք։
 Եւթն տնտղացի կերպով գրաւեցին Ար-
 խաղիան, Հաղխտանն և Ղրաատանը. իսկ
 Ժուրքերու և Խաղաքներու դէմ, որոնք
 Դերքենդի կապանին չեւեռացին բարձունք-
 ներն նստած սողալ կ'աւաղատուէին Հայաս-
 տանը, արշաւանքներ կատարելով՝ պաշտ-
 պանապահան գիրք միայն բռնած էին։
 Ե. Պոլսոյ ռաջիւ մոթիւսից պաշտաւթեւել
 չեալ իրենց բաժնեպահ ուսուցիւթիւնը
 կենդրանացուցին ալս կէտի վրայ։ Մոյթ
 եան, իւս կուսեցաւ փափախուի յաջողաւ-
 թիւններով 1280-111 տարիներուն Վճմաւ.
 Ղեւոնդ, 1021 բայց յաւեաղել Մոյթան, ար-
 ցիկն Արցա-Մեյթիւ կորու Մաւմեա իրն
 Մոյթանի, սկսեալ 1124, ևր Նորեղրայրն
 Հնով գինըր Հայաստանի և Աւրպատա-
 կանի ռաթիկան տնտանեց, մոյց ալս կոր-
 մերը կորիւնը՝ միջամտիւ թապարերու կ-
 կրին մէջ Վճմաւ. Ղեւոնդ, 113-114)։ Բայց
 չկրցան Արաքները տնտանեւ կերպով տար
 ցնել Կաթիկոսի չեւեռացին կարմերը, ալսու
 ուր կատարանն նախկերքի ժողովուրդները
 տնտղար կ'ընդգդէին. ետեւ 114ին մէն
 ուժով մեւեթկոսան արշաւանըր մախուցե-
 ցաւ իւր նպատակէն 24)։

Դժբախտարար Ղեւոնդ ալս գէղերուսն
 նախած չաւաւաններուսն մէջ յաճախ խո-

24) A. Müller, Die Istan im Morgen- und Abend-
 land I. Bd. Berlin 1885. 47-48.

տոմ և անորոշ պէժքով. զեւ յետ աշխարհիկ
տկտես գոտայ. . . յոգէր պեղարանն. . . » (1405) .
« անորոշէր պէժքիմ պեղարայց իւր. . . » (1405) .
« պարսկեայ գոր գոմեմքէր. . . եւ տայր ի մեռա
պարագաքին Մայքիմայ. . . որոյ ուխտս եղիւայ
էրզժամբ շատի եղբար իւրում. . . » (1405) .
« Եւ յետ աշխարհիկ անարկ իշխանն իմայելլի
պէժքիմ պեղարայց իւր. . . » (1405) եւ պեղմա
պղւա քեւ Նախասաղը (Հեշմ) պեղարայց իւր
պէժքիմ » (1414) . Սէյն անարուշտ թիւեր պէժքին
պիւրտս կտրուց էր անպիւր տոյ աշն լամբարս
Նումի թէ Մայքիմ իննկուպ Հեշմ ամիրապետի
կայրայքն՝ պէղքերն կատարատեմ էն անոր
իշխանութեան որով՝ եւ թերեւս այս հաստ
կայացաթեանմբ ալ անպարտիւտեմ էն չիթ
իւ պարսիկերս աշն մասին մէջ, ուր յատկաւ
պղւ կը պատմուին Հեշմի շրջանի պարսկերս.
Ինչք նկատի չէ ասեռումն որ 705—715 . Դատ
մասկութի գաւին վրայ ետեւէ ետեւ նստած
էն, ասկանումեայ քնդհատմամբ Քրայս
Մէյքիմի (485—705) սրգիները՝ Պիթի (705
Հակոբ. 6—715) փեսոր. 1, Բուլլլման (715
փեսոր. —717) Բեպո. 2¹ 1, Եղբար Բ. (720)
փեսոր. 3 կամ 10—724 Բուռն. 25 1, Հեշմ (724
Բուռն. 27—751) փեսոր. 6 1. որտեի Մայքիմ զա
րապարս հաստարտողն շարս ամիրապետ
ներս ալ եղբայր էր. Գոտմիշը յաւ ծառով
այս պէժքերս ցեղարանութեան, ունէր իրաւ
ունը անորոշ արտայայտուելու. յայց իր
սուպերս ուղիղ իմացումբ կը կտրատի պէպ

քերութեամբ անկապութեամբ չուրի ու յապարակեանքի և պէտքերու ուղից պատասխանութեամբ: Ղեւանդի տնտեսական քերութեամբ ալ յապարակութեանը, որ կը տառաջաւի ետք պատասխանութեամբ, կը վերականգնել նաեւ ուղից ժամանակագրութեանը:

Պաշարման տարւոյն 1717-1781 պատերազմի բոլոր Միտր առ Լեւան ալն թուղթը, որ կը յիշատակեն Քէնփանէն և Կեղրէնոն: Նոյնը ուրիշ խառնուրդ պիտի նաեւ Ղեւանդ - սիւն և իսկ խորհրատարմի քննարկին Լեւանի՝ յղէր պետական և պրէր հրապարակ առ նա տպանութեան, յարում էին յապարակ մտպանքս 1765: Ըստ Ղեւանդի պրոպէն է Մարիմ (հիմա - և 17 1767), բայց պատմապրի յոյն խառնուրդ կարելի է տալ յամէն նաեւ Մարիմի մամ տնտր յապարակ Միտրի վրայ: Սյա թուղթի խորհրատարմի տնտր Ղեւանդի տպան յապարակութեան է - բայց և ալնուղէն կը տնտրուի հան Քէնփանէնի տպանութեան միտր: Գ...այլ տպ պիտաւթիւն յիցի իսկ, զի երկ ոչ մտպիս բնիկ կարիպարիս յեւանթ իմով - Կանաւանէնուր քա Մարիմ, որ է տաւն երկրպարութեան թո՛ւ տաւրից ի յաւանթիս պարաք իմուր, և պիտաւթ իաւրից տաւմ էրկրպարութեան՝ խառնակեայ իաւրաւիւնիցից ի պարիս քա: զի ողնուր իւնէ և պարիւնիլ կուտաւթիս միտր միմ է տաւթի տնտրիս 1767-1768: Մարիմի թղթաւրքութեանց թով Ղեւանդի հարկուր պիտի յաւար

Թույլ պետեպէն վերոյնշէալ յայտնեցին, տե-
րափոխեցապէսն էւ երկարացան անօրհիւս-
կաննեկր: Բայց ինձի հասանապէսն էր թուի
էնթացիւն թէ Ղեւոնդ Եսէրած ըլլայ թանկ
մը նկարագրական ապեր Պատրի հանդէպ
քրիստոնէական շեւտեւած քաղաքականութե-
թեան, որ ինչպէս Երեմիայեան ինքնի-
շաննն ընդէմ է Լուսնական ժամանակագր-
նեկր էր ներկայացնեն, յափաղածն տնտես-
դարձական էր: Իրարայի Լուսնի (Chro-
nique, II, էջ 188-189, ed. Chabot) էր որ-
մէր պահ ըտեքացաւ Պատր, «կուս շարժա-
քի քրիստոնէական», եւ այն՝ երկին նպատ-
տական: Եսէր փանդի կ'ուղեր ամբողջեւ
ժամանակական կարգերը. երկրորդ՝ Կ. Պոլս-
այն պատճառաւ, որուն շէն կրցած արիւտ-
նայ ճանիքները եւ արուն անշէ իրենցմէ
մէն թիւ մը հասարակ էր. Նախանձա-
խնդիր իւր կրննին: Կանաւակ էր քրիստո-
նէականութեւն ամէն կերպ: Զինքը հաշակցին
իրենց հաստատին նախանձախնդիր. համա-
րարարուն էր քրիստոնէական եւ ինքն ամէն շա-
րունքէն: Իրպէս զի քրիստոնէականութեւն
պատին ժամանակական պատճառ՝ շրջախնդ
ազգի ազգի անշաննեկրով նկար պատնէ:
Կարգաւորեց, որ ալ քրիստոնէականութեւն, որունք
ժամանակական էր պատնէ, պիտիտեղ յօժա-
րեն. շտախն ուրացան: Կարգաւորեց նաեւ
որ էր ժամանակականի գլխի գտաւ ըլլայ,
քրիստոնէականութեւն պիտի շեւտեւած

որ զրիստոնեականները թարմը պաշտանի շրաբ-
մբադարին, և բոլորից տեղեց յարժարածայն
ազատի, Կոչնակ պարնէ, Կորտոյ (ԿՈՐԿՈՐՏ)
հաղնի, իմամբուսան մի նստի, և իմէ տանիկ
մը զրիստոնեանց մը ապանել, պիտի չգտ-
աւարարասի մահուան, այլ միայն իրքե-
հատուցում պիտի պնարէ հինգ հազար
դրոպա²⁷։

Քէպէտ ա՛յս էր բնականապէս զրիստո-
նեականութիւն հաշկացրը իմարի թաղարանա-
նութեան մասին, յայց հոս արտաբանեալ աշ-
խարհի մէջ պայելած է հաղնուտպայնի եւ յու-
ւադայնի համբաւ. արար մտածեալ թիւերը
կը պատասխան իր տաւաքինութիւններէն՝ առա-
տեսանպաշտութիւնը, հեզութիւնը, արդա-
րութիւնն եւ պարպութիւնը, եւ իրար այ
Սմալը հազարանկ իր նախարգներու շուրջ եւ
զեխ պարքին՝ ապրեկաւ համեաւ եւ շու-
փաւոր. եւ պարմեց առաջին ամբարտեալե-
րու այս անփառանաւ ապրեկեալքը պե-
րուկեկեպունեցնէ, զինականարար, կը պլ
է. կը բնէր²⁸, այս թարեպաշտ, յախուսե
Էւանդոսի պարպը հնազան կենցաղն պերա-
նարպի, ուղտը իշխանը պարմաւ արդարաբա-
ն իշխմոյի եւ ուսմէին համար պարպարա-
կան մարպը. իշխպիսի ապրեկութեան առեկ

²⁷ Ան այս մասին նուեւ կը գտնէ՝ Յուսէփարե
Ղեւոնդի, Գրք. 11։

²⁸ Alfred von Kremer, *Lebensgeschichte des
Christen unter den Christen* I Bd. Wien 1875. 17
— 176։

7- ՆՈՒՆԻՊԵՏԻՐԸ . ԲԱՆ ԳԵ ԼԵՁՈՒՆ

Մանկին Ղեւոնդի չննք կընայր փնտուր տընդիտի ողորմուցիքի մը, որպիսին տեսած է յոյն կամ յատին մաստենապրտութիւնը: Բայց հայ աւուրի մէջ նա առաջինն է միտքաւննեալը, որ խելամուտ է ողորմուցիչութեան տարածութիւն: Կը կշռէ ողորմուցանելը հասուն պատուարի թեամբ եւ կը ներկայացոյցնէ զհոգիւրը համարատախոս, ստուգարան, իրապարտ շտն, պատկերասրահ եւ փայտեղէն արտաշտարտութեամբ:

Զարմանալի դիտմով եւ խանութրտութեամբ հնչ տուրած է նա ծանոթանալ մարտիկական աւանդութիւններուն եւ պատուար յիշատակաբաններուն, հմտանալ պատմական եւ պիտակուն պատկանութեան. որով մեծք ընտանի տնչաքի հմտութիւն մատանակակից դիտութեան, պար աշխատած է շահագործել ստաթիկայ միտնաբկութեան համար:

Որովհետեւ ինքը տնչաքի համեմատ է եւ տնիտտանէր, կը պարտանայ խափշ իւր անձին աւուրիութիւններուն եւ կենտապրական պնէրու վրայ: Բայց աւելց տրտաշտարտութիւններ եւ կորովի գրիչը, որունք իր մտքին եւ սրտին թաքմաններն են, կը մղեն յոյս իւր անձին վրայ, պարտնելու համար հոն մարդուան, հրահանգուան, հմտանալի հեղինակ մը, որ վարժ է մաստենա-

զրեւոյ, ունի պատարաստութիւն բժրոնէյութեանը։ Եւ նկատելու պանծոյժ մաղաղութի վրայ պանծազեղ եւ քաղաւ։

Մեր նիւոյմանքը եւս աւելի պիտի աւելի, Էթէ նկատել առնենք այն նպատակը, որուն մասանելու համար ամփոփում է նա իւր ոյժերը։ Նա իւր պատմապրութեան նպատակակէտ բնարած է հայ ժողովրդեան համ իւր հոգեմեծութեան ներկայացնել, ժեշտ մտեր անցեալին եւ մասնակեանքից դիտ պաննենքու մեայուն նկատապրութիւնը։ Բազմազգացի եւ մարտաբար մասնակեանք ունի նա իւր աշխիւ տուալ, որոնք ճանրասցան քաղեալ վրայ։ յեղափոխելին պատմութեան պատկերը, շարժելին ժողովուրդինը մաղա ղոյնքիւնը։ Գէժ, արեամբ ուսուցին արտ բունի մանտարնները եւ արտակի ծաւ աւայութեան մասնակին երեւիւնի խաղաղու կիրի մաշտարնները, եւ յատկապէս իւր տեղ հանան ժողովուրդը։ Սկսեք թիւա եւ անա ղուղուլ մեւք պիտի էք տեսնելու եւ զրի առնելու համար արեւնաւ ուստմութիւնը։ Ղեւնոյ աշխ թախարի պատմաղիւրը կը հան դիտանայ։

Սկսեալի մեանարեւութեան համար աւելի նա նախընթաց աւախութիւնը՝ նին ազգային պատմագիտները։ Բայց տեսնենալէս իմեն նախատիղ որինակ եղած է Մերիտը, որուն Պատմութեան շարունակույր հոյուն էք ըլա յալ։ Թէպէտ Ղեւնոյ իւր արեւակէն խաղաղ

ևս փնտց, բայց ևս աշխարհ ևս չարարել թոք մէջ՝ արուսեւոյթիւններ ալ, արանք պիւնքը հոյս պարտաւորութեան աշխատեմալ չբռնելին է՝ ամբարտնաճի փողոփողոյսն երեսութի մը.

Սեղեղն յառաջ՝ յանկարգիչ ևն իբ վրաս, անասոյ իւր մարդոյ յատկանիշները: Նա է՝ անկուսնէլ ամէն ծուռ ու մուռ կտածաններ, անմարտութեան պէտական՝ յաւի և եկան երեսոյթիւնըս պէմ էր հրատարակել պատահազմ, անարդարի և քոհասորի վրաս էր պարտէլ անխնայ յարմարում: Թեք էր տեսնենք նաեւ իբ կուրծքին տակ հաշտեանաւոր տիրո մը, ուր էր բարախէ, որ էր խնդանցի երբ յաջոյք բախար էր մարտի հոյսեմիքին և էր համակի տրամալեւամը, երբ իւր մարտօրդեան, սեպհանկան երկրին տնտեսեւորմէսի մարտի մարտեւորն հանգիստաւ և կ'ըլլայ: Թոյս երկրին և հոյ մարտօրդեան հետ կատարած է նա սերասելն, իբ երանեւորն մէջ հոյ արիւնի համարարեյս էր պայս: Պէտեւոյ միամամանակ տրամաւ հանաւոր մըն է մարտկարգին տրախ ներքին ծաշքերուն: Նա զուգարած է պէմքեր, թէպէտ հոյուսակակարիւնաներում, պոքանք նկարած է վրձինի թանկը գիւնում, ուր բարձրակարգեւ ևն արատարիւնն տեսի ներքին՝ բարոյական մարդու գծերը: Թոյսութ ալ անանք ուր է կատարարի մը վրայ յարիւսում ևն, բայց ևս աշխարհ է՝ յիշեալին մամանակակից կենցարդին համարումաբ պատկերն և երեսուն էր

քերական արարարս նկարչին ընդունակութիւնս
նկարի:

Թէպէտ 15մ¹ ասարկներու անքննչ հաս-
կութիւնքն նիւթ ունի իւր պատճառքներն, եւ
աստիպանաւ է դանկնք իւրեղեղ ասկտաւ և զիբրու
մէջ², յաւց կենդանի է իւր պատճառքն ունի.
որ ունի ինքնաշատուի հրապարակ մը. կաշ-
կանդող բնիկերցոյնն ունի ու զարուսչը եւ
չի թողար որ մտնէրոյթը ախրէ եւ յարանջը
թուշտցնէ հետաքրքրութիւնք³: Ամենաւերջ
կը նկատուի նկարներին անմահական շարժու-
ղորդութիւնք զէպի նիւթը. նա ամէն տեղ
աւրն եւ աստիպութիւնք հետաքրքրուցէ իւր
միտն հետեւն է յարեկամին եւ թշնամուցն,
հարապատին եւ ասարին: Անշտի դրուատուի
պէտք է մտնէ իւր սրմանտնտնտնութեան եւ
տարակաշականութեան: Զենք կընար մտա-
նունչէն կէտ մը. ուր պատճիչը դիտակցու-
թեամբ կեդման ըլլայ ճշմարտութիւնք:
Բայց խաւած են իւր մէջ համակրութիւնն
եւ հակակրութիւնք:

Նա արարական զերիշխանութեան ան-
հայտ թշնամին է, որուն անշտ յուսնին տակ
կ'աւրի իւր հարցնիքը աստիպի ծառայու-
թիւնք: Կը կեպեցուի ժողովրդացը, կը
հարաւաւարուի տղատը, կը թանաքարուի
կրակը: Եւ կ'ըմբոստանայ իւր հոգին: Նա

¹ Է. Է. Է. Բաւարացւոյ թուգին աս թմար, ինչ-
պէս նկատուիքն զիբր, ի գոյմէր Նիւնպի պատ-
ճառքն մտն, ուստի եւ անտնտնէն է զայն Նիւնպի
նկարագիրը բնութագրու ծածանակ:

յանասէր է, համակիր քրիստոնէայէ կաշակը
 և՛ կը պարէ թէ քրիստոնէական թագաւորին
 հաջորդին տակ խաղաղ պիտի բարգաւաճէր
 կեանքն աւելորդ, բայց ժամանակակից
 միջպայքանին խաղաղութենէ հաշտութեան յա-
 ճանանով՝ պիտի միանգամայն թէ սրտան
 հրամարտական պահանջին է շարունակ քե-
 ցայ փաղար: Իտպարտան ժամանակի մղկտին
 մէջ պայքարն է մեկուսի յաշտութեան թիւան
 պատեց: Սէր բռնեցրտակտր անստմ է
 հին խահաւական համարած է յորթիւնը և
 պիտպարթիւնը:

Բայց մեղանշած է Նեանդ իւր խղճի
 զէմ, ևրտ յախաղանց համակրութիւն ի
 ապաւ պրտն է Բաղրատունի տան, որուն
 կը պատկանէր և՛ Մեկեմար, և՛ աշտ հա-
 մակրութենէն ծաղաւն է իր մէջ հակակրտ-
 թիւնը հանդէպ Իսթիկեմեանեկտր, որուն
 մրտակիցն էին Բաղրատունիներուն: Սիյն ան
 մարտիւր, պար իւր թագիկ անմարտիւր ա-
 դինեւաւ զէմ, տրտեց տարտիւրաւի շին հա-
 մակրտաւախանէր իր անկրտակցական պ-
 տին: Բայց աշտ թիւնը պատտաւանն էր
 ժամանակին, որ որ տար տեղակայող Բա-
 ցրտաւաւի տան զէմ տմէն մրտակրտ թիւն
 կամ պարտարութիւն կը նկատէր պատմա-
 նութիւն հաշտեմիքի զէմ, մանաւանդ ժամա-
 նակ մը, որ հակառակայ կրտման բարտ
 տգաւաղրտակտն փարմէր պարայքն արթ
 աւշէն մտքայուն էին, և՛ պարմէւր Բաղրատ-

ասանիներն եղած էին, որ իրենց միջամտութեամբ պտած էին հաստաարագչութիւնը:

Ղենոնոյ յախտաւն պրի չէ ասանդած ինչ յաւն է ծերերու ասանդութենէն, այլ հչումն է յաւնները հաստի պատապութեամբ և պատմական կորսիցը ընտրած՝ տնկած է իւր անդաւաւանին մէջ: Ինչ և Սոփ: Փրատխանակերտցւոյ պատապութիւններուն համար փութաքար կորտոյ է ծառայէլ տյն պրայցը: որ հը պատմութի երկու պատմադիրներու ըստ նկատմամբ Սահակ Կաթողիկոսի ի իտրան Սահակո զորաւորի հետ ունեցած տեսակցութեան: Ի՞նչ Սոփանենէն հրաւսութաւն իկորապիր մը կու տայ գեղարին: Ղենոնոյ կը սիրէ հակըստեական յեղաշրջումի փերտդրէլ իրապութիւնը:

Անխորհուրդ, յանգուզն մեռնաբերութիւններուն հակառակ է պատմիչը ի բնէ: Կը պատապարտէ ունէն ապատամբական, ապատաղրական փորձ-ՄԱԻ աղատապրական շտրժումը չէ տղետրած պինքը: ոչ անոր համար որ աշտպիսի շտրժումներու պշտիջ Սամիկտեհանները կը դանաւէին, այլ վասն զի չմեռնաւորս կ'ըլլային յիրո պոր ոչ կարէին փնարելը (V.V): Հայրենասէր էր իր ողբն, բայց և խաչեմ և հեռաւան: Իր ջադարապիտական հայեցակէտները որաչելի կերպով ուրուագծած է Ղենոնոյ այն հատին մէջ, զոր պրած է Աշոտ Բագրատունւոյ ընթանը (V.V—V.V):

Պատմիչը սենած էւ գորգացան է քրիստոնէական դոստոխորականութեամբ. կրօնը մասն է տեւր չորացնէ: Շոգեակը է էւ տեւրափ խորհրդապաշտ: Կը պայքանայ երբ խանդարուած տեւանէ քարոյական կարգերը. կը պայքարին ազգիները, երբ շոշափեն տեւորէններու ստերը նախքան տաճարներու տեւամբ, երբ տեւանց սուրբ շոգույ աւտուտուածուէր կրօնու տրնէրու, քրիստոնէայ ապաւտին եւ ստեղին վրայ. կը սաստանի այն պաշտին իր ուղին զէպի խորհրդապաշտ էթիները, կրօնի էւ չաշրհեքի չամար եւս չատակու ու չերտներու չամար փութի պատկ չի տես:

Հաստատուեալ է, բայց չի սիրեր անհեղեղ պրոյնքներ, չբաշխաւան թանգապուշանքներ, չխաւերայ, մաշեցունէ կ'որակէ տին մոնպտեր, ուր զտեղի սուտ եւ բզման ի սրտից սը բուտ սրէ պատմեցապէ կը պրզէր ամբոխը սուպատմբութեան (111): Սակայն էւ այնպէս յնուիթեան մանուկը կը խորի իր մէջ, սոստուածափաթ փանտեանը, ապաշխարութեան քարագիշտ, ուր չամպուած է իւր չորացն խորքերը, ինչ տեղն բարիք ի փերսոտ կը ցուզ էւ ամէն շարիթ տրդիւնն է լիճեհափայլին վրէժիւցբութեան. ուստի քրիստոնէայ բանակին թաճուցութիւններու մէջ կը տեւանէ Նախախնամութեան ձեւը էւ իտիարպութիւններու մէջ անոր պատուաւս սույ խաբապանը: Բնութեան արհաւիրքները,

Ձեռք կրեալոք հասաւաւել թէ տշա պէպքերը, որոնք նաեւ գրքերու մէջ տարձապանդ պատմէին, վերջոյն թշուառներն իր բաղձաւորներն չընտհայեցութենէն: Ի՞նչ էր սակայն այս տեսարարութեան պատճառը: Մեզի համար տշա կէտը պաղանիք էր մնայ: Աւ աւելորդ է զայն յանկու համար պեղել շիմերը: Այս տեսակէտով արդէն ամբողջ շրջանը, երբ տպրեցաւ Դեւանդ, էր գտնուի նմանաբնակ արամաւրով պատած: Խաղանք գիծքք աւազրդով իր համապատեղներուն մէջ:

Հասաւաւրիմ այն սկզբունքին թէ աւել պատմութիւն ճշմարիտ առանց ժամանակագրութեան (Քար. Բ. 82), առանձին աշտգրութեամբ հետեւած է պատմիչը պատմութեան սկիզբի շարքին՝ ժամանակագրութեան, որ սկիզբի թիւի մը պէս կ'ընթաւայ յաճախակի պատմութեան մէջ²⁰²: Իր ժամանակագրութիւնը հիմնուած է ամբարպետներու պահուստութեան տարիներու վրայ: Զարգացական թուարարներն վրայ կատարուած տրարուածները պատմած է իր զարանչիւր ամերթոյեանի վարքին մէջ. որով հետաքուորութիւն տրուած է ստուգել պէպքերու ժամանակագրութիւնը որոշ հանգոյցներով: Այս ժամանակամիջոցները երբեմն աւելի սեղմած է, աշնու որ պէպքերը կապած է ամերթոյեաններու պահուստութեան որոշ տարիներու հետ. տեղ տեղ

նաեւ ամսաթաւերոյ եւ սրահան պատկերներոյ շնորհ շնորհն է պէպեքեայ շնորհա ժամանակը: Նաչոյ եւ Սիրաբաւան թուականներու կիրառութեան խոստովան է. վերջինս թէն ի սկզբան իմ ուղան է բնարեւ իւր ժամանակագրութեան, բայց ապա յետն է բոլորովին. իսկ Նաչոյ թուականը ամբողջ մասնին մէջ անգամ մը միայն յիշատակուած է ⁷¹:

Սրչափ ալ ժամանակագրական կոգնիտիւցայց իրեն աստիճանը ունի Ղեւոնդ, բայց նա կապուած չէ տարիներուն, ինչպէս տարեկիր մը, այլ կը պատմէ երբեմն պէպեքեայ իրենց սկզբնաւորութեան եւ վերջաւորութեան մէջ, թէպէտ տարիներու շարք մը պատշտէն անոնք (նմու. 123—124). ժամանակագրական հետազոտողն ալ ուսումնականները չեն խոնարհար տակայն իր սպիտ բնաւորը, որուն ուշագիտ է միշտ ⁷²:

Սրչափ մերժ է ժամանակն իրեն, աշխարհն աւելի յառանգ են պատմական պատկերներն եւ կը ցցան ին պէպեքեայ ստեղ եւ կենդանի: Բայց պարմաւ Նարեանցիւքն նկատուած են երկրքն ներքին յարարութիւնները, նախարարական տուններու փոխադարձ

⁷¹ Արարանի եղբայրներու գոյաբանութեան վերջը (էջ 103) զը նշանակէ Ղեւոնդ. յարաւ էր թուականութեան Նաչոյ ՄԷԳ, կարգա ՄԷԴ. Սիւտիւնի, ՀԱԻՆ. II, էջ 196-97:

⁷² Նմու. իւր տառաթիւները զեւջ եւ մեկ պատեւ յառաջին շարք կարգի պատմութեան: Կոյ եւ մեկ պատմիչն են:

աղէքսնէրք, եւ տունտորակ անաւատկան
եւ քաղաքակրթական պայմաններու սրտիւ
տուխիւնք: Իւր պատմութիւնք կը ստիճա-
նափակուի պրեքիլ ամբողջութեամբ պատմա-
քաղցմներու թուարկութեան շուրջը. երբ
պարմանալի բարեխղճութեամբ իմեք տարած
է նշանակել ամենայն նշգրտութեամբ անպամ
գիրքներու համ անկեանքներու թիւք (132,
101, 126, 156, 168 հան):

Անշուշտ անարգարացի է պահանջի
Ղեւոնդէն, որ նա տար ժամբամանութիւնա-
նէք համ խաբէրդանութիւններ քաղաքական
եւ գիտութեան իրարարմութիւններուն,
պատեքաղցմներու շարմարիքներուն, պարա-
գարներու աշխիւ, բնականութեանք, հան-
նարին եւ տաղանցին, տաղմարտութեանք,
պատեքաղմական խորագրտութեան, բանա-
կին բարոյական խանդամարտութեան հան-
մտտին: Այս կէտէք թէ եւ բարոյգին չեւ
անտեսում մէք պատմադիւն, բայց եւ այն-
պէս կ'իշխեն իր հմտութեան ստիճանէն
դուրս - սրտմեան ինքը եկեղեցական է եւ
սէ գիտութեան պատմիչ:

Բայց իրաւամբ պիտի պահանջուէր
իրմէ, որ աւելի քննադատէր, աւելի տը-
մառէն տարբարութիւն հայրենիքին բարոյա-
կան, կրօնական եւ քաղաքական պայման-
ները, ժողէր նախարարական տուններու ներ-
քին երկպառակութիւններ, թուշտիւնը,
բարոյաշարմար ժողովրդեան, աւելի ուժ գին

քողոքէր զէպի մանկատանու թիւն հասա-
տափութութիւններու, առ այս պարծալ ըստ
անշահներու զէմ, պարագաներ, որոնք
զժրականաբար աշխարհն նպաստեցին արա-
րական յատկութեան թիւններուն, նուազ
անկերուն եւ անպարտման տունաւորակ
էրկէրքի. բայց յատկապէս Հայաստանի
մէջ:

Հակառակ այս տնտեսաւ կողմերուն՝
պիտի բռնէր որ Անանի բարեաւ. հասած է
այն նպատակին որ պարտ էր իր առաջ:

Անանի՝ պատմիչ եւ ոչ նորաստան ու-
ղտն է բոլոր. ուստի իր պատմութիւնը չէ
շտեմնած հեռաբանական արուեստին, ինչպէս
այս հասարակած է յետագայ պատմիչներու
բով: Ճշտերու, ոգրերու եւ նման հեռա-
բանական արտայայտութիւններուն խեղճ
միտքն մասն շնորհած է իւր Պատմութեան
մէջ: Աստիք չկանաւ արգասիքն եւ իր
տեղեւորութեան մարին. յարմարած են հո-
մեառ իստաւով, ազոցուած են պատշտմ
տեղեր եւ երկան կու գտն շատ շնորհալից
եւ բնական կերպարանքի մէջ: Առ տունա-
րակ իր պատմեան նշանակիչ շատ պարզ է,
տնականագրութիւն, տնականիւն, բայց կուս,
գորիչ. գրնաւորական կարճարտնութեամբ՝
ազոց եւ մանական:

Երկրորդ զէմքով իւր Խեղհեաւին ուղ-
ղուած արտայայտութիւններ չկան հոն - նոյն
խոյն աշխարհի, որ խոսք կու գանաւ

խոր պաշտպանին հարց մտաին: Կր արի՞ իսկ
 տի: ասում էին պէ՛մբով: ասելի յոգեակի քան
 եղանի իմեով: Հմմտ: մտանցից 120, 137
 ասացից: 133 կայ է: մեկ պատնայ 125:
 կայ է: մեկ պատմել 126, դոք պատմեցաք:
 19: Երգէն յուսք 30, Երգէն ուսուք 150:
 Կարմէ մտանցաք, 322 հան:

Կարեւոր իմէ շրջապատուած է պատ-
 մասէր անկնդ իրենքէն է: անհնց անցեալ մաս
 մանակներու մտաին գրուց կ'ընէ: Իր պատ-
 մէր: ընթացքը կ'ընէ հասարի էրքէնէն էրքէնէն
 ազիտորմ տեսարաններու, ցերեկայաւ-
 իրեններու, կուտարաններու ի անո՛ւ հանե-
 ծանքներով, հասարակներով 19—10, 21—
 22, 130—137 հան), ասեւ մեկնադակած
 խորհրդ անո՛ւ իրեններով 1317 թ: Իստեք
 տեսարանի փնտրուած անկնդ իրենք էն՝ շա-
 հապարհու անկնդ իրենքու: աշապարհ իրենք:
 է: արգէն մամանակը ցուր կը նկարագրէ,
 կ'ընենցէր ասի իրենք թաթաղուած է: պեպան
 տեսասի իրենք: Պատմա իրենք ինչ ինչ հաս-
 տատաններ ցուց կու ասան իմէ պատմիչը յու
 ուսած է: իմքանած էր հանտարակած արուս-
 էտք է: պպան անոք արեւորք պատմական
 պրակտուս իրենք մէջ: Ընանդուպն նմանուս
 իրեններ, ոչտարանուկան պատկերներ ցան-
 ցու անպամ շեն դիւրտարակի էր նկարտ-
 ցու իրեններէն: համեմատու իրեններ յու
 մտաին 11: Երքէն փոխ ասեւտում՝ աստատ-
 մանայէն օփուտում էն իւր մասենին մէջ:

Ըր պրշին յաւազուպն նկարագրութիւն
 Նէքն կարաց են նկարագրի նախամտոր
 Է. Պոյաւ յաւազ (110—111), Նման. Է. (114),
 Է. Նէքնին կոթիւ (115—116), ամբաստան
 նստան յարագրութիւններէն էր յիշեմ
 էնտնի պատասխանը առ Մարիմ Էջ (116—
 118) :

ՂԵՒՆԱԿ յեղորին վրայ դատաստան
 յնէլէ յաւազ պէտք է աշքի տաւ յանձնայ
 աշն որ հոս էր Ժողովէր Է. դարու իրկրպոյ
 կէսին, Էր տամկին թոյ յեղորին սկսած էր
 ապշն Էնթարկիւն աղտոտորութիւններու Է
 աքարագան տպւեցութիւն : Երաւորութ. որ
 էր մշտնէր մեծատեսաններու մէջ, դարուն
 տէրքները յնայունան էր կեպն պատանակներ
 նկարագրիւր — որ պէր նարանութիւն էր կու
 յաւէր — Նստեւորութիւնը Նէքնարուն
 պարագներու արագորութիւններուն : Թէն
 դարու Փաթեւարի, Եւթ. Բմատտաւէրի,
 թուորովիկի պրութիւնները աշն Նստանքին
 մէջ ձեւան էին : Ընտնց տարագրութիւն
 ՂԵՒՆԱԿ տաւաւ էր հոմ նստայ յապոյ նստ
 պարագի աշակերտէր Է. Է. Է. տաւէին վրայ
 ժամկիւնները աշն ապագութեամբ յորինուն
 էին աւելույ, յապագայէր Էր իրիւր զիւրիւ
 տորտիւնաւաւաւաւաւաւաւաւաւաւաւաւաւաւ
 ներքոյ էր պարզէր : Բաւց յեւտապրին, Էր
 Է. Է. Է. աւաւ պատանական պարագութիւնը,
 տեւոր Նան ինքնուրոյն աւ, մատուարագա
 Էր Ժամկիւնայի պարի Է. Է. Է.

բխումբի պատմագրութիւններուն։ Այսպէս խորհիչ կուտայ իր ուսնագրութիւնը (philosophologie), որ բացարձակապէս բանաստեղծական վրայ կատարուած է։ Եւ արդիւնքն է գործուոր յիշագրութիւնն։ Իր ուսնագրութիւնը պոյնպոյն է, ինչպէս Էրսիներանդ։ Որովհետեւ կը բաղկանայ պոնասպան տարրերէն։ Բայց նաշանակուելու գրչի տակ արանշիյի ներդաշնակութիւն գտած։ Այնչէս գտտաւեմբ գործած է Նոն Նգոր արդեցութիւն, բայց նաեւ ոչ-գտտական հեղինակները դարձած են իր վրայ իրենց կնիքը։

Նոն Բարգիք Զաշկարգեան ինչպէս (Ա. Ա.) որակած է Ղեւնդի ինքուն յատուկ եւ բնախիւ հայկարանութեամբ։ Հակառակ այս նշգրիտ որակման նախնադարեան կը գրէ։ «Այն հակիրճ արդէն Մ. Էրսինեանցոյ, ոչ պարզ արդէն Պ. Փարպեցոյ, ոչ արդար արդէն Այրիշէի եւ ոչ ծագականներ արդէն Մովսէսնէն Կաթողիկոսի, այլ հասարակ ինքնութիւն (էջ 15)։ Իսկ գաղղիւնը թարգմանութեան յատկարանին մէջ կը յաւելու այս արդեւուն՝ «նաեւ ուրիշ չէ եւ աչ աչ ստիպան, մէկ խոսքով ու մըն է, որ ստիպանեմն ունի իրան մը շունի։ Ղեւնդ կը սիրէ կրկնութիւններ, եւ իւր ունի կը չէ արդէն հայ ժառանգարութեան անկման նկատարողիքը։ . . . Պարպեցի եւ յաւախ միմի ուսով գործ մըն է, անարմէք եւ անշահապարհ իրրեւ ժառանգարեման աշխատութիւն, բայց

շտփեցանց անհրաժեշտ էւ շատ թանկացին
է իբրեւ պատմական հիշատիբութիւնս (ՎՃ
XIV) :

Քաղաքացւոյք, քանի անձանք էր նշա-
պարտեին Ղեւոնդի Պատմաթիւնն բնագրքի,
նոսարականութիւնս չէր կորույց զեռ պատեւ
Ճաշնագարեանի տշս իրեսս պատաստանին
արդար կամ տեղորոշ բնագրք, բայց իրաւունք
տեղէր Մ ա ս ե ա ջ Ա զ ա ս ե ի (1876, ՃՃ 242)
զարմանք յայնանչս թէ ինչպէս Ազդերեան
տշսպիսի պրտանք մը սշատեւ է ընտրի
նաշկարանութեամբս կը նշանկէր: Ճաշնա-
պարեան սակայն յետո շեղեց իւր յախաւն
մինչոք էւ պնդեց յամատարէն իւր պատաս-
տանին միայն նաշիւնն բնագրքի նշատարա-
կութեան յատաճարանին մէջ: Երբ Ճաշնա-
պարեան զնամ: Դրասխանեկերացի էւ զՄ.
Աւրեւանցի իբրեւ նաշկարաններ էւ ունայեւ-
ներ նամեմտութեան կ'աւանդ ընտրուչիս:
նամար Ղեւոնդի ուն, ցոյց կու տայ որդէն
իւր անշափանտութիւնս աշտպիսի յեղուա-
կան խնդիրներ յանձնու մէջ:

Հ. Կ. Զարրանայեան (ՎՃ 475): Ճաշնա-
պարեանի տղղեցութեան առեւ է. էւ տար-
տաւորէն կ'արտաշտատի: Կանչն նկատ-
մամբ շատ պարզ էւ նեղական է, էւ գրեթէ
նաւարակաց խոսից ունէն շտարեքիբ: Տա-
րակոյս չկայ թէ է. դարուն պատմչաց ուն
Ղեւոնդեայ Էրիցուն պրքին մէջ շտեմտիբ:
բայց Էթէ ուղեկանց եկտտեյ գինքն իբրեւ

Ը. գործու մտահեռացիւր մը, մեղի համար
 թէ հնոգը եւ թէ պատմագրիչով մտադրու-
 թեան արժանի անեմ մը կ'երեւայ: Դեռանդը:
 Այս իմաստով կը գրէ նաեւ Հ. Ղ. Աբխիւան
 «Հայագրություն»-ի Ա. § 357. «Թէեւ յառեկնայ
 տիրաբար եւ վաւերական աւ մի, ... բայց
 պարմեայ խոհեմեան կերպ մի ցուցրեմ, եւ
 բաւական յատակ շարագրութեամբ, ընդ մէջ
 եւ մի. պարտեց նորր ճաշակով գրուցաց եւ
 ընդ մէջ մի. պարտեց յափաղանց նախարանից,
 ինչպէս Աւագանեմ Հ. Կոթմարիկեանը:

Հաշիւաւանց այս աննպաստ պնդումս
 թեան Դեռանդի ուրիշ, Ապերեանի կտրուկ
 վնասը ոչ թափ համարիմ ուղղագրին: Դեռանդ
 սխառակ եւ ընտիր՝ հայերէնով մը կը մար-
 անայնէ իւր մտքին յղացումները: Այդ հայե-
 րէնը ոտմկարէն լեզուն չէ, պար թափմովան
 կը սքրտնին մէջ, այլ ստացուած է աշխա-
 տութեամբ, եւ որոտըստաստան՝ արուեստ
 առօր: ճաշակ, պեղտըստեւտ, գլխակն թոփշը
 երեւցնէր գիտութեան է հոն: Անպիւնքն է այն՝
 պատմական հեղինակներու մէջ երկար պեղտ
 բուսնէրուն, յաւնախ ընթերցման եւ հետեւո-
 տութեան: Թէեւ անոր մեղքին ասակ կը
 ելմտընէր պատմական եւ ոչ պատմական հեղի-
 նակներ միտմտանակ, բայց նաշակընտիր
 թիմքը եւ թափառեմիկ տեսողութիւնը գիտա-
 ցած են պանդոցանէր գաւառական լեզուին
 հմտըքը եւ նստանքը, եւ ջանացած են իւրաց-
 նէր անոր աստեղյութիւնները, եւ տանց

[illegible]

Դեղատնայինները և անհատական բուժօգնությունը, բնակարանային և քաղաքային խնամքը, համայնքի շահապաշտությունը:

սու թիւերը եւ Լրամշտականութիւնը պարզե-
 են Ղեւոնդի չեղութիւնը : Աղտոթանցեցոսի կա-
 ղապարի վրայ, եր կերտել բաւեր, մոպոս
 վրդական բաւամթերքէն փութի կ'անել առու-
 թիւններ, վաշխչոթիւն տալու իւր ար-
 աւայալու, թիւններուն եւ յոտակութիւն իւր
 մարերուն : Հայ չեղումացիտութիւնը պիտի
 պտել Ղեւոնդի արուհոտանացի մէջ հարուստ
 նիւթեր ի նպատակ հայ բաւապիտանութեան :

Հիշիկեան կան պարտի հետեւողութեամբ
 դուրբունտն կեղծպատական գտնդաղկուն եւ
 պատարբեկաշ պատմապիտան սնուցիտու-
 թիւնը, պար Մոսկովա թարեւոցի հրապարակ
 բերու, տակուին անանանթ է մեր հեղինա-
 կին, անանանթ է իրեն նաեւ Յովհ. Երա-
 թանակերպացւոյ նապաղ, անխորան բայց
 աղքատիմաստ հեղադրութիւնը : Ղեւոնդ
 եր սիրել արաւայալութեան պարզութիւնը,
 յոտակութիւնը - տնոր պրշին տակ բաւերք
 իմաստ ունին - տնոր եր նաւաշէն դադո-
 փութերք մարմնացնէլու եւ տեւանելի բն-
 ծաշէլու եւ ոչ բաւախորդեր սարքիլու՝ եւ
 ընթերցողներք պարմացնէլու համար :

Սեստի Ղեւոնդ իւր աշտաշխատութեան
 մէջ պարմեալ վերջինը եր հանդիտանայ հայ
 պատմապիտանութեան մէջ, իրեն, հեղադր բն-
 կարիւր պատմական ունին : Նա ստուեր չէ
 բերան նախորդ պատմապիտանութեան ունտան
 աշխ բնդ հանդիտակը դարգացուցած է անտնդ
 արուհոտը եւ Լրանցով մի կատարելապար-

Ծած : Ղեկունք նպատակած է հաշ ապամտա-
դրութեան անոն որ առաւել ուշագիւր եղած
է չեզուական, հետեւորական եւ զեղարուեա-
տական արաւայայտութեան, աւելի զբնու-
թեամբ մերմեցած է նիւթին եւ հակերն,
սեղմ նկարագրութեամբ քանայած է դրժ
աւանդել մամանակներու զիպաւածները :

Այս հանգամանքները կը առիպեն զմեզ
աւելի ուշագրութիւն նուիրել անոր անձնա-
ւորութեան, որ կը յայտարար ասպանդաւոր
նկարագիր մը, ճանգական միտք մը, քաղ-
մանմտ եւ փորձաստ մասենագիր մը :
Անոր զբիւր, ար տեսգիւր կիրթ գրական ունի
մը կ'իշխէ, ինչի կու տայ ենթացիկաւ թէ
միտքը սրած էր արդէ շանախակի դորձածու-
թեամբ : Եւ եթէ Բոցքատունի իշխան մը
յանձնարարած է անոր պատմական երկիս
չորիւններ, պէտք է կարծել թէ անոր զբի
ընդունակութիւնները ծանոթ էին իրեն ու-
րիշ աշխատութիւններէ ալ :

Ղեկունքի պատմական աշխատութեան
դնաւաւանկերը զեղեցիկ կերպով անում է
Կ. Սոքեան հետեւեալ տողերու մէջ (էջ 28) :

«Մասեանն Ղեկունկայ կարեւոր է յաշա-
րանաւորաց ալ միայն զիսն աստղարան
պատմութեանն անցից եւ զիպարտնայ հաշ-
րենի աշխարհիս մերայ, ոչք եւ ոչնուր զի
տեղեկութիւն ոչ առկու ասանդէ եւ յա-
ղապս Արարացոյց, Ստգրաց եւ թիւանդա-
ւոց իւրոյ մամանակին, զորս չէ գտանել :

տա առջ. պատմութիւն մեր և. առարայ :
 Ի. քանցի տառապի պատմիչը տեղից աշխարհ
 ժամանակի յարեան անսպառն" ի Թ. և ի Թ.
 դարա, իսկ ժամանակաւորացն Թուրքաց տեղե-
 կութիւնք հաստի կտիրք ևն մեծաւ մասամբն
 և. ոչ թաւ ամենաշիւ տարմանահասար"՝
 պատն աշխարհի և. ևս ստանկուն տարմանի
 ստարգարուն պատմութեանն 'Հեռնդէտը :

'Հեռնդ. իննչոյ միակ պատմիչը ԲՅՈՒ-
 ՇԱՅ շրջանին համար, գործունայի չէ որ տա-
 նար մաստանդ պարսկաւ է յետագային ժԷՃ
 րնդունելութիւն : Ինչպիսեպէս զպատմիչ-
 ներէն Լեւոնիկ. Բիթիթար Լեւոնի, Լամուկի,
 Վարդան և Կիրակոս Կ'պատմին անկէ ախ-
 րաւ : Բայց պարմանալի է որ հետգոյններէն
 Սաւր. Դրաստանտեղիւրացի անծանաթ մեա-
 ցած է 'Հեռնդի ժամանին : Թուրքաւ Լի-
 ճիւղի թէ և յանուանէ չի յիշար պ'Հեռնդ
 և պատմական թուականներ չի տար անկէ,
 բայց կարգացած կ'երկուս ժամանակ և.
 ազգայն անոր թաւամբերէն : 'Հեռնդի
 Վիճարգութեամբ ծանոթացած է Ես Խաւ.
 Սմարի և. Էւան կայսեր թոթակցութիւն
 ներուն և ամերապետներու ջանկին : Եյս
 կէտերու մէջ անի թաւական թուականներ
 առ : Թաւարի էր յան իր մաս Լիւժիւնի սան
 վերաբերեալ հաստաններու տարմանիցը,
 մասնաւորապէս Լիւժիւնի կարալիւնիւր
 պատմաւոր Խաւարաւիկութեան չի յատկո-
 թիւնը, որո 'Հեռնդ աշխարհ պատմութե

պէրամբ Եկեղեցւոցսն էր : Թեքեա գոյն Նրա—
պարտեղի դրաչ իրքեա ծանօթ ներշնչեալու—
թիւն Ենթադրեալ՝ չէ ուզած կրկնութիւն
ընէր : Այս պարտեղիւնը հաւանական է՝ Ե—
րեւել տալու : Եւ Թագմաստ տունտալանի
հարեւանցիւրէն ժխտել Եկեղեցւոցսն
է ստորապահան ստորապահութեան աւանդին
Անտառայ շրջանի : Եւ իւր բնորոշանի Եկե—
ղեցւոցսն թիւնն ունէր Ղեւանդի պարտապահութե—
ան մէջ :

[illegible]¹ *Sci. Rep.* 1913, 4, 558—560 (Zimm—Reichardt).

Թէ Սյրս Է. գարսե տրդէն մասն էր
կազմէր «Հայոց Պատմութեան», չի կրնար
կասկածի ենթարկուիլ. Յովհաննէս Դրաս-
խանակերացի կարգաւցան էր դայն⁴ :

Չ. Սյրիս թէեւ ուշագրութիւն դարձու-
ցած էր բանասիրութիւնը, յայց ուսումնա-
սիրած էր զայն տառաւորացէն տպրիւրներու
տեսանկէալ⁵, իսկա ստորոք պատասխանեի, թէ
Հարություն Է Սյրս «Հայոց Պատմութեան»
հեղինակին, ուրի՛ր թո՛ղանդակութեամբը ա-
ղերս «Հայոց Պատմութեան» հետ. եւ մերս
լուրդէս էր պատշաճի՛ տչն իւր նկարապրագի-
ւեւ որպիսութեամբը Է. դարս տչն մամա-
նակահէտին, ուր աւարտած է «Հայոց Պատ-
մութիւնը» :

Այս նարչաւներու ընծութիւնը տքո՛ւ
աւանդուրդէ մեզ որոշելու Սյրիս գրութեան
մամանակը եւ հեղինակը⁶ :

«Հայոց Պատմութեան» գիրքի՛նքիւր
դրութիւր Գ. ԿԵ՛՛՛՛՛՛՛ հետաքրտէր տպագրիւի պատ-
կերոք. Սահակ եւ Մանանց շրջադարձաւտ

⁴ Հիմա՛ լէ՛ Ե՛. 12—13, 110. ըստ լուր. Տփղիս.
1913. Թարգմ. 77 (հրտ. Մոլոմանով). Դր. Մո-
ղոմանով, Թուրք. 17 55 (հրտ. Կոստանով).

⁵ Тр. Халатянцъ, Армянскіе Архивныя и
„Исторія Арменіи“ Монаха Хоренскаго, Москва
1902, Գրտ. Ա. 17 205—206 եւ Բ. 140—141:

⁶ Տե՛ւ աւ աղ.՝ Հ. Դ. Ազիթեան, Կոթեւ
Թորեմայոց մամանակն եւ տնտեսութիւնը. Ան-
հիւս, Նոր շրջան, Է. տարի (1925), Թ. 4, լէ՛ 67—77
Ինչ որ վարձան էր նա մամաւոր տղերս մէջ եւր-
կայաքներ, այժմ կու գամ մանր ընծութեամբ ուսում-
նասիրել:

իրենց աշակերտներին կը կենքեն իրենց մահա-
կանապան խաղաղութեամբ (435) և 436) :
«Եւ զբաւեալ աշակերտաց նորա (Մահապան)՝
կրանաւորաց սպառնալից ի գոտոս իւրաքան
շիւք՝ շինեցին վանորայս, ժպտման և գո-
րաբուս : Ի աշտոցի մահն յետոյ շղաթեա
և պիտկոյստութեան և տեղապահութեամբ յառ-
ջարկեաց հրամանաւ երանելոյն Ի հորոցոյ՝
նորին աշակերան Ամբակի թահանայ ի Վայոց
մարտ, ի խաղաղութեան և անկէ : — Եւ արտեան
գիրք երբորդ յանկ ելանելոյ Պատմութեան
Հոյսոյ մեծաց :

Յարտեաւ առաջին կէտը պատկերիւ մէջ
կը ներկայանայ քանդակի հրապոյրով : Ինչ
ուրոյցիչներու բնորոշ աշակերտները բար-
դաւան գործունէութեան մէջ են : Կոյրը
գարգաշած է աւելի քան երեք՝ անկէ յա-
ւաթ եւ հարբ : Այդին է Եկեղեցւոյն համա-
նին եւ առաջնորդն է աղապահութեամբ
Ամբակի թահանայ, մին Ինչ Խաղաղութեան
մեծաւասուններն : Կարակոտոյց վանքերը ի
են արտեան կրանաւորութիւն : Երկրին սպա-
րապետութեան Վարդան Իսմիկեանի
մեծն է, որ իր յարջը հաշտ եւնի Խաղա-
րապետոյ ապաստանին : Պարակոտեա թան-
թիւները պէս լին Ծանրացած խաղաղա-
բն եւ ամենին վրայ :

Ինչ շարժումիւ ունի Ի - Խաղաղութի
ուրապետ աշտոյթի բարեկարգ գարապոյթով :

Այդը պիտի պատշաճէր անգործն է ժառ-

ժամակին, եթէ Մովսէս Նախընթաց գլուխ
 ներսուն մէջ տնայարկան բլլար քաղաքական
 կեանքի բարդութիւններուն, քաղաքակրթա-
 կան կենցաղի տնկումին, ժողովրդական
 տնտեսութեան բայրայունքին, պատմն բռնա-
 պետեկորս իխառ հարկապահանջութիւնե-
 րուն մտտին: Իսկ զկան ինն տղայքիս տն-
 եարկութիւններ: Եթէ Վաչոյց Պատմու-
 թիւնք շուտօքան բլլար ԵՊԻն յաջորդող
 քառասունամեայ շրջանին տղայքերը, թերեւ
 առիթ առնելուր Մովսէս թափելու: արտա-
 սուր, քաջ տղա շրջանը նիւթ չէ եղան Վաչոյց
 Պատմութեանը:

Այդպիսի հանգամանքներու մէջ Այրս
 Վաչոյց Պատմութեան գերէր՝ անյարդիւ է
 տեղւոյն, ժամանակին եւ պարագաներուն:

Վաչոյց Պատմութեան այժմեան մեծի
 մէջ կը սպասուէր հեղինակէն աւելի գերխա-
 րանութիւն: Մովսէս մեղմարկան էր աշխա-
 տութեան Ռադքատունի իշխանի մը հարկե-
 ցութիւն հրամանով: Եւ գլուխ հանած էր գայն
 ամենայն տնտեսարանս: Ինչպէս սովոր էր
 դարձին սկզբնաւորութեան մէջ եւ չընթաց-
 պատմութեան յանախ անդամներ շրջէ, իւր
 խոսքը Պաշտօնին, Խոյնակն ի կատարածին
 կը սպասուէր ընդհանարար, որ շուտիւ
 պրտատիքներ անոր հասցէին եւ յայտնէր
 իւր խանարհարար յանձնատնութեան բարեաւ
 կատարումը: Այսպիսի տարաւարանութիւն
 կը բացակայէ այժմ Վաչոյց Պատմութեանը

էլ ո՛ր Էկեղեցական գիւղումնեւորու Ճասին
բազմաք կը տարբերին: Այդ դասական շրջա-
նին համար եւ միակ հաճութաւիտ կը հանդ-
նամ Հայաստանեայց Եկեղեցւոյ գլուխը յան-
ձին Ռահակայ, ժեթեյով բուրք տարչուքին
հակառակաթուռերը իրեն և զճերտաքու-
նէք: Տեպս չի ներեր ինձ աւելի տարածուի-
այց խեղճերեւորս շուրջը, որոնք կը պատկա-
նին Ռ. գարսս պատմաթիւմն եւ ոչ Ռ. Թա-
րեւայոյ Ողբին աւաւնեւորուքիւն:

Ա. Ողբս պատած է զգայուն գրչի մը:
Այն հիւսուած չէ պարզ երեսակայաթիւմը-
տղիւնքը չէ յոռետես մարի մը, այլ տնայ
թեյաղբիչը հզամ է այնպիսի պատան մա-
մանակ մը, որ տուչուն էր աղիպարմ տե-
տարանեւրով, հեծեծտեքեւրով, տնտեսա-
կան էկանքի թշուառաթիւնեւրով, համաշ-
խարհական ուղիտեւրով: Այլ թէ քույր մը
կամ գիւղ մը տաւարիւց է Ողբին, այլ բո-
գանցով և Հայոց աշխարհս: Եթէ մանր
տարբայուն ենք Ողբին հազմիչ մասերը, հե-
տեւեւաւ տարբերքս պիտի տեսնանք հոն:

Ա. Հայաստանեայց Եկեղեցւոյ հաճութա-
ւորի գրութիւնը:

Բ. Հաճութն եւ Հաճութեցիի մահուամբ
սրբայան աղբեւոյնն որտի թախիձը:

Գ. Եկեղեցական եւ աշխարհական պա-
տահարպեւոր յարաշարումը:

Դ. Թնայթեան արհաւիրքները, որոնք կը
հարստենն Երկիրը:

Ա - Բնագալութեան կեպնքի մըրկայայց պայմանները, անպայար պատկերացմանը, ասոր հետեւն քեանմը արեւնհեղտ թիւնը, աւարտման թիւնը, ասկիւ եւ շիւտնպայ թիւնները եւ անանք յազմարթեանցք :

Ընդարձակ անպ կը պատեն ուտմէին եւ երկրորդ կէտերը, սրտնք տեղադրէն կապուած են իրարու հետ եւ ընդհանուր պատկեր տեսիլի Արեւիկայուն ներաշխարհն ասին կեպնքի աւարկայ : Այս անպ Աղբաւայր եկաւոր ունի Հոգիւ մը եւ Հոգեւորկից մը - գաւաւանտմ են եւ մին եւ միւրը : Աւաքինը իրեն հայրն եղում է, երկրորդը պաշտպանը - նորը կեպմանի ու պաշտպան է անմտնութ ուղղութեամբ : յաւելուածարար ցոյց կը սրտի թիւգանդիւն : յարմարայցն կը թուիին մ'աւանդու - թոյց գերազարմին գտած է գաւանդու գաւանդու : մինչ իւր միւրիւրու - թիւնն երկրորդին հոգանայցն ասկի յաւապտմ է գաւանդ, կորածցուցած է նաեւ պաշտպանը : Այն հոգուին եւ ոչ հոգուակցին տնտնը կը յիշէ յաւանդ :

ժամանակի անկար կը կոչանայ յայնմ որ յարայանն կորցերը իւանդարուան են տանկուսքի - եկեղեցականութիւնը թուապած է իւր կարգերուն մէջ, կ'ուզիք ասանմարման, ստման - էրը նուապած է, անարման պաշտանանները կը հոգուեն մարգարայ : Արտականները անարի են, գաւաւիք, իշխան - ները ընչարայց, գտտուորեկը անարգար :

խաղաւ, սքնէրք անդ որթ : Ասաք չեւտելու թիւնն է տատառեմասաւսու բարկութիւնք, քնու, թեւան իտառութիւնք, արհաւիրքներք, անդադար պատեքադմէներք, ձանք տաք թերն եւ հարկապտէտեթոթութիւններք, սոգք, չիւտեղաւթ թիւնք եւ չամանաքակց ժողք :

4. Մամամանկի նկատմամբ ելլակէտ ժրդանեկութեւ համար ուսից կրտսն պիտի ձառայելն մեզի քնութեան արհաւիրքներու ժողիւն չաղտրցոտան մանրամասնութիւններք : Ասանք ամփոփուած են չեւտելուց տողերու ժէշ 1304, 71—205, 1) :

4էն ապա չանդիմանութիւն այսպիսի գիւնք, էթլ ու անտես առնէր Աստուծոց, եւ տարերց փոփոխել գրեւորիւն իրելանց : Գարուն երաշտացեալ, ամառն անձրեւալոյց, տշուն ճմեռնալոյց, հմեռն ստատկասառոյլ, մրրկալից, յերկարեալ, եողմբ բճարարք, խորշակարերք, ամսաւաւուսմբ, ամպէ երբն կէցք, կարկտածուք, անձրեւն տնմամանակն եւ անոյթաւնք, ողք դառնաշունչք, եղեմնարկութ, յրոց ուղաւելուլն անողոտն եւ օտողելն ամիկաւուսքք, երկրի ամրեքուսքիւնք պողոց եւ ամառնելու բիւնք կենդանեալ, ոչք եւ տատմմումն եւ զգրգմումն : Այլ վերայ այսք տմեռայնի խաղաթիւնք չամենայն կողմանց . . . ասիք ամրաւ եւ ելուանդաւ բիւնք եւ մտմբ բազմարկանակտատաւ անպաշտութիւն մուտցեալ եւ տմեռ կարսութիւն գէշեկիս :

Այս արհաւիրքները բնութիւնն մէջ շատ
 ւառի կրկնաւոր հրեւոյթներէն շին երեւար.
 անոնք իրենց սաստկութեան մէջ չիւսթ-
 ապիւն տեղի թափներէն պատճառաւ այն
 հազարաւոր հազարայեցեան կ'աւանդեմ.
 արեւք երբեմն երբեմն շրջան կ'ընեն երկիր-
 ներս գրաւէն և կը գործեն հոս և հոն սո-
 հալին աղւտներ: Անոնց ապահանքը ապրե-
 ցութիւնը շէր կարող ռահմանափութեամբ
 բոլոր բոլոր ռահմանի մէջ: Սատի ինչ որ ահա
 ստեղծ էր Հայաստան, նոյնը պահպանած պիտի
 թշուար նաեւ ռահմանակից աշխարհներու
 մէջ: Այս պատճառաւ այս գործնական փառա-
 ներս և յատկացած սարսափի արեւազանդը
 կրնանք յատար յոնց նաեւ արտաքին մասա-
 նակաւորներու յով:

Սաստկութեամբ և պատճառաւ փառա-
 ներսն անոնց շատ նման կ'երեւան այն
 պերսեական արեւազանդի պիտեաները, բնու-
 թեան արհաւիրքները, արեւք աւելի ունեցան
 Է. դարու երկրորդ կէտին, յատկապէս
 712—717 տարիներուն Ասորական Միջու-
 պետը: Այս մասին երկարաշունչ ապերով
 աւելեկութիւններ հազարայեցի Ասորե-
 նախնի Քել-Մահրացոյ «Ռահմանակաւորութեան»
 գրութեամբ տեսնուած մը: Պարեւար

* Chronique de Denys de Tell-Mahre. Qua-
 trième partie, publiée et traduite par J.-B. Chabot.
 Paris 1905. Բնագիրը գերեզն ժամերու մէջ թղթերու
 տեղով կրկնով, պահպանուած է:

էր Համարիմ անծանօթ ժամանակագրին
ժամբապատում նկարագրութիւնը ներկայաց-
նելը Համարումս դժերով, զի բացնելու Համար
Համեմատութիւնը Ոգրիս անգերաւն հետ:
Փաղուած ընկրս էր սկսիլ ընկան թո, անանի
գիրգուածնէրէն:

«1871-1872-73» արար (ժարտ) ամսին
Տիգրիս չափազանց յորդեց, այնպէս որ տա-
մանադատաւը ընկէց, բոլոր Լզերքին
այստանաւից ժեմ ֆատմներ, տարտ իրեն հետ
տուններ, ջրապայներ, գիւղեր, ժարդիկ,
տնտեսաններ տշւիքն հանգւրմ: Ահաւոր
տեւրածներ գործեց Բոտուլ... Եւնգիսի
ֆատմներ գործեց նաեւ դատարիս բոյոր գիր-
նանկագծերը (էջ 71—72): Հմտ. տա այս-
ւէրաց տատարութիւն տնապատ եւ նուազելն ան-
հատարտարք:

«Այս տարի բոյոր բնասանի սնասուն-
ները, ժամանաւորապէս փոքր կենդանիները
կտարտուեցան: Առատ եւ խիստ միշտ մը
ձածկեց երկիրը եւ այնքան երկար կեցաւ,
որ բոյոր կենդանիները անսթնայեալն սպա-
ռեցան: Տեղի ունեցան նաեւ անթիւ ար-
կածներ, անգիս տեղիս միշտ յիշատարմութե
իշնաւով հասիւններ յանկարծակիի բերու-
եւ այսպէս հոտն ալ հասիւններն ալ կտարտուե-
ցան ի միասին: Բայ տեղից բաժին հիւսիսէն
եւ արեւելքէն միւսախառն փշուրով երեք որ
եւ Լրեք գիւղեր ստանալովեաւմը՝ կտարտեց
չաւս ժարդիկ եւ բնատնի տնտեսաններ, յաւ-

կատարեալ փոքր կենդանիներ։ Բազմաթիւ մարդ-
ցիկն անասնաբաններն միեւն յառաւելոյ մեծութե-
ն իրենց եւ իրենց պատասաներն (էջ 185)։

172-173- Վիճերեւը որ մեծաւ սովորա-
բար կը աւելար, մեայ երկնքի վրայ - այն-
պէս որ ամենեւին խանութներն չկայաւ։ Այս
պատճառաւ (պարնան) ցանկերը չբուսան-
եա ինչ որ բուսաւ, շարքաւ, այսպէս կ'ըստ
մանասանց հարասային եւ արեւելիտն կող-
մերը, եւ քովանկան անասնաբան մէջ։ Բայց
չեւեւեւաւ համբարներուն մէջ Էդմոն քիչ մը
բանէն ուրիշ ոչինչ չյաջողեցաւ։ Մարդիկ
թափարեւը կողմէջին երկինքը հաշուեցներու
համար։ Եւ արագիւտեւ երկինքը փակուած
մեայ՝ ցարեն անկոյնները հարապարակ չհա-
նեցին իրենց ցարենները, եւ այսպէս ուղ-
թաւները սովի մտածուեցան։ Հարուանը
խաւացաւ ամէնէն տեւի Մուսուլ, Արեւելք
եւ Հարաւ... (էջ 187-188) - համա - առ այս -
գիտութեւ երաշխայեալն։

185 : - 173-174) - Պրուան է։ Չէր ուս-
մաւոր սիսի փոխեմ մեծասանն, Այս իրար աչ-
կատարուեցաւ այս տարի։ Այս անգի խա-
ղաղի քերքը տեսաւ էր... Բայց մեծաւ
սկսաւ առաջին թշնմեւ տմեկն (հակամարտ)։
Եւ առաւա ժիւն ի՞նչ աչկատարներու եւ
խաղաղներու վրայ։ Արեւար Կատաւ։ Թէպէտ
միւնը ծածկեմ էր ամէն ինչ, բայց մշակ-
ները մտան այդին խաղաղ կի՞նքու համար։
Աստուծոյ ցրտութեան պատճառաւ քայար հա-

աթիկները պետքն փառածն էին եւ միւսն տանկ
է՛րապակածէին : Յորտուն եւ միւսը կը խոտա-
նար սրկ սր, առաջին թշրին ածածն (նոկա) :
մինչեւ խաղիքան (շունիւ) ամիսը ամենեւին
շանմբեւեց. այս բովանդակ աւաղաթեան
սր մը կը միւսէր եւ սր մը խաւաշունը կը
փշէր. աշխարհս սր լեւեւերը տառնամանիքն
եւ ոտստիկ ցորամէն կարծեա թէ կը պատա-
սէին... (էջ 129-130) : Նմաւ. տաւոյն-ւաշուն
մմեռնացեալ. մմեռն խաւաղաւաղոյց, մըքը-
կալից, յերկարեալ, Նաղմը բարաբար... 31 :

Ինչպէս փերաղոյն յիշեցինք, աւղի ու-
նեցաւ ոտստիկ ցորամիւն- խաւի պակասու-
թեան պատճառաւ կոտորուեցան քոյրը ա-
նասանները... (էջ 130) :

Դարմնաց ոտստիկ եւ պատնաշունը քա-
միներ կըան. սրպիտիք մեր եւ մեր հայրերու
սրով չէին պատահած : Այս քամիներու նե-
տեւորթեամբ քոյրը մանր եւ մեծ կենդանի-
ները, թռչունները կոտորուեցան. շատ
աքմտիք արժատուով միտսին փնայան : Փշին
սրբորայտոյս կը բարձրանար երկրէս այն
քուքերու նման, սրանք կը կողմուին միւսէն :
Այս Նաղմայոյցիները մանաւ, սրապէս ոտստիկ
էին Նմեղեան եւ Մայունութեան աւներու մէջ
երկու սր, եւ ապա յերաթ (փետր) : ամսի
13ին, Մաղկոպարդին եւ Աւաղ Մըկուշարթի
(էջ 132—133) : Նմաւ. Նաղմը բարաբար... :

Այս տարի աշխարհի կարկուտ մեկաւ,
սր նմանը տեւանում չէր մեր սրերուն : Կար-

կուտի հետեւեալները կայն յարի մեծութեամբ
 ձին և յարմարան մեծութիւն. երկանկիւնի,
 եռանկիւնի, յառանկիւնի, ոտքի պէս արա-
 ձայր: Խարտեակն ծառերն և՛ արթնատեղե-
 յերը, արմատաւորի յրաւ արմտիքը, փայտեց
 աներու երգիքները: Անհամար տեղերն ու
 ծննդայն կուտիւտը, պնտ ու միամտանակ
 հարմարաց ժրիկներ տեղի ունեցան: Երկն
 յամին միւնը տեղի նման կը թշնմէ կը տա-
 նէր, մի և նոյն մտմանակ երկրէն կը վե-
 րամբաւնար ջուրն և՛ կը նետէր երկնքէն
 իման միւնին պէմ, այնպէս որ անանտեղերը
 կը կարծէին թէ երկրէն ինքնին կը յարմարաց-
 նէր գտնունք և՛ ուղղակի երկնքի երեւոյն կը
 շարունակէ (էջ 161): Հմտաւ, համար հարեկեցը,
 կարեւորանալ . . . » :

«Թէ ինչպէս սոսի ոտտեկտցու մարդկան
 սրայ, յառաջ եկաւ, գտնան հիւանդութիւնը
 և՛ մեծ մանտաւարը»: Այս գլուխը (էջ 176-
 188) կուտաւ մանտամանն եկարայրու թիւն
 մը 1771 տարւոյն մեծ ոտքին և՛ ասեկ ծա-
 դան համաճարակ հիւանդութիւններու և՛
 ժեմ մանտամանին: Երտանմիկն է աւա-
 րանը և՛ ահաւոր աղկար: Ինչ որ մէր Ող-
 րեղան հինգ յառաջ կ'ուղրայ, հառաջ ան-
 յաւը և՛ հիւանդութիւնը և՛ մանր յարմարե-
 նակը, ոտքի մտմանեկայիքը 12 երեւր
 գեւ թիւ կը գտնէ նոյնը ճշգրիտ պատկերե-
 լու համար: Նոյն յոնտանէ կը թուէ հիւան-
 դութեանց տեղեկները և՛ ասանց հիւանդու-

թեամբ մարդկան շողմորինոց մտնորք :
 Բաւարդ կը համարիմ յառաջ բերել այս աս-
 դիտարչ տուգերք :

Դիտենտիոս Թեյ-Մանրապոյ այս աս-
 դերք կը կրկնէ հակերս՝ մեի մէջ Միքայէլ
 Ասորի⁹ : Ասորիոյ ասոյի եւ համաձայնակ
 չիւանդու թիւններու մասին կը գրէ ասորի
 պատմութեաբք : յսին 1861 — 1717¹⁰ :

Եւ...ապոստոլի պայմաններու մէջ ազկար
 կը ծածրամար - Ըսողիցաւ աշտար չիւան-
 դութիւն մը, որ կը վտարակէ մարդկան
 գրութիւն եւ արագ կը գրեանէր : Ասորիք, Մի-
 խապար եւ Բարեւատան վարակուիցան այս
 չիւանդութեամբք : (Մ. Հ. 1295) :

Վեպք կը տանէ՞ր ոչ այնքան աշխարհ
 Եւսապութեան պատմութեան, որքան անոր
 համար որ ոչ մէկուն յով գուգտ (դրամ)
 չկար եւ աղքատներուն համար աշխատա-
 թիւն, որովհետեւ եկեղեցիներն եւ վանքերք
 կտրուուած էին եւ տուներք կտրուուուած :
 Եղ մը կամ էլ մը կ'արմէր մէկ գուգտ, չինք
 միթ աշխարհ կը վաճառուէր մէկ գուգտի :
 11) շիւտք գինոյ գինն էր 1 գուգտ, երեսու-
 արայ մանչերն եւ աղէթիներք կը վաճա-
 րուէին 2 գուգտի : Վեպք տեւից երեք
 ասորի միւլեւ Զանթիներու թուարարին⁹
 Արու-Ջաֆարի մարք, որ այս շարքին պատ-
 ման էր : (Մ. Հ. 1296—1297) :

⁹ Chronique de Michel le syrien, t. II, Pages
 1904 (ed. J.-B. Chabot).

ժամանակի այս ազդաները ծանոթ են նաև Դիոսիոս Էքլոցին, որ այսպէս կ'արձանագրէ իւր Պատմութեան մէջ՝ ք... բայց ժաթիւն ժարտեայ¹¹ ևս կարկուտէ ևս կրաշտ տուրիւնէ ունեւնեաց (136)։ զսով ևս սուր ի թմա՝ ժանտաման՝ ևս սասաննուշիւն յաւաթէրս (137)։

Այս համեմատութիւնները բաւական են արդէն, ժառեացոյց բնիս և համար Ողբիմ գրուելուն տալիմ¹² 77։—77]։

Ճ. Փարսիէնք այժմ ստացաւ տրդիւնքի ստուգութիւնք Երկրին յազարական ևս տնտեսական պայմաններու պնկութեամբ։

Ողբասացք կը շարունակէ իւր խոսքերը (78), 78—(8)։

Վեւ ի փերայ այսր ամենայնի խաւովութիւնք շտեկեայն կազմանց¹³ քառ այնմ Էթէ յիք խաղազութիւն տմբարչտաց։ Զի թապաւորք տիբեայք խիտք և շարաշարք, բեւիժա բաւեալով նանունս ևս պմաւարաւ կիբու, հրամանս ասլով տնտանեղիս, փերաւ կացար անւարթարարք, անպարմք, տիբե-

¹¹ Ռոյտիք զթիւն արտանք կը լինէ այս յիշանքին Միք. Ասորի թու 1197 (703/2)։ զտեղի տնեղս ժարտիք արտանք զքսնք յափեցին զտեղերս (Թ. 724) և թու 1198 (704/3)։ Վարտի Էկա ժիշ յազմութեամբ ևս փառ պատանեղս շմու. և Դիւն, էջ 52—53։

¹² Հմմտ. 366. 7—10. ԵԶուխարչիս Էփեայ աս զիտայ. Վարթիք Երեմիտ, զաշիթ ևս աղբա՝ նանս պիթ ժարգարեւանայով, որ ինչ թշուառացայ ևս որ ինչ Թշուառարարս Էթ. 21։

լիք դատաւանեալք, և թշնամիք գործադեւք :
 հաւատ վաճառեալ ընդ սնաթի կենցաղոյն¹² :
 Հինք Էկեայ անհատք և յայտփոյ կողմանց :
 պերճութիւն ստեղ և յափշտակութիւն ստա-
 քուանոց : կտրուցի գլխաւորաց և բանաք
 յայտեանց : յաւարութիւն վաւարութիւն ազա-
 աւոյ¹³ և անթիւ նկարթիւնք ոտմկաց :
 աւուսի թուղտոց և թանդութիւն ամբոցաց :
 աւերութիւն ստանաց և հրպենայի լինուա-
 ծոց : . . . : Համեմատել տո ոյն նոեա (ՅՅԷ -
 11-12) :

Անպաւառիմ անարիք, անապարձք, գի-
 նաւեանքք, պղերպք, հեշտաւերք, անմեմ-
 կալք, կողոպտիչք, պինարբուք, յուզալ-
 կուք, համարարայք աւաղակաց : Անպաւառիմ
 աղտաւաւքք, գողակիցք գողոց, կնիքք,
 կնծիք, ժրասք, աղանք, յափշտակոյքք, ու-
 խարհուերք, աղտեղտաւերք, ծառայիցն հա-
 մամիտք : Դատաւարի մամարգիք, սուսք,
 խարսպք, կաշտաւասք, անքնարազք իբու-
 ւանց, անհատաւաւք, հակաւաւկոյք : Այ-
 բարմութիւն աւհատարակ յամենեկունց սիրաց
 և մեծօրոյն :

Բարգաւաւան, անաւաւաւան և բարոյա-

¹² ՅՅԷ. 14 : Այնմ ժամար է ներքուստ և ար-
 չաւորք արտաքուստ : արժուիքք է հեթանոսաց և
 ժամարք է ներմուտեղոց : . . . :

¹³ Հմմտ. և ՅՅԷ. 1-12 : Եւս. 25 : Էսա անաւան
 գրեւորք քո հաւ է փայլի գոյտքով և ոչ է ջուր
 հանգաւան անաւ : և ոչ է փարախ հաւաքեալ :
 զգուշանալով է գողոց, ոչ չքուեալ անապատաց և
 գահալիթութեանց :

կան՝ կենսաբի թափափութիւնները ընդհու կը հաս-
 մապատասխանեն այն տարիներուն (1772-
 1773), ուր բնութիւնը կը նուշէր հրկիւնի դա-
 ժանի հայեցանակով: Թուրքաւորները խիստ են-
 եւ շարաշար, անանց յունք ծանր է եւ
 պատարտելի: Վերակապտանները (տաթիկաւո-
 ները) անհարթաբարձր եւ անողորմք: Ճիշդ
 ոչնչացւա կը նկատուիք ժամանակէր նստել
 Սուլտն Դիւսեմարու Քեյսըմիւրի (էֆ. Սու-
 լէմ): Թուրքաւորներու (Քրդ լուրի եւ Սրու-
 Ջաֆարի) անարիւնակ խոտութիւնները, հար-
 կուպտանիքութիւնները, քանապաստութիւն-
 ները եւ կեղծ բուսիները ինչպէս հայապատանի,
 նոյնպէս Սիֆապիւրի սպարաբնակչութեան
 սիրոյ ծանրացած էին. որոնց հետեւաւ թիւնն
 կ'ուստեւորութեան թաղապետութիւն, Էրկիւրի
 ամայութիւնը, յաջորդաց աւփն եւ ժամապա-
 տար: Սիւսի ամանակ անցի կ'ուսնենային
 ներքին եւ արտաքին կոթաներ, Էրր արիւն
 ապամասձով կ'ուսնայր Էրկիւր, կը բան-
 դուկին թաղաբնէր եւ տաթիկներ: Հայապատանի
 անցքերու համար ժամապատարտութիւն
 անիւնը Նիւսիւր Էրկիւր, որ մէկ անկարկով
 տաւան է Էրկիւրին քանուս ինկամեայ չքանին
 պատանէրը՝ 1774-ին միւնչէր 1775: Սիւս քաղաք
 դարուս պատմութեան պիւրքերը հիւստան
 են իրարու հետ սղակամեւ, եւ կը կապմեն
 անիւնը հաստ շարք մը ախարս արարտանմե-
 քու, ուր կը յաջորդեն տեւաբանները
 քաւիկիւրի սասակութեամբ:

Հանձր նախ հայ պատմիչին:

Արարական շարժանքստ պետութեան
խաղաւորներն էն՝

Արդլա Ա. (Արդ Այլաւ տարւորներս ալ
Սաֆֆաւ, 750—754, Եւսեփա 9):

Արդլա Բ. (Արու Զաֆար ար-Բախարի,
9 Եւսեփա 754—755, Հոկտ. 7):

Երկուքն ալ սխիստ էւ շարաշարս քանա-
պետներ են, որոնց լուծք ձանք է էւ զժաւա-
քակէր. չքովանները անասանէի. ունին
անանք իրենց մեղքի տակ տնւարթարար էւ
անպարզ վերակացունք, գործք է՝ անասանէ
Հեւանգ՝

ԱՅ՝ Մալէն¹⁾ (Մալիւ Բ. Սարէլ յնար-
գիւնդի, 756—757):

¹⁾ Ասոր ժամն էր զիւ Հեւանգ. զնոցից էւ
գլան ապաստմբն անմիկ, զոր նախ տաւրը Արդլա
յախարս Հոյոյ, որով Մալէն հոյիին. որ էր այր
անաթի էւ արիւնանի, յորմէ յապաւք զգուշացնայ
անանապաւ յնիին. քանի որ հարկին յանձնում պե-
տիս նպաթեան ասանէս (էջ 335): Այս Մալէն էր
շիշէ նաւ Սալի Գիւննաթուի ժամանակաշարթիւնը
պարթիւի խտրեւոյ: զՄալիւ Սարիւի արդին էլան էւ
ժամանէր Հոյոստան (335) — 336 յիշն: Նա քանակ էր
պատանդներ յորս յետն վրայ (— Հոյոստան) էւ զա-
նակ Եփրատի արւի թաղուցան էր, Սաֆուաննա ձա-
ղանէն՝ Արարայի յովին գտնարէն յաւաթ: Սաֆուա
նկա սեւոր ընտան էր թուղթ մը, որուն լամտանցն
պատանդները իրեն պիտի յանձնաւին: Մալիւ էր
հիւս, իրանցից որ անանք մէջ գանաւ յորս զի-
նքը վերապարմաին: Բայց սրովնաւ Եփրատի
տարաները իրեն նաւերնէր տաւն էին, որպէս զի
Սաֆուաննան էւ անոր ընկերներն վրմ յաւել.
[Սաֆուաննա] ինչքին հաւարումը էր յետանկէր
յաւելոյ: Այսոր համ ժողք պիտի վերապարմեմ ձա-

Գ. Ընդիտ (կապիտ Բ. Սեւեդյա աստ-Սու-
յէմի, 751—753) .

Կ. Բազար (Բեկկար Բ. Մուսլիմ ալ Սե-
կէյի, 762—764) .

Ա. Հասան Կահադրայ սրգի (764—765) .

Վերականգնուեալ էր ծանրացեալն հար-
կերը եւ հարկապահանջութեամբ էր աս-
տուկեցեան բնակչութիւնը : Արկերին անանա-
կան պայմանները տնտեսելի էր դառնալ .
որուն հետեւութեամբ Վին ոմանք ի ետեա-
լորոց Հոյոց, սրբ մէրժեալ լիին պատում
գութիւնս իւրեանց եւ փախանայ անկան
յաշխարհն Յունաց : Սերիւները Գաղիկ Սը-
ծրունայ հետ միացած Վերեալ ասպատակ
ափովին շրջակայ պատաները՝ Ստրպտա-
կան եւ ոյլն, հետամուտ թախանք եւ կող-
պուաթ, սյորում պորձէին պարն տնհանոյ
Ստաունոյ (Վժ 134) . բայց ի վերջոյ էր
պապուն ըստըրպայն իշխանութիւնէն . Գա-
ղիկ էր մերքաւայութ եւ էր փախանք Վ
աստապանս յանաթ, իբրեւ գոյր մի յանա-
րաց 16. եւ պորգիս նորին պշտապտոյ եւ

թանները : Արպէսով անաթ երկուք ձայրն, ոյլ եւ
ոյլ հիւանդութիւն ինկաւ անոց մէջ եւ յատկաւ
մեծան գերութեան մէջ . . . Սեւոյ Սոփաննէն Արգ-
յայէն երկուք թապթ մը հանելով, էրջաւ պատնի
բոյսը պաներ, որոնք Մայրիւն իբրեւ պատանգ
բանաւն էին (Վժ 55) :

Սոփաննէն սրգի Գաղայի, Նփրէլթաթ Փին պի-
ղէն էր եւ հանաթ էր իբրեւ սրի եւ աստաւանափութ
անկաւարութիւն (Վժ 45. անգ. Վժ 45) :

17 Իր մտքին ի հաւանելն Ստաւ-Սփրեկեայ
Թէյ-Մուշրեյայ հետեւեալ սոցերը (Վժ 146) .

գլխահանի յոյսով ժամանակաւ կոչուել ի կապանս, ապա աւրեմն... հաշտել ընդ նոսաքս (էջ 134—135) :

Ըթնամուտն պատկանէր արտաթիւսներն ոչ ժխայն կը իծուէին նախարարներէն եւ օւսակէին ինչքերն աւ. պանծէր, այլ եւ շարունակ իրկիքս Հայոցն կը քամեն, այնպէս որ զփութանեալս պիտի աքծաթայ ի յերկրէն : Բայց եւ այնպէս արծաթեալի հարկապահանջներ կը շարունակեն իրենց կեղեքումները անանկացան ժողովրդեան վրայ. շար կտատանք, պէյարանք եւ կախաղանք եւ դատն ասանջանք կեղեքն պկանաւ ժողովան : Կահանէիցով շարքս փրկանալ անմին իւրեանց : Աստանէի կ'ըջայ ժողովրդեան վիճակը, յարմէ փութաւեալ եղևալ բազում շարքս եւ ի փութալս երկրի՝ պոպոպ թաքնէին. եւ ամենք ձրեաւեղմ եւ պէտաղէ՛ յիւնէին վրան անասանէի աղէալոցն (135) : Անպարծախէութիւնը շարքսը փութաւեալ շարքսայն աւազուածոց՝ կոպէին կոպանք անանկութեան (դիւրեքս Հայոց. եւ որ հոս սարսկ հաշտէին ի հնոցէ արտաթիւս նախարարք եւ ժեմաւենքս (136) :

Այս հարստահարութիւններս պէ՛ մ պարտեղ կը քոպոքին Բաղրասանի Ահմեդ իշ-

Այս տարի 1772 Յ) ՄԵՍ Հայաստանի պարսկի գլխահանի անուն եւ պանդխտ արտաթիւս Կրտսի թէ այս ժողովրդ (181-182) իսկ իր զիւրի ունէր : Ասին նաեւ անոր ժողով ինչքերն, զոր սարքի թաղարքն :

խանն էւ Կաթողիկոսն Տրդատ Ա. Ոթմանցի (711—761) : Վայլ ոչ յուսա գազազանկ նայա նոցիտն որ ի վերայ հարկին էր յաշխարհիս : Քաղաքի մայեւորը շատ ուշ էր հասնին ամբարապետին, որ թէեւ 712ին էա էր հանչել լեղիաւ Էւ անոր ակզ Քաղաքը էր Եշանակել : Բայց սա հարկա տարի մը անցաւցած Հայաստան՝ էա էր հանչաւի. Կ'ուղարկուի Հոտոն Կաթողիկոսն որդին, որ իւր խորատանիկ պանդոպ էր մտնել 'Բոսին' յետեւագոյն անանկուսթեան հաղթելու ժողովուրդը (736) :

Այսպիսի հանդամանքներու մէջ բնական հետեւութիւնն էր Զոգովորական բարոյաւ չքումը, եւ սա հասարակ բարոյական կարողերու խտնարումը : Քորատանիկ գունդը Ետտաւէլ պատեւութեամբ յանախ գործէին պղտորագործութիւն եւ բարձրացուցանէին դարձեալ եւ պէտեւութեւ աշխարհիս (756) : Եւս էա սա այսուրիկ արհամարհութիւնը հայրապետաց, աշպետութիւնը կաթողիկոսաց, դան եւ խաչանկտնի թահմնոցից, իշխանաց եւ նախարարաց ժողովանք եւ ժողովութիւնք (757) :

Աղէտը որ տուա էր ստատկանաւ հարա կապահանքեւրէն. երկրին գլխու տրեւոր շտանէին որ էա իջել միջոց ընդպիմանալու : Ըստով ոչ կարապետը հանդուրժել պարագայիս իւր աշխարհիս՝ հեռէին եւ հասաչէին շանհանդուրժելի տապեւաղէն : Քանցի պատմիկը բարձրութիւն մարդկան խաչատեղէին

ապրի ապրի շարեօք. դժմանս փոխանարութեամբ չլիկին մասն հարկապահանջութեան զստանալն, և դժմանս պէշարանաք և կատարանք, և գոմանս մերկացեալ ի պահատուցն՝ տրկունէին ի մէջ լնից յասարս պատահաւորէ մեկրոյնայ, և կարգէին ի վերայ պահապանս, պի շարշարեացեն զնոսա, և այնպէս շարայշարէ կտատունք կեղէին պիկանս նայաւ: Էւ կը յտելյու պատմիչը չգորոյտամէլ ոչ կարեմք զայնտիցն պատմաւթիւնս (117):

ՂԵՒՈՆՆԻ ոչս ասպերը կը գտնեն տրմադանգ Ստոյն Երանեարութի ժամանակացորութեան մէջ: ՂԵՒՈՆԻ, Սոյրի և թէյ-Մարտացոյ տակիկութիւններն այնպէս նման են իրարու, որ ընթերցողը մայրկեան մը կը ստիպուի մտածել թէ ասարայն տեղեկութիւնները ծանաթ չէին տրդեաք հոյ պտտմիշին. ինչ որ ի հարկ է դժուարին է հասաւել: Անոնք ժամանակի թէյագրութիւններն են, յոկի եղամ ժամանակակիցներուն հաստատար ստատկութեամբ: Նաեւ ասարի ժամանակակիցը կը պոյ իւր վրձինը տկար նկարչու ողկտին պատկերը ընական պոյններով. չէր չկարմէ մէկը, եղարբ, թէ ևս ոտուարացուցի իրողութիւնները: Գիտածն տնոնք որ աշխարհիս եղեղներն և թղթերը պիտի շրտեն պրի ասանդելու այն ողկաները, որոնք ծանրացան մեր սրով մարդկութեան վրայ: Նաեւ ոչ որ մեկացըլ

պմեզ, թէ նուազ պայներով ներկայա-
ցուցինք իրադրութիւնները, որովհետեւ անտ-
տակ ենք ամէն բան յիշելու եւ յիշատակե-
լու: այս ազգաները մէկ ժողովրդի մէջ միայն
տեղի յանկեցան (էջ 111):

Արեւելի աշխատութիւն պիտի արժէ, եթէ
ուզեմ Ղեւոնդի տաղերուն կէջ յառաջ բերել
Ստոյն Դիտեախարի շատ սրաաշարժ բայց
երկարաբան նկարագրութիւնը հարկադար-
հանջութեան տեսանկիւնը եւ հզանակներու
մասին (էջ 122—148): Մեր նպատակին հա-
մար քառական կարող են ըլլալ Միքայէլ
Ասարու տաղերը, որոնք յեցան են նոյն մաս
մանակագրի պէպտութիւններուն վրայ: Վերա-
Ջափար Զանդաւանց ամէն տեսակի աւար-
ները, ամէն տեղ եւ ամէն մարդմարդի վրայ,
ըրիտտեւաններու համար կրկնապատկեց
աւարքի ամէն տեսակները (Բ. 522): 1683ին
(1772) Արա Ջափար Ռաքիշտէն գնաց Մի-
ջագէտ, Ասորիք եւ Պաղեստին: ... Անիկո-
րայր արձաթն եւ սակին մթերեց իւր գան-
ժարանին մէջ, այնպէս որ բացի վաճառու-
կաններէն չէր տեսնուեր ու մէկուն քով գե-
նար կամ դուզաւ: Կարիքը կը սախլէր որ
մարդիկ կրկնէին մեռելներու գամբարան-
ները եւ ողորդէին անոնց գնչիւնները: Փռչին
կ'ամային թուրքի մէջ Զոհիյա: համար սակին,
արձաթն եւ այլ թանկարէն իրերն, որպէս պի
զանանք աւարքի վաճառքէն տոյին հարկադար-
հանջութեան (Բ. 526):

Հարկապահանջներու տնխիպն հարստաց-
նալով իննները, տանջանքները տանայ կրօնի
և պատուիրարի խարուխան կը խառնանային
թէ քրիստոնէի, թէ ժաշտականութի և թէ
այլ աղանդաւորներու վրայ. անոնք կը տա-
րածուէին թէ ողորտի և թէ պաշտի վրայ :
Անթի քրիստոնէականներն ժխտեալ տարից ք-
չային այս հաշտանքներուն, կը գրէ Մուսն
Դիմենարաւ (141), իրաւամբ պիտի փոխա-
ւորէի ժեր ժողովութեի ժարտիրանները տեղի
քան բոլոր նախնիներու ժողովութեի վկաները :
Վասն զի երկարատեւ անգիրք չարչարանք-
ներէ աւելի քաղցր է որով կատարուած
արագ մահ : Մ. Բարսեղ բռն է, իս յսե-
ռայ մէկը, որ ապաւանքեան պատճառաւ
քանա դրուած կամ չարչարանքի ենթար-
կուած բոլոր : Եւս ոյժմ պէտք էր դուր և
տեղեկ հապարակարներ և յիշատակներ
տրտը և ասորի, յանցաւոր և անմեղ, ազ-
քան և հարստ, բոլորը տնխաիր : ... Հա-
րուսար շարունակ կը մարտակէր պատճա-
թիւնը, վասն զի աներու կերպով կը
չափաւորէին ունեցածները և իւր տնկերը
հարստաններու առկ կը խառնակէին : Եւ ազ-
քատը կ'ըմպէր նոյն բաժանէն, վասն զի չու-
նեցածը կը պահանջէին իրմէ - եւ չէր կատ-
րող ոչ փոխ ասանց և ոչ վատաւակից, վասն
զի հետաւորութիւն չունէր ուղիւստեղու իւր
ազատութիւն կամ ոյժ, ոյն թէ՛ :

15 ՀՄԺ. Հարկապահանջութիւններու մասին

Նկատմամբ պատերազմներու, որոնց մասին կ'անկնարկէ Սղոբերգուհ, քառական (չիլիցիէի 711—714) շրջանին Օմմայեանց եւ Թերքաւեանց մէջ բարբարոս բնաւնի կոտորածն եւ արիւնիանէր ընդհարումները։ Արու Քափուրի որով (763) կամարի եւ Քարբերգի տարեւոր պաշտպանը, երբ յայն եւ արաբ զորախումբերը ստպատանկեցին շրջակայ գաւառները (Դիւն. 74 եւ չիլ. 1, գերիւններու սպառնալուքիւնը (Դիւն. 94) եւն եւն, որոնց նկատմամբ անհամար արիւնհոգութիւններ անդի ունեցուն, քանդուածն քաղաքներ, անսպասարկած բազմաթիւ թուան զաւառներ։ Ազրաւային խոռոչիւր - շէկնք եկեալ անհատը եւ յարմից կողմանց, կը փերաբերին տղաւնափաղաւ ալի ժողովուրդին, որոնց մասին կը գրէ Դիւնիւրս լաւն 746-747) (չիլ. 95 եւ չիլ. 1, մէջը միջոցին թագաւորը Պարսից երկրէն ուղարկեց ժողովուրդ մը, որ ելաւ եկաւ եւ հաստատուեցաւ Հառնիկիւն սահմանին վրայ։ Ասունք մերկ եւ բոկ մարդիկ էին, սլապէս շահե իրենց կանայք եւ երեխայք։ Ասունք բան մը չէին գիտեր. իրենց տղայք բան մը չէին

Ս. Տրեւե' Արաբներէ հարկային բազմաթիւութիւնը աւաւախեալ Հառնաւեալ, Ն. Ս. Տ. Ն. Պէտրեալ Համալսարանի գրաւիտ Տեղեկագիր, Թ. 2—3 (Երեսն 1927), չիլ. 220—221) եւ Agap Sorian, Die soziale Gliederung des armenischen Volkes im Mittelalter, Armeniaca, herausgegeben von K. Roth, Fasc. II (Leipzig 1927), S. 92—93.

առաջնորդեալ. կրնենք շարունակել անգամ կտաւ
 Կարենի: Անոնց թափանցակ տրուեալսն էր որ
 ու զիւնք թագնորի ճանապարհներու վրայ՝
 ապանենք, կողակաւքս եւ թաղանթի պար-
 ակաւ: Սրբօշակեալ անմարտիկ լեռնորդ
 վրայ կը բնակէին, ոչ ոք չէր կարող սանձա-
 շարել գանձը: Համարեակեցան միմեան ան-
 ցամ գլուխ բարձրացնել թագաւորին դէմ
 եւ հաւատացեալներու թագաւորին պանծին
 մեռչ կարկասել: Սրբօշակեալ տաղիւթի պարծի
 մը յանդգնեցան եւ միւս կողմանէ թափան-
 ցակ տյն կողմերը թաղանթ եւթարկեցին,
 թագաւորը անոնց վրայ բանակ մը դրկեց:
 Քանդեցին տեղեցին անոնց բնակավայրերը,
 կողոպտեցին գանձը եւ կաշտեալութեան:
 Հաւաքելով գանձը ուղեցին գամէնքը սուրի
 մասնի: . . . բայց ապա սրտաւեցաւ Կամարի
 զիմաց կուսի պաշար դրկել, որպէս զի հոն
 էր թաղանթը: Անոնք մատուցեալս
 (100) (100) հողի էին: Բայց փախան անկէ եւ
 տարածեցան թափանցակ երկրին վրայ:
 այնպէս որ փոքր թիւ մը միայն մնաց հոն:
 եւ որոշակեալ այն երկիրը ցուրտ էր եւ
 իրենք մեղք, մեծագոյն մասը տալին միւսին
 կտաւորեցաւ: Բայց անոնք որ տարեցան,
 շարունակեցին իրենց շարագործութիւն-
 ները:

Բարոյաւորեմը ժողովրդեան եւ բարոյա-
 կան կարգերու խանդութեամբ հաւատարա-
 պէս նկատուած են նաեւ Թիֆլիսի (Գիւն-)

149—151): անսեփ ստանց տարափռուսի հե-
տևութիւններն էին բնորոշութիւնս ազգային,
հարկաւորահանութիւններուն, ազգաստե-
թեան, սովին եւ յատուտական պայման-
ներուն: Բայց ժամանակը գաւառն էր բնոր-
ոշական, որոշիւնքն պատահաբար հետեւ-
ցուցան էր. սուսի ամէն շտրկաց շարժա-
տիքը նկատան էր ժեղքին մէջ. այսպէս Ռա-
բատացը, այսպէս Ղևոնց (1536) եւ այսպէս
ասարի ժամանակագիրը (Գիւն. յունտի):

Ինչպէս բնութեան արհաւիրքներու,
նոյնպէս քաղաքական կեանքի եւ անտեսա-
կան պայմաններու համապատասխանութիւնը
էր ցայտցնել իւր մէջ Հայաստանի կայսրու-
թիւնը 1510—1514 տարիներուն:

Ողբին զբոսիկան ժամանակի համար
այս ներքին տպացոյցներս էր կարծեմ թէ
համոզիչ են. եւ ասանց կտնկ ասնելու մանր
հարցերու շարժը կարող էնք ի խնդիր ելլել
Ողբին հեղինակին:

Եւ եթէ Խոփաւս Խորենացի «Հայոց
Պատմութեան» հեղինակն է, Ը. դարու ա-
ռաջին կէտն, բնականաբար տնոր անունը
չի կրնար փնտռուիլ Ը. դարու երրորդ քա-
ռարդին յորինուած Ողբի մը հետաւին:
Իսկ եթէ «Հայոց Պատմութեան» հեղինակը
նոյն Ը. դարու երկրորդ կէտն համարինք,
ինչպէս քանտակրներէն ամենք էր միտին
կարծել¹⁴, այս պատարագութիւնը մասամբ մը

¹⁴ Թեւոփա, 1929, Բ. 4, էջ 71—73:

Հարթուած կարելի է նկատել: Ուրոյ գաղ-
ձեայ ասեղանուան ուղիով մնայ, թէ ինչո՞ւ
պատճիւր ինքիւնքը Ա. դարձեւ կեղծելով
հանգիստ, իւր մէկ կոտուցութեան վեր-
ջաւորութեան՝ աղետի գարուն պատկերը
քանդակած է: Այս տպագրին անոր Պատմութեան
նպատակն էր յուսանաւ ժողովրդեան
քաջարի նախնիքներու արիւնիով խրախոյս
ներշնչել:

Ուտի տեղն անասկեան մոտեցական է
անյարիք է Ողբս «Հայոց Պատմութեան»
վերջը եւ չի կրնար համարուիլ անոր հեղի-
նակի դրշին արդիւնքը: «Հայոց Պատմու-
թեանը», ինչպէս կ'երեւայ, յեղակաբանութե
բնդհանուր է եւ հեղինակին հետադարձու-
թիւնն չի եղած կցել անոր պատշաճ վերջա-
բան մը: Ողբս այդ վերջաբանին անդ աղու-
ցում է «Հայոց Պատմութեան» վերջը,
սխալ ասեղանուան ստիչ աշխատութեան մը:
Փնտրենք այժմ այդ աշխատութիւնը եւ անոր
հեղինակը:

Ինչի կը թուի թէ Ողբիւ հեղինակին է
Ղեւոնդ Երեզ, եւ յարմարութեան է իրբեւ վեր-
ջաբանութեան անոր Պատմութեան նախնա-
կուն մասին, որ կ'աւարտէր ԴԴԵ եւ ԴԴԶ աւա-
րիւնքու գեղարքայ նկարադրութեամբ:

Ողբին բնուայած պատկերը կ'աւարտուի
իւր մէջ այն շրջանը, որ նիւթն էր Ղեւոնդի
Պատմութեան նախնական մասին վերջին էր-
կու գլխաւորութեան: Պատճիւր նկարած է

աղջւոյն պատկերը և ինկած անոր առաջ ողբացած է Հայրենիքի թշուառութիւնը. «Սիրամ գրեց Հոյսոց տշխարհ, հանուրց հիւսիսականաց փհնողոյն» ։

Ռըզէսմըք ալ, ինչպէս տեսանք վերապոյն, Սիրին արիւնախառն արատաւունքները, իրենց դասնաթեմըք յիմօյն կը համապատասխանէին այն տրտաւունքներուն, զորոնք հասնուցած էր Ս. դարու երկրորդ կէտը ժամանակակից ժողովրդան անանողքներուն, ի տես բնութեան տրտաւունքներուն, անկի ընդհարումներուն, սարսափելի աղջւոյն և անբարոյականացած կեանքացին ։

Տարիներ չեաց, երբ ժիւսանդամ մեք տեսն է Ղեւոնդ վրձինը, նկարելու ժամանակակից պատմութեան ժիւս կէտը՝ 1774—1788 տարեան հիւսնակայ շրջանը, ոչինչ միտքաբովն չէ գտած նաեւ հոն. Հայրենիքին քաղաքական, տնտեսական և կեանքայական պայմանները չէին բարւոյրած պնայտի խեղնայն բանաստեղծին էին դարձնելու երկրին դամանակէքը, այս անգամ ունեւն ժիւյն փոփոխութեամբ. Ռհարուն Էւորուն էր Ռոշիգ և անոր Եղբայրն՝ Սիրեղլա նոյնպէս զարահ և արծաթաւը էին, «ի հակառակութեան ընդ միմեանս, ունէին իրենց մեռքի ստել զհրամանատարս ուղարտաւն և ժամատարոյն անաստաւանութեամբ, որք գերկիւղ Ռասունոյ տնայտ և ընդ միտ ոչ անէին» (156)։ Ռհարէս Եղիտ արդի Մզղէի

այսպէս Առաջնական և բան դասնական մանա-
կէ շարադրութեան, որոնք պատրաստուած ընդ
ձեռնարկութեան և զմասի վերայ մարդկան, զոր
ոչ կարելին բաւեալն... (167): Արեւոյս
մեծի տակ կը պարծէ իրեզակէ, անուրիւ և
փոքրամարդկէ, զժողովուն և շարաշուք
այլի ամբարշտն (167, 168): Հարկադար-
ձանքութիւնը կը խոտանայ, պահանջները
էի յետին տնտեսութիւնն կը հասցնեն ազգա-
բնակչութիւնը և յանհամբեր Եկարեմանքն
(167 և 168):

Եւր պատկերիս առջեւ կը մնար անդի-
նակին ժիւղի վերջիւնն ինչն հիւսան Ողոր
և իջիւն տնոր Եւր կայրեմներ որտեսունքի,
պատշաճեցնելու համար զայն Պատմութեան
Եւր մասին իբրեւ վերջարան: Այսպէս ալ
հետեւեալն կատարուած է. որովհետեւ այժմ
Պատմութեան վերջը յենք զանեւ հրաւելոյ
խոր, այս պատկեր արեւելի կերպով պիտի
ընայնէ Արքա, փոփոխելով պիտի խոստան:

Արքա սակայն չէ մնացած իւր պատ-
շաճ տեղը: Այն փրցուած է Դեւեղի
Պատմութեան և պատկերուած իբրեւ վեր-
ջորտն Մ. Երեւանցոյ Հայոց Պատմա-
թեանը, որ կը զանաւոր ետեւ այժմ: Այս
անջատումը անպի սեւեցած է Դեւեղի Պատմ-

¹⁰ Այս շրջանի Հարկադարձանքութեան և առ-
հասարակ Հարկադարձանքութեան մասին հմտ. A. G. O. P.
Soriam, Die soziale Gliederung des armenischen
Volkes im Mittelalter, Armeniaca, fasc. II.
S. 62-64.

մտիւնէն յրեթոցս Թ. դարու: Մենք տեսանք վերադարձն, որ Առիւ. Դրոսթանա-կերացի կարգացած էր պայն Մոսկովսի Հայոց Պատմութեան իրրեւ մաս:

Բ. Խորենացւոյ Հայոց Պատմութիւնը երկուսն եկաւ. Հաւանորէն 1904 թ յետոյ եւ 8104 թ յաւաք: Չենք կարող հաւատալ թէ Մոսկուա ինքնին կտտարեց այս գաղտնիքը. եւ իւր պեղեցկոհիւս Պատմութեան աշակերտ շատագար տատարանութիւն մը առաւ: Ինչի բռնութիւնը էր համարիմ ենթադրել թէ անատարտ շայոց Պատմութեան այս փո-կանքը դրաւ ստաւ մեռք մը, ինչի նկատման մանրնէն քիչ յետոյ: Արշակ ու վերջարաւ նութիւնս չէր պատշանէր իր ամբողջութեան մէջ շայոց Պատմութեան, բայց այդ ան-ծանօթը ունէր գանձ համապատմութիւն թէ զգնա-րայն ի նորոյոցն նմա էր մտաւորանէ-վերջարանութիւն մը, զոր Ղեւոնդ հազարու-ցած էր իւր Պատմութեան, նոյնը կարող էր մասամբ մը յարմարել Ղեւոնդ-Մոսկովսի մեծ գործին ու վերջարանութիւն: Անյար-տարութիւնը պայն յաւաքանէնքով եւ փոփոխութիւններով կարելի էր հարթել: Մասնատարացիւն եթէ ազատուէր անսր խա-տարանութիւն մը որ բնիկացիքն միաքչե-նախապաշարէր, կարելի էր:

Ե. Աղբիւս առաջին մասը հետադարձան շարադրութիւն մըն է. զժամար է հոն իմա-նալ թէ ինչի նկատմանը սրտն առաջիկոյ մը ունի:

արժանի ոգրաբու: Արդէն նկատած են բա-
նասէրներէն տաւնք, թէ այս տեղ Սգրեբգուն
նախնորութեան ժգումն է. իւր զգանում-
ներու արասայայտութեան համար փոխանակ
սրտի ալէկոծութիւններէն բոխեցնելու բա-
ւերն եւ մարեր, դիմած է փոխառութեան:

Արդէն զի պարզ բայտն բնիկըցողներուս
Սգրիս բնական եւ արուհւապետն արտայայ-
տութիւններ, համեմատեալսն պատկերեա-
րու մէջ սրտի անգոգեմ փոխառեալ հա-
սուածներ: Փոխառութիւններու մեծազայն
մասն առնաւ են Գրիգոր Աստուածարանի
ի Մեջիտոս եւ այլ հոտերէն: Այս տեղիք-
ները Լարասարութեամբ համագրած է Գր-
իտարիտն²⁰. Մեր յատանքըսութեան մէջ
զուգացրում են կարեւոր տեղիքները Սգրին
բնիկացիին համեմատ: Ասոնց մէջ կան նաեւ
էրկու փոքրիկ տեղիքներ Փիլոնի գրութիւն-
ներէն եւ բնորոշակ հաստատմ մը Աստեթա
նէրակացոյ ընդ խոտացեալսն գրուած թէ,
որ թերեւս հետեւոր տղրիւր միայն նկատուի:

Սգր:

Գր. Նազիմզ:

Սգրմիմ Բեզ եկեղեցի
Հայաստանէն...

Սգրմիմ Բեզ, այ եկե-
ղեցի... ոգրմիմ Բեզ
յանգրեակէ փոփո-
ւումը այստէլ:

Եւ ես տեսեմ գրուած Եթէ ոգրու իջի զՄ-
ւրք յս ես թ մ յ ը թ զոմնն տեղ ոգրեղ-
կայարիւր եւ տս բուր զնաւ տարակոտայ թ

²⁰ Армянские Армявяды, II, 42, 141—143.

կանգնածում առնական
 և ոչ թորաբնական
 թեպի՝ պայծառացած թ
 փայլած, այն ժամանակ
 առնականության և պա-
 կարկտանքի կանգնած

Փրակի առաջնորդ և էր-
 ժյուրի փոփոխվում. դի-
 ճի ինչ մեծահասակ լեզու
 հայտնի փնտրել և փնտ-
 րելի, և հարցնել կան-
 քանիցներ ուղարկվում
 լինումը պատմություն
 պահելով. արդեն ամեն
 ժամ պիտի լինում
 թեպի. Դարձումը ժին
 էրթնում ամեն անգամ
 լանգվածում յարմար
 լանգվածում առաջնորդ, և
 հարցնել ոչ ազանգու-
 րոր...

Մեկուկն պա և ոչ
 լայն զբոս առաջի յա-
 լարիցն յառաջ, պահպան
 յայն յառաջով պարձ...

Իսկ յարարի և հաս-
 անում ոչ է ազանգու-
 թիսն արձի, լինելով թ
 մարմնիցն թեպիցն և
 յարմարիցն:

Ընդ ժամանակի լուսն
 և լուսն լուսն և լուսն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն

Վայն ազանգու-
 րորն ի արմարիցն
 և արմարիցն. ոչ և ոչ թ
 առնական և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն

Լուսնումն թ և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն

Մայնում ժին լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն
 լուսնումն և լուսնումն

Լուսնումն լուսնումն
 լուսնումն լուսնումն
 լուսնումն լուսնումն
 լուսնումն լուսնումն
 լուսնումն լուսնումն

փախանա՜վ ձենդեան և՛
անդեան և ...

Եւ ժիւն ևս չազնային
շուտային գարնէ, և պա-
տաւաթիւի թմով ամեն-
իմաստ արուեստիւս և
կատարելապէս յարմա-
շաւիւնմբու համայն և
ժիւ... յաւաքաւ Կար-
ամենայ պարն [պարս]
... և ստալաւաթ անի
երգաւ արգ փախանա՜վ
խորտեանաթիւնն ի վի-
րոյ գերեզմանի և պար-
տալիւզ պարմանի ևս ևս
չեմ...

Ա՛ր Է Լուզը աշտըն
Կապարաւորինն աւա-
ղիւս և ստալաւաթիւն
աւթիւս... Ա՛ր գաւաթ
շրտեղն մպաւումն աւ-
թաթ և շափերաւսն ևս
գիւղումն, ար թիւմթա
սթաւ... Ա՛ր երկայն
համապարտաւ յաւ ևս
աւաղիւս...

Կարեաւ ժողովարդն,
... լեւալ մպն յարգա-
թիւսիւս...

Ո՛վ Կարգիւսի պաւ-
թիւսիւս թիւղիւս աւաղ
պարգապեաւորեանն ևս
կաւալ յաւաթիւսիւս, ար

վերայ արե թիւաւաւ-
թիւսն պարտաւ ևս լեւ
իւրիւս արգաւ յաւաթա-
ւաթիւս լեւաւս ի աւա-
թաւաթիւս թիւս...

[Քիւ. լեւաւ, Բ. Լու-
թաւ Կապարին Կաւաւ աւ-
աւաթիւս թիւսն ևս լեւ
իմաստ արուեստիւս և
կատարելապէս յարմա-
շաւիւնմբու]

Լուզեմ թիւս ի Կար-
ամին պարմաւ ևս պար-
պարմանի ի վերայ արտա-
Կապարին ևս ևս
Կապարին երկ, ևս պար-
ի վերայ գերեզմանի պար...

Ա՛ր Է պարտաւ աւա-
ղաւսն արե... Ա՛ր լեւ
Կապարին... Ա՛ր Է
Լուզը աշտըն Կապար-
աւորին, Ա՛ր գաւաթ
շրտեղն մպաւումն...

Կարեաւ գերեզմանիւս
արե, լեւալ մպն...

... ևս լեւաղիւս Աւ-
թիւս, ար Կարգաւթիւսն
գերեզմանի ևս Կապար-
թիւս վարգապեաւորեան

առիցէ Կուսաստանի մի
աբաժանութեան եւ պեկոյնէ
տնտեսարկում առիցս Գրմ
յարժանս փարպարէ: Պար-
թիք Լրեմիտա. զարթիշ
եւ պարս Կանգէրմ ժար-
գարժու թիւամբ . . .

Աշտկերում Ենգգ առ
առաւմն եւ փայր ի վար-
դապետի: որք Կաթ Կան
զանաւոր իւնն առաւանձա-
րանք:

Աշտկերում Ենգգ առ
առաւմն եւ փայր առ ի
վարդապետի: որք Կաթ
Կան զանաւոր իւնն առ
առաւանձարանք:

Անտիպա Երբարկարի:

Եւ ապա յանգիմանաւ
թիւն պարպիկ զի՛նչ, Եթէ
այ անաւա առնէ Կուսա-
նայ, եւ առաւորք փոփոխի:
զրեւորիւն իւրեանց: Գար-
տան Երաշտապի: առ
ժառն անձրեւ պարպ. առ
յուն Ժմեռնայնայ, Ժմեռն
առաւանձարանայ, Ժրթիտ
թիւ, թիւկարպիտ: Կար-
թիք զարարար. իւրա-
կարթիք, առաւանձար, առ-
պար Նրթիկիք. Կար-
փոփոխար. անձրեւ յան-
ժառնայն: Եւ անգի-
տանք պար զանաւորանք:
Կանգիւրիւր. թիւ առ-
առաւմն իւրեանց Եւ
Կուսանք իւրեանցար:

Պարթիւ. Կարթառառ
անձրեւ առաւ Կանգիւր-
անաւոր լարթիւ լարթի
առաւորք թիւամբ առ ի
լիւնայ Ժրթ լարթիտ
ժառնայն: Եւ առնն
թիւամբ իւրեւ եւ արաւ-
թիւ, իւրաւաթիւ եւ
Կարթառիւն եւ իւրեւ
փոփոխանք պար Եւ
ժառնայնայ, լարթ Եթէ
առաւանձարիւն իւր Հա-
ռանկ Կարթան, վառն
արայ փոփոխիւն առաւորք
րեւորիւնք, թիւ արթար
լարթիւ թիւն Կար ի
իւրաւ. արթիւ զի իւ-
նայ ի Ժմեռնայն ժառա-
Կարթ թիւամբ իւրեւ, Կար

Եւ Ժառն. իւր. թ. 12. Ժառաւմն . . . ի Ժրթիկ
զարթիւնք փոփոխայ զրեւորիւն:

երկրի տնտեսութիւնը շարժառնայնիմն ցրտութիւն, արագաց եւ տնտեսութիւնը կտրուի եւ տնտեսութիւնը, այլ եւ տնտեսութիւնը եւ գործունէր, առիթ տնտեսը եւ նրան տնտեսութիւնը եւ ժամը շարժառնայնայն:

Եւ—Եւ. Ողորդ թիւի տնտեսութիւնը փոփոխութիւնը տնտեսութիւնը տնտեսութիւնը թիւի տնտեսութիւնը կտրուի եւ տնտեսութիւնը, այլ եւ տնտեսութիւնը եւ գործունէր, առիթ տնտեսութիւնը եւ նրան տնտեսութիւնը եւ ժամը շարժառնայնայն:

Եւ. Գործունէր տնտեսութիւնը եւ տնտեսութիւնը կտրուի եւ տնտեսութիւնը, այլ եւ տնտեսութիւնը եւ գործունէր, առիթ տնտեսութիւնը եւ նրան տնտեսութիւնը եւ ժամը շարժառնայնայն:

յեանց առիթի պիտի ունենանք անդրադարձու-
լու: Զմեզ կը հետաքրքրեն հաս առաւելոյս
այլ ուղի հաստատաները, որոնք Սպրին կը
գերաբերին:

Խալաթեան Ղէւոնդի Պատմութեան և,
Սպրին ԺԷ¹² յանուանել հետեւեալ տեղիքը
ժառանգացը կ'ընէ:

Ղեւոնդ.

Սպր.

Այդ ոգի ուր տանց ուր-
առաւոյ բերիքի գան-
հաւքին ազիտե ու ժա-
ժանաց եւջա. զի ուրք
եկեղեցիք իրարացեալ ի
բարեպարգուքեն քե-
մի. և յետոյ ժոյն ա-
ռաւոյթն փութացու-
թեան....

Սպրժիթ ընդ, եկեղեցի
Հոյսառանկաց, իրարաց
գեալ ի շարեպարգուքեն
բեկցի. ի ժողով գրկեալ
հոգեւ և հոգեաւոր:

Այս տողերուն կից կը գրէ Խալաթեանը.
«Ղէւոնդ ուրիշ տեղ ժր (ԷԷ 126—127) տե-
ղացներով եկարան և իւր հայրենակիցներու
ղթեպաւի կոչուութիւնը շարաւարտ արարներու
հանր յանձին տան (Է. պարտ կ'ըսին): Ար
հասանարէն նայեալ ուստեղ տղղեցութեան
շմեաց Հոյոց Պատմութեան պմեղ հետա-
քրքրող գլխոյն իմա՝ Սպրին՝ գերջին հա-
ստատաներու գրութեան վրայ»¹³:

¹² Армянские Аршамиды, I, 367, II, 140.

¹³ Բայց կը գրենան Ղէւոնդ տեղ ուղի ուր.
հժժա. 182. Ետեւեալ գրեպաւի գլխոյն իմա
առաւ եւ գրեպարգուքին առաւարտ
գեղեցի:

¹⁴ Անդ Ա. ԷԷ 126—127:

Առտանց տարակուսի որո՞միտ էն Խաչաթեանցի այս անկարկոթիւնները - բացց ցուէ որ նա չէ կրցած շահագործել ըստ արժանւոյն իւր առաջին ապագայութիւնները: Նա ահաւո՞ւ է Ողորն եւ Ղեւոնդի մէջ նմանութիւններ, բայց շատացած է տեսնոց մէջ մասնատելի բանազգային չեղքերը միայն. եւ որովհետեւ Ողորն չեղքեալքը (Մոմալ) մէկէ աւելի անգամներ բռնուած էր այս յանցանքին մէջ, ուստի բնական էր որ այս անգամ ալ տնոր գերազարդէր բանազգայութիւնը:

Բայց մենք տեսանք թէ Դր. Նաղթանկացոյ եւ Փիշոնի գրութիւնները նաեւ Ղեւոնդ կորդոցած է եւ առած անունով փոխ բռնուելու եւ մտքերը: Աւստի այս նմանութիւններու մէջ փոխանակ բանազգայութեան գրայ մասնակցու, կորեղի էր նաեւ խորհիւ թէ որովհետ Ողորն չեղքեալքն եւ Ղեւոնդ չէին կրնար նոյն բնոյ: Եւ աւելի մանր բանազգայութիւն Ողորն եւ Ղեւոնդի Պատմութիւնը դատոյ սուրի: Բաւական եւ մտքի նմանութիւններ: Ասանք էն.

Ղեւոնդ.

Ողոր.

Ե՛տ. Ձայն տնայի լաւ
բն. եւ զ[ի]րկմանս պա-
տէրազմաց եւ զպատմի
խաղաղաց... եւ չեց
մասն տրեանց կառու-
րեալ...

Ռաւանտեւնք եւ կարգ-
մանի... պատմի Բաղա-
Բաց եւ լանգուստ մտք-
բաց...

Ե՛տ. Ռաւանտեւնք թէ ոչ
եւ. ոչէ կամք Ողորի իշ-
թիւն ոչոքիւ գի'նչ. ձիւ

խանութն գտաւորէ, որո՞ւմ
ի վերաւսն վկայէր թոր-
գութիւն գոյ յազմութիւն
ժայռախոյն եւ կտրկուտի
եւ երաշխայութիւն՝ ահա
ձքեւար: այսօրինկ քաղաք
յաւրգութեան ի վերայ
մէջ:

157. Զի տրգութեւ անկ
եւ ԵՐԵՎԱՆ եւ Կոստանիւ-
թիւն յաւաքելք յազգացմ-
տութեան հարաւ:

158. Գնախառնէ: ազատու-
թիւն անհամարք թիւամ-
այն ոչ շատաքաւ աւան
զմարմինն յեաշխայ
Քրիստոսի հասկոն եւ յմ-
պէջ գարիւն իջըն: զյայտ:
յարմէ փախուսեալ կզեալ
յազգութք յայլքս եւ ի փա-
ռապա: կընքի՝ զարեւոյ
թաշնէին: եւ մտնէր զիւ-
նաթեպն եւ զեռազնէ յի-
նէին գլուսն անտանելի մ-
զեւթն:

159—160. Զաւարդք եւ
փառն ուղտաւորինն այն-
մէն: Պապին սր էր անք
Քրիստոսեանց առնն... Ժա-
գովեալ առ ինքն փախա-
րարս աշխարհին: Երեւոյ
հաւաքաւորն անկէր: յա-
րո՞ւմ զարեւելին գարն ան-
աչ անտան ասեմէ Զարա-
նայ: եւ առաքելք փափախէ
զընտթիւն եւ ի փառ-
աւորս յարեւելքս: կտր-
կուտի եւ Կոստանիւթիւն
ստեղծութեանն եւ զայրգ-
մանք... անկն անտարք եւ
հիշք անգնա թիւն եւ
մարն յազմութեանէր:

Զի եւս անտանիմ գրա-
նաւոր յո Կոստ. ի փայլի
գարարումն եւ ոչ ի փայլն
հանգստեանն սեկալ: եւ ոչ
ի փառախ հաւաքաւորն՝
զգուշանալով ի զաւարդն՝
այլ գրուեալ անապատաց
եւ զանազիմալքեանց:

Զի եւս անտանիմ գրա-
նաւոր յո Կոստ. ի փայլի
գարարումն եւ ոչ ի փայլն
հանգստեանն սեկալ: եւ ոչ
ի փառախ հաւաքաւորն՝
զգուշանալով ի զաւարդն՝
այլ գրուեալ անապատաց
եւ զանազիմալքեանց:

Զի եւս անտանիմ գրա-
նաւոր յո Կոստ. ի փայլի
գարարումն եւ ոչ ի փայլն
հանգստեանն սեկալ: եւ ոչ
ի փառախ հաւաքաւորն՝
զգուշանալով ի զաւարդն՝
այլ գրուեալ անապատաց
եւ զանազիմալքեանց:

Զի եւս անտանիմ գրա-
նաւոր յո Կոստ. ի փայլի
գարարումն եւ ոչ ի փայլն
հանգստեանն սեկալ: եւ ոչ
ի փառախ հաւաքաւորն՝
զգուշանալով ի զաւարդն՝
այլ գրուեալ անապատաց
եւ զանազիմալքեանց:

Եւ ոչ զխառն. Եթէ զի-
արգ յաւաքելքից գագ-
թեղութիւնն: Եւ խառն
զո՞վ աշխատանքից-
զէլ՝ թի թմ Ժանուկ եւ թա-
գաւոր: զխառն զանգա-
թեանք փառքալն, զազ-
գաւ ի յայ թեկնային¹⁵:

¹⁵ Հիմա. Դեւ. 151. Երեւոյն: յաւաքելքից գագ-
թեղութիւնն: Եւ խառն զո՞վ աշխատանքից զէլ՝ թի թմ Ժանուկ եւ թա-
գաւոր: զխառն զանգաթեանք փառքալն, զազգաւ ի յայ թեկնային:

հանց Անտոնիայ, եմտե
հետք տեսրինայ... ապա
... տեկնայ (Գաղթի) յամ-
բայն (Ն. Կոնս)՝ գաղթելը
առ առկա մի... յետայ
... Մասն... գաղթի հեն-
դեայ կոչելը ի խաղաղու-
թիւն. եւ յամբանայ տայր
ի մեան իշխանին իսմա-
յէլի։ Ան հարա աքիւնայ
զեա ընդ կապանայ՝ գնէր
ի գաղանա յամաթ յանհա-
գաւթեայն եկաւթիւն եւ
գաւանիէլը ի եմանի գաղթեալին զոր հարկապահանիւն-
թեամբ մագաղկայ իւր յերկրին Պարսից։ Իսկ հարա
այ ինայեայ ի գաւան, ոչլաթ գաւանիւր ի մեռին հարա,
պի թեքեա կարտայն յաւից զկեանա իւր. այլ ոչինչ
գաւան՝ տեղէն վաթեւանիւր ի առապանա յանաթին,
իւրքեւ գաղթ մի յանաթայց։

Ան գորդիւն հարին
զհամապապ եւ զմասն
յայտ մամանապ հաշիւայ
ի գաղանա...

132. Մաշկէ... այլ այդ
անաթին եւ աքիւնանայ,
յարմէ յաղաւթ... յանգի-
ւոյ կարգին յաղաւթ այն-
պիսի եկաւթեանց առ-
եւել... մերմեայ լիւն
մաւաթեպարի։ Ան ի-
րեանց եւ փախուտայ տե-
կալ յաղաւթին Մաս-
նայ...

134. Ի երամանկապա-
րարեան եպիսոփ եւ իի-
խանաւրեպան Սարգիսի

եւ հախ յան գմանուն ժե-
անաթին՝ տեղապա-
թեամբ յաթուպն ի վայր
կարեանաւ...

Պարսիցներ անաթիւր...
համարարայր աւազակայ-
— Իշխանը ապաւանցիւ.
գաղանիցը գաղա... յա-
գաղապիւր, աշխարհա-
ւաք, աղանապիւրք Զա-
ռայիցն համամիտը։

... Կապանին գլխաւ-
թայ եւ յանաթ յաղանայ-

ժագաթգաղանիւր վեր...
փախուղ ի մաւանկաւ-
րեան

[Փիլիսի հրաւ. 11-
ւի յայն կապանի ի մա-
ւանաթինն առաքաւա-
նայն... փախիլին... յիւնայ
թագայ զեղբարս, զկա-
նայն...]

Գոտաւորք ամաթիւր
... Կաղապարայ, տեղա-
պարսը իւրաւան... թա-

ժխտող յայն Թանգաղու
 տնուր լծու հարկադանան
 չարենան... զբռնող ժո-
 ճիբս Հայսք արկանէր ընդ
 անհատկարմելի վառարան
 դիւէ... յարմէ փոխանակ
 եղևույ յազու մէ... փառն
 տնտեսելի ազլաբն...
 Ել լուստ գազազակն նո-
 քս Թղթան... Բ աւանտ
 կարծրանային սիրտն նո-
 քս... իշխանաց եւ հա-
 խարարաց Բարչանէ եւ
 Լայկայուքիմէ... զտա-
 վիկ յազմութիւն ժողո-
 փառն խառնանգէն ազգի
 ազգի յարեմ... փառն
 հարկադանանքութեան...

Կուսքս արեւայր խիտա-
 ճաւ յարաշարքս քնախն
 բռնալով Թանգաղու եւ
 դժուարակիրս, չքաման
 տալով տնտեսելիս, վե-
 րակազով տնտեսքա-
 րարէ, անկարմէ... զմքս
 փառն առնք եւ յափշտա-
 կութիւն սառչաւանայ...
 կազումն դիտարաց եւ
 բանալ յայանակաց, յառա-
 քութիւն վառարանն ազա-
 ւանք Եւ անքի Լեզու-
 քիւնէ սամկաց...

Համեմատութեան այս տեղիքները մեզի
 ծանօթ էին արդէն։ Եւ կրկնեցի այս մեռւով,
 աւելի աներախ բնմայելու համար, թէ ո՛ր
 քան կտրուած ունին Սպրին տողերը աւղղուելի
 Ղեւանդէն։ Ասանք բնդհանուր պատկերներ
 չին, ցրուած մասերն ժէջ, ոչ ըստ մեծի
 մասին կը գերաբերին ԴՄԹ—ԴՄՆ շրջանին,
 միշտ այն կէտին, որ մասնաւորապէս ստար-
 կայ պիտի ըլլար Սպրին, եւ որուն արդէն
 պատմական համեմատութիւնները բերան
 հասուցած էին դժեպ։

Այսպէս արտաքին տպացոյցներու քով
 կու գան կը խտանան նաեւ ներքին ապա-
 ցոյցները, հաստատելու թէ Սպրս գրուած է
 ԴՄԹին, եւ այն Ղեւանդ երէցու գրչէն, իբրեւ

մասն անոր Պատմութեան նախնական խմբագրութեան:

Ձ. Արտփնեան կարեւոր խնդիր մըն է Այբին փախապրութիւնը ի վերջ Ղեւանդի Պատմութեան, անհրաժեշտ կը համարիմ յանհէջ հոս յորակից պատարտութիւններն ալ:

Այբին մէկ կտկան մտախնդիրն էն էկեղեցւոյ հոգեւոր պայտանքը. «Հոգին եւ հոգեւանկիցը»: Կ'ողբայ Այբերդուն անոնց մէջ իւր հոյրն եւ պաշտպանը: Այբին բնթացքէն բացայայտ կը տեսնուի մէկ նախնաբար միայն «Հոգին» կամ «Հայրն» նկատի առնուած էր հոն. անոր կարուստն է որ մտմտքում պատահուած է Այբերդուն: Իսկ «Հոգեւանկիցին» յիշատակութիւնը յետոյ միայն եկած կցուած է «Հոգեւանկին»: Արտփնեան Այբը նախնաբար ի գէժա հոգեւոր յորինուած էր, իտպին բնթոցքը հոգեւոր էր եզակի գէժքով, յետոյ, երբ յաւելուած ծարար նկատի առնուած է հոգեւանկիցն ալ՝ եզակի գէժքը փախուած է յոգեւանկի մեծի: Բացք այս սրբապրութիւնը ամէն անգ մշտն չէ կոտորուած: Համեմտեմ հետեւեալ տեղիքները. «Մէկէտ քանութիւն (մանն) զիկեալն (դ՛հոգին) ի յայ փառեաց... սոսկայն դու եւ ոչ յայնմ գրեզ ամայի յայտրիցն ցուցեր»՝ գանդրէն յայնն յաւալով պարմ հոգեւանկեան (քանին հոգեւանկիցին). իսկ յերբորդ հետանալս (ի մահուան հոգեւանկիցին) ոչ է անկեպարութիւն պարմին: Լուս է

Ուրա (Հովութն և՛ հովուակցին) բնակել
 ընդ Պրիստասի . . . գրկեալ էմք . . . ի Հայրենի
 վերակացաւ քեմէն (ի հովուէն) . . . Մովսէս
 (Հովին) բարձեալ լինի և՛ Սեոս (Հովուա-
 կիցն) ոչ յաջարկ . . . Ռարոմ (Հովին)
 մերժեցաւ յիւրմէ ժողովրդենէն, և՛ փոխա-
 նարկեաց որդին Նարտոսոյ (ոչ հովուակիցն) .
 և՛ գայրն Սեաուծոյ (Հովին) ծախեաց ոչ
 առիւն, այլ հատարումն ժամանակի . . .
 Զիւրյ հաստեցից պանա կարցն . . . Ծնան
 զիս . . . և՛ սեուցին . . . ի վերայ գերեզմանի
 (աչ՝ գերեզմանացն) . . . աչաց նոցա հա-
 փայլման . . . փանեղիմ հարատեմեամբ մե-
 րոյ կորն . . . ո՛ր ինդամիս սիրտն ընդա-
 նայ . . . ո՛ր ուշխատութեանց հանգստա-
 նայ : Գորեաւ ժողովոցն . . . վերացաւ ի
 գլխոյս պտակն զեղեցիկ և՛ հենցադաւա-
 դեցն իմ եւ՛ պանամայապետ . . . որ եր-
 րայր առնէր հատարեալ բան, որով փա-
 րէրն և՛ յարմարէր . . . առնանալէր պեղու-
 տարամայնա . . . (Ամենամինն) :

Ինձի կ'երեւոյ թէ առաջին խմբագրու-
 թեան մէջ, պարտած էին, ողբերգուն աչքի
 առաջ ունեցած է Սիւն հաթեղիկուն և՛ անոր
 ժաշի յացած. նա է իւր հայրն և՛ խնամա-
 ծուն, անոր հովանաւորութեան տակ աւան
 է իւր կրթութիւնը — հաւանարէն Հոյա-
 տանի մենաստաններէն միոյն մէջ ի Սե-
 րենիս : ուր կը գտնուէր տաղտիւն, երբ կը
 պատէ հաթեղիկութն ժաշուան յաթի : Կա-

Թողիկոսան (հնամիտ) վարժականած է անաս-
րութեամբ թաղմանեայ հասակին. զայն
Քասառուոյ ոչ ծախեաց առիւծ, այլ հոտու-
րումն ժամանակէն (ձմեռ)։ Սկսեցաւն չէ
կրցած ժամանել, և ներկայ դաժուիւ իւր
հնարն փրկին թաղաներուն՝ անոր ուշքերուն
կապուցման, և ստիպուած է չի փրկայ
գերեզմանին, թափել իւր շնորհամիտ զգա-
ծութեներուն և սրգիտեցան սիրայն արտայայտ
առաքիւններ, զանէ, բան տիրուեան և
այտարար։

Սկսին հեղինակը հնամենի անուներ չի
սար։ Նաեւ Ղևանդ 1761—1771 թ. գնացերը
պատմած ժամանակ ի յիշատակեր ժամա-
նակակից կաթողիկոս - Բայն գիտենք Ռոմ -
"Երասխանակերտցիէն, թէ այս միջոցին կա-
թողիկոսական տիկունք վրայ կը թաղկը
Սիմէ Ռուսենցի (1761—1771)։ զառ ի ազայա-
կան հասակի անեայ և ուսեայ ի սրբութիւն
հոգեւորականութիւն" վարժ և. կիսի ի բու-
նասար առարկիւնութիւն յառաքիւններ։ Իսկ
ապա նախ քան գոյս (նախ քան զքրիստո-
սութիւն ի կաթողիկոս) կուեայ չինել որ յե-
պիսկոպոսութիւն նահանգին Աղմեռոց. և
մինչդեռ անդէն իսկ հոգեւոր հնամենա-
ցեայն իւր հոտ՝ տղերք մի թաղմարտողի
առ ստարտար Սիմէ կուեցեայ լերին ցամա-
քեցու... Իսկ որ յայնժամ Բաղլէյիան
առաքիւնն էր յայնժմ նահանգի՝ Սուլէյման
անուն, առ ինքն զեպիսկոպոսն կուեցեայ՝

ապագիւր պէս թէրեւս Հեաթ ինչ պատենի՝
 դարձեալ թղթելոյ աղբերնէ։ Եւթեկոպոսը
 ապաթթով կրկին կը թղթեցնէ աղբիւրը։
 Վէհաւ աչաթրիկ ապա Էնաս ռաթիկանն աչն
 պաշտպանել և պարձակալութիւն Հաշտատա-
 նեայցաւ¹⁰։ Եւ ի պնայ Եւրա ի Դուին թաղաք՝
 իսկ և իսկ պոթմանէր Երկրորդն Տրդատ
 (766—767)։ Եւ իժապիտի ռաթիկանն վազմա-
 դանի առաքել ի խնդիր Եւթեկոպոսին Սիւնի
 և աննայ կապաւցանել պնա Երամայի յաթոտ
 Հաշտապետութեան։ Երաշ Եւրա թաղաք
 և Երաշայի անպապանն վարաթ վնաթեայ
 պիկոս կեկայ իւրայ իրբէ ամա ութ՝ վաթ-
 անին։ (Մովս. Դրատիւ. 105—107)։ Իւր յա-
 քաթը կ'ըլլայ Էնայի կաթպիկոս (774—788)։

¹⁰ Վճակոյթն մաթ կը ձայ թէ ով էր (766)
 (766) Ժոթիւն 122 (762)։ Հաշտատան ռաթիկանը.
 զբաւիւրն ալ մարին և և ի Հաշտատան յուրմա-
 ներ լին ապր։ Կը գրէ Ժոթմէր (48 11)։ Ժոթմէր
 եկաւելով ալ 151 (766)։ Կապիկան զանիկանի մը
 վրայ կը գտնուի ալ զիքը Եւր Եսեւ 144 և 145 առ-
 թիւերս (749—755)։ Եւրաշի զանիկաններու վրայ կը
 տեսնուի։ Կը միտի Կարինէ (48 12—13 և 29) թէ
 Եւր Սաւլէյման տեսնը Կարպաշու Է. ալ Էւթիւ կը
 Կամպաւաւաթիւն Մովս. Կաթպիկոսի տեղեկու-
 թիւներու և Էսա Թերիւն ալ Սաւլէյման 766 (766)
 յաւայ Ժոթմանի մը գործան և Սիւնիեր և ապա ան-
 յաթ Հաշտատան։ Զեանց ապաշի թաղապետ կը գրէ
 թէ Սիւն յ. Սաւլէյ ալ Սաւլէյման ռաթիկանին յաթը
 զին Սաւաթ, որուն միամեայ ռաթիկանութիւնն կ'ըլլա
 Եւր յրեթաթ 125—126 Վիւրիւր աւաթիկանն, ալն է
 վրէլէ-կան 768—79։ Կարպ էր Սաւլէյման Եսեւ առ-
 օթիկանի մը՝ ալն զԷւթիւն՝ Սիւնի և Սիւնիայ զարեւա-
 կալ մըն ալ յաւայ։ Սիւնիյաւ և ալ Սիւնիկան Կա-
 թպիկոսի յաւաթիւնն ալ 766ին Սաւլէյման ռաթի-
 կանի և Սիւնիայ Երեթիւն զարեւելով թէլապրաւ-
 թեմէր Կաւաթուան է։

Յովն. Դրասխանակերտցոյ ապկերէն կը պահպանէ թէ Սիսն բարեհամբաւ եւ բարեհամբոյց տնտեսութիւն էր, եւ վախճանած էր բարձր աստիճի մէջ:

Զգիտեւոր մենք թէ ապերս անկցած է Ղևոնդ Սիսն կաթողիկոսի հետ: Կաթողիկոսը իր կարնատեւ իշխանութեան չքանին հասանորէն մեծ գործունէութիւն մը չկրցաւ մշակել: Բայց իր արտփ տեղի անկցաւ զմոխամեւ Եզիտի անկամբ եւ Բազարի, ինչպէս կ'երեւայ աղետաբերոյ ոտակեանի տոտաքամբ (1763, 70): աստի Սիսնի մայնր լսելի եղած է խառախրաւ Արու Զաֆարի առաջ:

Թէ իր մահուրնէն ետքը մինչեւ յաջորդին բնաբութիւնը ինչ ինչգիւրներ յուզուեցան եւ որքան ժամանակով՝ չգիտենք: Սիսնի մահը հասանորէն պատահեցաւ 1774ին, ապաւաւմբութենէն յառաջ: Տեղապահութիւնը մինչեւ Առաջեւայ բնաբութիւնը թերեւս ժամանակ մը մնաց տնտեսաւ, անբաւարան մեղքերու մէջ, թերեւս զմոլեկոն ժանդոնիչ ազդեցութեան տակ: Առեւտրայն գէպս ազմկալից էր ժամանակը. Վաւախբաւ բոնապաւ թոյալ գորէնա հայրենիս, եւ Մատաթեայ ոչ բնոյգիմակայէ. պատերազմով դմեղ չուրջ պաշարէ, եւ Մակարէ ոչ փրկէ. այնմ մարտը ի ներքուստ եւ արհաւիրք արտաբուստ: արհաւիրքը ի հեթանոսաց եւ մարտը ի հերձուածոցոց, եւ խաւհրդականն չէ ի միջի, որ խաւսէր եւ յար-

մտքէր ի պատերազմ» (ՅՅ(1) : 22) : Եւ, կ'աղբայ
 «գաղխաբէիս եկեալ ոսկւած» (ՅՅ(2) :

Նկատելով որ Եսայի կաթողիկոսական
 տիտի վրայ հրաւիրուած է Գալիլէն, որ
 Նախիջևանին հետ կը գտնուէր հաւանաբէն
 Սէնա Բաղրատանուց աղպեցութեան տակ,
 իսկ առ չէր տեսած տապաւնաբնէրու կողմը,
 կրնայ մտածուիլ թէ Եսայեայ ընտրութիւնը
 Սէնայի նախաթիւումը կատարուած է յրե-
 թաց» 774—775 տարիներուն, երբ Երկրին
 մէջ մտոր տապաւնաբնէան դրուի տակ կը
 գտնուէր :

Անշուշտ Սեբիա տաղերը աւելի հասկա-
 նայի տխրի պատճառին մեղի, եթէ Սիւնի
 մահուրնէ ետքը յաջորդի ընտրութեան
 շուրջը յազուած տեղերը ծանօթ ըլլային
 մեղի մտերմաոնորայ :

Սիւսպէս ճշտութեան իշխող կը աւանդէ եւ
 յանձին Եսայեայ Կաթողիկոսի, որ գործեց
 775—785 թուականներու մամանակամիջոցի
 մէջ, իրրեւ Ջորտրաքի, իրրեւ Մասաթիկայ
 եւ Մակարի :

Սա թուաքեց իրնյակէ հրամանաւարի
 հարկապահանջութիւններու եւ, հաջորաւոր-
 ութիւններու զէմ - Իրնյակէ փեռան էր Սուս-
 յէլման ռաւիկանին, հեթակայի մը Պարտու-
 նաւաղ արաքական երկրորդական իշխանու-
 թեան (Էլ-Մաշիգի եղբայր Սիմեոյայի) : «Ար-

« Սա թուաքերը կրնան առնուիլ նաեւ 785ի
 ջրմանին համար :

պէս գաւառներն ախոռ իշխանութեանն իւրեանց արկին (Բամայէլայիքն) ի Գամաւ-
կոս Ասորեառաւեկոյց, նոյնպէս առա ըն-
դաւան նոսաւքին ի Պարտաւ կաշ արքու-
նեայն եւ Ծնէլ զդարարուութիւն Էրկրիս. եւ
մի ոմն յարբուհեաց եկեալ ընտկեցաւ ի
Պարտաւ (Կապանկ. 262): Վնո որ ժողո-
վեալ ամենայն նախարարք եւ աւմիկք հաւա-
յերմ եկեղեցեակաւոր եւ կաթողիկոսիս,
որոյ տնուն էր Եւայրաս, ազաւէին թէթեւա-
քաւքանէլ գանուր Ծանրութեան սակին քար
պարտիջէր, եւ ոչ ոգտէին (Ղեւնդ 167):

Ինչ որ Ղեւնդ բնականութիւն խոսքերով
կարաւայայտէ նոյնը տեղի մէկին կը
պատմէ Ռպուանդի պատմիչը (262). Վն
Հոյսաւանեայր սակս աշխարհին հաղոց
զհայրապետե իւրեանց պտէր Խոսի հանգերմ
եղիպոպոսը առ եւ (Հաւանորէն Ռփրիդ-
յայ) առաքէն ի Պարտաւ:

Կաթողիկոսին Էրթն ի Պարտաւ անշուշտ
արխաւիրաւ եւ հայրենաւոր մեղեքեղութիւն
մըն էր. եւ նաեւ ինքը կորոյ էր Արտ-
րորէլի պէմքը չիշեցնել: Սա կը պահանաւի
Ղեւնդէն Վերանհիլ եւ ուղիւ հաւատով
կաթողիկոս (167):

Շիտթ ժամանակները նաեւ այս անգամ
թոյլ շտաին Խոսեայ յաջորդի արխաւոր
ընտրութիւնը: Պատմապիւր կը պիլ թէ Իրն-
դակէ կողոպտեց Կաթողիկոսաւանին գան-
մերը. եւ այլ եւ այլ անշուսթեք գարծոց ընց

բանութիւն մը, զոր էա կը համարիմ Ողոր
թիւ Երկրորդ խմբադրութեան մէջ:

Ս. Ողոր սուի իր մէջ անհարապտա
տաբաներ, որոնք մեծուած են հոն օտար
մեղքի: Այս տարրերը մօտ զատած են Ող-
թին մէջ այն մամանակ, երբ այն բանուե-
լով ՂԵԱՆՈՅԻ Պատմութեանէն միացուած է
Հայոց Պատմութեան իրքեւ աւարտաբանու-
թիւն Կ. պրքին: Բարեբախտաբար անոնք
մէկ թաւով չեն. եւ մեծուած են այնպիսի
անհարապ մեղքով եւ տեղաշարժ մեղքով, որ
քիչ մը աւազիւր աչք անաշխատ կարող է
տեսնել թէ եկամուտ են անունք: Դերմու-
թութիւնս կատարուած է Կար. Կ. 62 գլխոյն
ապղեցութեան տակ, Ողթին եւ Մ. Թորհնայ-
ոյ Հայոց Պատմութեան մէջ կամարի մը
մղկոյն նարտակաւ:

Դերմութեան հն հետեւեալ ընդդմաւած
բառերը.

«Մի՛նչ լեւոյ (սեռ) զմերմ (պիմն) յաւ-
սայիմ զգարմ եւ պատուաւիւնի իմով ա-
մենիմաստ արունապիւս եւ կատարելապէս
յալիմայութեամբ, համայն եւ մեմ (սեռ
էս): փութապէս ղիմեալի ի Թիւղանյիւյ-
յութալալ (սչուսայի) հարսանեաց պարեւ
(պարս), ամիլիեիլի ելապութեամբ կլլիւալի,
եւ առաջատուի տակ երդս, արդ... հաւա-
շեմ... (էջ 361):

Ընդդմաւ բառերու մէջ անհարապ են ան-
ձանաթ զրջին անհաշարժ փոփոխութիւնները

ևս յանկումանները: Ողբերգութիւն էր խառնէր իր
անձի ժառանգութիւնը ևս նկատուի ունէր հոգիւնը:
Քննանով մեռաւ իւր նպատակին համար
յաւանկան համարան է Եղանկի զիջման փոփո-
խել յոգնակիւ, յայնչ աչ հնգրիւն հետեւողու-
կանութեամբ: այսպէս զգնելն թնթերցան ա-
նին իմ անփոփոխ պահանջ է յնպարին
սիմոնի ևս զմեզնէր շարունակութեան մէջ
անիւն հետեւողին: ևս իմ յետոյ՝ իմ արա-
խապի թնդ յաւանկան իմութիւն աշակեր-
տութեան ևս:

Տնտեսական համարում ընդհանուր առաջադրւած է
ևս այն հանգամանքը, որ անանք էր իւրա-
կանին Գրիգոր Նազիանզացւոյ ի Մեջիտան-
նաւին մէջ, որ հոս նմանութեան արիւնդ
նաւաւորան էր Ողբերգութիւն (հմմտ. վերջ,
էջ 142):

Ներմուծողին մեռելն է նաեւ Ողբիւն
վերնադարձը:

10- Մեր շնորհակցան արդիւնքը կրնանք
ամփոփել այսպէս.

ա. Մասնաւոր Մտքեւանացւոյ «Հայոց Պատ-
մութեան» վերջը (Գ. 68) գտնուում Ողբը
իւր իւր իմաստակարարութեամբ անշարժ է անպ-
այն ևս ժամանակին, այն չի կրնար «Հայոց
Պատմութեան» վերջաբանը նկատուիլ:

բ. Ընտանիւն երկույթներու, իւրաքանչեւ
ևս իւրաքանչեւ կենտրոն հանգամանքներու
մասին հարցադրուած անպակաս իմաստներ
կ'անկնարկեն Ը. գտնուելով երկրորդ կէտին

(1750—1774) դիպուածները, այնպէս ինչպէս նկարագրում են գտնուող ձեռագիրները Թերմոսոնցի եւ Ղեւոնդ Էրզնց: Ողբը գրուած է 1763ին:

դ. Ողբը սկզբնաւորը յորինուած է իւրեւ Վերջաւորութիւն Ղեւոնդ Էրզնցի Պատմութեան տառերին մասին (դ՝, ԼԻԻ):

դ. Ողբին ոճը, բառամթերքը, տառաւորութիւնները ասինքն մեծ նմանութիւն Ղեւոնդի Պատմութեան հետ: ողբիցուի ազատուած է այն գրականութեանն ուր գտնուած է Ղեւոնդին մեղքը: Ղեւոնդ է Ողբին հեղինակը:

ե. Ողբս 1763ին, երբ Ղեւոնդ իւր Պատմութեան կցեց 1774—1783 տարիներու դիպուածները, տեղափոխուեցաւ Պատմութեան Բ: մասին վերջը, գոյցն փոփոխութիւններով:

զ. Վնգիւնս եւ Վնգութիւնքս նաւաւորէն կ'աղնարկեն Միսն եւ Եւայի Կաթուղի-կաները:

է. Մասնաւոր խորհանգացոյ Վնգաց Պատմութիւնքս յոյս տեսած է չրնթացաւ 1790—1810 տարիներուն: Ողբի հետեւ այն տնայտարար, աւաւի տանց վերջաւորութիւնն էր, երկարագ մեծը մը Ղեւոնդի Պատմութեան վերջաւորութիւնը փոխադրած է Վնգաց Պատմութեան վերջը: Ընդ փոխադրութեան ժամանակ մասնաւոր եւ մանր փոփոխութիւններ եւ յտեւրումներ, որոնք չոյսափելի են:

2- ՄԹՎԻԼԻԻ ԵՈՐՈՆԻՄԻՆԻ ԻՆ ՂԱՒԹԱՆ ԵՐԷՑ ԵՐԿՈՒ
ՊԵՏԱԳՐԱԳԻՐՆԵՐԻՆԻ ՆՈՐԱՆՈՒԹԱՆԸ ԼՍԱՂԸ

Գրիգոր Խաչաթեան¹ Մոսկւոյ Թորեւ
նաչոյց «Հայոց Պատմութեան» և Ղեւոնդ
Էրեցի Պատմութեան չիբրէն առաւ իր հա-
ժեմատութիւններ հման տեղեկներու, իր
քննութեան արդիւնքը յանգամ իր այն եզրու-
կացութեան, թէ Խաչաթեան իր իմաստները Մ. Թորե-
ւաչոյց քով բանագործութիւններ են. Մոսկւոյ
կարգացան ի Ղեւոնդի Պատմագիրքը:

Բայց Խաչաթեանց չի կանխած լուծիչ
կարգ իր ինքիքներ, որոնք հարկադրաբար
կը յատեն ի լուր աշտոյիս եզրակացու-
թեան. նա չի բացատրած իր պատմա-
նէքը, թէ ինչո՞ւ Մոսկոյի տարբեր Ղեւոնդի
քով կը փնտռէ, և ո՞ր ընդհանրապէս Խա-
չաթեանց նախապաշարուած կ'երեւայ. որով-
հետեւ Մոսկւոյ բանագործութեան յանցանքի
մէջ մէկն աւելի տեղեկներ յանուած կը,
նաեւ այս կէտի մէջ ուզան ի Մոսկւոյ բանա-
գործ տեսնել: Մտնոյն ինքի տարապարտ կը
Թուի այս կասկածը: Պիտի պահանջուի,
որ նախ չիմաստարէր Խաչաթեանց իր կաս-
կածը, ապաւնցանէր Մոսկոյի յետա-
քիւնը և Ղեւոնդի անաթմութիւնը, եւ ինչ
Խաչաթեանց ժամանակի տնայնագործի կարգ:

¹ Т. Халатиницъ, Армянскій эпосъ въ Ист-
ріи Арменіи Моисеи Хоренскаго, Москва, 1896,
էջ 121, 190. Армянскіе Аршакунды, Москва, 1901,
էջ 210 և 21.

Բայց Խաչաթիւանց իւրոս առեան է այս անհրաժեշտ խնդիրներէն: Եթէ Խոփեւ ժամանակով ժերձաւար նկատուէր Ղեւոնդին, դժուարութեամբ պիտի հասնաւայինք թէ նա քաջութիւնն աւելցած ըլլար Բաղրամասունի իշխանի մը խնդրանքը պարտեմ եւ հրապարակին վրայ քաջամանով հեղինակութիւնէ մը քանակապէս ապեր հրաժեշտէր: Համար պանոնք աւել: Բաղրատունի իշխանի մը: պարտէր պիտի մասնէր ձաւար: Խիս կայմանէ ի՞նչ պէտք ունէր Խոփեւ զիմէր: Ժամանակակից հեղինակի մը աշխարհապարտեմ ծանօթութիւններու համար, երբ ինքին կարող էր մեծք յերեւ զանաւոր այցելութեամբ կամ հարցաւորութեամբ: Բայց եթէ հետեւ է ժամանակով Ղեւոնդին, ո՛ր զարուհ կ'ենթադրէ Խաչաթիւանց շէտը պատմութեան հեղինակը:

Այն համեմատողուն տեղիքները, զարմիր ներկայացուցած է Խաչաթիւանց իրքեւ քանակապարտութիւններ, չեն երեւցներ նման նկարապիտ: Նաեւ լրիւ չեն առնուած համեմատութեան այն բաւոր տեղիքները, որ երկու հեղինակներու մէջ սերտ առնչութիւն կը նշմարուի:

Երկար աշխատանք պիտի արժէ ամփոփել ի մի այն բաւոր նմանութեան կէտերը, ուր Ղեւոնդ եւ Խոփեւ գիրար կ'աջակցութեն: Թէպէտ զժուար աշխատանք, բայց անհրաժեշտ կարեւոր հարկ է տնոնց ցուցա-

պրտութիւնք այս անդ յանդերու համար արուհ
եղջուկացու թիւան մը :

Ինչեւորկ մը համարուած անգիշերուս
վրայ երեսան էր բերել երկու հեղինակներու
գրութիւններուն մէջ :

ա. Նոյնութիւն նկարագրի :

բ. Նոյնութիւն ըստագրութեան թիւան :

դ. Նոյնութիւն մտքերու արատշայտու. —
թիւան :

շ. Նոյնութիւն գտնադրուելու թիւան :

ն. Նոյնութիւն աշխարհացրածին ծանա-
թութիւններու :

դ. Նոյնութիւն դատապարտեան եւ բժշկու-
նամաներու :

է. Նոյնութիւն մամանակակից պարտ-
դաններու :

թ. Նոյնութիւն միասնականութեան (համակրու-
թիւն եւ հոգեակրութիւն) :

բ. Մէջ տունի եւ երկու հեղինակներու
այ մեկնանքներ :

Այս կէտերը այնպիսի յատկանիշներ են,
որ ոչ թէ երկու հեղինակներու իրարմէ կա-
խուժը կ'երեւցնեն, այլ իր գրչէն դժեղ առ-
նունց մէջ անկաստի կայնու թիւն տեսնել :

Նկատենք այժմ այս կէտերը մի տու մի-

1. Նոյնութիւն թիւն թիւան : — Թէպէտ
երկու հեղինակներն ալ պոռն են առաջ տե-
ղեկութիւններ իրենց կենսագրութեան մա-
տին, բայց եւ այնպէս անոնց պատմագրու-

թիւններու ժողովրդի բնութեամբ վեր կը
հանել ցոնէր, ուսկից կարելի է տեսնել անոնց
ամբաստանել անձնաւորութիւնները¹. աւ-
նոր հայ երկրի դատակներն են, կեանքի
ակնարան տալով հաստատելն Գաղթի պատեր
մէջ², պատմաբանութեամբ վաղեմական շրջանակի
մէջ³, կրօնական ազգայնականութիւն, նորիցեւ
կենդանական յիշակի: Դեռնոյ իրար հերկց-
կը ներկայանայ. նոյն պատմութեան մէջ էր
աւանց տարակաւոր նաեւ Մոսկաւ: Անոնց
մեծի պիտաւոր դատողութիւնը եղան է Աւ-
ստանաւորնոյ Գիրքը. սրան հետեցած են
կառարկայաւոր եւ իր բերան տալով: Երկուքն
ալ կ'երկուքեան այս հետաքննութիւնը հաստատ
շարժում իրենց պարթիւններու մէջ, ուր ոչ
միայն կը խոսին Աստուածաշունչի բառերով,
այլ եւ կը փորձեն կրօնական պաշտպան մեկ-
նիւնէր Մ. Գրքի: Կարգացած են նաեւ Աս-
տուածաշունչը բացատրող մեկնակցական
գրքեր, եւ ծանօթ են առ հասարակ հայրա-
պիտանական դրականութեան եւ ազգային մա-
աննագրութեան, որքան անոնք մտաշնչի
եղան են Լ. Գարու վերջերս հրատարակի
գրոյ հայերէն: Կ'պատահին այս գրականու-

¹ Դեռնոյ իրար եւ կարգաւոր տեղ վերը:
Մ. Կարգաւոր մտին պիտի խոսի ուրիշ տարի:
Հիմա տեղի մէջ է իմ, 1898, Թ. 3, էջ 15-16:

² Այն պարագան, որ Մոսկաւ Եւրոպայ կ'երկու-
ցանք Պատմութիւնը կարգացած է ի Գաղթի
189, 4րդ տարի պիտի իր պատմաբանութեան
աւստի շրջանը այս կ'արժէր ի Մոսկաւ) Եւ
Մոսկաւ:

թիւնն ու միայն շնորհաբանութեամբ իրենց հմտութիւնն եւ խորանալու աւտոսամարտանակած ուսումներու մէջ, այլ նաեւ նոխարացնելու իրենց հայերէնագիտութիւնը, եւ կը սիրեն խառն փոխառեալ բառերով եւ նախադասութիւններով: Եթեւնայն պարբերեւ երկու թիւներն ալ բնիկերցանութեան աստղակայ:

Քեանց գործունէութեան աստղաբեկն է Հայաստան. շրջած են երկրին այլ եւ այլ մասերը, հետաքրքրուած երկրին ժողովրդով, անցեալ պատմութեամբ, պրոցնէրով: Կրճակահան-պատմաբանական խնդիրները եւ ասանց շուրջը յուզուած գիտաբանութիւնները չեն պրտած գանձեր. գտնել չեն արտայայտուած այս մասին. եւ գծուոր է թափանցել ասանց ներքին համոզման՝ նկատմամբ պատմաբանական իտրցերու:

Ժամանակը, որուն մէջ ապրած են, կ'ընեն էրազմազէտ, սուր թաղաւարներն են հոն երկրին անքերը, եւ կը չենէլ ժողովուրդը ստարներու յուծին տակ (տե՛ս այս մասին գիրը, էջ 144 եւ շար., նաեւ թիւ չեառ):

Երկուքն ալ Բողոքատունի տան բարեկամներն եւ ինկարկուծներն են. բնականաւ են Բողոքատունի իշխաններէ յանձնարարութիւններ, յարմար. Հայոց Պատմութիւն-մին՝ Պէտեղ աւելի երիտասարդ է, եւ պրտած մեթոմատիկեայ եւ մամաեակակից

պատմութեամբ, եւ երկրորդը՝ Խոյնէս մեռնորեամ ի յարիւնէյ հնազայն էւ հին ժամանակներու պատմութիւնը:

2. Եղբոր Երեմ յառաջագոյնութեան: Էդոսն եւ սեր Ղեւոնդի քով աւելի կենդանի է եւ պատկէշտութիւն, երիտառարայակոն խանդն է հոն տրտալայտաւոր: Մինչ Խոյնէս մեռնորեամ աչիքով ծաղկամ, աւելի խոհանարան սնով, աւելի պերճաւորան ինչուսով կը իմանայ տրտալայտութիւն շնորհէ, իւր մտածմունքներուն: Եւ տարիներու ընթացքին աւելի գարգայտագած է իւր մտաւոր պաշարը, աւելի խորացան իմաստասիրական ուսումներու խորքը: Հասակի տարբերութիւնը եւ իւրեւ պերճաւորան փայտիւն ձգտումը յաւուժ բերան է Երիտառարայ Ղեւոնդի եւ Ծերունագործի Խոյնէսի մէջ պանդանութիւն սնի եւ ինչուի - բայց մէկ իմաստով գտնուան է ամբողջութիւնը, մէկ է ըստապանիւ, մտքերը մտքներու սրելու հանդերձները:

Պիտի ամփոփեմ այս բանի մէջ այն տեսիլները, ուր երկու հեղինակները կ'աւաղայտաւորն միտեմա բաւերով: Եւսնը անշուշտ միայն երկու հեղինակներուս տառնմանայտաւոր լուսնի չեն, եւ ոչ ոյ հաղտաւորիտ - բայց ուշագրու է անունը յայտնութիւնը սղնդիսի տառաքանակութեամբ եւ յոճաւ խակի կերտաւորութեամբ երկու հեղինակներուս պրշի տակ: Կան հոն լուսնի, որոնք տառաւոր

ևն հասարակաց աղբիւրէ. կտն նաեւ այնու
պիտիւնք, որոնք կա՛մ մեռա՛յր եւ կա՛մ իմաստ-
աւոր միայն երկու հեղինակներու յատուկ
են. Լեւոն Վահանաւորացու շի ներկայացնէր
երկու հեղինակներու յատուկներքին առ-
բողջութիւնը. բայց բնական է համարելու
համար թէ մէկ է մտանոց միայրը եւ մէկ
արտայայտող գրիւք երկու հեղինակներու
բով:

ԱԼԳԱՆԻՔ. Մը էր հրատարակողը եւ ազգային ի գե-
րաց երկրէն. Ի՞նչ գործերու այս... յեղգու-
ղեանութեան նաքնաց. Ի՞նչ սով... յամբիւր
յազգայնութեան ետք. 122:

Հրէից ազգային գիրքերուցու հաշուարկ-
ը. 22:

ԱԼԻՍԻՍԻՔ. Էջնայ առնեացն ախորժակով յարուր
կամայ իւրաց. 123:

Մը եւ ախորժի իմաց իմի ախորժակայն է. Ա. Գ.
այց 4: պատերազմական ուսմայ ախորժակ.
Բ. 79. առթաւանկայց գտնալին նախնայն
մէջնայ ախորժակով յարուր ախորժակ.
Ա. 21. եւ այլն:

ԱԼԵՔ ՀԻՓԱՆԿԱՅԻՍԻՍԻՔ. Անդին հիւս նմա ախոր
պիտիւնքն. 29:

Եւ նա թշուառն գամեացն ախորժակայն ու-
թեանց. Բ. 21:

ԸՆԴ ԻՊԱՆԻՍ ՀԱՅԻՐԻՐ. Ոչինչ յայնաց յուշ լինէր գտն
անցիցն... 4: միայն ընդ ախորժակայն նախա-
բարացն. 31

ԸՆԴ ախորժակայն երկր ի նա իտիւնով յարիւ-
ն. 24:

ԱՆԵ. Մուտնով զառնեացն աղբիւն իւրով. Ի՞նչ մտնայ
ի նաեւ առնեացն աղբիւն իւրեանց. 362, 322.
գտնուցնայ գաղթա յառնեցին իւրեանց. 3, 364.

148. Ժողովէր զայլոս ասե իւրոյ լամբոյն. 149. նանկերմեալ զայլոս իւրեանց. 150. և այլն.
 Երթեալ ընկէ. — յոյսը ազիւն. Ա. 10. ամե-
 ժանայն. ազիւն իւրով. Ա. 12. փախուցեալ ազ-
 իւն իւրով. Բ. 81. ամեանայն ընտանեւք իւրովք
 և ազիւն. . . Բ. 82. ազիւ մեր ի ծառայութիւն
 Թիւոյ փոքուն — Ա. 11. ևն.

ԱՆԿԵՐՈՒՄ Երանց զամենայն սուսն զանեանք. զորս ազ-
 իւնք պահէր. 151.

— Հրամայեալք ազիւն (զգրուեալ յազգային) ընդ-
 օղմ նապոյ. Գ. 20. զարմեալք ազիւն
 (զգրուեալ) ընդգրկեալ. Գ. 28.

ԱՄԲՈՒՆ. Բազում և ծանր ամբոյնի զայր նաւանէր.
 152. ընդ անցի ժիւնքոյնի զիմեալ. 153. այնմ
 ամբոյնի. 155. զիւր մարտին և զամբոյնի մա-
 ժանակին 156. ամբոյնի ազմէն. 158. 159. և
 այլն.

— Ամբոյնի նաւանի զարար. Ա. 11. զարարեալք
 ամբոյնի. Ա. 11. զարարեալք ամբոյնի.
 Ա. 12. ամբոյն (զարհուսարայ). Ա. 16. ամբո-
 իւն մեծաւ. Բ. 67. Գ. 9. ամբոյն իմ աչտա-
 ընդ անխորհուրդս. Ա. 10. և այլն.

ԱՆԴՈՒՆ. Վիւ գրոյ. որ անցաւ իւ իւրաբեալք. 154.

— Ամբոյնանի զեանք. . . ամբոյն յայնաբեալք և
 զարարեալք. Ա. 16. անքաւ զարարայ մա-
 յանք. Ա. 7. ազք անքաւք Գ. 406 (Սգր.) և
 այլն.

ԱՆԿԵՐՈՒՄ ԵՐԷՐՈՒՆԻ. Թիւրմէ նաւատաւ և յանդամոր-
 ճէնի իւրաբոյն. 155.

— Ամբոյն զմեա ընդգրկեալ անխորհուրդս պահե-
 լով ի ինքնաւաւ. Գ. 27.

ԱՆԿԵՐՈՒՄ ԵՐԷՐՈՒՆԻ. Թիւրմէ. 156.

— Անխորհուրդ յարար (ազգս մեր). Բ. 88.

ԱՄԵՐՈՒՄ. Զանային զանգրիւն անեանք զանեանք ի ձե-
 ր զաւթեանք. 157.

— Եւր. շուս յանաւ.

ԱՐԳԱՆԱՆՆԻ. Քնակեցուցանելք է քարեմ եւ յարդաւանկ ձրկրի (է ներքոյ Գոցոյ). 106:

— Քնակեցան է ներքոյ Գոցոյ՝ յարդաւանկ եւ հասաւոր տեղիս. Բ. 11. է գալստ մի մասուսոյ, սրգաւանկ եւ քարի. Ա. 12:

ԱՐԳԱՆՈՒ. հասէր առաջի նորա քան արդարս եւ իմաստահար. 13:

— Առաջի տեսնաւոյք արդար եւ պատասխան քուսակէ Առաւանդ զմասոյս իւր. Գ. 51:

ԱՐԳԱՆԱՆՈՐ. Արդարեւ, չար սերմանքն չար արդատաւորութիւն. 127:

— Դա՛ ձեւ արդատաւոր ոչ միայն է քան... Ա. 1:

ԱՐԶԱՐԱՐԱՆՈՒԹԻՒՆ. Արամարհութիւնք Հայրապետութեայ, պարանութիւնք հայրակապտաւոր. 137:

— Արամարհութիւն կրկնայ է զհայնի իւրմէ. Բ. 17:

ԱՐԺԱՐԻՍՏ. Գալնայ գրիթան՝ ախարկնայն. 17:

— Արամ ոչ հասանակ ախարկեցաւ. Բ. 20:

ԲԱՐԱՅԱՐԳԱՆԻԹԻՒՆ. Քղարանկիքն բարեկարգութիւն. 20: Կիւնաւթիւն բարեկարգութեամբ. 114:

— Յետ պարգեւանք արութեանք եւ բարեկարգութեանք՝ մեծանի. Բ. 7. է բարեկարգութեամբ հաստատելոյ... Գ. 5. եւ մեծանք բարեկարգութիւն փրկագինայ արտեմեւէր. Գ. 76: Կարեկարգութեան զար ձեռն է Յունայ աշխարհի. Գ. 29:

ԲԱՐԵՎԱՆԱՆԻԹԻՒՆ. Ամենայն բարեկարգութեան իւրեւ իւրեւն տեսնել պատարկեցնայ. 22:

— Ըստ ամենայն բարեկարգութեան տեսչանքն իւր է Հայո. Ա. 15:

ԲԱՐԻՍՏ. Գնացին փախաւանքն փախ ոչ յերկուց զտեսութիւն պահախն. 104: արդ ով ոք առանկ արատաւոյք յմարտի զանկարքն պահան. 21:

— Բ՛արկեալ զախտն (անդարձեցիք ինքն). Գ. 86 (Յգր):

ԲԱՐԲԱՐԱՆԻՍՏ. Բարդն բարբարոսն. 27:

— Բարբարոսն շարութեանն. Գ. 14:

ԿԱՆԱԾՈՒՄ ԵՍԻՐՆԻ. Որոշ գամանայն տունն գամանու-
նով:

— Խոստիմ գամանոց նարկայն. Բ. 35:

ԳԻՒԾ. Դրուշմանով ի վերայ (շուրջ) գաւթահեանն զիժմ-
նով:

— Ուր նւ ոչ զիժմ ժի երկամբով այժմ վերացեր
ու գարէ. Ա. 55. որպէս ի միւս վերջը զիժմ
գաւառայն աւելը յարն. Գ. 57:

ԳԻՒԾ. Զի ոչ իր զիժմ. գոյն նայելիս գաւառից. 135.
Խոստիմայ իր զիժմ տրեւթոյ. 136. զիժմ ուր-
եւթոյ ընկարմանիցան. 137:

— Տոյապիսի զիժմ ի մասայց. Ա. 3. որպէս գիւս
մամանդայն. Ա. 5. գիւս ուրվանդանի մ. Ա.
5. նոպայ պիւսս պարտիմանն նոպայ. Գ. 56:

ԳՈՒ. Վկայէր լարկանիսն զոյ լարկանիսն մարա-
նոյս. 156:

— Նուպուսուր տանն զոյ գաղան իննոյ. Բ. 81.
նւ այլն.

ԳՈՒԵՆԴԱՆԻՆԻ. Գնայիս ի փայտանն Վասպուրականի՝
ի դաշտավայր մարզին. 27:

— Մուգի ի լեռնային միւս ի դաշտավայր. Ա.
5. երթան ի լեռն ի խորին դաշտավայր մի. Ա.
33. տեան զնւ ի տեղի դաշտավայր. Բ. 71

ԳՈՒԵՆԴԱՆԻՄ. Որպէս թի գծուարեայ ընդ յարեմասա-
նիսն Յմարայ. 161:

— Գծուարի. տանն. Սրասուպ (ընդ գաւառանն).
Բ. 61. առ մանայն լան գծուարին. Գ. 161
(Սրս):

ԳՐԱԽԵՔ ԿԱՆԱԾՈՒՄ. Խոսք ի գրուս Կուպից. 80:

— Առ գրամբը Սրանայ նւ Կուպից. Բ. 80:

ԸՆԴՆԱԾԱԿ. Ընդ իր գոյ միայն ընկզկայ ոչ մասնեա
ընդ իննոյանդանի մար ի խոստիմանն մարայ. 37.
մանանդանի ընկզկայ մանարանիցից. 165:

— Առ ընկզկայ՝ մասնի յնկիւստեպի. Ա. 56.
նանդի մ ընկզկայ ի խիւստեմար. Բ. 56:

ԹԱՓԱՌԻՐ. Աւարեայ զհարստ աշխարհաւ իւր զարե-
փայ չիկէր ի Եախարաբանի տանիւն. 121.
Իտփայիւն հղեայ աշխարհ ի տանիւն Եախարա-
բայ. 125 հ.հ.

Արեւի. . Գափայի ի թաղաց մայր Եախարա-
բայ. Գ. 121. Թափար ի հոգեւոր խանգից. Գ.
126 (Քղբ.). Հմտ. Գիշ. 127. Ետփայիւն Եախար-
բայաւոր թափար ի բնակացն չիկէրն.

ԻՄԻՒԼՓԻՐ. Եախարանի տնայնացիքն ի պարագայն ի
127.

Թափափնայ. աճրախն հարս ի տանիւն. Ա. 47 (10)

ԻՆԵՍԻՆԻՍԻՒԼԻՆ (գարուն). Ետք Գրիգորի գրաստի
Իշխանութեան Հայաց. 11. Մեծ ժամանակ Գրի-
գորի շախմատի զԻշխանութեան Այսա պարտիկ.
15. Ետք (Մրտան) տնայն (Այսա) Իշխանութիւն
պարտիկան ի գիտաց աշխարհաւ Հայաց. 112.
Ետն Մամիկանեան հարաբար հաճեալ չիկէր
Իշխանութեան Այսայ. 115. Գաղապարտիքն
Մարտի ի գիտաց պարտն Հայաց Իշխանի զԳրի-
գոր ի տանիւն Մամիկանեան գախաւոր Այսայ.
120. Կարմաւ հաստաւ զԻշխանութեան Այսա
այ Մրտան. 121. Գտն հանկց զԻշխանութեան
Միւտայ. 123. Գախաւոր հարս (Գրիգորի) Կա-
րապիւն Իշխանի զԳրապարտիքն զՄարտի. 124.
Այսայ Գաղապարտիքն Իշխանութեան տնայն. 124
հ.հ.

Թաման Արաւելու եւ զԻշխանութեան գարուն
չիկէր իւր. Ա. 74. Ետն ի հոգեւոր Արաւելայի
արամ ցանկացիքն զԻշխանութեան գարուն տնա-
կայն. Բ. 121. Ետն ի հոգեւոր ի թաղ զԻշխա-
նութեան գարուն. Բ. 11. Կիւր թաղաւորայ տաղա-
ւորութեան եւ զԻշխանութեան արեւմտայ գարուն.
Բ. 47. Կարմի կտմաւ. Թաղա զԻշխանութեան գա-
րուն Հայաց. Բ. 121. Արաւա տայ թաղայն հարս
չիկէր Իշխանութեան Գ. 161.

Այս անգ իշխան — Իշխանաբերան (գորտ) կը
 փախար, ինչ որ նիւնքը տաքը էին անուանել
 ապարտպանութիւն: Բայց տեսէ՛ք յառաւի
 իմաստ չընթացաւ էւրա՞. գորտն էւ աշտարակ
 է երկու ձեռքեանկերտաւ ըմբ անուց միտքեանկ
 կերտաւ թիւնք:

ՂԱԻԱՆԻՆԻՄ. Կաւ Խամարեան զման անուանց Լաւ
 զանաւանիլ փառաստ աշխարհիս եւ զանաւանուս-
 թիւն Եփեղեմաց. 146. Կաւ Խամարեան զման
 յաճաթեան Լաւ զմանս փառապատը: 128:

— Կաւ Խամարեան զմանանիլ թ զմանց Կայրեանեան
 Լաւ իւր Կեանանիլ զարգիս տաքանեանց փախար
 զաւանանս Կայրեանեան: Ա. 127:

ՂԱԻԱՆԻՆԻՅ Կայրեանեան. Զանաւանեանց յա Մաքրաւ
 առարեց ի յաւայիս գորտը իմաց. 146:

— Եթե՛ք էւ զշեռագր տեսնաւ. յաւայիս Ա. 141:

ԿԱԻԱՆԻՄ. Աւարտ զիւրեղ լծարիմա ուսարիմաւ ան, որ
 աղագրեւ յաւ անուան իւրաց իրազմարար. 112-
 Կապտաւոր է. իրազմարարը էւ 113:

— Կապտաւորեանիլ զիւրեղմ. Ա. 12. զարգար
 իւրեղմ. Ա. 28 Էւն:

ԿԱԻԱՆԻՆԻՄ. Զանաւանեան յաւայի իւրեանց. 281:

— Զարացը յա Նիգրոս իւրեանցաւ զաքիւսութիւն
 յա. Ա. 28. Ենց որ իրանգաղեան Նիգրիթ՝ իւրա
 Կը իմա թ յաւայի Գ. 21:

ԿԱԻԱՆԻՆԻՆԻՆԻՆԻՆԻ. Զայց յաւայութիւն իւրանիւնազաւորեան
 աշխարհիս. 124, 125:

— Զաւարութիւն իրանիւնազաւոր գորտաւորացն: Ա.
 116:

ԿԱՓԱՆԻ. Զայց ասեղ ին աղագրեան Զապարաց, որ անուան
 Լաւ զապար իւրեան. 41. 104:

— Եւ պարանի վարդիլիս, որ անուանէր իւրեան. Բ.
 54. Ենց աքիւնիւն իւրեանց. Բ. 82 Էւն:

ԿԱՓԱՆԻՄ. Եւ Կայրեանեան յաւայեան յաւայարեանի
 զանայ տա զանայ էւ Կայրեան տա Կայրեան, եւ

խմբեցու պատերազմն Սժրաս Քաղաքաւանի
ընդդէմ թմարեւոյոյ. 25:

Ս. խմբեցու պատերազմն ի գաշտին ոչ փշի
Քիրաւ, եւ ժամանակակապս պա փակաւ Սժրաս
Քաղաքաւանի ընդդէմ Պարսից. Կ. 26:

ԽԵՐԴԻՐԻԼԷ՝ առնել. Քերաս ժի իւրեանց խեղզաման
արարիկ. 27: խեղզաման սառափէր. 118: Եւս
ժամէմ խեղզաման յիւելին. 111:

Հրամայեաց զեա խեղզաման առնել. Կ. 14:

ԽԵՐԴԻՐ. Զառաքի արգիւայն իւրեանց իսկաղին փառա-
բէր. 146: Իսկային փաշտանել. 172:

Քիր-պէր ժիւցն իսկաղին. Կ. 65: Գրարին յո
խալուր առնմ. Կ. 61:

ԽԵՐԴԻՐԻԼԷ. Ոչ առնանմ իսկաղնի ժառց զգարն առ-
ջոյոյնքանեւ. ժիւցն փառեց Կառնցանեմէր ի
ժամանակաւ ժէր. 122:

ԿԵԿԵՐԻԻ Ժամանակամբ զխեանկանս իւանց յո
փոք պաւերով զփայտակն. 11. 1: ի պիտանաւոր
խանգանաթիւս. 11. 2: Երոյ ի բարս արաւ
թիւս եւ խանգանաթիւս սիբերաթիւս փայրէ.
11. 24:

ԽԵՐԴԻՐԻԼԷ. Սիւսիսիւզեմ'լան յանքին սրան. 10-
գոր իւրեանց խաղիպեւան զին. 21:

Սրով իսկիսիւզեմ փամ զեղաց Կառնիւր. 11. 25:
Իւրոյ գարացն խաղիպեւ. Բ. 13: Թի Կառնիւր
զեղաց 1: Թի զաղանի խաղիպեւմէր սրայ. Բ. 74:

ԽԵՐԴԻՐԻԼԷ. Ե՛ք իսկառնեղեղն զմեզ գաւեայ ի Կառ-
նաւոյ ժէրոյ. 26: ի առնիւսե իսկառնեղեմ, 24:
Եւզամ թշուամաւ փշամբեւոյ իսկառնեղեւ-
նիւ. իսկառնեղեւ 1: զքեմէրոյ. 125:

Ոչ ուր իւր իսկառնեղէ (ժամն Կառնաւոր),
յանցի առին յանն առնի ի գաւիցն. Բ. 14:

ԽԵՐԴԻՐ ԲԱՐԴԻՐԻՐ. Կարիկեցու քանկու յաշխարհէւ
Հարոյ գաւեմ Կառնաւորոյ. 24:

Կառն. զաղգն Սիւսանաւոյ իսկանցու իսկանել.
Բ. 81:

ԽԻՐԻՆԱՅԻՆԱՅԻՐ. Արքիեպիսկոպոս Կոստան: 30- խորհրդա-
քանակ անդամութեան. 30- թըրեւ խորհրդապետ
գաղտնագրութեան վարչական: 176- խորհրդա-
քանակ վարչական թեման: 136:

Առ խորհրդապետական ամբարձր գնահատելու. 18-
խորհրդապետական Գաղտնագրութեան. Գ. 17:

ԻՐԱՆԻԱՅԻՐ. Առաջնական թեմ գաղտնագրութեան թեման
ձեռնարկելու. Գաղտնագրութեան. Եւ այդպէս Թեման թեման
Եւ ձեռնարկելու. 142:

Արք. ... ձեռնարկելու գնահատելու. Գ. 20:

ԻՐԱՆԻԱՅԻՐ. Դեպքերու Եւ կաթողիկոսական Եւ գաղտնագրութեան
գնահատելու. Գաղտնագրութեան. 135:

Քաղաքային Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ.
22:

ԻՐԱՆԻԱՅԻՐ. Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ.
142:

Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ. 142:

ԻՐԱՆԻԱՅԻՐ. Դեպքերու Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ.
142:

Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ. 142:

ԻՐԱՆԻԱՅԻՐ. Դեպքերու Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ.
142:

Արք. Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ. 142:

ԻՐԱՆԻԱՅԻՐ. Դեպքերու Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ.
142:

Դեպքերու Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ. 142:

ԻՐԱՆԻԱՅԻՐ. Դեպքերու Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ.
142:

Դեպքերու Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ. 142:

Դեպքերու Եւ կաթողիկոսական գաղտնագրութեան. Գ. 142:

- Սեդեքանայ (գնու) Նախնիքի հարկեզուցանող շա-
նիստ, թուրք. ... Բ. 7. ի շաշ Նախնիքուցանող
շանիք. Գ. 36:
- ՆԵՂՁԱՅԱՆՆԻ. Նեղամանի վանքի ի գննար. 35:
- Նեղամանի եղև. յիսուս սննդապետաց. Գ. 31:
Նժժա. և Գաղանկ. 120: Գառն յարշարանոր
հեղեմանի աշարեայ աշխն. Այլուստ անծանթ:
- ՆԵՂՄԻՍԻՆՔ ԱՐԽԱՆԻ. Նեղմանա արեանց կատարեայ.
127. աննիլի աստատութիւն և Նեղմանա ար-
եանց. 144 շաղում Նեղմանա լապ. Նեղման
արեանց թնթանք յինթանց Նախնիք. 35:
Նեղմանա արեանց աննիլի անբաւ. Բ. 20:
- ՆԻՈՒ. Ան Էգեթր գննույն հարապետեթ. 37, 103, 132:
Հարապետեթ իջեա շաշ գամանայ թաղաւոր. 38:
Երբեք գննար ինչ գնա. Գ. 36: Գննույն Հարթ
թեղ ՆՂ անցանկաւ. Բ. 36: Նժժա. և Գննույն
շաղապետեթ. Ա. 161, արեանք ... Կարապետեթ.
Ա. 26:
- ՆՐԵՇԱՆԱՆԱՆՆԻ. Երեւանի Երզն ի զէրու
Էրզն. 20:
- Զի Գարս անշանք Կրեւանի. Գ. 67:
- ՆՐԵՇԱՆԱՆԱՆՆԻ. Նրեւանի Երեւանի ի զէրու
Էրզն. 122:
- Նրեւանի ի զէրու անշանք. Բ. 46:
- ՍԵՆԱՆԱՆԱՆՆԻ ԼԻՆԻՍ. թաւ յիջի ժեղ մեանման ի ի-
նն ի թնթարան գննույն Յնաւ. 27: Եննու-
ման ի եղև յիսու Գարս ի կոթիլի վանքի. 132:
մեանման ի եղև յիսու աստատութիւն. 138:
Յնաւ մեանման ի եղև աս ի իստան թմայեթ.
139: մեանման ի եղև անթնայն. 34. և այլն:
— Մեանման ի ինն ի թաղապետութիւն. Բ. 25:
- ՊՈՂԱՎ. Նախնիքի Երեւանի Գաղանկ. 433: Գաղանկ
Թաղալի. 135:
- Երբեք ի կարապետ անցարտաթնան Գաղանկ. Բ.
74:

ՄԱՓՐԱՅՈՒՄՆ. Միացեալ ժողովուրդներն (Առաւելոյ. 21):

— Քիչեւ ժողովուրդն պարագայէն շահից. Գ. 65:
 ՄԻՔԵՒԿՐԵԱՅԻ. Քեցանէր ընդ Կիչիկիս յԱսորոյ աշխարհն Միւսիպիսն, ոչ թաղմանի Միլիթիւրիւնոյ. 102. ու, Էդեաւ անցանէ ընդ Միւսիպիւնոյ. 113:

— Մուսանն Նաւանի (Վապարչոնոյ) զման ինչ յարեւմտոյ Ասորոյ եւ Գաղատիսն եւ զԱնիսն եւ զամենեցն Միլիթիւնոյն եւ զԹեոսայիս. Ա. եւ ի շեռոյր իւր Միւսիպիսն Նաւանանցեալ զՄամար եւ զԷդու Միլիթիւնոցն (աղ. Միլիթիւնոցն). Բ. 11. Գոմարչու. Նաւան ի Միլիթիւնոյն՝ զԱսորոս պարագայս իւր յԱսորիս ասարձ՝ առ զարեւելոյ ընդ Տիգրանոյ. Բ. 15. Եւստու. Նաւան ի Բիւթանիս, եւ Խաւէր ամբաս յայտն. Վաղնիսանն. զամարսն ի Միլիթիւնոյն ասորեայ Նաւանիսն ասն զպար Պարսից. Գ. 10. Եւ այլն:

ՄԻՏԻՄ. Սրբիւ աշ միանցաւ զհետ իշխանաթեան ետրաւ. 121:

— Քմենոցն սրբիւ միանցեալ զհետ (Աթանոս թաղարիս. Գ. 57):

ՀՄՄ. եւ Հաւ ՀԱԿԱՅԻՄԻ Իսորոյ իւրոյ. 106

— Եւ ժեռոյն Խորոզմու ու յոր ՀԱԿԱՅԻՄԻՆԻՄԻՆ. Բ. 75:

ՄՈՐ. Վման ժարիկ գտնին. Պարսպազմեաւ ընդ Խմու ի մերամէջ գաւառն Պայիկոյ. 11:

— Մարիք եւ Էդիպեապարսկոյ. Բ. 21. զԷդիք ժարիկ շամբ. Գ. 29:

ՈՒՅԻՄԻՆԻՄ. Իբրեւ պաշտպանութիւն Կարմուխ անասնէին. 141:

— Տրուսթիս յարազանոյն ասիկ ի մարտս ասան անշ թան զամենեցն ուր. Բ. 49:

ՈՈՒՂԱՐԻՍԻՒՂ. Գնեղանեայն յազարկիցն ի խորս Խորու. 28. եւ իբրեւ յազարկիցաւ յաշխարհիւ. 22. զԳնե յազարկիցն յաւանն. 22:

- Ջաջն :— Ի հրաւիրեալն ժեռ յուպարկնացուի
ուկիբ. Ա. 4. յուպարկէ գրայր իւր ի Կարա-
իթս. Ա. 20 եւ այլն :

ՈՂԱՆՍԻ Թգեալ (պատգամ) առ ճննարգար... յաւերն
կալաւ արքայն ճննաց (գիրս) պատգամիմ յգի-
լոյ. 386-388. 107. յգիլի գեալսն առ Հիւսն. 167.
120. պատգամիկ ... յգիլի նախաթնա առ փայտն.
140. եւ այլն :

- Ջիկ ցեպն իւր գնարգսն առ Կնի. Գ. 22. յգի
պատգամ առ իշխան ցարս. Գ. 34. յգեալ շէպա-
պարթիւն. Կ. 50. յգիլ թշնամանա Բ. 40. եւ
այլն, յաւերն :

ՆԱԽԱՐԱՐԱՐԱՆՈՒՄ. Ջթափուր լինելն ի նախարարական
սահմել. 23 :

- Նախարարական ազգաց եւ սահմելք. Ա. 2. Նա-
խարարականն եկեպոք. Ա. 4. Նախարարակա-
նացաւ պարթիկ արտեյս. Ա. 8 :

Միայն Ղեւոնդ եւ Մովսէս կը կիրարկեն այս
ձեռք :

ՆԱԽԱՐԱՐԱՐԱՆԻՔ. Կարգել պատգան նախաժամբանքն
(ճփրատաց). 15 :

- Հաւանք գլխան նախաժամբանքն ճփրատու. Գ.
11 :

Հմաւ. Թեթիս, 167. սփրաժայեպ կարգել ցնա-
ւաժամաբանքն :

ՆՐԱԽԱՐԱՐԱՆԻՔ. Անա շրջապատեալ պանն ցմեկ յարք.
ստուռն ժաշարի շրջապատեալ ցմեպ ... յարքն
յարքարան. 22. փաթի շրջապատեալ. 162 :

- Միշէն շրջապատելի շուրն. Գ. 25. ընդ շրջա-
պատեալ առաջաստն. Բ. 42. շրջապատեալ ճա-
նապարհն. Ա. 11 :

ՏԱՐԱՐԱՐԱՆՔ. Ի յարուկի աղիքատարթեկ գրադարու-
պացն. 14. յարուկի փաժք. 170 :

- Իմացեալ գաթատաւիք յարս նարս եւ պարտակը.
Ա. 10 :

ՈՐՊԻՍՈՒԹԻՒՆ. Առ որ յարան հարցանելի գործախառ-
բիւն գործայն 25. տեղեկանայր ... գործախառ-
բիւն գործայն Հայոց. 145.

- Որոյ արգիտութիւն գրութեանն յարեաւանայ ոչ
ի յանձն մեր հասեալ. 16. 16. ոչ զայս գայայն
արգիտութիւն ի հարգին պատմեացոյ. Բ. 26.

ՈՒՍՈՒՄՆԱՅ ՍԻՐԱՆԻՒԹԻՒՆ. Այստ ... քաղթ յաւասման-
սիրտքեան. 16.

- Պատմեցեալստ ... էր սրահիւր յաւասմանսիրտ-
քեան. Բ. 22.

ՊԱՂ. ՊԱՂԻՄ. Երանգին ի վրայ պաղին ... խորտա-
գնայ պաղին... հասեալ պաղին. 25. Պաղպղնայ
էր ի գետն ի խառտեանն պաղին. 25.

- Պայ տեաւ. Գ. 45. ի գաւեանս անշտանն զիս
սիւս պաղպղնայ ժայռայ գաղին. Բ. 10.

ՔԱԼԱՅ. Հարեայ յայտնիւ գթիկանս հարս՝ առաւիտ-
պան տանջէին ... և. ոչնայս տանգիկայ գեա-
ղիւն քաղեցան յայտարիւ. 166—167.

- Հրամայեաց յայտնիւ հայկեանն յերկայ. մինչ
ի գանին տանգիկայ գեղպի. Գ. 14.

Հժժա. Վարդ և վկայարանութեւր Սրբոյ-
Բ. 14. 15. 16. հրամայեաց զգլխիս նայա հարս
կանն գայար յայտնիւ:

ՔԱԼԱՅ. Զամենայն գարս խորտակեայ իսխիլին. որք
միանգամ էլին յեղզվմ հարս. իսխիլին մանր
խորս գիւրթ. 170.

- Եւար վարկեր գլխին իրտանայ... պաղիս
իսխմար վախեանեցաւ. Բ. 42.

Հժժա. Կայիսթ. 11. Եւար (այս. իրտան)
դարպին (այս. զթաղին) իրտանայր և իս-
խայ զապաւարս հարս.

ԹԱՄԻԿ. Զամիկին որք յեղ հասաւ. 140. պամիկ
բաղկութեւն ժարգիւն. 147. ի պամիկ ժար-
գիւր. 142. յամիկ ժարգիւն. 147. 149. հաս
խորարդ և պամիկն Հայոց 20 հին:

- Քաղաքի մասերն, Բ. 61, 62 և 3. Լառեր
լառապարհի մասերն. Գ. 36. զառարկ յիւ-
րեան. Գ. 7. ախթի ձեպաթիւն մասերն. Գ.
66 (Ողբ)։

ՍԱՍՆԱՅԱՅԵ. Չիճիքի սասնակալն ի վերայ նոր-
մ. Կաղմեայ գրքան սասնակալն և իւրախա-
յով. 26, 27։

- Քաղաքալն Լառեայ սասնակալն զարե շի-
րափի. Բ. 27. յոյժ յաշխարհ և սասնակալն
յայն. Գ. 22. պաշարազմայ սասնակալն. Բ.
51. վարժք սասնակալն. Գ. 46 և արե։

ՍԱՍՆԱԿՈՒՄՆ. Ի նոյն ուժի պատկերման Արդարի. 155
Սասնակումն նախն ի Տիգրանայ. Բ. 15. սասն-
կումն Ողբանայ. Բ. 24. Արխն ի պաշարի
ընկանալ զսասնակումն. Բ. 26. յուրաքա սասնակ-
ումն ուժարչան Մեքսեմայ. Գ. 27 և 3։

ՍԻՆԱԿԻՏԻՍՈՒ. Լաղերի ընկերաբան. 106, 107։

- Բ. 36, 27 (չորս տեղով)։

ՍԻՆՈՐՆ. Որ ի սկզբանցն և պար աքիչիքն ի վերայ
աշխարհ. 26. որ ի սկզբանց պահայ զար-
ժաթիւն. 106, 107։

- Որ յսկզբանցն ճերայ ազգայ ճիւղն և զայժման
ճիւղն պար. Ա. 3. Ջամբարտաւանութիւն ու-
րիւ ճերայ յսկզբանցն և պար. Բ. 92։

ՍԵՐԱԻԿ. Մասալիքի. Ժառանգութիւն սարկի. 21.
Ժառանգ զմեզ ի սարկալիւն ժառանգութեան
6 և 3։

- Մասալիքաւանիւն ի սարկայ զարդի պահի-
ն. Բ. 24. Ժառանգ և սարկի ազգաբան որովայնի
ընկելով. Բ. 22։

ՎԱՅԻԿ. Քաղաքեայ գրաւմարին ի վերայ իշխանի.
ձգլք զվազիւ (այ. վարչի) որ ի ժողիւն նորա. 7։

- Լառ վազիւր (այ. վարչի) գրաւմ Արաւան-
գայ. Բ. 46։

Ինչպէս Վ. Ս. Վարչանեան, Քաղաքանիւն
գրաւմութիւններ. Գ. ՎՅՅՅՅՅ ՍԵՂ. ՎՃ 113—

112- առջից եկառաւ ի. բառն է վաղը, առաջից
կապճառն է վաղըստեք Վ. Բիւրանց, 1101.
Ի վիպան ձրեւելիք, 127. հրաւ. ՏէրաՄկրանիանէ:
Միայն Ղևոնդ եւ Մովսէս աւելին բառաւ:

ՎԼԵՂՆԱՌԻՍ. Նվազեցունց թարգմանց պատմանաթիւնն.
129:

- Թրուցաք վաղեցուց. Բ. 123. վաղեցունց ազգաբա-
նաթիւնն. Գ. 46. զվաղեցունց պատմայ հիւանդիք
առաւից. Գ. 123. Ի վաղեցունց ժիւղիս չքեք. Գ. 12.

ՎԼԵՅԻՍԲԱՅԻՆԻ. Յարէր պաշտ աւարէն ի. վառարարազգի
աչդի աչաւանց ժիւղ. 167:

- Իւր թիւ յաճառանձիկ թեպ վառարարազգի
բնակի. Բ. 161:

ՀՃԺԱ. եւ յաճաչդի. Բ. 161:

ՎԼԻՂՆԱՌԻՍԷ. Կաթին վիճ ժիւ ժիւ... որ աւելք վեցնա-
զիթ պարզմանց սթիւնակ ցառաւ. Մարգիտանա թեք
նախայ... 41:

- Կառնի ժառանգն ժիւ հայրենացի զարգ, յարայ վե-
րայ էր, աւել. վեցնազիթի սթապիտի. Այս ժա-
ռանն... 44. 35:

ՀՃԺԱ. ԱՅԻՐԻԱ. 1. Էրանդի սպա սթիւն (ապ-
առաւ): աւելք վեցնազիթի սթապիտ. Աս Արաթան-
գիթուն:

ՎԻՆ. Վին պարս. Ի թերան վիճն. զվաճարից վիճն
երանէր բոց վիճն. յար աւելայ թեկեցիկն զգա-
նաւենացն յարթն. 174:

- Հրամայեանց թեկեցիկն Ի վին ժիւ եւ Եանգիւր. Ա.
175. վինն երգարա. Ա. 180. եւ թեկեցիկն Ի վին
ժիւ երգարայ. Ա. 17 187:

ՎԻՎԻԿ. Հառաւանդանց նայն վիրազն. 187:

- ԱՅԻՐԻՐ Կարծանեանց պաւազին վիրազն. Գ. Ը.

ՎԻՍՈՂՆԱՌԻՆԻ. Հառարէն զարար Էրգիւր. Հայայ աբիա-
նիք թեպ աւելանցաթեկից վառարանիքիւր. 122:

- Ամենայն աչիւնն իւրով առաջի վնա իւրեւ
զվառանգի առ ցարծաւորա իւր աք Ի Հայա. Բ.
33. Եթէ վառարանիկն այ աքառան. Բ. 35:

ՓՈՒՆԱՆԱՐԴԵԱՄ. Ա. Անան արդի նորո փոխադարձու
 արժու նոր խորո. 125. խոնախ:

— Փոխադարձու գիտություններին զիսկզկեմ
 նա. Բ. 126. խոնախ:

ՓՈՐՈՐԸ. Իսկ գործն Հայոց ամբարշտիկու գիտություն
 առանձին. 127.

— Ընդարձակ փոխարժեք գիտություն խոնախին որո
 լիւր. Բ. 128.

ՓԷՆ. Անան Բիւրին գոր առնէր առ Խորատու. 129.

— Որչառակ Բիւրին գիտություն խորո ցիւնայ առնէր
 ի ժախ. Բ. 130.

ՓԻՆԱՆԱՐԴԸ. Բարդու թէ Բիւրինդիւր եղևայ ... վնան
 ժանառն խոր խորո. 131. Իսկ Խորատն ... որո
 տերադէր խոն արդին խորո, արդիւ թէ Բի-
 րինդիւր եղևայ ժանառն վնախ. 132. վնան
 Բիւրինդիւր լինայ Խորատն երբոր. 133.

— Ի արդիւ ... ի ժառ որոտերադի խոն արդիւ
 Խորո, Բիւրինդիւր լինայ ժանառն
 Բարդու. Բ. 134. Բիւրինդիւր առնէր խոն ժառ
 վնառ լինայ Խորատն. Բ. 135. Գիւրինդիւր
 լինայ Խորո, Բ. 136.

ՓԻՆԱՆԱՐԸ. Զորատու ... առնէր ժանառն. 137.

— Որբորն ժանառն գիտութե առնէր. Բ. 138.

Կր գործառն ինքնառն խոն առ խորո
 ժանառն կամ, լինէր, գործիւ:

Պիտի պահանջուէր, որ կից բառացու-
 ցուիտ առնէ նաեւ համառուի պահանջ մը
 խորանառնան նմանութիւններու եւ ուսուցի-
 տան համառուներու: Վերջոյն համար որիւ
 նանք պիտի գաննէ հետաքրքրեալը հա-
 մարաբարութե մէջ: Պիտեանառնան նմանու-
 թիւնները առնէ ուսուցիչը համառուութեան
 կր կարողանին, ինչ որ գունք բոլ լինալայ

ուսումնասիրութեանս. համարքաւած նմոյշս
 ներկային աշխատութեա, յայց պժուար էր
 անանց մէջ շօշուփել, անհասանկանութեան
 նկարագրեր, որովհետեւ կը ներկայացնէին
 մեծեր, որոնք հաստատարակո նախորդ շրջա-
 նին մատենագրութեան այ սեպհականութե-
 թիւն են, միշտ հետո Ե. պարզէն: Ռովնոն-
 նէս Ռմենցոյ Գրքոցը տաւոց տարակոտի
 ազդած է թէ միայն եւ թէ միւսին վրայ, եթէ
 աւելցակերպ: յայց ապահովապէս գրական
 արտադրութիւններու միջոցաւ թեւաւոր:
 Ընդհանուր նմանութիւն երկու հեղինակներ-
 րուս ընդհանրական—սոնոգիտական յատկա-
 րանութիւններու մէջ կ'արտացոյցայ յատկա-
 ոյշ ոչարտադրութեան եւ ունին բնթագիկ հո-
 տանքին մէջ: սրինակի համար Ղեւոնդի լոյս-
 առնն հոսքապատեխ տեղի մէն յատկութեամբ
 իւր նմանութիւնը Խորենացոյ քով: Ուր
 աներթա է ունի տարբերութիւնը, պատշի
 մտնաստարակա Ղեւոնդի պարզութեան եւ
 Խորենացոյ խրթնարանութեան մէջ, հոն
 պէտք է նկատի աննէ, որ Ղեւոնդ յորինած
 է իւր Պատմութիւնը երեսուտարդական հաս-
 տակին, անմիջապէս Ռեդաթմոնդկոտի եւ Ռե-
 թիոտի ազդեցութեան տակ: գրած է ժամա-
 նակակից պէպտերու նկարագրութիւնը, այն-
 պէս ինչպէս յաւած եւ նկատած է, ասանց
 բռնագրութեան, ասանց հեարագիտութիւն
 ի գործ պնէյու: եւ տեղէր աշխի ասալ հա-
 սակակից եւ թերեւս տեղի երթաստարդ

ունենայիր մը՝ Եսայիան Քաղաքատունի, որուն
զմասարքնեկայ պիտի յայտարարեմք մեզն ինքնախա-
տախքին և պերնարանաթիւն։ Ասոր հակառակ
ձեռնունին Մովսէս պարտաւորուած էր
զրի տունի պիտի ժամանակներու անգոյ
պատմութիւնները, և այն պերնարան միայն
խակաւոր, ոչինչ մարքայունից պարտաւորու-
յալից։ (Թ. 1)։ Պէտք էր առ այդ հարա-
գիւտ միտք, աւր հանձնարք կը տեսնուէր,
հան խառք պիտի մարտարամաւր։ Արտաքին
համեմատելով բոլորանկարներուն անհամա-
թիւնն սրտից, մայրի երեւելիներով այժ տոյ
տեսար փաստերուն՝ այդ տարւեալն է պեր-
նարաններուն։ Եւ Մովսէս ինքնին կը խառ-
տաւորի իւր հետապնդութիւնը այն հետք-
ներուն երբ կը դիմէ երբորդ գրող ակիզոր
տար անէր այն ևս գրաւոր ազգիւր իւր
առաջ, և իման հետաքրքրան հետապնդու-
թիւնից պէտքը չէր պարտաւոր ևս։ Ահաւ ուր
ինչ առ մերով ժամանակաւ ևսինչ կամ
գոյգն ինչ հետի գրաւորից թեւ անսխալ.
Երբորդ տունիւմ գիրք, . . . Խոստանալու իւ-
սիւմ անկանելով ընդ պատմութիւն, որպէս
զի միւմ երեւելի՝ պերնարանաթիւն
դրաւոր առ փաստաւոր, այլ հիմարաւոր-
անից մերոյ կարանաւոր՝ առաջ առաջ և
անյայտ տունիցն գրնթեքունն պատմա-
թիւնից մերոյ հայրենեաց։ (Թ. 1)։ Եւ
ստուգիւր առ երբորդ գիրքը շարադրուած է
հետաքրքրուց խառնք, պարզ, գիրքերեկայ

տնով, մինչ աստի՛ն երկու պրքերու մէջ բն-
 թեցոյցին աշն ա պարուշր դրուուած է սի
 պերմարանութիւնս: Նեղինեկին, խրթին,
 յանարան աստի՛նեկերու շտեմարագոյն
 բանեց: Զանցին մէջ: Աւանց տարակուսի
 եթէ զոչոյն ինչ շեւիս ժամանակներս պատ-
 մութիւնն շնաստարակաց խաթիւք յարինէ՛ր ա-
 շտոյիւ եզմեմ է Ասփաղս Նասկանայի բլրայու
 Նամար, յասայի էր ուր Ղեւոնդ երբ մար ինչ
 տա մէրով ժամանակաստ եղեալս պիտի պատ-
 մէր, աւելի շտփով շմարացոյնն եւ շնաստ-
 րակաց խաթիւք պրկի իւր Պատմացբու-
 թիւնը: Այսպէս տշ ելում է պարմանականը:

Ա. Նոյննա թիւն մտնելու տրտայայտու-
 լիւնն: — Ղեւոնդ եւ Ասփաղս այս տեղ մէկ
 դգանում, մէկ պատկերասարում գլպրերու
 եւ մէկ արտայայտութեան ելանակ աւելն
 եղնամեկ կամ Նամեիչ յասեբով:

Ղեւոնդ

Արթակ

Ի՞նչ էլ: Էստ ետմարն-
 ցան զման անմանց Լան
 անաննի՛ր գգրուտաւ ուր
 խաթիւ է: Գանդաւաւաւ-
 թիւն եկեղեկաց Թրքա-
 տաթի: ... ասեբով. Բաթուս
 Թեւմաթ մեղքով է ի վերայ
 աշխարհի ի ի մէր է:
 Ի՞նչ էր ուր ուղղիւ: Եւ
 մի անգինն ուշք մէր
 կոխով. Իտիք չեւեչ
 զգիւն յիշք տարանք
 Գորշուրտեւ մէր

Ա. ԱՅ. Սա (Արթակ) ...
 Էստ ետմարնիւր գմեռննի՛ն
 ի վերայ Նա յրե-
 եմ ուր Լան Թէ ան-
 տնի՛ր Գորշիւ ուտ-
 րաւեւեւ: Կոխկով
 Գաւնմանն Նա յրե-
 եմ ուրն Եւ Լաւարդաթիք
 տրեանն Իտրտ Թրքիւր տ-
 չանի Նամարով:

Այ. Հանգեքովը (Թվա-
գարու) գորգին իւր
գլուխը. երթալ ինչ իշ-
խանին Սմբատայ. և
ապա նրաման՝ անկուս-
թիւն առնել սիրելեացն
ևւ ժխարանէլ ինչ թշնա-
մեացն... Աւ ժառանգեալ
պարպին Թէպարոսի խնա
գրէր ի ի գործարէն Սու-
նայ. գինըն գարգել պա-
նուպան Սուսկամբայն.
ևւ ետաւ նրամեացեալ նա
պանիլ գինիս գամայ. Աւ
խրիւ. բախին ինչ միմե-
սեւ գամեքայմաւ. (գորգն
ճանկայ ևւ Սուսայ) ...
գարման գարացեալ գարն
ճամկայ՝ փախուստիսն
ալարին զգուսն Սուսայ.
... Խրիւ ևւ ևւ սրգին
Թէպարոսի գարգիւս-
թիւն իմայէլի՝ գարա-
ցեալ անցանիլ յայնկայ
գեացն (Եփրատայ), ևւ
ետուսալ կարնայ զյարս
կամբայն. զի մի ապրեա-
սին փախուսեալն. Աւ
ետաւ ի մէջ տարեալ
զգարն Սուսայ՝ գամեա-
ղկաւթմա առնէին, ևւ
սմանք գինեան փախու-
սեալ յայնարն Սու-
նայ:

Այ. ... Թանկն էին ա-
ւուրդ ցրտալինիլ առ-

Կ. Այ. Աւ յարմաճ գեա-
լ (գեւորդանաւ) ինկայ
Պարսից իրաւունքն գինե-
ցին. ևւ անցեալ ինչ Գր-
իելիայ նաւանիլ ի միմե-
սեւ. ևւ գարնայ Պարս-
սից գարմապանայ ետ-
սինալ զլուսնա Սուսկա-
մբայն միմեաւ. զգու-
սեացն անցին. Ինչ Եր-
սան մէր իմայաւսր (սր
գարգելի կը սիրով ինչ
ճամկայ) իմայ ինկաւս
Սուսկանաւ. զի մի ի
զայ Պարսից գարացն. ևւ
ետանանկանալ տան. ևւ
նարեալ (պարսպարու-
թիւն) անցուցանել գամա-
րարիւն Սուսկանաւ (ան-
ցելի իմայմեալայ ա-
րեւմեացն, ևւ մեմարի ի
եմանի յայմ):

Թ. Այ. Թանկն էր (ս-
աքեալ գեմն երաւի. ևւ

եամանեաց եւ իւս առաւ ի յերկարիւ ձեռքանայն, ինչ տառեացեալ զառնանաւ եւ ի գառնահաւ (ԿՅԲ. շունչ սրտն... անկան ի զառնահաւ փշտանկ նիւզման երաւի, յանգի պոսիւնս պազպանիւ մուշեալ զառնալ ի իստութեի վառն...) սրտն :

Ի՞. Թորեհնացի կր գրէ . Գ. Տ. Վառնայի ի ժամանակին յայնմիկ Արեւ ուղեկցեալ արեւ զակամ եւ օգ Բ շեխմային արտադրեալ ժամագահառութեամբ փշէին... Եւ Աւանց աստուկուսի թառախալով մը ուզան է նա խաւի Ի՞նչմէն . այս ինքն զգտտեալով (Արեւ . Ի՞նչարտ) ամառ ժամանակ տեղի ունենալով քերմութեան ասի զիտկները ապականեցան եւ ժողպահառութիւն մը տարածուեցաւ օդի մէջ . Այսպէս յայն գառնականներու նմանագութեամբ ներկայացուցած է ամառուան քերմութիւնը նաեւ Ղևանդ ՆՋ 1651 : Կարէ պահանառ իշխանն ... յաւաքու աստղախառն մաղմալն Հեփեսոսեայ երազազարանն . եւ Նարկանկ գրածանկ իւր ի գաշտին որ կուշի Գերան, ի պմնդտեւ եւ յանհանգստեցի քերմութեան խաշտեկն : Իւ պրոֆանդանկ աստուածարայնոյ անցուցանէր ի նուցամիւ աստուածին գաշտի : Ինքում ոչ կարողեալ նանդուսիւ նախաբարայն Հայոց՝ մտխմանէին ի տուգտխտուն ուզոյն . որ մտանդեալ թառնայր ի կենեաց աշխարհիս ... :

Դ. Նայնա իմն զաղախաքակցուր եամն : Ի՞նչմէն ժողովրդական ասանգութիւնները եւ

Կամ անդհամեծ ժամքի յղացումները պատմա-
կան հանգիստների քննադրելու համար ու-
մուր է շատ անգամ թրին հապապար ընտրել
պատմական գիշերք։ Քր հարտար գրչին
ասակ կ'այլադիտութիւն գիշերքու արտաքին
երեսայիններն ժխցն, շարժագծերը կը մեծն
անխափութի։ որոնց վրայ ապա տարածելով
խրոսոքով նորաշիւս հանգիստների, կը ներ-
կայացնէ ամբողջն բարեանախի կերպարանքի
մը մէջ, հասանքն ու պանծալի անձամն։ Բայց
որովհետեւ նման փորձերու մէջ յաւաթի
կարուած ձեւում հանգիստները կամ երկար
կ'ըլլան եւ կամ կտրւ, մտադիր աչք մը գիւ-
րաւ կընայ վեր հանել պատմականների ասակ
նպատակ իրանք։

Եւ ամէն ինչպէս ինն գրաւոր յիշատակա-
րանները շահագործած է իւր երեսակայնու-
թեան աղքատութիւնը բարեքելու համար,
նայելովն կրած է հար աղգեցութիւն ժամա-
նակակից գիշերքին, որոնցմով այնքան յի
էր այն դարը, երբ նա կը շարադրէր իւր
պատմութիւնը։ Ղեւնդ գրի առան էր պա-
նունք իւր երիտասարդութեան արեւուն։ Եւ
ստացայ համեմատութիւնները գեղեցիկ նմայ-
նէր են, թէ ինչպէս Եւսէն Կր ժամանակ-
ներու եւ յղացումներու մէջ կը ոտանոց
տպութեան թիւներ պատմական գիշերքին,
եւ յաակապէս Ղեւնդի Պատմադրքին մէջ
քննադրութեան պատկերներին։ Գիշերքը կը
կրկնութիւն պարզապէս ուրիշ հանգիստներու

մէջ՝ այս անգամ ներկայացուած երեսակացու-
կան թաւերաւորմի վրայ:

Նկումը.

Խովան.

Ա—Ը. Մեն եւրս
«Վրթայ» փոխանարդ
գիշտանաթիւնն Մայիս
ման... առ յնշխարդ
ամի իշխանաթիւն իւրդ
դու մարէր Գարս-
րազու: Ժու. ապա ի
մեռա գործարքն Մայիս
ևս առ մարի պրան
Կարապէտ: Սրտք կիւն
և մարտ կիւն ընդ գորս
Հանայ որ ի Գարսանդ
բազարի: Հարքն գնաւ
ևս հայտնիքն... և
միւնչիւն բանդէին պա-
րիւղ ամբարքն՝ գաին
զլմ մի մէկ ի հիմուն
հարա, որ ունէր փերտա
դիր գործիւնայ որքեան
դայս... Եւ ինքն Մայիմ
տանայ գարազ մարիւն
գարսաքս՝ անցանէր ընդ
պանակիմ խորդ: ապա

առի սփռնայ յարթարն Հանայ. և Կրթնայ ընդէր
միմ առ թարգաւ բազարի Հանայ: Իսկ ընդիջէր աշ-
խարհին իւրն: առին գիւնն, որ գարթուքեայ հաս-
նէր ի փերայ հարա, փայտազանդի ապա առին առ-
բային հազարայ, որ առնաւեան կուէր հարա: Իսկ

Բ. Ը. Մա Վարդա-
շապ: Թարգարեան ամս
բան՝ մեռա... ի սարս
աւարա միւր առնաւ
ամբարս... թիւն ին-
սիւնականայ, զիւնդայ
առնմ ևս գիւնարայ, առ-
աւար բան պարսնի իւ-
քայ կրանն... որք առ-
նայ փարքին ապա գնար
գիւնով: Սրտք պատա-
հայ Վարդաշա մարս-
թիւ: մեռա ևս առ-
թամբար մարսակար
... և միգ գիւն կրնայ
պնդանէ ընդ կապանիմ իւ-
րայ: Սր ինսանդամ
մարդանեայ իշխանայն,
յարքնիքն հազար...
Վարդաշ մեռանի ի մեռայ
կարս փերայ ապա
հասարս:

¹ Հմմտ. Նկումը 16. Եւ ի յարթարդամ ամբն
(165) տիրիքին ի փերայ աշխարհիս Հարայ նիւնիւնդիմ
ապրէ, որ առին իւնդիքն... Տե՛ս ևս էջ 17:

Եւրոս առեալ ընդ իւր սրտամտքին գորացն՝ և պա-
մենացն յառջ թառեցաւ ի սկսեալ ազգութեան իւր
... (Մայիս) ընդ յետեւ կապկաւ ... Ըստապարհ
արարեալ գերեանէր ժաշտաւոր ի մեռաց թշնա-
մեացն:

ՂԱԻԱՆԻ.

Դիւան: Զայնու ժամու
Խաչու գարձեալ գրգռէր
սիրտ գործարքին Մաւն
մեաք ի վրայ աշխարհին
հենաց: Եւ խնդրէր յիշ-
խանէն Խամպելի գոյր քա-
ղաւ, և խառամեաց
Խաւ՝ ահեղ գործացն
հենաց ի նապակաւթին
Խառայութեան: Իսկ Խառ-
պարտեալ գոր թաղու
էւ, առ ի մեռն Խառ
իւրեւ տրա ՄԹ: Եւ խա-
ղայեալ Մաւմեա ի կող-
մեցն Խամպելի քաղ-
ժառքեալ գորացն ի կալ-
ման աքեղեկից՝ ... Էր-
թեալ նապակէր ի ման
Թը մենաց աշխարհին և
քանակէր առ Էրթ գետն
նգորդութիւն, որ Թառխ
կայի: Գրէ նապարտակ
առ արքայն հենաց:
Էնդէր, առ, պա միայն
ընդգրկու ա մառնեա ընդ
նապակաւթեալ ի խա-
նին մեքայ:...

(Մենքաւոր պատուա-
խանք առնել) ... շար

ՄԻՈՂԵՆ.

Բ. Դիւ. Զայնու ժամու
Խաչու մթառանեալ իւրեւ
ընկալանքն առնեացնիւ:
Գերեան աքեղանդ և
զկէւ Էրթ աշխարհին՝
մեռաւ աքեղիւ տարա-
մեալ ընդ աշխարհ մեք:
Մաղսկ և Սրտաշէն
զիւրոյ գորացն թաղուա-
թին, և յիշէ պատե-
քալ ի մէջ երկնայն
ազգացն քաջաց և ազգա-
նաւորաց: Մաչու ինչ
տեղի առ ազգն իւրեւ
և գեղեկալ տեղանի ընդ
զետն մեռ կաւ, և քա-
նակի առ Էրթ գետն
ի նիւթայ: Եւ նապակ
Սրտաշէն քանակի ի նա-
քայ, և գետն ընդ մէջ
նայա:

Բայց քանկի գայի
իւրեւ աքեղին մեքա-
կայ աքեղեալ գորացն
նայոց առնեւ առ իւր
առնել՝ գորդաւթին
խնդրէր արքայն իւրեւ
առ Սրտաշէն զիւր և
խնդրեցէ: Եւ Էրթ-

ցանկութիւն չա ի նախա-
դիպելովն փութից իմաց
խելոյս արեւելոյ նարկեցաց
զից զնէր զանն չա ի
կուսեցէ. քոյր թէ ըն-
կաց չիկն խեղճեցն
չաւ որինի թաղաւորաց
տաց թից եւ յարպեաց
էրթիցն խաղաղութեամբ
ի սնկի չա:

Իսկ Մանուկ զար-
մեաց չիւն առ ճինքա-
կուր. Յուր ինն, ուն-
ապիկուսն էԹ. եւ զնայից
ի ըն խաղաղութեամբ,
այս թէ ա զառեւրապ-
մաւ էլից ընդզէմ չա: Աւ
յանկին կայաւ արքայն
ճինաց (զիւս) պապա-
մին չիւնց. եւ առաքեաց
առ Մանուկ եւ առ Ն.
Մնա պոյրէն ի չանակի
չաւ. ժիւղն կառարե-
ցից զիւնքաւսն չա:
Եւնաց թաղաւոր չաւ
չամանկութեամբ փոխա-
նակ ուղիքիւնքաւ. կը զիկն
ՊԱՅՆ ուր եւ կը պաւն
զարանեակուր. Եւ եւ
կնայ չիցը զնայն չա-
նակին ընդզէմ եւցաւ:
Եւ առաքէր առ Ման-
մկա գորափաթն: Արի,
առ Ն. զոր Հոյցեկցիցի
չիկն' պոյր էԹ ուղիքն
չամանակն ի չանակութեան

ման եւ զարմնա տակը
նաւառան, մանկեան
արաւ. որպէս զի մի եւս
մանկուից Արաւնայ առ
պառափաւ չիկից էլցին
չախալար Հոյց:

Ա. ի չանայ չանն
Արաւայիս առ ի տայ
պառաւնին' զոյ չոյր
պառաւնայն չաին զնայն
ի զարաւակ մի մին.
եւ ի մնան թարգմանաց
նայն ի չանակն Արաւա-
լիսի. թից առնմ. ուր
չաւ Արաւայիս, որ չապ-
թեցիս չաւ ուղիքն Արա-
ւայ, եւ նաւանայ չա-
նից. ուղաղիցը զառեւր-
Արաւայ' առ զպառաւ-
նից:

Աւ չանայ Արաւայիս
զարապիս իմառաւթեան
չան' զնայ չիցը զնայն
եւ առնայ զիւնն զնայն
չիկն, եւ չանայ ի նմանի
չանն իմառաւթեան'
ցանկացաւ փութին: Աւ
իւնդեւայ զպոյնակն իւր
զմքաւաւ. չոյնն Նմա
զկուսն որաի իւրայ. առ-
նայ գորիւրդն Արաւայ ի
կնակին չա. եւ զառ-

խճուճ ընտրեցի՝ պա-
տուհաւորաց ժողովքս՝ ձեռք
սեռալ զպատուաւորս ըս-
տաւոր իմաց՝ անց չարս
կոյս պետոյս, եւ առց
զազկիւնս իմ ըստ թուոյ
գիւտեալս ուճ եւ իտացել:
զուրկ մտաւ պատերազմի
լինելոյն ի մէջ զարաց ժոյ:

Եւ եւս առնել կաւո
յայնկոյս պետոյն, դի մի-
տկամայն անցքն եւս
եւս իսկ նոցա անխոր-
հուրց մտաւ ընտրեալ
զպատուաւորս զարացն՝
անցին յայնկոյս պետոյն
խորհի արք երեսուն իտ-
գոր: Եւ իրիսի գախնու-
նեցին զանցանկին՝ իրա-
մայեր արքայն զենեաց
յարժակել ի գերաց զարան
խմայելոյ: ... եւ ի մէջ
առեալ կուսարեցին ի սուր-
սուսերի, մինչեւ ոչ մնաց
ի նոցանէն ապրեալ եւ
գախնաւորս: ... Եւ այս-
պէս կորացաւ ի խմայ-
զարմեալ յարքայն զե-
նեաց՝ զանցին յերկիր
լեւակաթեան իրեանց:

լին եւս սեռաւ իտաւա-
ռեց ընդ ազգի ժողացն,
եւ զպատանին արժակել ի
խաղաղութիւն:

Եւ իտաց թաւեցեալ
մտաւայ, յղե աւ ար-
քայն ձեռնայ՝ առց գոր-
կին արխարն ձեռնայ
զնաթիւնի ի կնաթիւն
նարաւորի: Եւ առ ար-
քայն ձեռնայ, զեւ սու-
տի՝ առցն ժողի նարա-
լեւ իտաւայ ի իտաւայ
եւ իրիս ի իրիսայ ընդ
ժողացոյ կոյս արխարն
նարանց եւ:

՝ ձեռնայ թաւաւորի այս յայնկոյս թաւաւոր
անկեղծամային է. եւ կ'ուրեմ իտա անկեղծամային
եւս մտաւորի 30-1000 ժողաւոր զինուորներու կու-
սուսաւ ի գին ձեռնայ թաւաւորի ժողաւոր արխար-
ներու:

Եւ այ իսկ յանկէ Էլանկէ
 Ի պրանքազմ Ի վերայ
 աշխարհին ճննայ :

113—114. Զոր յազում
 դամար(ը Մբուան որդի
 Մանկան Էւ առկայք ընդ
 իւր գիշխանին Աջուս հան-
 դերմ նախաբարացն Էւ հա-
 ցին հանկազմը, Էւ միա-
 յանկայ առպաստով ին
 յաշխարհն Հանայ : — Կուս-
 ընդ : Էւ մարտուցնայ ընդ
 բազալին՝ հարին զգոր-
 թազալին Էւ առին զբա-
 դարն : Զոք պոյք բազմու-
 թին Էւ դամարն առնայ
 դուսն Իմայք ի հանկերմ
 իշխանուան Աջուսով դառ-
 նայք Մբուանն Ի կազմանցն
 Հանայ մեծաւ յազմու-
 թեամբ Էւ յազում առա-
 բաւ : Էւ իւրքն հասանկը
 Ի յաւառառն Պարսաւ՝
 որովհը Ի գերեզացն Էւ
 յաւարին հեղձաւիւ Էւ առ-
 ուալը իշխանին իւրեանց
 Հեղձայ : Էւ զպաշտպանէր
 նմա պէրս յազմութեանն :

— Իոք Մբուանն գննա-
 ցնայ առարն հանկերմ
 գերեզմարն յաշխարհը պ-
 ընդն իւրաց : ապք մասն
 Աջուսայ, Էւ այդպէս պա-
 տառար նախաբարացն
 Էտուցա Էւ ազախնայա : ...

Բ. Ան. Մմբուս : ... ըն-
 աղեւաթ աբաթեանց՝ ադ-
 նազան եղբարն Մաթին-
 կան յաշխարհն Աջանայ
 հանկերմ դարս Էրթայ
 նրամանաւ Աբաուշիսի :
 Բանդի մեծաւ հայք Մա-
 թինկան, Էւ այդ առ-
 յանայնայ թաղաւորեայ
 աշխարհին Աջանայ, Էւ
 հայանկը գեղբարցն Մա-
 թինկան դար վանեայ
 հերթի Մմբուս, Էւ ախրա-
 ցուցանի Ի վերայ ազգին
 գեղբարցն Մաթինկան, Էւ
 գերեզին հակառակարգացն
 աւերի գամեանցն միա-
 նամաւ առի գնդի սառ-
 աթի ընթացաւաւ : ...

Բ. Ան. Էւ այ կամեցան
 հեղաշնդել նմա Մմբու-
 լիսի Պարսից աքայքի :
 Եւսկիցը յերթին որ ահու-
 անեայ կուի յիւրեանց լի-
 գան Պարսիսանայ պա-
 տաւ, որ է Գեղզմանց լի-
 առն, Էւ հազմեղբարցը,
 Էւ այդք իսկ յան հեռաւ :
 Խաւս Կուսը իւրեզին
 յայն առիւս առպաստըն
 Ի մերայ աքայքի Էւ Վան
 Էրայ առաջ Ի վերայ հա-
 ցա Մմբուսն զմմբուս

ամենայն պարտք չապացի:
... Իսկ Սմբատայ եր-
թեայ շնորհակցի զամեն
նահանգ. զայն զհրկիթի
կառքից անհրկայ՝ առա-
ւել շտեղծարարական զհո-
րի անկ ի չապացի... Գործն
որոշ արժանիք բաւ փառ-
ապանքն պարգևել նմա
Արարչիս զմասն արքայնի
... Եւ զաւարե ամենայն
նմա թողու...:

5. Աշխարհադրական եւ աստղադրական
ճանաչութիւններու նշանակութիւնը:

«... Մովսէս իւր «Շապուգ պատմութեան»
մէջ կ'անկարկէ յաւանի թէ իրեն յաւ ծանոթ
է Գոգթիս գաւառը, գտնուած է այն անկ եւ
յաւան ժողովրդական բերնէն հին դրոյշներու եւ
երգեր (Ա. 30, Բ. 37, Գ. 61 եւն): Տեսանք
արդէն մեր (մ. թ. 11), թէ նաեւ Ղեւոնդ
այն կողմերը գտնուած կ'երեւայ: Երկու
պատմագիրներու ծանոթութիւնը պատահա-
տեղապարհութեան երեւոյն կու պայ յատկացնու-
նահանգայ չապացւոյն մէջ, որ կարծեա-
մէկ է աշխարհ, որ կը նկատու շրջակայքը, եւ
մէկ է գրիշու, որ կը նկատուողը գրեթէ
նոյնանաւ բառերով:

ՂԵՒՈՒՆԻ.

ՍԻՐԵՆԵՍ.

7. Եւ անուրի (Բաւ. Ա. 30) Իսկ զՍեպու-
մայեւոյն ի զհրկիթի եւ զարարչիս... ար-
գաւան Սմբատ եւ զգաւ- թիւնն անկարժ պատմ-

առան Դեղքն ևս զգաւ
առակերտն Նախգաւանս :
ևս գրադարմա յարանք ընդ
առաք աւելցանէլ ին ևս
զարչա զերի վարենայ կառ
կամբք ևս ժամկտեալս ան
յուշանէլ ին ընդ զնան
կիրանի ընդ նոսն Ժաւ
զարչոյ :

Ին. Դուկ մի առաջա
առկաթեամբ ... յար
մակեալ ի վերայ ոչխար
նիւ Հայոց ... գործէլ ին
զանաբնակ ին յաւան
Մարտոյ ի նորմ. ի ձաւ
զոյ ևս ի նաշանկանիւ ...

եկեք ևս բարձաթեամբ
զերեալն ... բնակեցաւ
չանել յարեւելոյ ուղ
ժեք չերինն մընչմ. ի
աւմանա Դեղքան. որ
են ձամբաւ, Թեկեղոյ,
Դամբոյնք ևս որ ոչ
ան եզերի զնան զաւ
առակերտ : յարայ մին
կը զբանջարեք, մինչև
նանգի ու մարչին նախ
նանան : ևս զերթա ու
նանան : զերթա ևս զնաւ
զոյ ևս զնաշանկանիւ :
Ինչ ի միւս կողման զն
առան գրադար գալան. ու
բայ գլուխն Ամբանական,
մինչև ընդ ինչն ու
մարն կախանան : ...
Ինչ գալանեալս առ
Անուշոյ ի նոյն Մարտոյ,
որ առ առամբ չերինն
բնակեցան :

Թէ՛ Ղեւանդ ևս թէ՛ Մոսիսէս ցոյց կու
առան նոս աւանական ծանոթութիւն չիշտան
մարտերուն, կը նաղարդեն առաւել կամ նորազ
անգնեկութիւններ յազարներու ևս զհետի նո
ստերի մասին : Առաւելոյն թիւն ևս նորազարա
թիւնը մկաներն են երկու հեղինակներու անդ
կախութեանը, յաղատարութիւններու միտա
մեաւութիւնը կ'աղաղակէ ժամանակակից առ
թիւն ևս նոյնութիւնը երկու պատմադիրներու
բուն :

Բ. Կր. Կրէ Մարտի Բ. 45. Պատմի սորա
ի նայն առաւրտ սերեալ ապա գորցիմն Տուրոյ,
պատանիս չիմոյ չանդերմ տառաժը, յանուն
նորն իւրեանց Տրուսիւնք:

Տրուսեանց ապա, որ կ'իշխէր Կողման
Վանանդ պատանիքն, առաջին անգամ կր
յիշուի Պատմութեան մէջ Ղենանդէն, զի որք
ի տունն էմատուանացն եւ Տրուսեանց՝
| էջ 141 |. Երեկ ի տունն նախորտրացն
գախտանեցան արք յորք, որք էին ի նոցանն
երեքն ի տունն Տրուսեանց եւ ժինն յՄիւրնայ
գեղջէն | էջ 144 |. Եւս մասին խորք եղաւ ար-
դէն գերազոյն, էջ 145:

Գ. Սորեանացի, Բ. 55. Զանաթ եւ մերձա-
տը կր զուգնէին զինք իմատուանաց տուն-
մին եւ կր սերեցնէլ գանձը ալ չըկանն ծա-
ղումն, իկտուելոյ անոնց մէջ Սոսոսն ա-
նունն յաճախակի գործածութիւնք: Բ՛կպէտ
եւ գաղթեանն, կ'ըսէ, ասունք զի կողմանց
արեւելից Արեւաց աշխարհին, այս ինքն Ան-
մատունի կողմերէն, շրոյց են սորա բնա-
թեամբ չրեայ, ի Սանուեայ ամենն, որոյ
որդի էր մեծանաւակ եւ ամեղ, Սոսոսն
անուն կոչեցեալ, որպէս սովորութիւն է
շրջից՝ ըստ յոսոյ զնախնեացն կոչել պա-
նաւան: Քոյց է շնամբաւ, արպիւս եւ պլիւս
իսկ է տեսանել ի պայմա իմատուանաց,
քանզի ամենայն է ըստնանի ըստ պատշաճի
վոյնքն են ամենայն իրաւ եւ աննիւք:

Ղենանց իւր Պատմութեան մէջ, էջ 141.

146) առանձին կերպով կը յիշէ Ռժտութեանց
Հաշատակութիւնները 175ի տպատար-
մեան ժամանակ. որոնք Արհէլի քով կը
կտարին Վասակ Քաղբասարունայն իրրեւ գի-
նակիցներ: Եւ իջ 168 կը պատմէ գաղթա-
կաններու յաւն, որոց տառապնորդք Շապուհ ի
տառմէ Ռժտութեանց եւ Համամ որդի Կորայ:
Ինչպէս ուրիշ տեղ (Նժժտ. իջ 21) անտանք,
Հասանաքին նաեւ. Ղեւնդ այս գաղթական
ներու թուին մէջ էր. աւտի ի մերձուստ
Ծանաթ տառմէն յտակութիւններուն:

Եւ Խորենացի ժողովն Ծանաթ կ'երեւայ
Տոյոց աշխարհին եւ մերձակայ Կոչին: Դեւ
այսպէս կատարեալ՝ կարգի (Վաղարշակ)՝
պիտոյման Ռժտութեւ եւ գՊանապիտ եւ
գնդերացիս. դռնոց պիտախանաւ. առ սա-
րտապիտ Պարխարայ ընդ մէջ Տոյոց ի պիթին
եւ ի մասախիտաւ տեղիս մայրեաց եւ ի յա-
տաւաւ. դեպիցիկ իմե կարգելով գերկիթն,
Հասանաքիւմ պիտնայինն եւ պիթրմանուն ի
բարեխաւն եւ ի դուղապեղեցիկ մայրէտա-
թիւն իւրոյ թողաւ որոթեանն. աւտոնային
ժամանակին իտպնոցս պատրաստելով, յար-
ժամ գնիտախաւն երթիցէ: Գոմս գերկաւս
աւախաքանակն անասախիտաւ իտպեքմ յի-
րամբքն կուգմիւմ, եւ արաց տեղիս, եւ
դիթրմութիւնն Կոչայ՝ ի մարմնդս աղակաց եւ
բուրտաւանաց: Ի Բ. Ա. Կը պիթ տիրութեւ պար-
մեալ. Ի՞նչ արա (Արշակայ), աւտաւ աղմուկ
մեծ յիտ ի գաւիտ մեծի լերինն Կաւկասաւ:

յաշխարհին Բարդուղայ, և քաղաւթ ի նոցանէ հաստատեալէք և կին յաշխարհս մէր, և բնակեցան ի ներքոյ Կազայ. յարդաւանդաւնոց եւ ի հասցաւն տեղիս մինչեւ ի մամաճակս քաղաւթս (Բ. Գ)։ Իսկ հազմեաւ յաւ ծանոթ է նաեւ Ղեւոնդ։

Հայ Գաղթականները Նաոյուն Ռեապուսայ առաջնորդութեամբ կ'անցնէր Կազի վրայէն Գէղի յաւանական քաւին. հոն զի սաւաճանս Գլայ ի գաւաակ Կոդէ արտօնէրը հաստատ կ'ըլլան Գաղթականներուն, և կը թափան արգելիչ ճարտիւր անցնիչ։ Բայց Հայ գարբը կը խորտակէ թշնամոյն ոյժը և զինքեանք անցանկին ընդ գեան Ակամսիս, որ ի հազմանո Տայոց թղթեալ՝ Էրթայ գնիւսի ոյժը արեւմտից, անցանելով ընդ Կէզը՝ մտանէ ի Պոնապոս։ Բունեաց հայաբը Կոստանդին կ'ընկնորուն ի սիրով Հայ Գաղթականութիւնը և զբնակեցացանէր ի քաղաւթ եւ յարգաւանդ երկրիւ (ի Ներքոյ Կոգոյ) (Ղեւոնդ, 148—169)։ Ղեւոնդ այս Գաղթականներութիւն մէջ էր, ուստի ունեցաւ առիթ անմամբ ծանոթանալու երկրին արդարանդարնոց և հացուէտ տեղերուն։

Եւ Ռ. Թորենեացի գիտէ Վրաստանի Վեաքլուս անուանահայտութիւնը. կը գրէ. «Եւ ի Վերիլայն յեղը երկրի յարեւմտաւ։ Եւ վերայ գերութեան ի Վերիլայնաց ագոցան, գոր Համ Կարուպպանաորը (Բ. Խ, 11)։ Եւ զին մեծ ապաստամբութեան նախորդաւ

կին լերատեսուցի Մամիկոնեանն եւ իւրայինք
ւերթիւն, պատասխարէին յաշխարհին ինչեւ
բացեաց. եւ ստանալաւ անձամբ պիշխանու-
թիւն անձին իւրոյ ի վերայ ինչեւ բացեաց եւ ի
վերայ Վեդիայ (այս. Վէրոյ, Ահու. Վե-
ոխա), որ եւ Վերք⁹ (Վեւոնգ, 139):

գ. Թոր. Բ. Տէ կը գրէ ճենաց մասին.
«Վերքով ան ճենարակաւ, որովո տոթ ի նոցա
յեղուն պատիւ ինչպէս ի թեան... Երեւ-
ստակ տալէր իսկ լերատաշիւ խնդրէր զնա
(գլխագան). եւ ի շրտին լերատաշի՝ պատե-
րագ՝ ի վերայ նորա յարին թագաւորն ճե-
նաց... (յետ մահուան լերատաշի Եսայուն)
յդէ առ թագաւորն ճենաց՝ աւելում, թէ Մի
թաւեացի թեպ զժողովրդ պի ձեռն ըս կո-
րացի տալ զլիւսագան... այս պատն անխորժ
գրեպ անեկոյ չարածեցի զնա յաշխարհն
իմէլ... որ չարատար է նմա մահու. եւ արդ
մի յիշի պատերազմ ընդ իւ եւ ընդ ընդ: Եւ
զի ըսն զամենայն բնակեալս ի վերայ երեսաց
էրկրի խաղաղասէր Եսեմ զոյ զազգն ճենայ՝
յամմն անմա Եսեմ զիստու իմն, ուստի
յոյս իւն է. եթէ եմ արդարեւ խաղաղասէր
եւ կենասէր արդն ճենաց»:

Վեւոնգ (139—140) կը պատմէ Մահ-
մաթ արշաւանքն ճենաց դէմ. եւ կը գրէ.

⁹ Հմմտ. Թոր. Մշխարհադրութիւն, 185. «Վե-
ոխա, այս թեքն Վերք: յիշի կոյով ինչեւ բացեաց առ Ես-
մաւոնա առ Կովկաս: Ժիշեւ ցնդաւանից անձնա
առ Կար գեաւով»:

«խոստանայր նմա (ամբարշտանին) անէլ
 պարտան ճենաց ի հնազանդութիւն ծա-
 րայութեան: ... Էւ երթեալ հասանէր ի
 մասն ինչ ճենաց աշխարհին: ... զիւ էյոթ-
 վարտակ առ արեւոյն ճենաց: ... զոր յո՛ւմ
 ապարտառեալ շահագանդիտ մեզ: մի արդեօք
 իբրեւ զաղջկունաց քո համարիս գեղզ, յորոց
 միջի փերեւեակայ հախանոտ: ... Բայց մի
 յամենոյս լեալ յապաղեալիս զպատասխանի
 զյոյս: ... ոչ աբազ զտրմուսնիս տյարէն:
 Իբրեւ բնիկըցու զգիրն արքայն ճենաց,
 որ հաշէր ճենքակուր: ... խորհէր թէ գի՛նչ
 տալէ քանիցն պատասխանի: ... (Էւ զրէր
 այսպէս): «Դիտասցիք զի աշխարհս մեր ոչ է
 մտեալ ընդ հորհրաւ տարաք: Էւ ոչ էս ի յանա-
 ճին կարոյց: Բայց թէ ընծոյ յիւնէն խնդրեա-
 ցես՝ ըստ արինի թաղաւորաց տաց քեզ, Էւ
 յարուցեալ նրա իցեո խաղաղութեամբ ի
 տեղի քո: Իսկ Խահմեաի զտրմեալ յղեալ առ
 ճենքակուր՝ տուր ինձ տսէ ողջկունս ԼԹ,
 Էւ զնայից ի քէն խաղալութեամբ: ողա թէ
 ոչ՝ պատահեալմաւ էջից ընդզէմ քո: Էւ յան-
 ճին կայաւ: արեւոյն ճենաց լիւրս՝ տառապա-
 միմ յաւիտ: ... »:

Ղեւոնդի անդերան մէջ գեղեցիկ էր պայմ.
 կարկառուն ընծոյս, ան է ճենքակուրի յիսա-
 զաղաւոր թորքը, միանգամայն «կենսատէք»
 ապրելակերպը: Այն աղբիւրը, որ հաղոր-
 դան է Ղեւոնդին ճենքակուր յորջորջումը

Հինաց թագաւորին: և առ շաւարակ այս
գրոյցը. կարոյ էր տեղեկացուցան ըրաւ
նաւ: ժանրամասնութիւններ Հինաց յարգին
գրոյց - թիւ: սր Չեւեղ տեւորդ չամարան է
դէի տունէ, իւր Պատմութեան մէջ, նայեր
Խոփսէս գիւցած է չահայերէն, չեւոյց
Պատմութեան չամար: Թէ՛ միայն և թէ՛
միւսին մէջ ցոյցուն է գաղափարակցա-
ւորութիւն:

4. Դատագործիւններու եւ քմբանամե-
րու եղմու թիւն:

Խ. Խորենացի Հոյոց տեւանգը կը
ըդիւնել յորդուցն Սարկիայ՝ զԹրատ
հեռնի զԹորգոմ: Թորգոմ ծնանի զՀոյկո
143 15, 32, 421 - տակ նաւ կը չամարի Հոյ
ժողովուրդը տուն Թորգոմայ: Հոյի տանա-
ւան գտնուն յեռնադաւաթին Հարք, այսինքն
թէ Հարք են առաջն ընտելաւր՝ ազգը տանն
Թորգոմայ (151): Անշուշտ ունէր չոս Խոփ-
սէս աչքի առաջ՝ ազգային տանդութիւն ժը
143մա. Բույ, 143 1, 2, 25, 155, 156, ապ.
Պատմ., Աղաթ. 16, 176, 186) և յառկողա
մերձեցուցան է Խոյիայ զԹորգոմայ տունը:

¹ Հմմտ. առ Կ. Խոսէ, Skold, L'origine
des Mamiéoniens d'après Moine de Khurène. Re-
vue des Etudes arméniennes VI (1925),
p. 121-123. աթ ձեռքագր տեւոր թրգոմ ըն-
թեւան յոյրթանը կը չամարուի: Չեւեղ լուծ
է զորդս չամարին արարական ազգիւրէ, աթ զե-
ւոյրթանին, որուն ժամանկեցան Ը. զորս. ին-
քն Կոփսայի հեռթային հոգմերը Ըգուն հախ-
նեթան:

Այս բժրունուժը հաստատու արժանու գտած էր Ը. դարուն- և Մանուգոնը, որ իւր ամբարտաճար շարտղներով ապստամբութեան կը պրպէր ժպտութեամբ՝ ի մէջ այլոց կը մտադարձանար տնոնց հայկական թաղաւորութեան մատաչուտ գերադարձը. «Այժմ ընդ հուպ պարմոյի գտաւզան թաղաւորութեանն միւսանկտմ ի տուն թուրքաւորոյ» (ՂԵ. 141)։ Եւեհ ՂԵ. ընդ կը պատմադրէր շման ժողովականացոյց ասան թուրքոմայն (1781)։ Սեպից կը տեսնուի թէ ժամանակին բժրունուն էր Հոյ ժողովուրդն նկատուէր տուն թուրքոմայ, մինչ Սերբուի համար չէ տեսնուած այն որ ևս իջէ իմտաւ, ասան ևս ոչ անդամ էր գործածած և գոյն իւր Պատմութեան մէջ։

Դ. թամանակակից պարագաներու նորմութիւն։

Պար. Ա. իւր ից, կարեւոր կոտան էր կ'ընծայէ մեզի, ծանոթանալու իւր ժամանակի պայմաններուն. կը գրէ.

«Կարգ թաղաւորաց մերոց և համար նայանց որդի ի հորէ տունով։ — Արդ այժմ անցից ի թիւ մերոց արանց, մտնուանդ թէ թաղաւորաց, մինչեւ ցտէրութիւն Պարթեաց։ Բանգի ինձ այսոցիկ որք ի մերոց թաղաւորաց ևն սիրելիք. արդէն բնիկք և իմայ արեան ասուք և հաստատի հորապտաւ։ Ին սիրելի էլ ի թիւ՝ յայնմամ գտլ. փրկելի և զիս զնի, և աս մեզմ յայնմարե զմտան յա՛

լինել, և նոյա ակրաթեամբն խրտաճանայ, եւ յարդեացս տպրել վստմալիցս: Այլ փոյլ ուրեմն փախեալ ի մէնք պատահումսն պլն, իւր արդեմք եւ վիճակ: Բայց այդ եւ առ ուսարաց բազաւորութեամբն կոյցնայ ընդ Սոցալն գմերս արդի անից զկարգ Բազաւորացն, զի մերոյ աշխարհիս բնիկք պատկաւորք արքայնորէն, զորոյ գահաւանան ի ներքոյ պաշտեացորս:

Յորենացի գիտէ թէ զիաց ուրեմն, դաւաքան է Հոյոց թուպաւորներու յաջորդութիւնք, ինքր այժմ, զարդ, զառ առարաց Բազաւորութեամբն կոյցեաց, զառարաւորքն բանասերներու իշխանութեան ներքեւ, հարկադրուած է զբել իւր ազգին հին Բազաւորներու յաջորդութեան պատճառութիւնք, ենթարկուած զարդեաց վստմից, ժամանակակից բազմազան հարսաւանարութեանց: Դաւանի թուպաւորներու որով հայրենիքի բարորութիւնք բարեբաւարիկ եւ Էրփանիկ կը տեսնէ, կեանքը կրկին տեսակէտով երանիկ երկանիկ: Եւ կը վստի իր որովն մէջ հայրենասիրութիւնք, կ'ըզմայ անոնց որով աշխարհ եկած բոլոր, ընդ զնոցս ակրութեամբն խրտաճանաչուց համար: Անոնք զստարք շնն, այլ բնիկք եւ իմոյ արեան ստարք եւ հաւասար հարապարս:

Անկեղծ արասայայտութիւն հայրենասէր սրտի, անխարդախ տկնարկութիւն ժամանակի եւ պարագաներու:

Պարբերան մը պիտի չկարենար առարկայել, այս տողերուն տակ, եւ ոչ ուրիշ մը իր երիտցւոյն եւ նշանակութեան ընկերներէն: Քերտեա նաեւ Ղազար Փարպեցւոյ համար «Վոյ ուրիմն փախած չէր այն պատահումը» եւ ոչ ալ անկեղծութիւնը թուարարութեան վերա-հաստատումն¹:

Ինքի մարտի տեսնելը Մ. Սարենացւոյ գրչին տակ Ղեւնդի տիրութ, որ կը ներշնչէր գրչին տուել այդ տուրքը, դարձնելով պիտի շնորհար մեղի տրտոյցայտութեան եղանակը: Եւ կարող էր համագումարի վրէժի ռօման ուրիմն փախաւ, ի մէջ պատահումն այն, թէ արդեօք եւ գինակը, այս ինչն էթի թագաւորութեան պատահումը փախաւ, երանի թէ նաեւ որդի շարաշար լիլիակը փախչէր, այն պրկումին փոխարէն գանձ այժմեան պտուն հանդամանքներն խնայուէին մեղի: Անշիք քան ձեռն աւարիներ անցած էին այն քրտան գրայ երբ դադարած էր հայոց թուարարութիւնը, եւ չկար յայտնար վերանորոգութեան: Բաժանակի հանազամանքներն անհամեմելի էին, փոխելը ամէն կույմէն - անարբին յանձր ծանր - -

¹ Եւն ընչն Մովսէս, Էթի ուղած ըլլար կեզ: Ան ինչ գինը Սահակայ եւ Մայտոյի աշակերտ, - Բնուել - Կրքունտի առ հասարակ ա պիտի չցար ինչ գինը գծարտ որ հայ թագաւորներու որով ըն պատահում իր մասն յաշտարչ, որովհետեւ այս պատահումը բժշակման պիտի ըլլար նա գանձ քո: Դանտն Համալսարանի որով:

Մանուկներ երբ կը քարոզէր զանա մեք-
մեռել է ծաճանակ փրկութեան մերայ, պի
այժմ ընդ հոսոյ դարեցի գաւազան թաղառ-
բութեանն միւսանգամ ի սուսն Քօրդոսայ,
ասնայ մեք պիժմ յայդէն Բոճայէիք: ...
կը համարէր Ղեւոնդ թէ լմարտութեան հոգ-
ւոյ շարժեալ մարգարէանոցը սնտոխա եւ ըն-
դունդեալ: կը պատմէր զաւանդիլ յուսոյ եւ
քիմանիլ ի սրտիլ ոք բաւ օրէ: Եւ որունք կը
հետեւէին անոր քարոզներուն, անանք «դաս-
տրեալք» էին «ի կարմիր տուն մտնողոնք»
(111) եւ մանուկներ «խորեկայ» էւ մռնկան
այք» է: Բայց եւ այնպէս շատերը հաւատա-
ցին այն զաւանդային:

Այստե Բողոքատուներն է միայն որ չմե-
շայ կը յերկ տոգ տմէնք, եւ Ղեւոնդ համա-
կարծիք է անոր: Ալին սխալած: Փարէր ցու-
ցուց թէ հոյկական պժք տներու տեղան էր
պղծմ ունէր զարտութեան բազմադու ի վիշտ-
այինն (112—113): Ձախտեցու տապաւածքու-
թիւնք:

Աստի ինչպէս Ղեւոնդ, նոյնպէս Մոյ-
սէս շունէին յոյս, թէ իրենց ուրիւ պիտի վե-
րադարձուայ այն բարեբաւասիկ պատահումն
Թաղաւորութեան: Մոյսէս տեսաւ Բողոքա-
տուներ տան բարգաւաճութիւն, բայց իր մար-
գարէանքան հոգին չկրցաւ դուշտեկի թէ պար-
ժը յետոյ պիտի գար այն հարտահաճութիւն:

ԲԱԼԵՐԱՏԱՌԻՆԻ ՍԻՒ ԽԱՄԻԿԱՆԵԱՆ, ՏԱՌՆԵ-
ԲՈՒՒ ԽԻՐԱԿԱՆԻՒԹԻՒԳՆԷՐ

Տ. Նաղմույսիւնն միտաւ մեկտա : Խոյնէս
կը յայտնարեղէ իւր Պատմութեան բնթայ-
րին տնտախ համակրութիւն պէտքի Բայրա-
տաւնիները և անդաւայ հակակրութիւն հան-
պէտք Խամբկանեաններու . Նոյն պայտաւթե-
րուն հագարգակից է և Ղեւոնդ :

ԲԱԼԵՐԱՏԱՌԻՆԻՔ : Խոյնէս պիտէ թէ Բա-
գրատունի աղտն իջ պիտէ մեծ նախարարու-
թիւն ի մէջ աշխարհիւն Հայոց (Բ. 2) :
Բայրատաւնիները սերած են չի ՀԵԼԻԳՆԻ՝
եկան դարաւոր և իմաստուն նախապետէ մը՝
Բայրատաւն, Շամբաւի որդիքն, որուն
Վայրաւորակ տունն է չիշխանութիւն աղտա-
թապալիք չիմեղ Երաւեանեանց (Բ. 3.
Համա. և Բ. 22) : Բայրատաւնիները հա-
տաւատաւուն են չի Սպեր պատաւի, ի չիմն
Խմբատաւնի (Բ. 25), մաս ի Բայրեղի-
անանք Ծաղմուք Երաւեանու քիչէն են :
Գուրիթ մարդտղին արխանկից և տա-
տաւածապաշտ. տաւած են կրմի համար դա-
նէր (Բ. 24) . եղան են հաւատարիմ նե-
ղակները հայ թապաւորներու, դպանները
արաւից (Բ. 27), արխանկի (Բ. 42) :
Երաւաշէս իւր դոյնիքին՝ Խմբատաւն Ծաղմուք
թիւնը կը մարմաւորէ տաւալ անոր գրայց
միտն չիթկուց պնդացն և ի կարծիք կընկն .
և տեղի յան պնդմանեան դիւր թապաւնայ

առաջնությունն է, դիշխանությունն արևմտական գործուն՝ հաստատույ ի նա զամենայն գործ Հայաց, և գործար տշխարհիս գործուն հայս և զհամարէն տունն արքունիս (Ք. 15)։ Ամբաստ թիւ յետայ կ'ընդունի Արտաշէ-կէ նախ և զմասն արքանի որ ի շէն Գագ-իան և զմեզաւս անունն (Ք. 16)։ Բայց Ամբաստ երկուս շի գայեցեր այս ամենատնի-րիւնությունն. իր գրայ կը ձեզ արքայորդայն Արտաշատի նախանձը, արուն տունն անդի տայով շնայ զկոյմամբը Ասորես-տանի, իսկովը կամոր թուղտով դիշխանու-թիւն գորացն Հայաց։ Հոն շհամանուս Ար-տաշիսի բնակի ի Տմորիս, որ այժմ կուի Կորդրիս, ի յիշիկ նստացեալ գրազմութիւն զերայն. բանդի էր ի ծերութեան կին արա-րիայ յիսորեստանայց հասց յայն կոյման, գոր յայժ ախեայ, ժանն տյնորիկ և զնորին կոյմամբը բնակեցու։ Իյնուհաւի զիշխա-նութիւն գորացն ամենեկունն կ'անցնի Ար-տաշատի մասը։ Բայց Արտաշէս իւր ժիւս արքայորդիներուն անբաւան շրջաբա հա-մար նոր բամանման կ'ենթարկի զդիշխանու-թիւնն գորուն։ Արեւելեանը կը յանմասի Արտաշատի, Արեւմտեանը՝ Տիրանին, Հիւսիսայինը Չարեւին, իսկ Հարաւայինը կը թագուի Ամբաստ Բագրատունայն մեւրը (Ք. 17)։ Խոսով Ք. ի արով Բագրատա առ-պեա, արդին Ամբաստայ կը կարգուի զգորտ-վայ արեւմտեան զնդին (Ք. 18)։ Իսկ ա-

գրեալ է, ևս Սկսուց¹⁰ Սկսան¹¹, որոշեալն
 «Կապարեալ» Վարդապ¹², որպէս ճառարան
 Սիգիսման¹³ 16. 6211:

Հայ բանասէրն ապարապետութիւնք կառ
 շխտանութիւնն գորաւն ամենեցուն: Շնորհ
 էտքը կը պանասէր թողբարտութիւնքու մեւքը:
 Շնորհէն շրջանին թողմեղան Հայտատանը կը
 կատարարուէր թաղբատանիներէն: անոնք
 խնամակցան կապերով գտնան էին իրենց նաեւ
 միւս գրեալուք նախարարութիւնները: այն
 պէս որ ամենայն ինչ թողբարտութիւնքու տեղ
 նախարարութեամբ կը կատարուէր: Թ- դարու
 սկիզբը շխտութիւն կողման աւերը կը ներ-
 կայունայ Սկսու Սկսանուն, Սքեւելան,
 Սքեւմանն ևս Հարաւային կողմերունը՝
 Սկսու Սանտիկանի որդիները՝ Իսաիի, Սա-
 դարան և Սանտի Կեւ'ս այս մասին թիշ
 լեաւը:

Նաեւ Ղեւնդի աշրին լիբելիլի ևն Սա-
 դարանները և Սաթուգեմարի թ մէջ նախա-

¹⁰ Սկսու պատմութեան մէջ տասնի մեղան
 երկուն կու գայ Սկիին Վապ թաղբարտանի, որդի
 Սկսու ապրեալ: Սք. Ս: Թաղբարտութիւնքու սի-
 րուան անունն կըն զ'երեւոյ այս թուականէն ետք,
 թաղապէս է. ևս յաւերք գործուն: Սաւոյ թերեւ
 որտեղունն աշտատանութեան որմեղանքը կ'աւանդի:

¹¹ Վարդ պատմական նպաստէ է: Հայկական
 շրջաններու մէջ կը գործածուի միայն իրեն վերա-
 պրը: Վարդ-Տիրոյ, որդի Սկսու թաղբարտու-
 ւոյ: է գոր Սկեւ- յանի, իմա ևս Ղեւնդ. Սի:
 Վարդ-Սանտի Կապի:

¹² Սկսու թաղբարտանի տան ապարապետ անուն
 Նիստանն է է- գործն սկսեալ:

բազրուժք: Իստ փտանցին փերսնատու՝ կ'աւ-
նապարհ փտխասեւամբ տարեցնէի տեւք: Ար-
տաւիք աստանեանի յով կը դառնէ աղտաւաւն:
Երոյց ճենքակուք կը պանաննէ փտխասա-
կանք: Կըք կը մեքմութի խեղիքք՝ պատերապ-
մով կը սպտանայ: Արտաւիքի որդին Շապուհ
հարկադ յաւան կը պգայ ինք դինքը՝ հիւքին
հանապարհ ցոյց տալ, որպէս զի իջեցնէ
ճենքակուքի գալչոյքիք: Բամգունն այս ան-
գամ Հայտատան կ'ապաւտանէի, ուր կը գտնէ
Տրդատի հիւրատիրութիւնք: Ընդու այս միւ-
ջացին բնոգգամ էր Հայոց թագաւորին զէմ
Արկունեւաց մէն Դախուրարք ևս ստբալամ
Արտանն թերպին մէջ կը գիմուրէր թագա-
ւորի կամքին: Տրդատ հրաման կ'արժանէի,
«Ար ոք ունցէ առ իս ցնահապեան սպգին
Արկունեւաց՝ տոց նմա յաւիտեանական իշխա-
տութեամբ զգեալս ևս զգաւասակերտս ևս զտա-
մէնայն իշխանութիւնն ապգին Արկունեւաց»:
Բողմունեաքն Բամգունն կը մաւրմանայ նեն-
դամտութեամբ Արկունեւաց նահապեաքին հետ:
Կը հրապարէ որսի: Կը ուղաննէ. ախրանա-
յով թերպին սրախապիսայ կը կ'ուտարէ թերպա-
կաննէրք: Եւ այսպէս ի գին արեան կը մա-
սանայէ Նարանք: այնուհետեւ իք տունք կը
կոչուի «Բամգանեան», որ ևն Բամբկանեան
նէրք (Բ. Ն. 1): Բ. Արքեանցի այսպէս մեկն
նարանամ է Փաւստոսի ևս Բերիտի Հապտ-
գամ տեղեկութիւններք Բամբկանեաննէրս
նապարմի մասին, ցոյց աւելու համար որ

տեսնեց մտաւոր Տարածի մէջ հոտաւորումն է տիրանանգութեամբ, ապաքին նանապարհով. Այս բացատրութեամբ պիտի արգարանար Բաղրատունիներու տիրապետութիւնը Տարածի վրայ, Ք- դարու տասնչին տասնեակին. պիտի շփոթուէր Մեհրաւան Իրմաւանայ հիւրադրութիւնը, որով Վասպուրականն ազատւան խնդրուց Բաժնիկանեան եղբայրաները գաւառեցան եւ սպաննեցան. եւ Բաժնիկանեան անմատանգ հոգերը բռնապաւառեանքան Բաղրատու եւ Աշու Բաղրատունիներէն թէ Տարածի եւ թէ Բաղրեւանդի մէջ:

Մ. Խորենացայ Հայոց պատմութեան մէջ երկրորդ անգամ երեւան կու գտն Բաժնիկանեաները յանձին Վարդանի, իրքեւ պարծակից Տիրիթի՝ Գնէյի սպանման պարծին մէջ 17. 22-23): Վերջոյր Վարդան եւ աւեր. Իմաք տեղանքը յուայ ի Գնէյ, պիտակ, թէ ոչ թուղում հոգեղարք իմում գգրէժ մտնուն հար իմայ, որ վտան գտաւ եղեւ 18): Վարդանն է, որ ուրի մատանակ զմեկ իւրաքին վրիպակուս կը սպաննէ պիճէյ 17. 23): Բայց անպատու հուա չի մեար Վարդան. երբ ապառաւ յան Արշակէն տու ճառարն փոխաւաւան կ'երթար Վարդան, իր եղբայրը Վասակ հետաւումուս կ'ըլլայ իրեն եւ յետահար կը սպաննէ. այսպէս Բաժնիկանեան ճը ճի

²² Իր յիշեմէ Գրիգոր Բաժնիկանի վրէժ-խնդրութիւնն՝ Աշուէն՝ իւր եղբոր Եւթի ազանեան (աւար ան'ա գորք):

հարապատ Լոյսարէ իւրմէ՛ն կը պատահանուի :
Պէտե՛ղ պիտի ըսէք — Լարցարեհ, շար աւրա
մանցն շար տրոյի հասարցութիւնն ։

Հասարգութեան է ևս այս միջոցակար .
Հայոց նախարարները, Վոզասան Կամսարա-
կան և ընկերք, որոնք Արշակ Բ. ի հետ կը
պանդուխտ Սուլայիտի ըստիւնը, ի՛նքեան
Խաւարի Վ. ի հասարցութեան մէջ մտնել . Խաւ-
արի յանձն կ'առնէ անցիլաւոր բլլալ . Վա-
զասան թաղարարին հաստեութիւնն կը շարանէ
նախարարներուն, որոնք կ'անցնին անմիջա-
պէս Հայաստան . Վայց Խամուլէի Բամի-
կունիէի յինքն ըմբռնեալ զթաղիքն Խոսրովու
և Կարամանն թղթայն նախարարացն՝ զա-
տուցեալ ի նոցանէ զնայ առ Կայսրն Ար-
կայ ¹⁴ . . . Բով Արկայեայ բարի արարեալ
նմա ¹⁵ , հրամայլ Կիւսասար թղթայն հեղին
Կրով ի Կիւսանի իւրում Կեհէ, զի պահուցին
շիշառայկը տղղայն ապստամբուցայ , որ կայ
մինչեւ ջայտար ¹⁶ ։ (Վ. 48) : Անախ Կարմեայ

¹⁴ Այս աղբիւր Կրասն ևն, ինչպէս թմբ
կ'երեւայ, Ղեւոնդի աղբիւրքեան ապ. կը պատմէ
Ղեւոնդ, Այստ պարսիկ թղթա մարտանկար, նախա-
բարներու հետ ևս ապստամբայի Արարներէն անցառ
Կաւնայ կոպէր, ըսցն ինչպէս զԹուրք հետացառ միւս-
թեւն ևս ուղեք Կարգուպիւր միւսանկար միւսեայ
Արարներու հետ :

¹⁵ Արարեալ կը մեկնէ Մ. Խոսրովայի Բամիկ-
նաւաներու մէջ միւրի անգամաւորներ Բիւզանդա-
կան հոյի վրայ : Այս Կարմը պատահան է անկայն
բառ անկայն հաստեութեան թեւ Զ. Կրասն Երկրորդ
կէտին :

¹⁶ Նման միջոցակար մ'առ կը պատմէ Ղեւոնդ
Անրառ Կիւսարայպարի մարին, եղևպէս առ ապստամ-

[illegible]

Մամիկոնեանները առաջին անգամ Սարգս աստվծին շատարդին կը առանան գիրք Հայոց պատմութեան մէջ, զանեղ դժիւոցեալքդ զոն նախարարացն Հայոց, չբռնառնու Վաստայ եւ քարեխառնութեամբ Մամիկոնեանցիկոյն, կըր Համարաց Մամիկոնեան կը խնամածայ Պաշտառնի տուն առնելով Մամիկի դուռքը իրեն կին (Դ. 53) եւ այսպէս կը մտնէ կոթողիդի պաշտպանութիւնը։ Ետտի ոչ քառ արժանեաց կամ իրաւանց, այլ միայն ի շնորհս Կոթողիդեանին։ Արեւմտային, որ տեղն ինք տարած է սոսակն անշքայնից։ Մամիկոնեաններու գիրք պատմութեան մէջ, այդքանն ալ գիշում է քննի Մամիկոնեաններուն, որպէս ին Կարաժիք Կարգանի որդարապետութիւնը կը շարժի որ սրինաւոր զոյց աւայ, բայց դարմանք իրեւ յաջորդութեան իշխանութեան մը, որ կը պատկանէր Բագրատունիներուն (Դ. 54)։

[illegible]

11 Այս առիթին թո՛ղ աշխարհաբնան բռնակեր և
այն պարտաւն, որ Ք- դարձւ էր զորոյ շահարկին
Այս պարտին էր ստանայ ի՛նչանէ՛ր, որ իր

Բազմաբնույթ տղամարդկան իւր Բաճակ աւարեալ :

Եթէ յառաջ բերուած տեղիքները դպար տուն մեկի այն թանաչից ախարները, դարձեալ ձրաբան է Խոփոն իւր կուրաքանին մէջ ի փոսա Խաճիկանեաններու, աւելի պիտի տղչեցնեն զմեկ իր կեղծիքները, որոնք նպատակը կը հետապնդեն, Խաճիկանեան աւանդին ի պարծանաւ ազգին կատարած յուշահերաներն իսկողութիւն, զէպիւր՝ որոնք Խաճիկանեան հերաներու պարծանքն են եղան, մէրապիւր ուրիշներուն, Բազմաբնույթները, որոնք առանց կտրելու յիշատակներու տեղան զաջան են, եւրկայաքանակ են մեծապարծ, աշխարհաւի, բաժարի - բայց յոստան, իսկ եւս խաղաղութեան են նպատակաւոր յարաժանութեամբ Խաճիկանեաններու գործերն, որոնք յեցուցան են Դ. Է. Դ. դաս բերու շոյոց պատմութեան պանծալի իջերը :

Ինչո՞ւ այս տեսակետութիւնը Խ. Խաճիկանեանի յով. Խ. Խ. նպատակաւ քանք աւարան է տեղապանել ազգի մը բաժարի, տիրաւոր, աշխարհաւի զէմքերը : Եթէ Խաճիկանեան պատմութիւնը մեկը ազգիւրները կը ըզխեցնել մեծերու համար իւր ի յաջորդ, ինչ պատուան աւելի տրամադրուելու եւ առ ուն կտրելու Փառաւորի Զապիւրից մարգարէն

պատմութիւն Խաճիկանեաններու — բարեխոսութեամբ Խաճիկանեան տարիներն եւ հրաժանաւ մէրապիւրն, որոնք այ իրաւոր, այ ի իսկին :

բախտից ամենապատարիս ակունքները, հոյ ժողովորդի գրասուր առանգութիւնները: Ի՞նչ չափ իրեն, եթէ եկեղ սերունդը հաստատար իր կեղծ իրենքունն է, երես գործնէր ապարտապատիւութեան տան, որուն պատճառներն են Լոյսն էին Փառաստաւն է: Ղաղար: Հակակրօնութիւնը կը խոտի հոն:

Այս անկողնուածի բաժան բանալին կ'ընձեռնէ ձեզի Ղեւոնդ: Ը- դարաւ Բաղրատաւնի է: Խաճիկոնեան նախաբարութիւններու մրցակցութիւնը առաջնաթիւով բաժանէ իր իրից ձեզի իսկ, թէ ինչո՞ւ: Խաճիկոն Պատմութեան մէջ կը պակսին Լեւոնի յոյժարդից շրջանին ղեկները, որոնց դիպակներն էին Խաճիկոնեանները, նորոգողները հայրենիքի ապարտապատիւն:

Այնուայ հակակրօնութեամբ վարակած է հանդէպ Խաճիկոնեաններու իսկ. Ղեւոնդի տիրար: Ան որովհետեւ ինչպէս Խաճիկ, նոյնպէս Ղեւոնդ բնորոշած են պատմապիտան յանձնարարութիւնը Բաղրատաւնի իշխաններէն, ոչ ոք է Երթուրէն թէ անանք ինչ կողմաւորակներն եղած են Բաղրատաւնիներն, արձակուած նեւերը Բաղրատաւնեան գինարաններու մէջ միտած պատրաստուած են: Բաղրատաւնիներն զգած առնչութեան թարգմաններն են Լոյսն Խաճիկն է: Ղեւոնդ:

Խաճիկոնեանը այժմ ի մերձուստ Լեւոն նախաբարութիւններու մրցակցութեան

Մասախաւ, երբ նաւանկէջ Հայաստանը, ՎԱՅԻԻ՛ն (պղտաթիւ իշխանութեան (պղտաքն) Հայոց յանձնեց Փրկոյտը Մամիկոնեանի, որ սուրս ՎՃԻԻ՛ն ինկաւ Քապարեհրս: պէժ մղտած պատերազմի մէջ: Իրեն յաջորդեց Այսոս Բազրասաւանի պատերիկ (ՎՃԻ—ՎՃԻ): Այսախ մանկէն յետոյ կ'երեւայ թէ իշխանութեան յանձնաւեցաւ (Վարապ-Տիրացի՝ արդւոյն) Մեյմաւ կիւրապարտութիւն: Վերջինս վարստաւեցաւ Նաւանորէն ՎՃԻ՛ն (Մարկուարտ, էջ 25): Ղեւնեց կը լու յաջորդին տեւանը: Ինչպէս բայց ՎՄՈՂԻ՛ն Մամիկոնեանն ապառքադեա Հայոց, արսն իշխանութեան տեւապաթիւնը յայտնի չէ՝: Մամենայն պէտք ՎՃԻ՛ն իշխանութեան թիկնաձուկեր կոչին

Դաւթ Դանեցոյ վերաբնութեան մէջ (Հայագրատաժ. Բ. II 116) կը կարգաւ գեւ լուանայ ի ժամանակ Մուսկոյ Հայոց Կաթարգիւտի (ՎՃԻ—ՎՃԻ) եւ Ածրասոյ Բազրասաւանոյ Հայոց իշխանի. յարսն թաւրիկը տիրեալ ունէին զաշխարհ Հայոց: Եւ տաւճարոյ Գորսն որ ի Հայո՝ Արդւոյ տեւան, Գորսն եւ յարաբարոյ. որ միշտ նկատմը արեւմտ տեւեղաց Գորսեանայր, յազգաւե՛ յարին: Արդւոյն կը կարեւանարսի Դաւթ Գանեցին եւ Նաւաստեւան ժամանակ կը կատարուի 1166, Բանուար 24, Բշ. կամ 766, Աւետար 22, Բշ. ՎՃԻպարանութիւնն ունի միայն զոր որ Գորսն եւ Կրկը էր արեւ տեւայ. յաւար կրկնարթու, ի վերջորդ ժաման: Ընկապեարիկ փաթով ի տեղին լուանէին՝ Մարգարե՛ Աճառաւանայ Եպիսկոպոսն: Եւ Մուշեղ Մամիկոնեանն ապարաւանի Հայոց. եւ Արասաւոյ Կարին կարոյր, յազաժ ապառք: Եւ ի՞նչեւոյ ի փայտե՛ն՝ արսն ի մ. Փրկոյտը ԳՂԻ՛ն Կրանեցոյն Դաւթի: Եւ պէտք Գորսնն որով խոչեցաւ. ընդ Գորսն Գանեցանի ինքն ինչեւոյ Մուշեղ ապարաւանն որով [Գրկարի՛] Մամիկոնեանի եւ Մարգարեանի, Գր Կար լուանայեալ պատաւեցի, իշխանով արդւոյ յազաժ տեւանի խոչեւ:

Մամբկյանեան և: Բաղրատունի նախարարու-
թիւններէն: Եյս թուին Հայաստանի առաւ-
ելան կը հարգուի Մուսան որդի Մանժեհտի-
ւորքեւ հասանէր Մուսան ի թողարձ "Իսին"
յանդիման ընէին նմա նախարարը Հայրոյ՝
էւ խաւի ընդ նոսա քանիւ ի սահմաններէն:
Եւ հաշի աւ ինքն զիջում որդի Վասակայ ի
սանկ Բաղրատունեայ: Եւ անոր նմա իշխա-
նութիւն պատրկութիւն ի վերայ ոչխորին
Հայրոյ Նրամանու Հեշմայ - եւ թողում պատ-
առում պատուէր գնուն (Ղեւ - 1121): Եյս ըն-
տրութիւնը տեղափոխին կը պատճառէ
Մամբկյանեանեան: Վասկ իմացեալ որդու
ւայն Սմբատայ¹² ցարաւորն իշխում, զի մե-
ծացաւ անան նորա յաշու Հեշմայ եւ ցարա-
վարին Մուսանայ [նախանձեցան] եւ յայժ
իւստութեամբ կէին ընդ նմա, ժինչեւ հասա-
նէր պատուութիւն նոցա յախանձաւ արգւնն Ման-
ժեհտի (իմա՝ ռաւիկանին Մուսանայ): Եւ
գաղփարակի Նրամայ (Մուսան) ունեւ գնա-
ւա եւ առաքել աւ իշխանն Իմայէի՝ զՊար-
պաք եւ զԴաւթի, արքէին ի տունէ Մամբ-
կյանեան: Եւ գրէր ամբաստանութիւն զնա-
ցանէն, թէ հախանձէր եւ խաղճարարք ան
իշխանութեան իշխում: Եւ Նրամայէր տանել
գնաւա յիմանն հաշեցեայ, որ է անուպատ:

¹² Հասանելին Սմբատի: արցւոյն Մուսայոյ
Մամբկյանեանի: Սուրբ Երեմիայ եւ Պարթի
կարողանա-
րաւ ժամին է. Գորք էին ի տունէ Մամբկյանեան
(1121): Սմբատ անունը Մամբկյանեան նախարարու-
թիւնն ժինչեւ այս թուականը անանութիւն է:

և, ցնեի, ցնեաա թ հաշտեա քառաի միմշիս
ցգախնան հեմադ իւրեանց: (ՎՋ 112—113):

Չի պատահաւարաներ պատմադիրք, թէ
ի նշ հիմամբ ամպոն թեադի Մամիկոնեան
եղբայրները Աշխաի ընտրաթեմէն: Անշաշտ
աւելիին անանք թիկնաւաթեան իրաւանք-
աբմէ անտարգար գրկամբ վիրաւարանք եղաւ
իրաւանքի: Մասան յան աւշաշտ անեմ
պահանդիրք Դանոյ նախարարեանց խոր-
հրդին մէջ: քաջ հգոր քաղկաթ և հասաւ
արտ յանեց ինքին վէնք, աւանդ իրաւանք
հարցնելու: Այս անդ հարեցի է մասնէի թէ
Աշխաի այ իր հարցին պարծադքեց հարաա-
րաթին՝ խնդրին ի նպատա իւր վերջաւորա-
թեան համար: Ումեմոյն գէպս Մամիկո-
նեան եղբայրներու տքոքին եմեմի անտարար
վէնին վերջնական յանմամբ չէր:

Դէմն նախեցաւ Ումայեանց և Արաա-
նեանց մէջ ներքին քաղաքային կոթիւր-
Մասան, Հայաստանի երբեմնի բաւիկեանք,
Ումայեան անէն, կ'ուզէր ամիրապետու-
թեան աթուր յինքն պրաւել: Այս շփոթի մէջ
կը յաջողի աքաղաղանեալուն քախաղ-
այայնմամբ գերնեալ որդիքն Մարաաայ ի հաա-
յանաւոր պատաւեպէն (քանդէն): անկան
ի Հայս: Էս իրքե հասին յաշխարհս Հայոց,
քաա ասկա ինչ մամանակի երթեալք ի հոդ-
մանս 'Հաւապաթեան աշխարհին՝ խաշտանա
ցանս և աապնապ մեծ յարուցանէին ի վե-
րայ երկրին: . . . Ապա իրքե գիրս մարաին

Էւ զամբարի ժամանակէն տեսին՝ սկսան լինխտիմ եսկրանակ լինել իշխանութեանն իւրացիս։ Էւ ամենայն ուրիշ բանիցին պաշտակցութիւնն ղինել ամենն նորա։ Էւ յարժուէն ի վերայ նորա ի պիշխի․․․ Կամէին պանանել զնա։ Բայց իշխոս արտօնանան եղեալ ապրիլ ի ժեռաց հոցա։ (115—116)։ Իշխան Խմբիկանեան եղբարք սկսան կրկին հետապնդել իրենց իրաւունքը։

Հայաստանի նոր ոտախիտնք՝ Խանակ որդի Խալիմի կ'երեսայ թէ Խմբիկանեան եղբարքնքոս կուզին էր․ Էւ շաղից պաշտպանել իշխար։ Կերթին էր որդւոյ ի իւր գտար տնտէր Զերկայացնել իր ժեռ պաշտպանին, որ այս միջոցին Խմբիկանի տղէն հակառակ էր իւր արջակիցնքոս ոչմ։ Խան իւր հաւատարիմ պարքը կ'սպանար զկոյի կոտի պաշտ։ Հոց քանակէն պաշտաւոր ոչմ կու տայ Խուանին Էւ էր տանի յաղթութիւնը (120)։

Իշխանի բացակայութիւնն Էւ Խիշակարքի ժողովրդին կռիւնքը շահագործեց Հայաստանի Ոտախիտնք Էւ ինչնպիսիս չկոցոյց ի վերայ պարտն Հոց իշխան զԿրիկար ի առնէն Խմբիկանեան փոխանակ իշխուայ։ (120)։ Բայց կտրնտեւ կ'ըլլայ ուրախութիւնը։

Խուան էր տեղեկանայ Իշխան Հայաստանի անցքերոս ժամին, յաւկապէս պաշտաւորութիւնն դարգացն Խմբուայ, Էւ պար ինչ արար թնգ նա (120)։ Դաւիթ եղբարք Կրիկարի, Էւ հրամայէ ունել զԴաւիթ

և տուր ի մեռա Սքրայի ուժեմն, զի դատապարտեալ զնա որպէս և հրամայեալ էր գտնն նորայ (120) :

Սրտանի հրամանն էր ընդդրեկոտոր սունել տախար մեռա և փոշտի դատապարտել ի մահն : Կ'աւելչնել պատմագիրք. զի այսպէս ողորմելի և ծանականոց մահն փնտրել ի կենաց, որպէս ասացաւ՝ բոս անհատնոյ Աստուծոյ բարաց տաւելութեան, որք տեւէին առ միմեանս. զի արդարեւ չորս սերս մտնչն չորս արդիւնաւորութիւն, բոս ասոյրն բանին (121) :

Ահա կրկին հաստատուած իւր իշխանութեան մէջ՝ յայթուկուն կը գտնուայ Հայաստան. բայց և այնպէս չեւ. յայնմէնալ ոչ դաւապելի Գրիգոր յերկնելոյ գնանքաւարիւն լաւն զնա զնախնդիւր լիմնիւ կոյտեմն եղբայրն, թէպէտ և գտնն երկիւզի բանտարացն աւելի խաղաղութիւն քնոյ Աշտոց բանիւր միայն, ոչ որտեւ. ոչ միտեցաւ զնա իշխանութեան նորա. քանչի ապաւիւր հասանել մտն, յորում հասանել կամացն խորհրդին (122) :

Սրտի թէպէտ քաղաքական պայմանները առիւղեցին, որ Գրիգոր անդի ասար Աշտոին, որուն երբեմնի պաշտպանը՝ Սրտան, այժմ իրքեւ ամիրապետ կը հրամայէր (123—124), բայց այս խնդրանքումը մէկ կողմանէ և կորսը՝ Գաւթի որտեւորտիւր մահը — անդի տեւեցած Աշտի ապրանքաւոր :

Գաղտնեցիությունը էին իբրև խորհուրդ, որ աստիճան էր
 հասնում թիվները պատասխանելուն հետո, թույլ տալով
 խորհուրդը գործի և համարացանկի :

Անդրէն պատմաագիրը անհաւոյնաց թէ Գրի-
գոր Կնարքեան կը խորհչէր հշտոր արեան
վրէժը յաճեալ :

Մատանի գտնիք հաստատու չէր. ներքին երկրորդական թվերով դրամագրան էր Դա-
մասկոտ: Հայ հախարարների արագեցին ազատ
գործել այս խոսքով թվերով է ապացուցե-
րելով Արարացիներին՝ Էնթուրպուի Մանուկ
Կաշուքի պարիսխանություն: Դարձին պարիս-
էր Դերիպուր Մամիկոնեան, որ, ինչպես պատ-
մագիրը էր նկատել, պայա խորամանկությամբ
իրիվել պատմ հանելուց պարիսխանություն ղեշ-
տու (121): Այստեղ երկրորդական մէջ ապա-
տանեցան ժամանակ մը- քայքայ հապա հաս-
նեալ տկամալույն ետեմ... առնելու միտքա-
նութուն ընդ Դրիպուրի և ընդ պայքի միտքա-
նութուն, և ղեշին ղեշինն բնութի առ մը-
մեան միջնորդութեամբ տէրանական ղեշ-
նին, տննիկ պանել ղեշ: միտքանութեան
(122): Հայիս արքի մը անգործ անցուցած
Տոշոց ղեշները՝ Այստեղ էր խորն ղեշներ ի
նոցանէ, այս ղեշն ի արքի միտքանութեան
հախարարացն. պարագայի կը հեռանայ
հեռուն ի հախարարացն ընդ նմայ և
հեռանէ միտքանի ընդ արքան ղեշանէ:
Փախուսանակներն պատմութեան պարան-
առ կը ղեշայ ղեշանէն Դերիպուր և պար-

գրեմաց խորհեալ պատահանութիւնն ի պիտի
կամեցելոյ անեալս, կը հետապնդէ ուխտա-
դրութիւն միեւեւ ի պիտին Հոգի Ռադրեանա-
դոյ, կը մեքրանկալ էւ, ւստայ ի մեռա ծո-
սայիցն Դասիքի, եւ հրամայէր թառնալ պրա-
սուսքութիւն աչաց նարաւ (711) :

Դասիքի արեան վրէժը լուծուած էր :
Քէրտ երկու աշխրհն հարստացած փոխա-
պրուեցաւ իւր ուղարտեցր. զիսկ թաթա
դրութիւն Դրիգոր պոպէս ի մեծ արխարեան
զարմեալ՝ անկանէր ի քապարն կարնայ, եւ
անաքէր ի կողմտեո սեւտիս պապիքսիման
իւրոյ, եւ յիս թաղում աւարց հասանէր ի
վերայ նորա դատաւարանն Քառանայ թա-
ւաթմիկ դորնոյ իւրոյ քանդի սուտցեալ
սրտփայն նարաւ՝ ուժղին վաւանդիս առդնապէր
պոնան նարաւ, եւ ոյնոյն սասանիւն ի կեկուզ
ամբիւստակ քարանայ ի միւրոյ, եւ փոխա-
նակ նարա կաշտցին իւրան գեղարայր նարին
պիւռչեց սակաւ ինչ ժամանակաւ (712) :
Քառաի Քէրտի իշխանութիւնը կրցաւ Դրիգոր
մեծը առնել (713) : Իրեն կայան բնութիւն
կարիւնը, Քէրտի մեծ պաշտպանը Մուսան
չկար տչէ հաւ, եւ Քարաւեանը չուղեցին
վրէժիւնդիւր ըլլալ Մուսանի պաշտպանեալին
ի թառանքներուն ի նպաստ :

Քէրտ պատրիկ ԱՅ տաթիւնը անցուց
թաւարտե աշխրհով : Նա, ինչպէս պատմա-
գիրը կը պիտի (714), կրցած էր հակառակ
ամէն դժուարութիւններու անել զգիշաւ-

Նորթթեմնի աժո սիէ 1772—1784 գիտաւարտաւարէն պատուաւով շան պամենայն աստիճին իշխանանէ - վախճանեցաւ զբարեւոր ձերբութեամբ 1784ին: Կարգաթեան այս 13 տարեկան ձերբան պարբերեալեցան աւելուչաւ սրտքնէր վրէժ խնդրութեան Խամիկանեան՝ յատկապէս բարեկցութիւն Դերկարի, աւան զէժ: Պատմապիտ, որ 1784ին կ'արտայայտուէր Դերկարի մասին այսպիսի պատկերացան խորքնով, զի կ'աւանդէր սասանց աստիճանի բարեւարտանայն պատմութեանը, յատկապէս Աշխարի արդիւններու եւ թուեցաւ չիշտութեանները, որոնց հետինքը մտերմեցան յարաբերութեան մէջ էր է, աւանց յոնեմարտութեամբ կը գրէր:

Եւսան աւելուչաւ վերքնէր հաշտութեան, Խամիկանեան ինչպէրէն: Հասանդէն այս եղանակաւ սեղի աւանցած է Խամիկանեաններու տիրոջ Խամուէրի խնամութեանը Աշխարի տուն հետ: Խմբաւ, Աշտի արդին, որ յետոյ սպարապետը եղաւ Վոյկանեան բաւակին, իրեն կին աւան Խամուէրի տղայէր: 1784ին Արծիթի տոջն: Գեւայն եւ աւելոր ի միասին կ'իշխային պատուոյ պաշտին վրայ Վեհաժուէր աւելոր Խամիկանեան, որ էր: . աւելոր Խարապետին սեժի: (151):

Բայց տարաբիւն եւ յունամէն Խամիկանեանները հանգիստ չկարգացան կեանք արարական ծանր յաճին տակ: 1784ին Արտաւայգ Խամիկանեան, Հմայկի արգին տաւելինը կ'ըլլայ որ կը բարձրացնէ տպաւոր-

բաժնեան գրուշք (1336) : Քիչ յետոյ կ'ըմբոստանայ նաեւ Մուշեղ սրբի Հրահաւանց կոմսի, նախարար ի տանել Մամիկոնեան (1338) : Իրեն հետ կը տեւանուի նաեւ Սամուէլ, ունի Մամիկոնելից (1341) : որունք իրենց կը յանկուստենեն նաեւ Հայոց ոսպարայեանը՝ Սմբատ, Մամիկոնեան տան փեսան : Աղստատմբութիւնը քննարկակ յափ կ'առնել, յայց կը յանդի աշխարհաբաժնեան : Թէ Մուշեղ եւ թէ Սամուէլ, կ'ի յետն պատերազմի գաշտին վրայ :

Սաղթաւան թշնամքն հետամուտ եղաւ նաեւ Մամիկոնեան տան մեայցորդներուն, զի Բագրեւանդ եւ ի սահմանակիցս նորա յնախինջ ընկաւ ոսպատմբութեան ապրիլները : Մինչեւ անգամ զփաթէին ուղղին հետախամբ ընդ ըստանոյս եւ ընդ մոնոպոնս եւ ընդ պաշտոնակիցս իւրին, իբրեւ տաւաճնարկս եւցին՝ որք վախճանեցան ի պատերազմին (1352) :

Մամիկոնեանց համար կենաց եւ մահու ինդիք էր պատերազմը : անոր տեսլագութիւնը եղաւ պատճառ իրենց ընտելման քաղաքական ասպարէզի վրայ : Առպարկըր մեայ Բագրատունի տան Սաղարատեան հիւսղին, շնորհիւ Աշտու Ստանկեանի արարամէտ քաղաքականութեան, որուն եւ յանձնուեցաւ հասանալն Հայաստանի իշխանութիւնը այս ետահետեւ : զիտենք որ 1353ին ոսպարայեանութիւնը Սաղարատ Բագրատունու ղեկին մեղքն էր, որ Աշտաթ եղբայրն կ'երեւայ :

ՎՄուշէկ Մամիկոնեանի երկու որդիք է, յորս Կատերք մնացին. անգրանիկին Շուրպուհ անուն. որք անկան յերկիրն Վաղարշապետն, զորս Լազան զերկուսին Մեհրաւման Աբաժրուհի, որպէս թէ յապամասիս եօր Եացա Եգեւ աղէլոսն մեծ «անշուշտ» առ Արմէշիս: Էս մի ի յերկ Եացա եւս զինքն յաւտաւնութիւն Ջանապի ամենն Բամայէլացւոյ՝ Ինկուսն առնելով զմաս (Վարդան, 76): Միւս որդիկաներու մասին խոսք չկայ պատմութեան մէջ. Աշտարակեան արժունի Էն Պատմագրին (անշուշտ ի բանից Շուրպուհ Բագրատունաց) խոսքերը՝ ճիշդութեւն առնելով պնաս: Մուշէկի գրասարք որսւն զէմ ճիշդութեւն պէտք տեսցան ի ինանց տարակուսի Աբարներու աղպաշինք շուրպապետութեան և կամ Բագրատունիներու, յաւանապէս Սմբատ սպարապետի որդիներուն՝ Աշտի և Շուրպուհի զէմ, որոնք ի մօրէ նոյնպէս Մամիկոնեան ըլլալով, ոգնութեամբ Բագրատունաց ջանք տալով եւ իրեն ժառանգութիւն մեծ տնայեալս Մամիկոնեանց և Կամաքապետաց կալաւանները: Եւսց Ջանապ երկար ժամանակ ընդդիմացաւ բռնադատել իւր կնա՞ իրաւունքները. Կոնիները Ջանապի տան և Բագրատունիներու մէջ շարունակուեցան մինչեւ Թ. Կարու արագին բռնորդը:

Անոս այս միջոցին կը ժառանգորդէին Ղեւոնդ և Մովսէս: Բարձ կը պեռ յիշդաւթիւնը Աշտ Պատրիկի և Գրիգոր Մամիկո-

նիմեքու: Նեա, ասեմքում իրեն կին լինում Խա-
նակեանի գուսարը Հոփոփմէն, այս ինքն
բայրը Խանակ բաղբառուեալուց՝ Խոփախի Խե-
նեանսին (ան'ո փորը):

Հետաքրքրական է այս անասեղանի նաեւ
հակակրուիթեան, զոր երեսն կը թերէ Խոփ-
ախ Խորեմացի հանդէպ Խեհրուսթան Խը-
նրանուց, որ արացած ըրիտօնէութիւնը,
չըման Հայոց տըքային, անցան էր Պարսից
կողմը (Գ. 25): «Խեա ժաշուսանն Խըշանայ
դաւաթեանց հապուհ քոր ըստու ի մեան
Խեհրուսթանայ, եւ արմանեան ի Հայս, ի հա-
նասանասարի գաշխարհս: Եւ ասեալ նմա կին
զքոյր իւր զկրմիկդուխտ, եւ չբախտանա
բայու չինից եւ դաւաթանեանայ ի Պարսից
աշխարհին: Եւ խոստացուեալ նմա զՀայոց
խաղաւորութիւն, միայն թէ գնախաբարեւ
նուսնէլայ՝ ի զին ժաղկեղանց գաշխարհո
դարձուեցէ: Երոյ յանձն առեալ եւ եկեալ...
դամեանցին կարդ ըրիտօնէութեան ջանոցը
խաղաւոր...» (Գ. 25): Պէրսա գաշխի Հա-
կաւաթաւորուն հոքը, որը պարսկական ոյժը
պարտութիւն կրեց, Խեհրուսթան կ'արմանա-
նայ ոչնչութիւն բախախ. «Բայց ամբարշտին
Խեհրուսթանայ զիրաւորեալ թին՝ ոչ կարաց
երազել ընդ փախաւանցան. որում անասա-
րեալ հասանէ արարաւորեան Հայոց Խմբաւ,
եւ զորս ընդ նմայն էին հասարեալ՝ ձերբա-
կալ ասնէ զփաւշուէրն ընդիւր համբին հա-
ղայովայ: Եւ գնաւաւ տեկալ, թէ գուցէ

թափփցել զնա մեծն Ներսէս, այնորիկ աղա-
ղառ ոչ ունէ ի բանակն. այլ զանչեւրն
զատանէ պատրաստանելուն առ ի կորուստ ամ-
բարչափն պոմանա խորանաւորս Նոր յաւ-
ցեալ: Եւ շամփուր երկաթի՝ միտ խորովե-
լոյ. զոր քնուռցեալ, կրկնեաց ժաշարեալ որ-
պէս պատկ: Եւ յոյժ առաւելի տրտրեալ,
առէ. «Պատկեմ գրեպ, Մեհրուման, քոնդի
ի խնդիք ի՞ր թաղաւորի Հայոց. Եւ ինձ
առաջնորս պարս ի գրեպ պատկի բառ առ-
ժուրտեան իշխանութեան իմոյ հայրենեաց»:
Եւ մինչդեռ տաքն էր իջրեւ գնուր՝ Էպ ի
զյուրին Մեհրումանայ, եւ այնպէս սաստա-
կեցաւ շարն: Եւ յայնմհետէ խաղաղեցաւ եր-
կիրն: Ընդ մեռամբ Պապայ Նուանեալ՝
(Գ. 37):

Ի պէմա Արծրունեայս սարսաղծուած է
Համազասպ Եւ Մանակ արծրաւիճերու կրքա-
սեւր եզրոյ՝ Մեհրումանի պատկեր, որ
Մնին աւրացած էր քրիստոնէութիւնն Եւ
բիշ յետոյ ապանուած: Կր պատմէ Ղևուդ
(1861), թէ Մեհրուման սնորեկած մահուան
երկիւղէն Եւ չլացած ոստիկանին խոստում-
նէրէն մոռտաւիկէր գրապցր լուծ հաստաւոյն
որ ի Քրիստոս. Եւ որովէր ի հաւն տեսու
Եւ Վղենդլի վիկարարան զալլլլլ: Կ'ուելցնէ
այն խոսքերու միտոյ մկտապիւր. «յոնձն
առնոյր... զորէնպարսութիւն Նոցա տրտա-
պէս թշուառի... Եւ Էրեալ իշխանեակն Էւ-
թութեամբ (կամէր) զալ մտանէ յաշխարհն

Վասպուրական, արեւելք փոխանակեց Եղբարց խորոց: Չայս լուեալ Գաւիթ Մամիկոնեան փութացաւ փաշայապետի ընդ անող Ողբապատանեաց Ամա եւ Ենուտ զգլխիս Անրաւ Է. Երարձ ցնախաւովնս նորա ի տոնէն Արծրու նեալցաւ: Վէպայարանութիւն. Սոփերք շայկաներ. մ. Բ. Են—մ. Ե. Ե. Այս անգլոյն մենք յետոյ նարէն պիտի անգրապատնաւք. Է պիտի սեւեռենք, ուր Մամիկոնեանք Բազրաւա տունի մըն է. Մանակ Բազրաւաւանայն Եղբարցը, որուն յանձնուած էր ի թաղանայութեան Արծրուան Եղբարցնեաւ: Վասպուրականի իշխանութիւնք, խնամակարչի տխուրստով, որովհետեւ Գաւիթ Եղբարցն էր Վասպուրականի տիրուհոյն: Բազրաւաւանի մը ստարաւել շամփուրք թորթած կը պսակէ տրտցեալ Մեհրուստանի գլխիս՝ թագապիւր ասպետութեան տխուրստով, Բազրաւաւանի մը դարձեալ սուր շոգացուցած կը կարէ ուրտցեալ Մեհրուստանի մը գլխիս, խնամակարչի տխուրստով: Վկայաւորի համաձայն զէղքը պատահած է Վասպուրականի ստամոնեքէն դուրս: Սոփերքին կ'երեւայ թէ արդաւ անգն կ'ոնեարկէ Երր կը գրէ. Երեք շամբին Կոդոյոյովն: Կոդոյոյովն Բազրաւաւանեաց հասարակութեան էր Է անկէ կ'անցնէր նախապարհ: Գուրէն գլխի Վասպուրական:

Մեհրուստանի տղանութեամբ Վասպուրականը կ'ենթադրուէր Բազրաւաւանի ներքեւ, թէ Է խնամակարչութեան տխուրստով: Արիւ—

նոստ մեռնէր կը շուտացուի մեկնութեամբ թէ
 տեղաբնակ վնասաւանդեալ տանէն իւր ընտանեացս :
 Ղեւոնդ տեղէր յայտ , թէ Մեհրուբան կը փոխէ
 գոյշի կերպարանքը . նաեւ Մովսէլս գոտուն
 էր թէ ներսէն մը կարող էր մտքի փոփո-
 փութիւն յատա՞ր թերեւ ներառեալ թէ՛ .
 յայտ Մարգարտաւանի իշխանները սիրած են
 դարձել տրայ Էս . ներկայացնել իրողութիւնը
 fait accompli :

Չեմ կուտար թէ Մովսէլս ծանօթ էր
 Մեհրուբանի պէտքերուն . եւ Մեհրուբանի սրտա-
 ցութիւնն եւ ուղտնութիւնը ազատ է նա
 խորհրդուսը կերպով նշել իւր Պատմութեան
 մէջ յանձին նոյնանուն իւր ընտանեաց : Փառ-
 ատա , որ հոս գլխաւոր առաջնորդն եղած է
 իւրենացոյ , չի գիտեր Մեհրուբանի ապրե-
 ժան այս մանրամասնութիւնները . անանք
 Մովսէլս իւրենացոյ հարազատ ստեղծողը-
 ծախքիւնէրն են :

ՈՒՆ Է՝ ՈՒՆԷՆԻ ԲԱՔԻՐԱՏՈՒՆԻ . ԽԵԿԵՆԱՐԻՆ
 ԽՈՒՂԱՆԻՆ — ԽՈՒՂԱՆԻ ԷՍ՝ ՂԱԿԱՆԻ
 ԲԱՆԱՆԱԲԱՆԻ ՇԱԽԱՐԱՅՈՒՆ :

Գ. Աստուծոյ Բազմապատկար , Մեհիկեմազ Մ .
 Կարիկապալ : — Ղեւոնդ էր էլ իւր Պատմութեան
 թիւեր կը գրէր Մեհրուբանի հրամանէ տեղան
 ճապարակներու : Ասիկա ունեցածը
 աւելի տեղ ²⁰ ծանոթեցնելու ճապարակն անձ-

²⁰ Տե՛ս գլխ. 49 15—16 :

Նաւարդաթեան, որ Սմբատ սպարապետի
[Գ 145] արդին էր, և արարքն Աշուտ իշխանի
[Գ 826] և ինկան էր Սեւակայի գէտ մարտն
կարսին մէջ [823 24] :

Այս Նաւա Սոփակ Խորենացի իւր շնորհ
պատմութիւնն յերիս հաստատածն պարտ է
էր խնդրոյ Սահակայ Բագրատունւոյն, ինչ-
պէս դրոշմուած է իւր հրկանքաւթեան նա-
կաւոր- և կր կրկնուի Ա. Կրոյ ընծայակա-
նին սկիզբը. «Սոփակ Խորենացի յարապ
մերոյ ի սկզբան արար [արդ - չորսմ] բանիցս՝
Սահակայ Բագրատունւոյ խնդարն, արարկս
նաւաւ անազնին պշտուն խոտարանութեան
մէջ. «Պատասխանի թղթայն Սահակայ և
խոտարանն կատարել զհայրուստն նորսն :
Այս անգիւրջն կ'իմանանք միանգամայն, թէ
Սոփակ դրաւոր գիտում մընդունած է Սա-
հակ Բագրատունիէն, որուն և պատասխա-
նած է : Սահակ և Սոփակ մինչև այն մա-
մանակ զեւ տարի շէին ունեցած անմեղան
նաւաթաւթեան : գերէինն բացայայտ էր խո-
տարանի իրողութիւնն, երբ կը դրէ. «Ճա-
նակ ի մեզն զեղեցիկ խնդրոյս՝ յատու ըսն
գժարեաց զհայսս՝ զը ընկողիտ զմանաթու-
րիւնս [Ա. 1] :

Սահակ ծագումով էր պատկանի Վարդի
Նախնականի, որ է «էն ըսէ էն արդարա-
ւոր ոչ միայն ի բանն և ի պիտանստք խո-
հանանութիւնս, այլ և ի մեծամեծն և ի
յարդում պարիս արմանափաստ» [Ա. 1] :

Անանք Բաղրատունիներն են: Ինօքոն Զան: Բաճանկի հասցիին հր շուրջի դրուստութիւնը: Լամենկոյուն քան դրեզ Կախապուհիցն Կանտա շիւ փենպոյն, և քարաքաղաւթից արժանաւոր գոգութեանցն (Ա. 11. Զա Կուշիմ բեթերցաւորն է (Ա. 15), Կուսուճեաւորն (Ա. 16), Երեթերցոյն (Ա. 17) եւայլն:

Ի փ է այդ Կուսուճեաւորն և քարաքաղաւթից արժանաւոր գոգութեանց: Բաճանկ Բաղրատունին: Շաաւերը, Կոտեա, Թոգժաւ Թրծրունիին (էջ 10), Կոպիցին անոր մէջ Կաւ հակա ապիւտ Բաղրատունին հանչեալ, որ ԷՆԻԻ Պարսիկներու գլխ ապրտաւորան հայ Կախաքաղաւթու: Կոգմէն Կարպուան էր Էմարգարան Հայացն, Կահան Իամիկոնեանի տանաւորութեան որով և դրուստութեան է Կարպու Փարպիցիին (էջ 12) իրեն: Կուսայր և Կարանշիկի ապիւտ: Եւ ինչ յետոյ ինքան Կահաապիկան մահուամբ Էմարժանայանու Կուսին մէջ: Բայց, ինչպէս փերապոյն քաղաւթիցին, Ինօքոն շէր Կարպ այս Էմարպուան աշրթ աւալ Կոնկոմն քչաւ, քանի որ առէն Կասկանէ փեր է, որ Հայան արամաւթեանն Կոպիտիք մամանկոյն շաւ Կուս է Է. Կարէն²¹, Ինչպէս իր անոր, Կոնկոն իր Ինկիկոնար պիւտ է փերաւոր Է. Կարու փերա քերն և Կամ ի Կիկիքն ինկերոպոյն: Ինք

²¹ Հմմտ. Անուիթա, 1822, Թ. 1, էջ 67 և շար.

ընկերությունները հասուցում էին զմեզ 1980-
81 թ. շրջանին:

Միանենք այժմ այս տարիներուն համա-
նուն թաղարտուների մը:

Բ. Պատանի Թաղարտուների տնտեսաբա-
նական վերահսկման համար հարկ է նախ
նշել Թաղարտուների տան ներդրումները
և՛ գարուն վերջին քառորդին մէջ:

1980-ի ապրտամբուն թիւնն պայտեղէն հարը
Հայաստանի վարչական կողմը կրեց պայտի
փախուստներն. նախարարական կայանա-
ները նախ քանակական ներթափանցան. նախ
աւելի իշխանցին տնտեսգիւղ: Մամիկոնեան
ները արտադրանք Հայաստանի մէջ բնագործ
էին նշան. ուղարկած էր համաարականներու
շաղկապները: Արժութիւններու տանք աւա-
ցուցած էր մեծ գումար: Նոյն Թաղարտու-
նիւնները կը պահուէին յուրի գումարներն
ներս աւելի:

Ահա ապարտիւնի սրգիք Մարտի ապարա-
պետ է: Վասնի ժողովուրդն էին նոյն
ապարտաւրներն: Արժեքի կուսին մէջ
գլխաւոր հրամանատարներէն մին էր Վա-
սակ. որ հայկական ոյժի խորտակումէն յի-
տայ փախաւ: Պարտէս է հիմնեց Արդանուրի
իշխանութիւնը: Բիւզանդական հովանաւո-
րութեան տակ:

Մարտի ապարտապետ ինկան էր 1981.
Ապր. 27-ին Թաղարտուի կուսին մէջ Արմին
աւելի: Իր սրգիք Ահա է: Եւրոպայի աւելա-

գիւնաս ինն տախտիկն, չտեսնորէն վրէժա
իննգիր թշնամույն տոթիւ պատապարտած
մեռացին Սպեքի մէջ:

Կար չբապարտեցի վրայ ԱճԻՏ Բապրա-
տունի, որդի Սահակայ, որդւոյ Բապարա-
տայ, որ չէր մտնեալեցած տպասամբոթեան,
տաաի եւ մեռացած էր Արարացիներուն չառ-
ւտաւարիմ եւ տրմանացած անունը շաքինի եւ
գոտունութեան: Եւսկ Աշոտ ի տանէ Բապրա-
տանեայ, որդի իշխանին Սահակայ, զի էր
այր խնայեալն չանճարով՝ ոչ միարանեայ
ի դարն փնտաւոր տղւոյն. այլ եւ զնոտ
Կապարտմբ նախարարաւ եւս խառնէր, ի
քոյ թուոյ զփնտաւոր կարմիրեւ Աւետիկ,
1421: Բայց անունը պրանա խառաւս սղաւտ-
թեանն չքնայ թերէին, իբրեւ գիտաւ նկո-
ղութեանն (144): Աշոտ, ինչպէս Աւետիկ
տոգեւրէն կ'երեւայ, իւր բնակութեանն սանէր
Աշոթի մէջ: Երբ ամերտպետին ուղարկած
գորարանակը Ամբ չբամանաւարի տաալ-
նորդութեան տակ նոտա քաղաք, Վաշոտ
որդի Սահակայ, զի էր ի քաղաքին յայնմիկ՝
զեկուցանէր պատուաւ թշնամեացն նախա-
բարտցն շոյոց, զի ուր սրեւր եւ իցեն, ի մի
մայր գոմարեացիէ կեալ եւ մեռանելի ի գի-
ւոյ միմեանն: Բայց դարեւոր չանհաւա-
տարի թուեալ իրը չբոգարաւակին՝ համա-
քէին, թէ պատա խորամանկութեամբ կամի
գիւկել, գրապարն (Արմէշ) ի պաշարմանէ
տեաի, իբր մտեքիմ գինքն պաշանել, Բո-

մայրեկացուցնէ (ՂԵ. 146)։ Եւ Սեդրիկ Յօնն
նուաճուեցաւ Վասպուրականի տաղաւամբս։
Թիւնք Ռեւիւշի տաղնէ ժողոված տըրեանսնդ
նաեկուամարտին մէջ։

Դժբախտաբար չի պատմեր Ղեւոնդ
տեղի ժողովրդամասնութիւններ Էջուսի մասին
այս թուականէն ետքը։ Բայց ոչ ոք է ինքա-
պրէ թէ անոր հաստատարման թիւնք Ռեւիւշ
պիտէն վարձատրուեցաւ տաւաւստեանքէն։
Վաստեկան տունը յանձին Դժբախտ տաւա-
պիտի եւ Վասակի շնորհագուրդ եղած էր
յայտ Էմիրապետին։

Թէպէտ Ղեւոնդ կը բռն պատմէ իշխա-
նութեան յաջորդութեան մասին, բայց պատ-
մաս կայ մասնակից թէ իշխանութեան ան-
ցոյց Էջուս Խաչակեանին եւ մարտապետա-
թիւնը անոր եղբոր՝ Բագարատին։ Ղեւոնդ
տաւաւստեան տիրոջ ուղի կը եկրկնայայտի
Ղեւոնդին Յօննին, երբ Յիսակեանին
նկատ կը մասնակցի Հոնայ եւ Թաղարաց
դէմ ժողոված տըրեանքին եւ կը մտնեն Դե-
րեկի տաղնէ (ՂԵ. 146—147)։ Ղեւոնդ կը
չի՛լ զինքը պարզապէս մարտապետին Բա-
ղարատէ յարկաբեմար, տունց հայրանանի
Բայց Բագարատէ անունը պաշտօնի կու-
սայ, ու ես կամ պիտի բլբլայ Էդրոյն
Էջուսի, որդին Մանակայ իշխանին, որդւոյն
Բագարատի, կայտնի պատգնականն տա-
ւաւստի։ Մանակ չէ մեզ նստի թէ Բագարատ
թողա՞ւց մասնակցներ, եւ թէ որո՞նք պիտե-

ցուեցաւ ապարապետութիւնը իր մահու քննելու հարց։

Ահա Բաշակեան ի կեանս էր հասանարէն ետեւ ՎՏՃԵ հարց։ Այս իւր իշխանութիւնը էր վարէր բաւ ամենայն հասանակաւ հասկնալ իրաւաւորութեան զօրէ վրայ, եւ մամանակ ժը թերեւս ետեւ քաղաքակէ հայաստանի վրայ, իրրեւ սիւսան։ Այլ ուղիք է մեր հեթազրայութիւնը, պիտի բողոսիինք թէ ինքն էր, որ ունեցաւ մրցակից իշխանութեան յանձին Տունաւ Անձեւացիայ ՎՏՄՎՏՆ տարբերութիւն։

Տունաւ անքն Անձեւացիայ՝ մամանակ յաւաք քննողութիւն էր աքարական յանձին ողմ եւ անցած ՎՏՄՎՏՆ իրաւանդանեան հոգ եւ անանկեան ծառայութիւն իրաւանդանեան բաւ հանգին մէջ։ Ահա։ ԱՅՆ, ԱՅՆ—ԱՅՆ, Թէպի.։ Մայց տղոս ցտգուն՝ անցած էր կրկին Աքարացիներու կողմը ՎՏՃԵ։ եւ աքմանացած Մանմէղ Այ Մանաւորի որդւոյն Ահարանի շնորհին։ եւ Մանմէղ ՎՏՄՎՏՆՆ չտայր ետեւ պատիւ իշխանութեան ի վերայ երկրիւ հայոց, եւ անտրէ ցնա յաշխարհ իւր մեծաւ յրկտութեամբ։ Հասանարէն ետեւ յերկրին Անձեւացիայ։ Մայց հոյ ետեւաքարներու հասանութիւնն եւ կամքը չգտաւ հոն Տունաւ ետեւ Աքարացի անտիկանն Աթման չցուցաւ իրեն սիրայիր տալիսկանութիւն եւ շնանմանք երկրին իշխանութիւնը անտր մեղք։ Վրակ իրրեւ հասանէր իշխանն Տունաւ յաշ-

խառնա Հայոց նրամանա իշխանին Բամպէջի տա Թիմանն, որ էր նրամանաւորաւ էւ ազգապետ ի վերայ Էրզրո, անքնկայ եղեալ ոչ կտաւարէր պնդաման իշխանին իւրոյ, այլ յապաղէր եւ յղէր զհազտնա առ իշխանն լամիւրսպետն իւրեանց, երբ ոչ է կամէ միտքանաւր իմի Խառնաւորաց Հայոց²², եթէ պոյր թիւ արտաւարեալ իշխանութենէզ քունմէ էւ մեռն առեալ առ արքայն Բուհայ՝ կապուցանէ իշխան ի վերայ այնոցիկ, որ նաւառեալ են ընդ իշխանութեամբ քով-պուշէ Էրզրուանն պարտք թերոյ չենիցիւ՝ Երբ ուսկայն կը պնդէ Թիմապետն իւր կարգադրութեան վրայ, կը ստիպուի ռաւիկանը շրջել յապաւորց կամաց առ զիշխանութիւնն Տաւադոյ նրամանա իշխանին Բամպէջի ՎԵՐԷ, ուստի իւր ԴՅԻՆ, Նաեւ աշտոնց կը յուր Պտտիշը յիշատակէ, թէ ա՛ր Նախարարնէրն յառկապէս նախապէսյան Տաւադի իշխանութեան, Կրնայ պաշտօնի թէ տնէնէն յաւաք Մադրատունին էր պաշտէր էւ իրնն նաւ Երմաւնիներ, որունը Տաւադի Ընտանայ քաղաքացութեան թիւոցին տիրացած էին տնայ կոյտաններուն:

Տաւադ նախարարից սակոյն իւր իշխանութեան որնքուն Բաղարաւաթ արքայապետ

²² Երբեք են այդ Նախարարները, անշուշտ տալին ներքին Քաղաքացիի առն Քաղաքացիան իւրի Նախարարը, որունը ԴԵՆԴԵՆ արքայապետութենէն ետքը մնացած էին նախարարի զբաղման իշխանութեան:

առաջինը : Ըր իշխանութեան արերն տը չառ
կարճատեւ եղան : ԴՏնին ինքն ալ՝ Վիշխանն
Տաճարս : ժամանակեցաւ : Նիսիսային Կոմ-
կոսի աղջկոտն զէմ մեծնարկստն արշա-
ւանքին եւ մեծաւ Գարբանդի տաճիւ , ի մեծ
տաղ Կիւրապետին , որ Վրոյժ ցառաւցեալ
քնոյ տապալակսն ժառ իշխանին Տաճարայն եւ
Նախարարացն որ քնոյ նմա՝ խոստով
զիշխանս թիւն : Աթմանայ տառիկանին
(Ղեւնոյ , 154) :

Ասկորդ ժամանակի անցքերու պատմութեան
միւնք միւնքն : ՏՈՒն կը պատկեր մեկին : Ղեւնոյ
ճառանկեր , թէ ո՛ր յաջորդեց իշխանութեան
եւ սպարապետութեան գառաքն մեծա-
ցած աթուռներու վրոյ : Բայց կարգադրու-
թիւն մեղաւ անշուշտ այս ժառին Բաղդաստի
Կառապետութեան , եւ ինչպէս յուսայի է՝
ի նպատակ Բաղրաստանիներուն , յատկապէս
Աշտուր տան , որ շարունակած էր մեռն հո-
ւատարիմ աշտուրական իշխանութեան :

Հարկ է վերացրել Աշտու Թանակեանի
քաղաքական գիր , յունեցու համար այն
կարգ մը կենսականք , որանք կը յտնեն
Թ . պարս , սկիզբը :

Վ - Անէլին անշուշտ կարգակցութիւն այս
խնդիրներուն հետ Տաճար իշխանի եւ Բաղրա-
ստան սպարապետի մահէն յետոյ ԴՏնին Եղեմ-
րեր—ԴՏն Թանուար ի Գաին տեղի ունեցած
տնցքերը : Այս միջոցին , Հայտնական աստի-
կան կ'ուզաքկուի Կաղմ ի Կաղմիւ . առ

գիրքէն հետո ի ընդարձակ 'Իսահ' ընդ առաջ
 հղէն նմա արմենայն Ռախալար՝ Հայոց: ընդ
 առաջ յիմէին նմա եւ իշխոմէր տանն Արծրու-
 նեայց Համազասպ¹³ Էւ Ստանի Էւ Մենքու-
 ժանն: Վերջիններս Նրամանաւ Ռախալարին
 շփոփոփոցեցին կը կայանաւորութիւն Էւ կը
 գրութիւն զի պահեաւ քանոթի: ուր կը մնան
 երեքամիս, Էւ ապա՝ ԴՅԵՄԵԼԵԱՆԱՐ Երեւն
 եղբարք՝ Համազասպ Էւ Սանակ կը նորո-
 ւանեցին. իսկ Մենքուժան արաքոսթեմք
 կ'ապրէ մանուկն ՝ ՂԷ՝ 1812-1813: Պատ-
 ժապիւր կայանաւորութեան պատճառը թէն
 ստոխեանին շարամտութեան կը վերադրէ,
 քայց ճենք ունեցէր իրաւունք նկատելու ինն
 քաղաքական վրէժներդրութեան պարծ մը.
 այս ինքն ԴՅԵԻ ապառաժքութեան մասնա-
 կից իշխաններու պատուհասածք¹⁴: Արանց

¹³ Վկայագրքն կը գրէ. զի ժամանակին յայն-
 ժին էր նաւաստանայ մարդստութիւնն Համազաս-
 պայ ի սանկն Արծրունեայ. առ տիրէր սեպուհիւն
 տէրութեան Վաղարշապատի Կոչնդայ իշխանութեանն:
 Մարիւր լայկախան, ԺԵ, էջ 45:

¹⁴ Վկայագրքն կը վերադրէ քաղաքական կառ-
 կածն շեքիւր ժամեր էին ի ժամանակին յայնժեղ
 պիտուորք Խանկայ, Մուսի Էւ Մնայրն տնտանք
 եղան՝ որչէր Մարմեղեայ. չեղան քանակայ էին
 պաշտարն զոր էրն նուանեալ ընդ աշխարհաւոր
 իւրեանց. Էւ էր վրէժեկայ աշխարհն Հայոց Անա-
 քաֆի: Էւ Ռախի Էւ իսկ փութապալն յգնաց առ նա-
 զարապեան Հայոց զամեն, որոյ տնոն Եմեղիւր նա-
 զմայ, ի կառկածի Էգնայ մի պալլ տմբատանու-
 ը: Իսկ վնայմէն ար վնամ քաղաքայիմ Ռախալ էրն,
 ի պիտի ի նմիքնն շմմա. Էւ էջ 46: Անորան զրդը
 պատգամս առ նաւա ինքնութիւն ի քանակն զկար-
 նեցեայ իոյնեայցնն ապառաժքութեան ի մեան այնք

տանկաց նմա եւ հնար պղջութեանս եւ
հրաքմ պնաստութիւնս նորա ի տանէն Արծրու-
նեացս։ Սոքիւրք հոյկականք, ժի՛ն՝ ճի՛ն։

Այս Գաւթի Մամիկանեան նայի վկայա-
պի չամաւայն Արծրունի Կորայրեւելն Կարա-
պուսն էր աւղարարո՛ւ իշխանութեան կամ
խնամակոր, որովհետեւ զի Կասկան ինկին
ի նոցա։ չԱրարացաց։ Եւարդարտութիւնն եւ
պղջութեանս ինն աշխարհին եւ պարսնս
իւրեանց տային ի մեան Գաւթի Մամիկանիք-
ն է՛ն՝ ճի՛ն։

Բոցց պատարին է մտանէր թէ Արծրունի
Կարաք իրենց իշխանութիւնք հաւատացան
բայտն Մամիկանեանի մք. քանի որ իրենցմէ
մին՝ Մեհրուստան ինքին ազաննան էր Մու-
շեղ Մամիկանեանի երկու որդիներք՝ Բնուզե-
կք պատմէ Վարդան. Վեպ Մուշեղայ՝ Կա-
կու որդիք եւ յորս պատերք (մտացին), ան-
գրանկին ճապուհ մեան, որք անկտն չեք-
կին Վասպուրական. պարս Եւպան վերկտսին
Մեհրուստան Արծրունի, որովհետ թէ ի պատա-
նաւս հարն նոցա եպեւ աղէտն մեծն, աշխինքն
Միշի ապստամբութիւնք եւ պարտութիւնն
Արշէլի յոյ։ Այս պատանան բայտն է ան-
մի՛նայէն Մեհրուստանի։ Միւս կողմանէ չի
կրնար նաեւ ժառանգի թէ Արծրունի Կարաք
չենտին Մամիկանեանց վրոյ աշխարսի մա-
մանակ մք, եւր Մամիկանեանք նկատուան
էին պատանին թշնամի եւ արարական հոյք
վրոյ պատանարտուան յնալնման։

Այս պատճառաւ այ կը թուի ինձ, թէ այս Գուրիթ անշն է Աշոտ Բագրատունւոյ համանուն որդւոյն հետ, որը կը յիշէ Վարդան, իրեն, կըրայր Բագրատունոյ ճարտի իշխանաց իշխանին։ Ենթադրութիւնը կը դանձ ստուգութիւն, եթէ նկատի տանենք ինքնակաւ կապակցութիւնը, որ կը աւանդուի Աշոտի և Համարգատի միջեւ, այսինքն Արծրունի առն ինքնութիւնը Բագրատունի առն հետ։

Թո՛ղմա Արծրունի խաւիչով Վասպուրականի Աշոտ իշխանի մասին, կը յիշէ որ առ նոր ժայրն Հոփոսիմէ քոյրն է ճարտի Բագրատ իշխանին, Աշոտի որդւոյն։ Թո՛ղմա թէպէտ չի տար Վասպուրականի ախրո՞ Աշոտի հոյրանուներ, բայց արար մատենագիրն Բեյազարի պահպանած է գայն, որ խաւիչով Բագրայի արշաւանքի մասին կը գրէ։ Վեպոս պահարեց Աշոտ ի. Համար ի. Գագիկ Վասպուրականի իշխանին Արտակունժ, ստիպեց նրան փոյր ինքնէ իւր ամբողջ և ամբողջ նրան Սամաուայ (Բ. Սոյոսթեանց, Արարայի մասնեայրեր Հայաստանի մասին, Վիեննա, 1911), էջ 65)։ Գագիկի որդի Համարան անշն է հաւանորէն նահապահ Համարայի, Արծրունեանց ախրո՞ հետ, որ որդին էր Գագիկ Արծրունւոյ (Ղեւոնդ, 135—136)։ Այս պնդման հարկ է ենթադրել թէ Համարայ ամասնեացան էր Աշոտի դասեր Հոփոսիմէի հետ 786-ն յաւալ, և Հոփոսիմէ անան

է իբր Շնիրն - եւ արագհասեալ վարժանեալսն է իբր Տնիրն Սամարա (Քոթմ. Արմր. 208), պէտք է տարած ըլլալ իբր Տնիրն ասորիկան, եւ իբր արգիք Աշուս, Գարգէն եւ Գրիգոր ծնած պիտի ըլլան Շնիրն շառաւիղ, եւ արագհասեալ Աշուս վարժանեցաւ Տնիրն, հարկ է ընդունել թէ իբր Սննամեայ կեանք մասնաշառաւիղէն ալ կապակցութիւնը համարուի անհնարին, կը մնայ ընդունել թէ Շնիրն—Տնիրն ըրեման զոյտութիւն ունեցած են Կաշուսայի Համադասապի որդի՝ Գարգէն եւ թոռնիկ՝ Հաւադասապ - եւ այս գերջինն է Աշուս իշխանի հայրը Համգա, Հաթիսիմիկի աժուսինը, Համգա վարժանեալսն ըլլալու է Տնիրն, Այս գիտքին ո՛չ Գարգէնի եւ ո՛չ Համգայի անունները պահուած են հայ մատենադարաններու մէջ:

Նոեալ այս երկրորդ կապակցութիւնը չ'արդիւիք պէնջ ենթադրելու թէ Գարգէն Բաղրատունի, Աշուսի որդին եւ Կարայրն Բաղրատունի ճարտի իշխանին, Համադասի վկայաւորին՝ կարգուած է խնամակալութեամբ տալ Կաշուսայի Համադասապի եւ իւր Կարայրներու կողմանէ Արծրունեայ տան, Ենթադրեալ այս գերակայութեան ապա անցի ունեցած է Բաղրատունեայ եւ Արծրունեայ տաներու միջեւ խնամութիւն, Գարգէնի մէկ որդի՝ Հաթիսիմիկ Եղած է հարս Արծրունիներուն, իբրեւ աժուսին Համադասապի, աւաթ Ժառանգարաւիկա Տնիրն, Քոթմա Արծրունի գիտէ որ Բաղլէշի սփիւնը, հաւանա-

ընէ Սեդեքի տիրոջ՝ Մուսայի հիմեր, թոյրն է Բաղարատայ (Թոմմ. 110)։ Երբ հոյ գինուորները կը հետապնդէին Մուշի առջիւ խորտակուած թշնամույն դոքսը եւ կը պաշտօնէին Բաղէշը՝ սեղեալ տրտաքս տիկէլին ի հետփուսա խնդրէր։ ի հասալտեօք՝ քաւաճան համարէր պղտը հաւատարմութեան, դոքսն Սառուան ի մետ Սչաւոյ։ Եւ համարեայ ի միջի նոցա յագարկէր զնաւա, զի էլ Տղլի Բաղարատայ։ Արտաւոյի Մատենագիթներու համաձայն Մուշ ողջի Ձաշտրի, Արզնի տէրը առան էր Բաղարատի գուստրը (Տարաթի, անդ, էջ 96)։ Մուսա ի Ձաշտր, որ տմանտաւն էր Բաղարատի գուստր հետը։ Եւ է՝ ի խէր Սեդեքի եւ ներքոյ կողմանն Սչաւոյ մերմ ի աւհման Տարտենոյն (Թոմմ. 110)։

Հրիփոխմէի անձր կը հետաքրքրէ զմեզ միայն տնոր համար որ հա կը ներկայանայ թոյր Բաղարատայ։ Եւ հարեւոր է մեզ որոշէր Բաղարատի եւ անոր Էգրոյթներու յաւաճողայութիւնը Սչաւի տիրոջ Աչու Բաղարատանույ, Մուշիկի որդւոյն գնէն, եւ ոչ Աչա Մապիւթի՝ Մմբաւ Բաղարատանոյ որդւոյն գնէն, ինչպէս Մարկուտրա եւ ոչիք է՝ ինքուինին, որանց հոյ ընկաւ որ է՝ ի յեան աշուտ հախաւաթեան մէջ՝ մտմանտեպակէր պատմութիւններն հետ։ այնպէս որ ինքեկի համար երբ Վարդան, էջ 99, կը գրէ թէ Մմբաւ աղարատաւն, որդին Աչու Մապիւթի համաւանտայեայ ընդ ընտն 'Կուլի' ճեանի երկուս որդիու։

Եթէ չանձին 'Գաւթի իմանաւոր զիչ գիւրջ (էջ 73) յիշուած 'Իննիլլի' Սմբատի և Բագարատի եղբայրն, և Նամարինք գանձներ սրպիք Աշոտ Մասեկըն, Նարկայրուած պիտի բլլանք Նոտուստի ինչ Սմբատ ազարապետ ամառանցաւ իւր քրոջ հետ, որ ահաւոր պիտի հնչէ:

Պ. Կը Նամարիմ ևս ինչ Վարդանի խոսքերն (էջ 78) շեւս պատարիչ վախճանի Աշոտի մահիւն, և առնալ գիշխանութիւնն Սմբատ որդի նորա ամ մի. և ապա մարտուցեալ ընդ շարիչ Նապարաչ, հինգ Նարիւր տրամբ պատկի ի Քրիստոս յիմայելոկանացն: Ան եղբարք նորա Գաւթի և Մահակ և Մաշեկ և Բապարաւս ստեալ պնայրն իւրեանց լոսգան ի Նոքրիկըս առ Ասայաֆն ամիրայ, որ լոկ ընկաշեալք ի նմանէ՝ պէտք է իմանալ Աշոտ Արաբի տիրալ Նամար բունան: Արեւելք առանաւոր հետեւեալ նիւղապետ թիւնք:

Մահակ

Աշոտ

Բագարատ

Աշոտ աննկցաւ հինգ աւսոր՝

Սմբատ, Գաւթի, Ստեան, Բապարատ, Մահակ - և Երեք դասաւոր՝

Նոյնիմիմէ - Վարդ Աշոտայ, որդւոյ Նամարապոյ, իշխանին Վասպուրականի, Ա. Ա. - Կոնկիմն Բաղիւրայ, Էրնն Մասայրի, որդւոյ Ձաքարի, սեւան Արցանայ, Ա. Ա. Նիմիլ Սմբատ ազարապետի, որդւոյ Աշոտայ:

Պիախի հետևեցնեմ. Աշուտ Թխաթի տէրք
 ինչպէս 775էն յետոյ, եղեպէս 780էն մինչեւ
 840էն) գործեց իրեն, իշխան Հայոց: Այս
 թուին ունեցաւ իրեն յաջորդ իւր երկչ որ-
 գին Սմբատ, որ տարի մը յետոյ ինկաւ
 կոտի գաւառին վրայ: Իշխանութիւնը ունցաւ
 Բաղրամասանեաց երկրորդ պիւն՝ Աշուտ Սմբա-
 տեանին. որ ընտրեց իւր նոր իշխանութեան
 կենդրոն Անին Շիրակայ: Իսկ Թխաթի տի-
 րաջ Աշուտի արդիւր շեղարար Սմբատոյն իրենց
 մօրը հետ իջան Նոյսկերտ եւ բռնակցեցան
 Ամիրապետին կամ տնօր մէջ կուսակապին
 հետ հարստացին եւ արեւմտեան Հայաստանի
 իշխանութեան ստացման մասին: Չեւր թե-
 րին Մոկքը, Տարանը եւ Անժաւայեաց աշ-
 խարհն, այս ինքն Պարճաշը: Ահա Մասկերի
 պարթիւնեանութեան տակ թերեւ, քոյց թա-
 ցաւ ինքնուրոյն կոտորած ուղղակի Սամա-
 րայի հետ: Հիւսիսային Հայաստանէն կը
 հրամարդին, Պարսկիան իւր սահմանեկրով
 իրողով Աշուտ Մասկերի, իսկ 'Հասարակա-
 կանը իրենց պետացին Համարտարին' Հարիս-
 սիմէի սմաւնային:

Աւտայային կը նկատենք այս բռնա-
 ւոր մը յիշակամին գործադրում:

Ե. Տեննենք այժմ Աշուտ Սահակեանի որ-
 ցիներու գործունէութիւնն արքան տնօնը կը
 հային մեր նիւթին:

'ԻՄՂԵՆ' կը կորուսէր համարայն վկայա-
 ցքին Արմարանի հղարարներու կողմանէ վե-

բանասցու, Վասպուրականի, Վարդանի խոս-
քերս և էջ 761: «Էս Դաւիթ եղբայրն Ամբաս-
տանայ չի ել զՍմ քերդ» ոչևոք է իմանայ
իւր մասին: Այդան Վարդանի ծանօթութեան
մէջ ծանօթագրած է. «Սմ քերդ թուի Սմ
քաղաք Տուրանայ»: Բայց Տուրանի Սմ քաղաքը,
եթէ հաստատ ընծայենք Աւգ: Խամիկոս-
եանին, իւր գոյութիւնն ունէր զայ ժամա-
նակներէ: Վասպուրականը ունէր Սմ քաղ-
աքուն լաւաձեռքին գոյ, լոր տեղի բանակի
զանիչ տունիւն էր տանն Արծրանեան: Կր-
չի ել Դաւիթ լաւաձեռքին մը: Պաղկանկերտ
անուն (Թագ. Մն): Թերեւս չիշոյ հոս շիմ-
նած բլրայ Դաւիթ իւր նախակերտ քերդը:
Գէ ոչևոք Արծրանի ընդհանրեան տարր
Աստուածամանին և Ս. Ասեփանոսի Նախա-
գիւյին, ի առաջնորդութեան սուրբ ուխտիւ
Տէր Դաւաւ եղիպուպոսի» կը գրէ Պետրոս
գրիչ: 1581ին իւր Աւետարանը¹⁵: Ը. գորտ
գիրքին քաղաքային գործացած էին այն կող-
մերը կարգ մը որոնք ցեղեր, որոնք հաստ-
մատ էին նուաճումներու: Երկրին պարտք
գիւտեր կը նախկապէր ունէն աշաղկուն թիւ
անանց տշխարհակալ մգտումներու տալիս:
Դաւիթ, իրրեւ գերակացու Վասպուրականի,
ոչևոք էր լաւաձեռքի կիբանքը: Թ. դարու
երբորդ քաղաքային շէշաւ գնացեալ տալ տա-
սերաւ ընդ ծագեցրեցիւն սրբ Արթուրի

¹⁵ Ե. Լույս 1 և 2. Բայց Վասպուրականի
հոգեւոր մեծագործերու. Ա. էջ 154:

կուշին, որք ամբաստանքին ի թիմիսկ անկապեալ
նկշի քարանձաւին, գետն գիւ... ի Վասպու-
րական գաւառացն իւսմար թաւեայ չ գաւառն
այն, պար խորիւր ամայ յառար խանկայ էր
բակակողուրեւանն ճանկայ ի Վասպուրական
պետաւրեանն : Թում. 2111 :

Բաղասյաւս շունէր յայնժամ (ՏՃ) :
դշխաւս որս թիւն քարձակցաթիւան իշխա-
նայ Հայոց : Թում. 1115 : Թում. Գրաւս
խանակերացի պիւն գիւրք շէրամանատար
է իշխան իշխանացա Հայոց (ՉՉ 115) : Կա-
շուսն չ Բաքիսինն ձրչաւ Են զարչուսն Եւ
Խանկ Վ Խանկա Խաւրեանն : Տարաթի. 77 :
Կր Եւրպոյանայ ՏՃին Վիշխան Տարանոց
Թում. 1117 : Եւ պարսիկ Խաթի (Բիշա-
պարի, 75) : Բաք Հեթիւս (Պատ. Եկիւ. 1,
155) : Կր կուշ Կաւս Վաշի Թում. Եւ Վաշաւ
Բաղասյաւս իշխան Տարաւ թիւնն : ուսկից
Կր անանուի թիւ ունենալով ի մեծին Տա-
րանի՝ Կիշիւն Կաւս Խաթի Եւ Բիշուսնայ՝
Վանի Թում. ուրեւմտեան Եւրոպին Եւ միւշիւ
Խաթի թիւնակողմերուն : Հաւանալն ՏՃին
Եւրք, Երք Վաթանակցաւ Խաւս իշխան, Վիշ-
խանայ իշխան արագուն անցաւ Բաղասյա-
ւին : Իսկ արարտագաւս թիւն Խաւսի որդ-
այն Խաթանին : Բաղասյաւս ՏՃին Բաւաւս
գիւն Կաւանաւ արաւիցաւ Եւ արարտագաւս
Խաւսաւ, իր յարս արգայն անա : Հան արա-
րայաւ Բաղասյաւս Հաւատարին մէջ Եւ թիւս

հեղուր իւրաճութիւնը Նժմա. Marquart, Suidarmenien, էջ 286—288)։

Այս առից զմեզ յի հետաքրքրէր Բաղաստանի կենսապայտփիւնը թուականէն յետոյ, բայց կ'արժէ յիշատակել չորս դարուց մը իր կեանքի նախորդ շրջանէն։ 812—820ին նա առաւելցութիւն ունեցած էր նաեւ Ասորիոյն չեւ, որ Բերքինէն կ'ուղիւսրէր, անշուշտ Տարանի վրայէն, Աշտ Բմբաստանի արքայաւորը Է. կը վերապահուար²։ Իր խնդրանքը, տշխանական հրամանաւ, գրած է նաեւ Յովհաննէս Աւետարանին Իւկնիսթիւնը, արտին նախորդանին մէջ կ'ըլլայ զոգութիւնը Բաղաստանի իմաստասիրութեան. հան էր կարգացուին առդիրա. տրամ ոչ անհմատ Է. դրոյց վիտեմ հախութիւն, զոր յատեանաց քաղաքիկաւ ունիա կայրեմակամ պիլմանօք յղիւցեաւ... որ այդքան յաղմահամեայրս յոսար ի յաւին ծամանակիա առ խաւմուսն լիմասպիլմ խորս... որ այդքան պարտեաւ լիմաստուրիւն, մինչեւ յաղքատաց Է. ի հերքեւեցոց Է. Երտալ ախորժեւս էջ 31։ Նոյնպիսի գրուածքը կը շարձէ նաեւ չոյթ թուրգմանիւր. «Զառ թախանձեալ մեծիմ Բաղաստանայ, ոչ ի սանէն Բաղաստանեայ, այլ ոչ յոյժ քաղքաղայնս ուսարալ զանուն, որ Է. պիտ իշխանաց Կրեմն ի քաղքաւրս

² Նաեւ ի Բաղաստանի առաւելցութեան Է. ույ խնդրոց մասին Նժմա. իմ Խաւմաղքաւցան հետաւորութիւնը, Ա. էջ 111—112։

ազդէն Հաղարացւոյ անուանեալ . որպէս թէ այնու պէս առաւել պատուի արժանեացր զարկնացեալ . . . իսկ յարժամ բժրունեաց ինչէր ի հաղարացեան ազգէն մեծն եւ Երեւելին ողմ իշխումն Հայոց Վասմաթիան . որ եւ զբանդակն յամենն բերէր ոսկն զգլխոս ինն որ ի Պրիստառ ետանստղն . . . Վէջ 7-ում . .

Ինչպէս Քաղարատ, Եղեպէս Հովիւսիւն Վաղար իշխանին Աշխարհ (տեառն Վասպուրակունի), յայր Մանուկայ եւ Քաղարատայ իշխանին Տաւանի, կը դաժուի իբրեւ զկին իմաստուն ի բանս եւ յիշքս եւ յոյժ իսնչեման զոյն եւ աստուածատէրս (Թովմ. 117, 143, 151) : Հախիւթմէ, որ ընկերացած էր իւր որդւոյն եւ Եղբար զՀայր Մամարս, կը վախճանի հին (Թովմ. 205) : Իւր միւս ըրոջ, Քաղէշի ախկեռջ անունը կը մնայ մեզի անձանսք : Եղեպէս անձանսք է երրորդ ըրոջ ասնունը, որ ամուսինն Եղաւ Սմբատ Քաղարատայեալ :

Ինչպէս Քաղարատունոյ հետքը կը կորստի պատմութեան մէջ, եթէ նոյն ըն աս Մուշեղ Մանկայ իշխեցողի հետ, զոր Թովմա Սմբատին կ'անուանէ զայր յաջապատ եւ յարժեպահ : Թովմայի առկերք Մանկայ իշխեցողին եւ զիշխեցողներուս մասին յատմութեան եւ զմասար է պահել հոն հաստատուն կուսաններ, նիւզապարսկեան առաւելութեան համար : Թարգմատրու (Քաղարատ

առնակաց ձապամբ, էջ 67) կը համարէր
գինքը Սմբատ Սպարապետի որդին:

Գ. Բայց անիկը տակի գոհացուցիչ տե-
ղեկութիւններ Սահակ Բարսիւսեանի այ ձապին:
Աինքը կը յիշէր Քոմմա Արմաշին (էջ 117)
իրտեա կարայր Բաղարատայ եւ Հոփփոխճի
(տե՛ս գէրը): Թերեւս ինքն ըլլայ նաեւ Քոմ-
մայի յիշատակած Սիւպուս մի՝ Սահակ,
պատարիկն Առնակացի (էջ 113, ապ. աւագուն
մի Սահակ, Գառքիկն Առնակացի), որ Տննին
ժամանակէջաւ Աշոտ Արմաշեանց եւ Բաղատ-
րատ Տարանց իշխանին նաւ Մուսկի գլմ
ժողտան պատերապմին: Ինքը կարգուած էր
պատարիկ Առնակացեաց երկրին: Եւ Սահակացեան
ըստ Արարացոց: Եւ կը համարուէր Սահակ-
նէր ինն Կորսկից երկրին իր գաւառներով:
Կարեւոր միջնակց մը իր կեանքին կը հա-
զարկէ 'Իրանեփոս Թեյ-Սահակցի': Եւ իս-
տեղով Քուրդտն կոչուած ապանդաւարներու
գլխայ կը պիլ: Եւ Քուրդաւաններն աւազակներ
էին եւ կրօնքով չէթոնտաւ: Եւ աւանդաթիւն
ժաւնէին, քէ իրենց մէջէն Մուսկի անուամբ
թագաւոր մը պիտի ելլէր: Եւրդ այս ժա-
մանակներս Էրեւան կաւ այս արտառած
Մուսկին: Երեսը քաղով նաւկուտն էր,
Էրեւանն ինք գինքը Բրիտանա կ'անուանէր:

Պահուած թիւղէջ Ասորաց քով, լծմա.
Michael le Syrien, Chronique, III, p. 35-37, ed.
Chabot Աժրաշէ այս նաւաներ հայերէն թարգմա-
նութեամբ յառով յերան: Եւ Մարտիրոս, Բա-
ղատաւանց ձապամբ, էջ 57-63:

խոչ երբեմն շողի տուրք: Արէ որ ամբար
 էւ մեծամեծներն կը հաւաքուէին անոր
 շուրջը: Ամէն պատահարդէ թաղմաթիւ գաւա-
 ղեր ժողովուելոյն անոր թովը՝ կազմուելու
 եւ գերիներու յատմ: Ի՞նչ բնակութիւնը
 Քարդաղոյի ապաստանում լիւանց վրայ
 հաստատուեց: Այս մարդու տաքաւոր կը ախ-
 ընէր ճեղքերոյի եւ Հայաստանի մէջ. Բէյտ
 Զարդէն եւ Քուր-Արդինն տեղեկաց- անխափ
 ամէն ազգերն կը խորհէին: ... Արք Քարդա-
 ժիւն վաճար եւ շրջակայ գիւղերն կոչուպտեա-
 լու եկան. Հասան (ալ-Հասան ք. Մուշ)
 Երանդի եկաւ, վասն զի քրիստոնէից հետ յաւ-
 ըն, յանկարծակի տեղաց վրայ յարձակեցաւ:
 Քարդանացիները խորհարեցան եւ գիտեան:
 Իսկ տեղեկ, որք աւտուանացուցած էին,
 ստիպուեցաւ քոչը մէկցի նկատմ Հասանի
 տընիւն խոյս առն: Մակառութիւ իմբով մը
 լիւտի արդւոյն Մահակի երկիրն ապաստա-
 նեցաւ. Մահակ գինքը բունց շղթայի քար-
 կաւ: Քարդանացիներն երբ իրենց թաղաւա-
 ըին յանուիրը յոեցին, հասարակեցան եւ գի-
 շերը Մահակի վրանին վրայ յարձակեցան:
 Մահակ տապալարեց՝ Մահգիի գլուխը կտրեց.
 անոր գլուխը, իր ընչից մէկ մտոր եւ ըն-
 տառիքը աննկալ փախաւ: Արք վրան մտան,
 Մահգիի գին միայն դուան:

Քիչ անքը, երբ Մահակ իր յանուարովը
 Քաջուղէնքու (Տաւնկոյ) գէմ կուսելու գա-
 ցած էր, Քարդանացիներն տեղը ընտանեաց

և որպէսզի դարան լտրեցին. Հեթանոս էին
մը այս դարանի յայտենց գիւղին մէջ. Սա-
հակի սմաւանոյն կրօնաւոր մէկ կարացրը և
մարտիկնէ յաղթութիւն մը բերպի մէջ աժա-
րացան: Քուրացանայիններն ևկան, գոտմենին
սպաննեցին, բերպին մէջ կարգեկրուն գլմ
կտուեցան և քարերով հաւաւանեցին բերպը.
անները մտան: Արդ, իրենց յայտ բարեկարգ
կրօնաւորին աղաթքին գրայ էր, որ Բրի-
տանի աղաթաթիւնը կը հայցէր Երկրորդայա-
թիւնեկրով և որպէսզի մասունքը մեւքը
բանած՝ իւր բարեկարգը շրմմէն աղաթքի կը
յորդորուէր: Անքիւն իր ստեղծեաց մանկիկը
Աստուծոյ առէկէ գրու, բաւրով, շրիտաւ,
դանէ այս մանկանս համար, որ մկրտու-
թեան անմկրթիւնն ունի, ողնէ՝ ծա-
տայիցզ: Արդ Բուրգանայիններն ներս մանե-
լու գրայ էին, գտան գի բերպին պուրն այրած
էր, ուրիշ կրօնաւոր մը՝ փէնեկէս Եման նի-
պակ մ'ուրու, պարսպէն գարս խոյացու,
ինք պինքը Բուրգանեկրու դիտաւորին առէկ,
դուաւ, և Աստուծոյ ազնութեամբը խոցեց
և ուղտենեց դանկէս և այս կրօնաւորին բան
մը չկրցան ընէր: Իրիկուն ևկան, աժարով
դիւերը աթթան միտցին և հակեցին: Սա-
հակի բարեկարգը սմաւանին առաջագրեց ինք
գինքը մահուան մտանգի մէջ գնէր, որպէս
գի լրջայ թէ անհաւաստիք մեւքն իշխայ.
գինաւան մտու և անկեզոն սուր մը առու,
որպէս գի անար փայլին պատնասու գինքն

ապանեան, աստուծոյն իմն տրամադիրն էր
 պարտ էրդերաւ եւ մեաներաւ: Բայց Աստուած,
 որ զգինքը նշմարաւարէս պնտաթիւնն կըսող-
 ներան մերմէ է՝ աւանդէս բոլոր: Եւ Քուր-
 պանները թերդին յարմարեամբ մը կըկոչին, կուր-
 ձեա թէ տրդէն գրասան թղտոյնն գոյն, եւ
 սկստն էրկոյնն վրայ զբուսաններն կըզտողան,
 որպէս պի չփախչին: Երբ կողակաւեամբ մա-
 մանան կը կուրտնցրեմէն, Մանակ յար տուտ,
 չեանեանկարս պրկեց, որունք տմբողք մասն:
 եւ Երբ տնցումնէն վերստին եւս պարման՝
 գիմացինն չեանաւանդոյ էրխաւաւարդեմք
 պանն, որունց տարք թարեւրով ալեւաթիւն կը
 պանէք (7): Մանակ Երկրորդ սրբ չգոր թա-
 ւանդով մը հարտու, եւ սրբ՛նեան Քուրպան-
 ներք թերդին յարմարեամբ մը պրապտէ էին՝
 իրենց պահապանաց մայնք յանցին: Երբ
 յարմարեամ կըկոչին՝ կանակ զարեւոյցին եւ
 փախան: ձեան մէջ թողտուցան եւ ալապէս
 սովէնքը ապանտուցան եւ փնացան: Եւս Եպա:
 Մանակին եւ անոր թարք չեանեւողներուն
 պոխաներս:

Երկուստքս Մանակին թարտակումը կը
 չամարք տնցի ունեցտմ ՅՆԱՄԱՆԻ տարինե-
 րան: եւ սրբ՛նեան զկոյրերը պատահան
 են Հարտուցին Հոյտատանի սահմաններու
 վրայ, կը չեանեցնէ - (արեմն ոյս միջոցին
 Մանակ Բողբաասանին ալապէն Հոյտատանի

իշխանն էր և, այն թեթ Քարեշուի : Բուհտան : յրջանկայքը, աւառի հասանարէն Տարանի մէջ : (էջ 62) : Վերջինն կէտի մէջ համակարմիր շեմ Մարկուտրոսի հետ : Թեր-Մարկուտրոսի տունն տեղեկութիւններու համաձայն պէպ-քերն անպի տնկացան Հարաւային Հայաստանի մէջ : որուն տէրն էր Մահալի : որ տնէր հետ իւր բերդն և բնաւանքը : Եր իշխանութիւնը կը տարածուէր հասանարէն այն մասին վրայ : որ յետոյ Արարացիներէն անուանուեցաւ Աղա Ջաւադան, այն ինքն Անձաւացեաց Երկիր ²⁵ : Հայ և արար մասանկայրներու համաձայն Անձաւացեաց իշխանութիւնը կ'ամփոփէր իր մէջ Հարաւարեւմտեան զոյգուքը, Հարաւարեւելիքն Փոքր-Աղբալի, Փղմար : Ջուալովները : և Սրինոյ ամրացներով, Արւելիքն՝ Մեծ-Աղբալի, Բաշ-Քուրու արարածանով և Հիւսիսն՝ Մոհր և Սիւսանիք, աւառի Բահ-տանուսի սպարապետի մէջակց : Անձաւացեաց զոյգ զիտար կենդրոնն էր Գաւդաւար բերդը ²⁶, զոր կը շինեն նաեւ Արար մասեւրայրքը Կալկուս մեռով, Աղբի հետ : Աւառի Մահալի իշխանութիւնը կը տարածուէր յիշկ այն մասին վրայ : որ Երրեւնի եղած էր

²⁵ Աղա-Ջաւադանի և Անձաւացեաց Երկրի նշանակումն և այլ խնդիրներու մասին իմեա. J. Martquart, Südarmenien und die Tigrisquellen nach den griechischen und arabischen Quellen Wien 1880. S. 250 ff.

²⁶ Արմէնի Կենդկոմար, Երրդուր լայն սարն իմեալն յով :

յառ Բ. Ասորեացւոյ (Բ. 55) Բիւրաւտեան
 Բժրաս առաքեալի խաւանութեան սանձանք,
 այս ինքն՝ Բժրասաց տեղի առեւանջ գնաց
 գնացեալքը Ասորեաւորներ, իւրաքի վաճառ
 թողլով գիշխանութիւն գարացն Հայոց...
 Նրաւանաս Արաւելիս թեւեղ ի Տժարիս, որ
 այժմ կոչի Կորդքիք, ի յԱրկի նստուցեալ
 գրազմութիւն գերայն. թանգի էր ի ձերաս-
 թեան կրն արտերեալ յԱսորեաւորանոց՝ հաւա-
 յայն կողման, որոյ յայժմ սիրեաց, մասն
 աշնորիկ եւ գնորիի կողմամբք թաւեցաւ:

Տժարիք արեւմտաւորին կը յաղագիւր
 Կորդքիքը, որուն եւ քաղաքակաւանապէս եւս
 թորկուած կ'երեւայ ի հետմէ, յետոյ միաս-
 ցուեցաւ Կորդիք՝ ի մազուց գոյութիւն ու-
 նեցաց պատարին հետ: Եւ ունէր արեւելքին
 եւ հարաւին սանձանակից Ասորեաւորներ եւ
 Նիւսիսին՝ Հայաստանը եւ որովհետեւ խոտն
 աղգարեւակչութիւն մ'ունէր, այս պատճառ-
 ւաւ, քաղաքակաւանապէս յանախ Ադիարեւիկ
 (Ասորեաւորներ), Հայաստանի եւ Բարաս-
 տանի (Ասորպատակներ) միջեւ կոտաւորեալք
 կը նկատուէր: Թէպէտ Տժարիք անձուկ
 իմաստով հայեցեալն պապթիսմայրերու, սան-
 ժանէն գործ կ'իյնար, բայց չառ կամախ
 ժամտեակներէ սկսեալ մասն գտած էին հոն
 հայ գաղթեակաւաններ եւ աշտպէս խոյունն էր
 Ասորեաւորանէն¹⁾:

¹⁾ Հժժաւ այս ժամին Հիւրիման՝ Հայ տեղաց
 տեւանէր, 265, 267—268. HARMAN, BAHIAN, cune

Է. Այսպիսի մեկնութեամբ էր յայտարարուել թ. դարու առաջին տասնամեակին Հայաստանի քաղաքական բաժանման պատկերը: Այստեղ պատրիկ Մոսկեր, որդի Մարտոս ապարանդեանի, ՏՅԹին էր կորդուսի իշխան Հայայ, և որքանիցք Կոպոփանձ (Գորիսիքէն) էր փոխադրել Անի, և այսպէս իր իշխանութեան անձուկ ամձուն կ'ընտրէ չիւտիւր մինչև Կոպոփա: Արեւելքը՝ Վասպուրական, Արեւմուտքը՝ Տարսն և. Հասրաւ՝ Անձուսայիք (Կորդուսի) էր յանձնուին Այստե Խաչակեանի որդիներուն՝ Գորիսի, Բաղարաւի և Սանակի, Վարաւի եղբայրներուն: Այս բաժանումը զոտու Սփրապետին՝ Հորսն առ Խաչիդի Հանսիմիդի Կաթիկոս, որ իջած էին Այստե որդիք իրենց մօրը չեա և, տեսակցութիւն ունեցած. Այս միջոցին Այստե Խաչակերի որդին՝ Մարտոս էր զանուկ ի Սամարա իրբև պատանդ: ՏՅԹին, երբ մեռաւ Այստե Խաչակեր, իշխանութիւնն անցաւ Բաղարաւի՝ Տարսնի ախրոջ մեղքը, որ տնտեսական իշխանաց իշխան. իսկ ապարանդեանութիւնը չեաւ յանձնուեցաւ Մարտին, ևրբ առ գերազարծաւ Սամարոյէն: ՏՅԹին, երբ Բաղարաւ զերի տարուեցաւ Սամարա, նոյն իշխանութիւնը յանձնուեցաւ Մարտին, և անոր ուղղերի

աւարտելէն (ՏՆՆ) ետքը՝ անոր աղջկոյն Աշուտի, որ իշխանաց իշխան Կոչուեցաւ, եւ ապա տնտանտեցաւ թագաւոր:

Ամբաստ Արուշ-Արատ, Աշտա Սմբատեանի սրգին (Սմատարայէն պարժէն ետքը) առան իր իրենցին Դուտի (այս ինքն Բաղարատ Տաւրանոյ իշխանին ձգտոր) բոլոր, որմէ ունեցաւ երկու ուստը, սարոյ բոլորն (այսինքն Սմբատի դուստրը) արուեցաւ Աշտա Դիւրաւապապաւի (Արպանաւի յորով) աղջկոյն՝ Բաղարատի կին, ուստի հասանորէն ՏՆՆէն յաւաք:

Այս Էդանտեաւ Բաղարատեանի առեւ երկը յիշերն դոպուեցան իրտորո, հետ ինամական կապով:

Բ Դուտեանի մէնք կրկին Թեւ-Մանուկա աւայ տեղեկաւ թիւնեւուն նկատմամբ Աստ հակ իշխանին եւ իւր ընտանիքին:

Աստի Բաղարատեան ոչ ընդիւր, որ Փարպաններու յարժանիման կ'ենթարկուի տնոր բացակայութեան, անշուշտ Դանպաւարն իր հետ ունի իշխանը բարեպաշտ, առաւանտաժախ, հաստաւորիմ եւ իմաստուն տիկին մը, որուն ծաղաւնն եւ անուեր կը մնան մեղի տնտանով: Դու կ'երեւայ թէ Դու իր հարս ընտրուած, արդեօք ձեռքբեաւանեալց, կ'ազնորէն. ունի գրկի անդեաց գաւակ մը, ուստի գաւակներ չեն յիշուիր: Իսկ արքունիքի մէջ կը տեսնուին նաեւ երկու տիրուէր եւ իւրիւրի եկեղեցականներ, որոնք Քիկնով

անմեղատ թեման պատկանող երեսն էն. մէկն է անուր հրահրուար Երասխան, հրեքորդդր պարմեայ կրօնաւորք մը, որ կը ներկայացուի աներկիւղ, չայրենասէր անձ մը, ինչպէս Փեհէլէն մը, ինչպէս Ղերտիզ Վանահայտք մը, որ նիդակ ի մեւին կը խոյանայ չայկատար թշնամայն վրայ, կը ցնէ ասորաւորք ախոյեանին կտրածքը եւ կը խորտակէ գիտթասայ եւ ինքը ստորախաւոր թշնամ ինկրտ մէջ կը մնայ ուղիւնդամ: Պատմութիւնը չէ պահած մեղքի անտեղ տղն քահանային, քայց ողորթ մնայ անիկա իր պարծին մէջ անմահ:

Մինչ քերդակամները սակաւամեկուն ուսմով թշնամայն յարմակման կը դիմուցըէին, Սահակ իշխանը պատգամ էր Տաւկաթեան ցեղերու տապաւնակութիւն մը չեղան մզին իւր առնաններէն: Թեանց կտտելու իւր չեղատ ողորդումներէն, նա կը դիմուայ նոսրքը քերդակամներուն այն չառցեն, ողորդութիւն: Դասանաքաւութիւնը դաւաճեցանէ է պատրաստին իմաստութեան: Տիկիւնը կ'ընդունի շեւիտ կուգոր զոկան մը եւ կը յաջողի Պորդոմեաներու տղն Երեքուրդ յարմակումն ալ, նման ուսուցմուն, որը Դաւիթ իւր պատին էր տուած, խորտակելու: Այնպէս Սահակ յաղթական պարս կտր պայ կտրն մուսանակի մէջ երեք ստեղծաներու վրայ: Այս տեղ կուգտուտն կը ցնուի մեր առջեւ իր աննը իրքեւ պատերազմուղ եւ նման պարտութիւն, չեւ քաջ

է՛ր արդարաւոր . . . ի մեծաճեմաւ եւ ի քաղաքում պարծաւ արժանաւորութեամբ (Ա. 1) :

Ի՞ր կողայրն Բագարաւ կը դրուատուէր աւտամեակաւ եւ հայրենակալն մտնութեամբ երեւելի ունենաւորութիւն . եւ քոյրն Հոխոսիմէ որպէս զկին իմաստուն ի բուն եւ յիւր եւ յոյժ խոհեմազոյն, միանգամայն եւ ստատուածաւոր : Ինչպէս չեմքաղքենք նոյն ընտրէր նաեւ Սահակի վրայ, որ աւան եւ պարկաշտ իր նոյն յարկին տակ : Սահակ տակէր իւր արքունիքին մէջ երկու բարեպաշտ եւ իմաստուն եկեղեցականներ, որոնց հոգածաւորութեան յանձնած էր իւր բնաւորները : Ամէլ այդ բարեկամ արանքն երեւելի էին իրենց բարեպաշտութեամբ եւ արքայական ոգեւով, կը տրեմ յուսալ թէ անոնց մէջ կը նստադրուէր եւ իմաստաւոր միաբնակ : եւ կ'ախարհէր իշխանը անոնց մասաւորութենէն իրեն չէ՛ր քաջ եւ արդարաւոր . . . ի բուն եւ ի պիտանաւոր խոհականութիւնս (Ա. 1) :

Բագարաւ ոխազ էր աւելի իմաստաւորական եւ տատաւածաբանական գրական եւութեան եւ նաեւայլն կը խնդրէր Սահակին Սահաւորանին Սահակութեւն : Աւելի ժամանակակից մը, համապատասխան մը, եւ թերեւ խաղաղակեր մը՝ Շապուհ կը հոյսէր Ղևանդ Էրէյլին ոնցեւայ ժամանակներու Պատմութիւնը՝ Չունեցաւ նոյն հախանքը նաեւ : Սահակ, չեղաւ իւրականքս եւ ինքը ունենայ

դրաւոր յիշատակ մը, պատմոյ իւր ուսումնասանելու մասնակցութիւնը :

Իննի կ'երեւայ թէ Մարտի Բազմաւանի ցտեկացաւ չիմել իրեն անուն հանդիսանալով Մեկենաս Շալոյց Պատմութեան մը :

Մարտի, երբ կտրուեցաւ իշխան Սեւակացեայ Էրկրին, տէր կորգրիքի (ՍԽԻՂ), անշուշտ հասարակացաւ, ինչպէս երբեմն վաղարշակ մը, այս կողման անցեալ պատմութեամբ եւ հիւսիս ի խնդիր Մար Թրապաւանայի մը, որ զքի առնէր այս կողման եւ այս առթիւ ամբողջ շաշատունի անցեալ յիշատակներու, յատկապէս ետխորաբանան տուներու ծագման պատմութիւնը :

Մարտի Բազմաւանի իւր ձրագրան դրածին յաջոյնութեան համար յորժարապոյն անն նկատած է «Մոսէոս Թարեանային», որ շինասարար բնութեան է ինչքերը, վասն զի դատած է պոյն շտիրի իսկ իւր տիրութեան պոյն, առաւել հետ արժանութեանցը (Թ. 1) : այս ինքն պատմական տշխատութիւններ մատենապահը կ'ընծ է համոռնոյն իւր սրտին եւ արժանական պատմութեան իւր պատմութեան ինչպէս եւ շալոյ մի ձերպեայ եւ իրանդատու էր նա, բայց եւ այնպէս անպատկառ ի թարգմանութեանցը (Գ. 65) : աւաթ նաեւ յարկը տարիքի մէջ կը դրածը միտքը, միշտ հաստատութիւն գրչին :

Մեկենաս Շալոյն ինչպէս ինքն աշխատեցաւ պատմապիս մտածեալիս, ինչ

Ղեւոնդ երկնք: Ղեւոնդ իւր Պատմադրութիւն, գորք գրած էր չի նշում տեղի տեւան ճշտողնայ Բաղրատաւանայն, նաեւան էր անշուշտ նշանէ իւր դարուն, բայց մտնուս որոշէա Բաղրատաւանի իշխանական շրջանակին մէջ: Դեռ իւրին է մասանէր թէ Սահակ իւր մեծ ծրարքին յաջող կատարածին նամար անձի քնարութեանն զնախաւ շտապեցաւ, այլ մոռուած Ղեւոնդի նշանէն է գրաստն տնայր Բաղրատաւանի տան նշողնայ ունեցած մտարիմ գերաբերմունքին գրող, նամարանայ գրուս անայր առջեւ իւր տառաշարկութիւնը եւ դասա իւր մտքը ուստարտաւանութիւն:

Վերջապէս այս տառաշարկը բեղունան է Սահակէն ի նկատարութեան, եւ ինչպէս կ'երեւայ նշանիւնայն մեկնած է անոր արքունիքը, իւր խաբար, շատաւ շուն գմարտ մնող՝ գնորդող բնկաշխարհ զնախաւութիւնէն: Եւ ի նշանդրէն կու տայ թէ նորայն ծառայութիւնը ստանալէ յետոյ նաեւ մարմնայն ծանօթ եղած է, այսինքն պատահած էն անոնք իբարուս պէժ առ պէժ Սահակի արքունիքին մէջ ի Կորգրէր: Այն պարտագտն, որ Մոսկէն Բիւրտախան Սմբատ տապաւնի տիրած երկրարտմինը կը ներկայացնէ Տճարի Կորգրէրը եւ Սիկին յանտաննէ կը յիշէ իրմեւ պաշտօնայր Սմբատի բերած գերութեւնը, յաւելի կ'ընէ պատմադրիքը գրարարի ետեւէն իւր մտքը, որ Կորգրէրէն կը շնչէ: Սահակ Բաղրատաւանի իւր ստանձան

Ներք մինչև, ինչի մասանհ, մոտոմ կ'ե-
րևայ, և Բոմբալս պատմական տաղանդունե-
րը հայրենային այն կազման հայ գաղթա-
կաններու հետքիման ի նպատակ: Բայ միայն
իւր Բեկեմտոյին համար և պարձանքի ու-
սիմ ընծայել էր մոտի պատմագիրը, այն և
տեղը աշխարհակալական մոտոմներն տր-
դարանքն էր նկատի: Բայ հայրենամբ
բմբունքի կ'ըլլան մեղի նախ: Հայոց Պատ-
մագիրն այն և այն տեղիքները, ուր Բոմ-
բալս պատմական պատմագրին գրուածն-
քան տեսարանները, նայն իսկ հայ ցեղին
տեղանաւորութիւնը Կարանայր-Մարտիրոս, ու-
րիշ խաւով Բեկեմտոյն էրկրին մէջ էր
բեմագրի: Այսպէս հայեր և Բեկի պատմ-
ագիրը հայոց մարի մէջ, տեղադրական աշ-
քան սպարիտ Կարանայրութեամբ (Բ. 11):
Նա հետապնդած բոլորն է նախ այսպիսի
դատանի նպատակ մը, էրը Կարանայր, Կար-
անայր իմպատար էր հայայնի: Եւ Բարբա-
տանները հրկական Ժագումի էր սերեցնի,
հերքելով ինն տեսնակութիւնը (Բարբա-
տան պատմագիր Բերկոսի քով պատմա-
նը Եյն նախարարութիւնը հայկոյ տեղան-
ցին էր ներկայացնի)

Բոմբալս-Պատմագիր Երկն Բանակի տրքու-
նիքը (Կարանայր) Կարան էր պատմական
բոլոր միայն Բերկոսի մասնաբնի (1802-181)
Եւրո, այն ինքն այն մասնաբնիներն, էրը
Բանակ Բարբատանի իրքիս տէր Բեկեմա-

քիաց երկրին տնտեսականաց բնականօր
կանգաւար . եւ թեաց հոն հաւանօրէն ժիշկե-
իւր ժաշուր : Այսպիսի կապակցութեամբ պիտո
պայ ինչ կարող է արգիշել զմեզ ահանջաւ
Ղեւանդ Ելիցիս զէմքն յանձին տյն արխտօրս
կրօնաւորի . որ արհամարհելով ժաշու նի-
ղակաւար էր խոյանար թշնամւոյն բռնակը
եւ տիրաւորութեան եւ հայրենատիրութեան
անդուշանկան առհասարակաց ժր հանդէս էր
բերէր : Տ[1]—Տ[6] :

Մինչեւ այժմ բռնածնէր թոյլ կուտան
մեզ կազմելու մեր կցակցութիւնը :

1. Առհակ Բաղրատունի Անձեւացիաց
երկրին, այսինքն Կորնայր Նուսեպին քն-
դարձակուած աւճամնէրսն ուրն է Տ[6]—
Տ[6] շրջանին :

2. Մովսէս Սոբնացի եւ Ղեւոնդ մի եւ
նոյն անձնաւարութիւններն են, ինչպէս մի
եւ նոյն են Մովսէս եւ Մար Արաւ Կատինայ :

3. Ղեւանդ երկը նոյն է հաւանարէն տյն
կրանաւարին չկու որ Դիոնիսիոս Թերմա-
նիցւոյ համեմատ պաշտպանած է Առհակ
Բաղրատունւոյ բերդը տնտր բացակայու-
թեան եւ խիզախած է անձամբ նիզակահար
զգիտելու թշնամիներուն գլխուորդ :

4. Մովսէս ի պիտի համան է իւր Պաա-
մաթիւնը Առհակ Բաղրատունւոյ սրբու-
նիքը հաւանարէն ի կանգաւար : Հայոց Պաա-
մաթիւնը յոբնուած է Տ[6]էն ետք, ոչ շատ
ուշ քան Տ[6], ուստի Տ[6]ին մերձաւորացէս :

10. «Իրավեա» եւ «Դեյոսիկ» ամսականներու շտապը: — Ի՞նչո՞ւ աշմ մեծ գրադէպանք տպագրուցածնէր թէ «Հարց պատմութեան» հեղինակն Իրավեա խորհրդացի նշան է Ղեւոնդ երկցի հետ. մէ՛կ ձեռքէ հըած են երկու պատմապիտիւք: Եւ Իրոց յայդ հարեաւոր խնդիր մը: Ի՞նչ էր խկանկան տնտեսը ոչն հեղինակին, ուր շարադրեց ոչոն հըրկին հրկմըր:

[illegible]

Եւջնագրութի աւարակութի ճէշ հնր Եսեւ
Նիկոսեմամբ Վիւոյ-Վա Խորհնոցի տնտան
Հարսպատութեան: Այսպէս կը կոչուի հնգ-
նակս Զախ Պատմացքին խորագրին ճէշ:
«Եւջոց պատմութիւն յերիւ հաստանաւ, ա-
տոցնոյ Մովսիսի Խորհնացայց»: Արկրորդ
տեղամ Ա. 1 (խառտարտնութիւն): Վիւոյն
Խորհնացի յազարս մերոյս Ի սկզբան յայտ
բոժիցս Մովսիսի Բաղրատունոյ խնդարս:
Ջեռարկերենքնն ձեռ շաւինն այս ամբողջ
պարբերութիւնը: Երոցոյն Վնոյ կը կարգան

Իմ֊գնդի Իմ֊գնդի Թորենացւոյ՝ Եւ պարսկեր ձգէն շխապոս — բռնիցէ — իսկ արեւոր տունքն այս մասը, կը ներկայացնեն պէտքէն բնիկըցուածներով, վստահի ամբողջ պարբերութիւնը անբերականական շտապաւորութիւն մը կ'ընենցէ. պար չեն կրցած նաեւ, շրտաւորակիչները վերականգնել, նախահանկան բնիկըցուածն էր անշուշտ պարզապէս, թէ սկզբան այս բռնից (նի) Իսահակոյ Բապրատենաց խնդար, ուստի իմ֊գնդ Թորենացի շտապ մերոյն կորիկի է համարել կրկնորդ գրչի մը յուսուածք, որուն մեծը Պատմութեան մէջ նաեւ տրիչ անգիր կը պատշտի²²։ Հայոց Պատմութեան էջերու մէջ չենք գտնիր տրիչ յիշատակութիւն չեզոքակի անուան մասին։ Նաեւ չբնիկացս Թ. պարսկայ վիպարութիւն, ուր յիշտի Հայոց Պատմութեան չեզոքակիր յանտանէ, կը չնաեւի տակ։

1) Երկու պատմադրութիւններու չեզոքանէ մէկ է։

2) Երկ անմը կը հարուէր Ղեւոնդ Կոմիտաս։

3) Երոզնաեւ Ղեւոնդի Պատմութիւնը

²² Տե՛ս աւելի P. N. Akopian, *Monks Khorenatsi. Die Abfassungzeit der Geschichte Armeniens* und die Persönlichkeit des Geschichtsschreibers in neuem Lichte betrachtet. Wiener Zeitschrift für die Kunde des Morgenlandes, 71 (1970), 17 204—217. լատիներէ՝ 205—211։

Իբրեւ ժամանակակից գէպքերու անպատշաճ, անակնկալ նկարագրութիւն գրուած է ժամանակակից մը, պիտի ենթադրենք թէ յետք տեղիք խեղամբիւրելու, կեղծելու, հեղինակին անունը, առաքի եւ անանկութիւնը հաստատութեան թիւով որոշուած է Վեհոնոց Էրէցոյ յարջաբանքը հեղինակին, գրութեան անկասարկ կամ միջոցաւորութեան:

Եւ իսկ Վեհոնոց անունը կարող է նկատուիլ կեղծիք, մոտե գի կեղծուած է անոր ժամանակի աշ, գրութեան մէջ աշ: Ժամանակակից մը թ. դարու առաջին տասն յեակին պիտի շտապեմանկէր սեպնական անուամբ յայտ բնական, պատմութիւն մը, աւր ինքզինքը կը կեղծէր աշակերտ Սանկի եւ Վեհոնոցի: Եւ որովհետեւ Վեհոնոց իւր գրութեան մէջ նախաւարդ գիտութ չէ ունեցած կեղծելու իր ժամանակը²⁰, պիտի ենթադրենք թէ կեղծուող Էրէցոյ գրիչ մըն է. որ հեղինակին մասնաւորին հարց հաստատելու հեղինակաւոր բնականութիւն համար անոր խաւրիքը, կարեւորութեան է կեղծել ժամանակն աշ, անունն աշ, այս անանկագրութեան անունը հետեւող Վեհոնոց անունով պատմութիւնը իբրեւ նարագիւտ աշխատութիւն պիտի գտնէր բնականութեան թիւն եւ պիտի տրամէր հետաքրքրութիւն եւ սքանչանք:

Երեւոյ ապագան թէ նա չէր սխալած

²⁰ ՏՏ = անգ, էջ 216:

իւր ժառանգութեանը մէջ, որովհետեւ սկսեալ ժ. դարէն աշխարհակալեց Վճռաւոր Խորհեալիւն ուղղոյթներու մտքերը և սրտերը. ոչ ոք չկասկածեցաւ, թէ Վնայոց Պատմութիւնը հազիւ դարու մը ստեղծագործութիւնն է, գրուած Կորդրիքի խորոմտքերու մէջ:

Նկատմամբ բնութաբան անուանա՝ Վճռաւոր Խորհեալիւն, որով մկրտուած է Վնայոց Մեծդարանութեան պատմիչը, պէտք է ենթադրել, թէ կեդնայն աշխարհէն ունեցած է Նկատմութեան հեղինակը՝ Լեւոնէս ժողովարէն, որ պատմած է իւրայնի ժողովրդեան ինքնարանութիւնը և թէ քննելու նա իւր ժողովարդը կողպատական ծառայութեան հանկը և Կարմիր ծովու խոր անդունդներէն անցաւ, տարաւ և հասցոյց լեւեռեաց երկրին սահմանները: Նոյն պէտք էր կատարէր Վնայոց պատմութեան հեղինակն ալ, որ ժամանակի տեմպը յստիւնէն կը հանէր ի յոյս աղդի մը պատմութիւնը և կը բերէր կը հասցընէր ժամանակ մը, ուր ուղղը պահանջութեամբ նոր գինուած կազմակերպուած, պիտի վայելէր լեւեռեաց երկիրը մտքի և լոյսի:

Վնորհեալիւն յորջորջանքը պիտի ենթադրէր իտլիանէ կամ իտրիէն գաւառ մը կամ քաղաք մը. սցառիտի վայր իտալի չէ մեղ Վնայաւանի սահմաններու մէջ, հասանալէն նաեւ այս յորջորջանքի մէջ բառախաղ մը

խոսքնուան է. խոսքս տրամադէն անանցում, կամ խոսքիմ = խմտատուն, իմուս, կամ խոսքիմ. խոսքիմ = բնթերցոյ խմտատոյ (իմմա. Մար Աբաս Կասթիմայ). և կամ թերևս զոր բնոյ խոսքս Լանց պատմութեան Հայոց, Մոսկո, ժամանակակից բնութեամբ, Արծրունիները կը ուսուցաբանե՞ր՝ Վերթիս ունի, սցապէս նաև. Ամտաուներ = Համտատանցի ևն. ի՞նչ պարմանք էթէ իր խնկ սաուպարանական արկերներով երկրորդ գրիչ մը յարժեանք յայտն իր Եազունն ու իմաստութեան, ինննարի խոսքերէն և կամ բազմամեայ ծերունայն անդուր բնթերացաւթութիւնը նկատելով ասորական խոսքի, բնթերցաւթը մակագիրն սցապէս յարեւոյթան յայտն. Ամտեանցն դէպս բաւախաւ մը պէտք է Լեթապէն Վերթիսոցի յարժեւրման մէջ. բան անպայ անուան.

Այս տեղ կը գերջայնենք մեր խորհրդանշութիւնները Ղեւոնդի և Մոսկոյի շուրջը. յուսումով թէ շուտով ասիթը կ'ընծայուի մեզ, նկատելու Մոսկո և Արեւնայոյ անմե բոտ ուսանողութեան և Պատմութիւնը ըստ իւր գրական արժանեաց:

ժ.

ՀԱՅ ԲԱՆԻԿԱՅԻՆԻՆԵՐԱԻ ՏՈՒՄԱԹԵԱՐԸ

450—850

ՀԱՅ ԲԱՊՐԱՄԱՆԻՆԵՐԻ 80-ՄԵԺԵԹԸ

450—850

Արաֆնեան, հանդուցեալ Ա. Մարկուարտ
 և Հայ Բաղրատունեաց ճիւղազրութեան¹ օ
 ետերած իւր գնականիկ աշխատութեան մէջ
 փորձած էր ազգէն գերակայեցնել Հայ Բա-
 ցրատունի տան տնօրէնաւոր (1881—85) մութ
 շրջանի համար, թերեւս կրկին այս նիւ-
 թով գրաւորել նկատուի զուր ժամափառ-
 ութիւն: Պիտի ողջի եւ ես իմացել ժամա-
 նակս, եթէ յրնթացս Ղևոնդ Էրէջի Պատ-
 մութեան ուսումնոսիրութեան ինձ բնո-
 ստալ էլ տն ինչ ինչ դժուարութիւններ պատ-
 բնային իրենց լուծումը Մարկուարտի յիշեալ
 աշխատութեան մէջ պահանջսի: Կերպով:

Մեն ճատութեամբ, եւ մասշէլի ազդեցի-

¹ Ա. Մարկուարտ, Բաղրատունեաց ճա-
 րագր. Ա. Հայ Բաղրատունեաց ճիւղազրութիւնը
 Բ. Հրահան Բաղրատունեաց ճաղագր. Վիեննա 1885.
 Բնագրէն Թարգմանած Հ. Մ. Հաւաքեալ: Գործանե-
 լէն լուսաբեր իւր պարսկական ձեռք մէջ լոյս տեսն-
 է Հեղինակէն Osteuropäische Streifzüge աշխատ-
 ութեան մէջ, Leipzig 1867, էջ 291—465:

Ներսէս աշխարհի՞ սպասարանմամբ պնած է
 Թարկուարտ իւր օրհրդապարտութիւնը, թայց և
 այնպէս մայրցոյցացած են զինքը մտտեհազարա-
 կան ինչ ինչ տեղիքներ, և ինչ ինչ կնճիւ-
 ներսէս վրայէն փոքրած է անցնիլ ուսումսմով,
 Թէր ուսումնասիրութիւնը էր պտնտնէլի տ-
 ւանէլ յուսարանութիւն. և էր հարկազրէր
 խորհիլ երկտը՝ դանեկոս կապակցութիւն
 Քաղաքատունի տան այլ և այլ անդամներու
 մէջ, որանց յիշատակութիւնը կ'ընէր պատ-
 մութիւնը յանդարտութեանց, Նաեւ կարգ մը
 զբոսորդ յիշատակարաններ, ծանօթ հայ իրա-
 սպարակի վրայ, մնացած են անմասնէլի Ռե-
 սուսցապետին, գորանը պէտք էր տակայն շու-
 հապարմէլ, Քաղաքատունի տան տնդամներու
 և պատմական տեղեկութիւն յայանապայն ցու-
 ցազրութեան համար:

Թիպն այս տեսակէտներով էր մտանում
 նիւթին, Թրպէս զի աւելորդ կրկնութիւններէ
 խոյս տամ, պիտի լանամ մասեհազարական
 տեղիքներու համար ցոյց աւել Թարկուարտի
 յիշեալ աշխատութիւնը, ուր ամփոփուած են
 ծանօթ սյրիքները (խոսքս Թարկուարտի
 ծանօթարանութիւններու մասին է, գորանը
 պիտի մտանանչեմ հոգի): Նաեւ Ղեւոնդ երէցի
 Պատմութեան ծախքտան մէջ ուսումնասի-
 րութիւնը, ուր ինչ ինչ անճեմարութեանց
 մասին արդէն անտուած է երկարորէն,
 եկամտի պիտի առնուի պատշաճ տեղիքը:

Յիշատակ Թ. 420 : 1.

Մանուկ Թ. ապրիլ 1903 : 2.

Մանուկ Թ. ապրիլ 1903 : 3.

Վարդանիշ Թ. : 4.

Մյուս ապրիլ Թ. 1903 : 5.

Պայ 401 : 6.

Միսր Թ. Վրդանիշ Թ. : 7.

Վարդանիշ Թ. ապրիլ : 8.

Վարդանիշ Թ. : 9.

Միսր Թ. ապրիլ : 10.

Միսր Թ. : 11.

Միսր Թ. ապրիլ : 12.

Վարդանիշ Թ. : 13.

Միսր Թ. : 14. Վարդանիշ Թ. : 15. Վարդանիշ Թ. : 16. Միսր Թ. : 17.

Միսր Թ. ապրիլ : 18. Մանուկ Թ. : 19. Վրդանիշ Թ. : 20. Վրդանիշ Թ. : 21.

Միսր Թ.
ապրիլ 1903 :

Վարդանիշ Թ.
1903 :

Վարդանիշ Թ. : 22. Միսր Թ. : 23. Միսր Թ. : 24.

Միսր Թ. : 25. Վարդանիշ Թ. : 26.

Միսր Թ. : 27.

Միսր Թ. : 28.

Միսր Թ. : 29.

Միսր Թ. : 30.

Միսր Թ. : 31.

Միսր Թ. : 32.

Միսր Թ. : 33.

Միսր Թ. : 34.

Միսր Թ. : 35.

Միսր Թ. : 36.

Միսր Թ. : 37.

Միսր Թ. : 38. Միսր Թ. : 39. Միսր Թ. : 40.

Միսր Թ. : 41. Միսր Թ. : 42. Միսր Թ. : 43. Միսր Թ. : 44. Միսր Թ. : 45. Միսր Թ. : 46. Միսր Թ. : 47.

Միսր Թ. : 48. Միսր Թ. : 49.

Միսր Թ. : 50.

Միսր Թ. : 51. Միսր Թ. : 52.

Հինգերորդ պարտ կէսէն սկսեալ տնիւք
Բաղրատունի տան պրեթէ տնրնդ հոտ յաջոր-
դութիւնք:

1. Ճիւղոց իշխանն Բաղրատունեաց՝ մին
էր այն հայ նախարարներէն, որունք խառ-
րեցան գնեա Վասակ Սիւնայ (Վ. Փարսկեցի,
էջ 47):

2. Իսահակ աւագն, ալք Բաղրատու-
նեաց, հանդիւսացաւ տնուսնի Վահանեաց
կոթաներու մէջ. 180ին ընտրուեցաւ մարգ-
արտն եւ վարձանեցաւ իշխանայն նախա-
կազան մահուամբ ընտրմանայն: Կոտին մէջ
(Փարսկ. 121, 122):

3. Վարսկիւստ Հոյոց աւագն էր ի-
շխա Քարկէն կաթապետի թղթին մէջ 500
կամ 510ին, իրքեւ մեծ Վաղարշապուտի Լա-
յոսոյն մահակից հոյ նախարարներէն (Գիրք
թղթոց, էջ 12):

4. Վարսկ-Տիրոց. 554ին Գաւայ մէջ
ձորմիկ = Նաստրականներու պէժ պաժա-
րուած աշխարհամարմին ներկայ էր Վերշու-
ի Վարապ-Տիրոցեան (Գիրք թղթոց, էջ 74):

Բէնայ այս շարք իշխաններու հայրամուռ
ներք յաւանէ յեն իշխուած, րոյց նկատելով
մոմանակի անջրջան եւ հոմարելով թէ առ-
պետութեան յաջորդութիւնք սրդի ի հարկ էր
մուտնդսէր, կրնանք ենթադրութեաւ թուել
աւանմուտին մէջ անոնց անուններք իրքեւ
սրդի ի հարկ:

Անանց աւարակութիւնս յս Վարսկ-Տիրոցի

մասին է խոսքը, երբ կը գըլ Առօրիաւ, թէ
«Անկն Վարազ-Տիրոց իշխանն Բագրեւանդայ
էւ Արշարունեայ, որ ի քանաստեղծացն
Սպարապետ անսամիւր, մեծ անախմբու-
թիւն կատարեայ, աւատումեան ոգորմու-
թեամբ ժոխթաքէլը զաղքատս: Եւ զԿարսէ
ձեռնեան զհող Արշոյն (Թաթլոյ) տոյր ի
գաման՝ հաստատուն կտակոյ էւ եղեալ
զկուսին ի գէրայ տապանի Արշոյն՝ ասէր-
Ասորը Նզնուսը, մի թուրս զանաթման
յոյնեականութենէ յուսէ: Եւ զքո հայքենի
զհողն ինչ եմ աւանդեալ, էթէ որ հակառակ
կայցէ՝ զու լեր գլխիւնդիւր» (Հայապատում,
Բ. § 154: Հմմտ. աւուրս էւ Հ. Ս. Կոպեան,
Կամարակեանները Տեարք Շիրակայ Էւ Արշա-
րունեայ, Վիեննա 1926, էջ 128): Առօրիաւ
ունեցած է աշրի մաջէ, ինչոյն կ'երեւայ,
Վարազ-Տիրոցի կտակի որինակը, իր պատ-
մասածքը կը գերաբերի 1515 կանխալ շրջանին,
աւստի Վարազ-Տիրոցի այցելութիւն ի գմնս
Թաթլոյ պատահած է ոչ թէ ինչս Եւ զարու
(Այիւան, Այրարատ, էջ 155), այլ Ա. զարու
առաջին քաւորդին: Բագրեւանդի տէրերն են
այս շրջանին Բագրատունիք, Արափնեակ:
Առօրիաւ կը գըլր Թ. զարուն, Էրբ Բա-
գրեւանդի Էւ Արշարունեայ տէրերն էին Բա-
գրատունիները, հաւանաբէն Վարազ-Տիրոցի
անուան կից տեղնուած՝ սիւխանն Բա-
գրեւանդայ Էւ Արշարունեայ ի տեղայն
շրջանի բմբունման որտայնտութիւն մըն է:

Իրաւամբ կասկածելի կը պտնէ կողեան (տեղ) Զ. գարու: Համար Բագրատունիներու իշխանութեան տարածումը Վերջաբանեաց Վրաց, քանի որ անոր տէրերը մինչեւ Ը. դար կամաւարտեցաները կը ներկայանան պատմութեան մէջ:

5. Այլ շատ տույն, չի Վարդ-Տէրացեան, ինչպէս անւանք, կենդանի կը մնին եւ ունեցան մասնակցութիւն Գրեկոս ժողովին մէջ. Իր որդիներէն կը յիշուի յանւանէ Պապ:

6. Վասկ Բագրատունի, որդի Աշատոյ տուգետի մին կը տըն հոթը հոյ իշխաններէն, որոնք մնին Քուրդ Վարդապէտ յարգունիս կտնայուն ի Տիգրան. զիտկ հոթնդութեամբ բնկալու գնացաւ, եւ երեւելի շրջութեամբ մեծացոյց պատմութիւն. եւ գմեծամեծ իշխանան հրամայէ պահել ի դրան արքանի, կարգել նոցա ռոմիկո յարգուն նուստ՝ տու ի տուն իւրաքանչիւր. եւ կտնայ յամենայն տուր յրեթիւս արքանին (Մեր - 56):

Պատմագիրը կը պատմէ թիւ չեանք թէ իշխաններէս գեղը վախճանեցան կամ ապանուեցան, քոյց կը լու Պապ Բագրատունոյ մասին: Հաւանական է կարծել թէ Պապ մնաց իւր գործին հետ Քուրդի տըրանիս: Իր գործին մէջ կը գտնուէր հաւանորէն:

7. Սիրան Բագրատունի, որ չի յամանակին յայնմին հանդիմանք յաշտ Քուրդոս

աւրապէն եւ տալս ի նա զճարգոյանութիւն
երկրին Վրկանայս (Մէր. 55) :

Սմբատիս հայրանունը չէ յիշած Մերթոս,
բայց կ'երևայ թէ Պապի որդին էր Կարայ
է համարուիչ նաեւ Աշտի կրտսեր որդին,
նկատելով որ իր անգամերկը՝ Վարադ-Տիրաց
կեցաւած է, ուստի յանուն պապին, ըստ բն-
կաշխարհ անգարութեան :

Ստրկուարս (էջ 1) այս Սմբատը նայնա-
ցուցած է Նիկիին Կայսեր Ժառտյութեան մէջ
դառնալոյ Մանուկ Բագրատունեայ որդի
Սմբատի հետ, որ ժամանակ ժր ապստամբե-
ցաւ Կայսեր գլխէ եւ ապա հաշտուեցաւ, հա-
յանաւորուեցաւ, ժաշտած պատապարտուե-
ցաւ եւ ի վերջոյ ներման արժանանալով
աքաբունեցաւ Սփրթկէ (Մէր. 56—57) : Բայց
որովհետեւ Մերթոս անոր աքաբէն վերա-
դարձի եւ Ստրկուար հասաւթեան մէջ
ժանկու ժողին որ Է իջէ ակնարկութիւն
շ'րհեր, նայնացումս չիշոյ չ'երեւար ինն :

Սմբատ Բագրատունի, Վրկանի ժառգ-
պանը, յորջորխւած՝ Ստրկուանեանն, վախ-
նանեցաւ Ս[?]Նին ի Տիրքոն. եւ թաղուեցաւ
Կապոյթիտի Դարիւնքի մէջ, ուր էր Բագրա-
տունիեկրոս տոհմական գամբարանը (հմմտ.
Մ. էջ 1) եւ իմ Կիւրթան Կաթողիկոս Վրաց.
էջ 157—158) :

Տ. Իր որդին Վախագ-Տիրաց կը կարգուի
Կաւառ Բ-էն Հայաստանի Մարգարան (1028) :
յետոյ կը փախչի Բիւզանդական հող, նախ

ի Տաքսիս եւ սպառ ի Կ. Պոլիս: Աւելին կը մեղադրուի իբրեւ մեղադրեց Հերակլէի կեանքի գէժ լաւատան դաւադրութեան մէջ եւ կ'աքսարուի Աֆրիկէ: Հերակլէի մահուանէն ետքը (641/42) կը վերադառնայ Կ. Պոլիս. կը հաստատուի նախկին իշխանութեան մէջ: Եւսինս կը փախչի Տոյք. կ'անուանուի Կիւրապոպոպոս եւ Իշխան Հոյոյ. կը վախճանի քիչ լիւտոյ եւ կը թաղուի Դարբինքի մէջ (= *H.* § 15):

9. Իր արդիւնեւորէն (Մեր. 102) կը շինուի յանուանի միայն Սմրատ աստղիտ, որ կը դարձի կայսեր ծառայութեան մէջ ի Կ. Պոլիս (= *H.* § 2): Տե՛ս Ետեւորում:

10. Վարապ-Սիսիակ կը յիշուի Մեր. 117 իբրեւ Հոյք Սմրատ Բաղրատունոյ (Թ. 11): Հաւանորէն առ է լեզրային: Վարապոպոպոյի (Մեր. 98), ուստի արդին Սմրատի նորարոգնունին կոչեցեալ (= *H.* § 4):

11. Սմրատ-Աւելին, Էրբ Արարենքը պաշարեցին Մեծափք ընդդ. ընդանկանները մերժեցաւ Դարբինք ընդդ. Վարապոպոպոյ կայ որդւոյն՝ Սմրատ Բաղրատունոյն մարդ ջրկեցին, որպէս զի պնտութեան հասնի (Մեր. 117): Կը պատմի նաեւ Աւանդ, թէ Կոստանային կայսր Թ. Աշտունոյ աւագ իշխան կարգեց զՍմրատ ոին ի տունի Բաղրատունոյ: Գարժեալ թէ Սուսիս ՅԱՅԻն Դրիպոյ Սմրակունեանի հետ նաեւ Սմրատ ի Բաղրատունի տանէն պատանդ առաւ Հոյոստ

տանձն. բայց յաջորդ տարին (1662/1663ին) Գրիգորին հետ, հասանորդն նաեւ զՄՃբառ արձակեց Հայաստան (— Մ. § 3): Մարկուարտն էր դժուարի այս ՄՃբառը նայեցնելի վարաց-Մահակի համանունն սրգայն ձեռն:

Այն ժիջույին (1657—1658) Համազասպա Դաւիթ Մամիկոնեանի որդին Հայաստանի իշխանն էր հարցուի Մուսախանէն: Իր ժանուրնէն հաշիւ Մուսախան չգտաւիւ իշխանութեանս Հայոց: Երբ փոխանցէր տնոր հղորդ Գրիգորին, որ հախցան նոր իշխանութեանն էր վերադառնալ արաստեցութենէն (1662/1663—1685): Գրիգոր ինկաւ 1685ին Մարտիրոս զէժ մղուած պատերազմի մէջ: Դեպքս էր չիշատակել նաեւ Անանուն ժամանակադրութիւնը¹. Վերադառնալ որդի երարդ Կասառնդի, աժաւ էրկաւ²: Ի տարաւասջին ամիս տիրեցին հաւիտային ողոյն որտան Հազիբ, Հայոց, Վրաց եւ Աղուանից. եւ սպանին ի պատերազմի դիշխանս Հայոց, Վրաց եւ Աղուանից, յամուանն Մահմի. որտար տտն էր ամսոյն, ի ձէլ³ թուականին Հայոց (1685, Յունիս 16):

12. Այսու Ա. պատերիկ: Գրիգոր Մամիկոնեանի վախճանէլէն յետոյ (1685, Յունիս 16) էր յաջորդ զԱհլուս պատերիկ, այլ

¹ Անանուն ժամանակադրութիւն խճողիւ յորն նկատ յի. Կարս, Վէճարիկ 1801. էջ 20.

² Վերադառնալ թ. 1685—1686, յիտանդմ 705—711:

երկուելի և նախամեծար թ մէջ հոգեւորա-
բանն Հայոց, թ առհմէ Բաղրատաւեանցն
(Ղեւ. 16—18)։ Դժբախտարար պատմիչը
յանուանել չի յիշէր Սէնտի Նաչըր, որ ընդուն
է Իմբատ (Թ. 11)։ Ղեւնոյ կը դրաստուէ
գինքը իրբեւ Վանի և պէրն յիշխանութեանն
և յամենայն վարա երկրորդին պատառ և ա-
ռաքնեաւոր, և պնտանկան թան զամենե-
տեան և ճանաթ երբեքին Ստատանոյ, և Նա-
ղարարմաւ ամենայն յարեղարծաթեան, վաղջ
յնոստ 1565 յիւնան և ին։ Կը կասարցանել
Դարբանքի մէջ, չիբարում ստանինն և կեղեցի
մը։ Դասիթ Փնջեղարայ, որ ճի Նրաման
Ստատաւաւ Հայոց կոթողիկան (1565—1567)։
գրաւ է Նաւարդի վրայ նաւ մը, նաեւ ճի
Խեղարայ Սէնտոյ պատերկին, որ կը Նարեկէր
թէ պինդ որ երկուն տանն ընտրիւն յաւ
միտնարայ թանին թ մարմինն, յարման է
բողոտարանան պրաւանք մը (Նրա. Գ. Վ.
Եւփոնիկան, Սէնտաւ, 1566, էջ 271—272)։
Ճի Նարարդ ամի իշխանութեանն իւրայ Կապ-
թան կոզմէրը աքարանկան ապրատանկութիւն
մը ևս մղան մամտանկ կ'իշնայ կուտի մէջ
(1588)։ Թ. 57։

Իշխանութիւնը կ'անցի Նեքր և Նեքր մ-
աւար և Նեքր, որ կ'իշիւ երեք տարի
միայն * (1588—1591)։

15. Վարագ-Տիրոց. կը յիշուի Ղեւնոյ կն

* Հմմտ. Հ. Բ. Նոյեան, Նամարանկանկեր, էջ 140—154։

(ՀՀ 12) որտեղ հայրանանքի հետեւեալ պատ-
րասցային. Ափախմէրսու կոչոյր (698—705)
զհրամայէր տեւից զՍմբատս որպի Վարապ-
ճիբոցի, որպէս թէ թնախնայիք եղեալ՝ պոք
կրնատեւոց նա ի պարացն Յստեոց գտան ժա-
նուան հարն իւրոյ Վարապ—Տիբոցի, պոք
սպանին Հասմբէ : Վարապ—Տիբոց էր հաւա-
նորէն որպիւն Սմբատայ (Թ. 11) որդւոյն Վա-
րապ—Առհանկոյ, տառի եղբայրի Ահատ պատ-
րիկի : Մարկուարտ. ՀՀ 14, Ժ. 2. կ'ենթադրէ
թէ Վարապ—Տիբոց Յստեոց ձեռքը իրքեւ պա-
տանդ կը դրուուէր, երբ Սմբատ տնտեց կողմն
էր. այս պատահաւորս ալ յետոյ երբ Սմբատ
Արաքսացիներու կողմը տնջաւ՝ ի վրէժ սպա-
նուեցաւ :

11. Սմբատ որպիւն Վարապ—Տիբոցի, տն-
ջաւ իշխանութեան պիտիք Ներսէ՛ն Կամատ-
րուհանէն ետքը՝ 421/22—712/13 : Սմբատի
մէկ սաքս արարածնան գերիշխանութեան տակ
պանուոյ Հայաստանի մէջ էր եւ միւսը՝ Բիւ-
զանդանքան հոգի գրոյ : 704ին կայսրը խաղա-
րեւիչ նմո պատիւ կիւրապալատաւ թեանն
(ՂԵ. 26) : 706ին հայ նախարարներու մէկ
ժառիւն հետ անցաւ թիւղանդանքան հոյ, եւ
նո տարի թնակեցաւ ի Կողքիս : Հասանորէն
հաս անցի տեւեցաւ Ստեփանեոս Սիւնեցոյ գի-
նարանութիւնն զրեց Սմբատոյ տապանի
Հայոց երկաթնակիւն, պոք կը յիշատակեն Մ.
Կոպանկատաւացի (ՀՀ 256) եւ Սաւիփ. Օր-
պէլիտե (ՀՀ 97) : Աւելից ընթեւաք Կադանկա-

ստուացեայ անգեղակոթիւնն (էջ 278) թէ
«Սմբատա Հայոց իշխանն» վախճանեցաւ ճՀԵ
թուին (726)։ Ասողիկ Սմբատի իշխանու-
թեան տարիները կը թուէ 23, ուստի 622—
712-713։ Այլ ժամբարանութիւններ ան՝
Մ. § 8։ Սմբատ կը շինուի Դաւիթ Դանկո-
ւոյ վկայարանութեան մէջ. վկայապահիտ սու-
ղեքն էն. «Ան հասնայ ի ժամանակս Սահա-
կոյ Հայոց կաթուղիկոթի (611—705) և
Սմբատայ Բագրատունւոյ Հայոց իշխանի»
յորում Տանիկէ արեւելոյ ունէին գաղթաբն-
Հայոց, և առաջնորդ դարան սր ի Հայո՝
Արդայոյ տնուն, գաւն և շորաբարոյ, որ
միշտ հեղմամբ արեւան անմեղաց դուարնա-
նայր, յազգմանէ շորին։ Այնմ ժամանակի
քմրտեհայ շինէր երանչին Դաւիթ ի մեան ա-
նորինն Արդայոյի... կը նահատակուի խաչի
վրայ գեղարդով ի Դուին։ «Ան կատարեցաւ
սուրբ վկայն Քրիստոսի Դաւիթ, որ սր քառն
և Էրեք կը տրեղ ամայ շուտը երկշարա-
թու, ի վեցերորդ ժամու»։ «Ան յետ այնչորիկ
փութով ի անգին հասանէին՝ Սարգսոկ
Ամասանեաց հպիսկուղոսն քանանայիք և
սիրտի եկեղեցւոյ, և Մուշեղ Ամբիկոսեան
ապարապեան Հայոց, և Արատաւորդ նորին
հղբայր, քաղում ազատուր, և իջալեալ ի
փայտէն՝ տտրան ի Մ. Երեզուր գնչաւար
հրանէլայն Դաւիթ վկային Քրիստոսի. և
եղին ի շորկս Մ. Արդախրուզոթ... և դպ-
պտրդնն, որով խոյնեցաւ, բնդ քառն գան-

կանի յինքն հայցեաց Մուշեղ սպարապետն, որդի Մամիկոնենի և: Ժարդպետի, զի խաչ մեռացուցեալ պատուհայն, յիշատակ արդաց յարդա՝ տունի իւրոյ: (Հայապատում, Բ. § 116):

Դուրիք Դաւեղոսի վկայութեան տարին չնշուի. չէ նշանակուած վկայարանութեան ժէժ, իկեւ լամայ 121, ԲԸ: Կրնոր ոչտարնի ժխայն 636, Եւսեոս 121ին և կամ 703, Եւսեոս 122ին: Վերջին տեղի համապատասխան կ'երեւայ ժամանակագրութեան: Արդյա իշխանին իշխանութեան աւազին տարին չնշուի կը նշանակէ Ղեւնդ (121) երբ կը գրէ: «Իբրեւ ցնաց Մանճու ցարմարն յկարթիւ, եկեալ յաշխարհիւ Հայոց իշխան փոխանակ իւր յամայնացուցն (Արդյա՝ տեւն)»:

Մանճու աւազին տեղում Հայաստան եկաւ Արդյա՝ իշխանի «Պ» տարին (Ղեւ - 19), այն է 667: Երկու տարի յետոյ կը կոտորէ Մ. Գրգուրի թուկիշեւորը (Ղեւ - 20), որո ինքն՝ 669: Եւ ուրաւ կոտորեալ ցայս ամեանայն շարիւ ցնաց անդէն... յկարթեւտան: ուստի իւր 700, 701ին: Այս տարին է Արդյայի իշխանութեան աւազին տարին: Այս ժիշխանին

* Ղեւնդ թվւ: յուսանէ յի իշխն իշխանի, յայն անուոյ գիտնէ թվ վկայարանութիւն և: Թվ Եւփանէն Գրաթանակ՝ թայն (ՎՃ Թ1, ադ. Յփայն) և Վարդան (ՎՃ 71):

* Ղեւնդի (թ2) տարին ոչպէս համաձայնէ կարգու: Մարգարտ, ՎՃ 17, Ղեւնդը Ղեւնդով ուղղուի:

կ'իյնայ Դասիթ Դանեկոյ պիպոյութիւնը :
 Մանակ կոթողիկոս Զորափորեցի պէս կէն-
 պենի էր բառ պիպոյորին և Սմբատ իշխան
 Հոյսատան : աւար Վարդանանկերտի կոթիւն
 չէր պատահան պէս և Մանակ Զորափորեցի
 չէր իջան իսկան : Վարդանանկերտի կոթիւր
 տեղի ունեցաւ 703-704 թմերը : Արդիմելիքի
 ԺԸ - տարին (703 Ապր. — 704 Ապր.) ուստի
 Դասիթի պիպոյութենէն օրոյ տարի ժը ետքը :
 Մանակիւսի էրկրորդ գաղութան Արդիմելիքի
 ԺԸ - տարւոյն (Ղեւ. 31) պէտք է բառ աշմ
 համարիլ 704 գարնան : եւյն գարնան վաթ-
 անակցաւ Կանա Մանակ Կոթողիկոս ի իս-
 րան : Մարկոսարտի յիշած թաւեանները
 (ՀՀ 17) պէտք է սոցղիւ տյա հաշուով :

15. Աշտու եղբայր Սմբատալ : Ղեւոնդ
 (223) կը յիշէ գինքը անգամ ժը. Վերջէր
 (Սմբատ Կիւրապապաւ) առ ինքն (705) ...
 և գեղըտյք իւր Աշտու : Աշտու Աշտու պիտի
 նկատուի Սմբատի հետ Վարադճիքոցի սը-
 գին :

Ղեւոնդի այն տեղին, ուր Սմբատի աբ-
 գիքը կը յիշուին, Մարկոսարտ (ՀՀ 25) Կիւ-
 րապապոսի գաւառներու ժառին կ'իմանայ,
 թայց Ղեւոնդի իստերը յայանաղէս Մամի-
 կոնեան էրկուր եղբայրները՝ Դասիթ և Փրի-
 րար կ'տկնարկեն : Տես այս ժառին գիրը
 ՀՀ 228 և վարը՝ 309—311 :

16. Սմբատ, Վառանկ և Բաղարատ որ-
 դիմ Աշտուոյ սրտորկի : Աշտու պատարկի

(† 688) սոց սրբւոյց անուանեց Ղեւոնդ քաղաքայս չի չիշատակեր, քայց պատմաթեան բնթացքը կը ստիպէ այսպէս համարեմք: Կը պատմէ Ղեւոնդ (էջ 25) թէ Արդարն, Մանուէտ սաափեանի տեղակաշն ի Գուին, կը խորհի բնութեի հոյ նախարարները (765). շեւ տեղէն գաղղաղտեի յայանեցաւ նեկարութիւն նորա Սմբատայ (Կիւրապապաա), որ էր ի տունէկ Բաղրատունեայ, եւ այլոց նախարարաց եւ նոցին հեծեցոց: Այնուհետեւ շեւէր (Սմբատ Կիւրապապաա) առ ինքն գհամազունս իւր գաղաաաթամբ բանակին՝ ոյ Սմբատս գորդի Աշոտոյ իշխանի (պատարիկի), եւ գիւարդ սրդի Քեղարբաթի իշխանի (Մարգարեաեան կոչման), եւ գեղրայր իւր (այսինքն Սմբատ Կիւրապապաաթի) գԱշոտ, եւ գայլ նախարարան (էջ 25): Աշոտեան Սմբատի համար կ'ըսուի թիշ յետոյ (էջ 27): Սոյլ ոյ թոգայցոյց նոցա Սմբատ իշխան կոչմանն Վասպուրականի, որ էր սրդի Աշոտի իշխանի:

Վասակի տնտնը կը չիչէ Ղեւոնդ, էջ 112. շեւէ (Մոսեան) առ ինքն գԱշոտ սրդի Վասակոյ ի ասանկ Բաղրատունեայն: Սր թէեւ Վասակի հայրը յանձն չի չիշատակուիր, քայց ենթադրէի կու տայ թէ Վասակ եւս Աշոտ պատրիկի սրդին է, որ հոր տնաաաթ յորջայլան է իւր տեղրտնիկը:

Կը գրէ գարձեալ Ղեւոնդ (728). Եղիտ

ստաբիլան չկայացածներէր (իբր 752|753) ի վերայ աշխարհիս զմտահանէ որդի Բաղաս- յանապի ի նոյն տանի իշխանին Աշոտոյ (որդաւոյ Վաստկոյ), որ էր որդի Հորեղոսի և ուրաւ, այս ինքն Վաստկ էւ Բաղասրաւս եղ- յայրենիք էին:

Այս արդարեւորական անհարկութիւնը կու տայ մեզիք կուսան Բաղասատունեայ և ուրի հրկնիւսիս, այսպէս:

Աշոտ արտարիկ 4 ՊՅՏ

| | | |
|-----------------|----------------|-------------|
| Վաստկ | Սմբատ
իշխան | Բաղասրաւս |
| | Վաստկ-արտարիկ | |
| Աշոտ Բ. արտարիկ | | Սահակ իշխան |

Սմբատ Բաղասատունոյ գիծը կ'ըլլայի թէ մարտն է:

Սմբատ կիւրապապատի մահու ընդէն (713) ևս թիւ իշխանութեան յաջորդութեան մէջ ընդհանուր մը կայ մինչեւ 752: Այս թուին էր Ստուան տոտիկներ շուրջ իշխան կար- զեց զԱշոտ, յայնժամ չիմացեալ որդւոյն Սմբատոյ զարտարիկ Աշոտոյ, զի մեծացաւ անմեծ ևս յայն շուրջ ևս զարտարիկ Ստուանոյ՝ ևս յայն թեոսութեամբ կ'էին ընդ- նմա (Վեւ. 112): Ինչպէս Տիգրէ իմացած է Պատկանեան (անս ծան. 42, էջ 191) այս Սմբատը Սամիկունեան էր ևս իր որդիքն էի Դաւիթ և Գրիգոր Սամիկունեան եղբայր-

Ներքո: Ղեւնդ լուծ է պատմել մանրա-
մանութիւններ Բաղրասունիկներուն առան-
ձնայատուկ Թմբատ անունոյ կրող Խամիկե-
նեանի մասին¹: Բայց սրբահեռեւ, անոր որ-
դիւր մեղսւած են Աշտի բնորութեան առա-
քիւ, կտրելի է մասունի թէ իրենք իրենց հոր
Թմբատի անորութեամբ իշխանութեան յա-
ջարդութիւնք իրենց տունին իրաւունքը կը
համարէին: Անոր անհասանալիան չէ կար-
ծել թէ Թմբատ Կիւրապապայի մահէն ետքը
իշխանութիւնք յանձնուած ըլլալ Թմբատ
Խամիկեանեանի, հասանալէն Խաչիկ ուղարա-
պետի որդւոյն: Կտեւ քաղաքական պարա-
գաները հասանալիան կ'երեւցնեն այս ենթա-
դրութիւնք: Թմբատ Կիւրապապայի իւր ան-
հասանալ մերթ Լեւոնացոյց եւ մերթ Յոսե-
ֆայ միտող քաղաքականութեամբ չէր ար-
ժանացած Խմբապետի պատահութեան:
Կտեւ իր որդին Աշտ մանակցած էր
ԴԱՅԻԱՎ Գարգանակերտի կուսին, ուր Լեւոն-
ացիները մեծ պարտութիւն կրեցին: Հե-
ռուարտը Կիւրապապայի մահունքէն ետքը
չէր կրնար իր առնոր յաւաք թէ պիտի յանձ-
նուի իրեն Խմբապետին Հայոց իշխանու-
թիւնը կամ անհասանալութիւնք: Բայց Խաչիկ
Խամիկեանեան, որ ԴԱՅԻԱՎ պարապետ էր եւ

¹ Անշուշտ ոչ ասանց նպատակի, Թմբատի որ-
դիւրնու պատահանութիւնը Աշտ Թ.ի անկէ պէտ
կրնար պատահաւ կամ քրջալ յանչաւ այդ քաղաքում
որդիւրնու հոր քաղաքականութեան մասին:

որդի զմարդպանի», հորուդ էլ զփոսանութիւն ներշնչած բոլոր Սմբատացեալին ի նպատակ իւր աւանդին հաստատութեան, եւ այսպէս Սմբատի ժանն յետոյ իշխանութիւնը մղած Սմբակունեաններուն, յատկապէս իւր որդւոյն Սմբատի: Մարկոսարա (էջ 27) միայն «Սմբատ» անունէն չփոխելով՝ նշանակարէ ներառապատի զայդիւնը, առանց միադնելու: Նկատելին ստեղծ ստեղծ շնչաւ իսկապէս, երբ նա Աշոտի հակառակորդները Սմբակունեան Սմբատի որդիները կը ներկայացնէ (էջ 112, 118, 120): Թեպէս Ասմհաննէն Գրատիւնակերացի իւր ազգբնիկ ժէջ այս Սմբատը կարգացած եւ ներառապատի հետ շփեալ է, երբ Բագրատունիներուն հրապարակութիւնը հետեւեալ պէտքէր յայտնել: Վարդաճիւրաց, Սմբատ որդի Նուբա, Սմբատ (ներառապատ) որդի Սմբատայ, որը Արդաշ Ստեփանի Կոթողիկոսի հետ շփեալակապ Գամակոս կը դրէ: Եւ բնիկ նմին եւ զիշխանն «այս» զՍմբատ որդի Սմբատայ» (էջ 94): Մարկոսարա ուրիշ նկատեալ է անդէկութեան աննշխութիւնը (էջ 27): Միայն իշխանութեան յաջորդութեան ժէջ երկու Սմբատներուն յիշատակութիւնը կրնար այսպիսի շփեալակեան արիւթ բնաւանդ բոլոր:

17. Աշոտ Բ. արարիկ արդի Վասակայ: Մէքն, երբ Մուսան Նախատանի աստիճան նշանակուեցաւ եւ հասաւ Գորին, զկուլ տո

ինքն գիշտաւ որդի Վստանկայ ի տանել Բաղրատաւանայ եւ ապա եմա իշխանութիւն պատարտկութեան ի վերայ աշխարհիս Հայոց Նրաման ետ շէջմայ, եւ թողում պատուով պանկը պնայ (Ղեւ. 112): Այս քնարութիւնք ամղուն թաղաց Մամիկոնեան երկու հոգոյքները՝ Դուխիք եւ Գրիգոր, Սմբատի որդիները: Դուխիք կը սպանուի Աշոտի սողաւորը, իսկ պատարկը դուն կ'երթայ Գրիգորի վրէժխնայ գրութեան: ԴՅին կը խաւարեցնէ Գրիգոր Աշոտի երկու ուշքերը: Աշոտ կը վախճանի ԴԱին եւ կը թաղուի ի Դարիւնք (Մ. § Խ. շմտ. եւ վերը էջ 238—245, որ եղբարեղն խոսան ենք իշխանիս վրայ):

Հասանդէն այս Աշոտի մասին է Աւագ թիւոյի աւելիքս. չեա մամանակաց Աշոտ Բաղրատաւանի պայ ի վանին ի վանս Գեանկայ, յերկրին Արշարունեաց, տնայաժող ղյշխատակ Սրբայն (Թաթայն), եւ ղնխաւանայն շխեւ Նրամայն, եւ անուանէ պնա Այդի, եւ հասաւտուան գրով ապայ ի վանքն... (Հայտապատում, Բ. § 151):

Աշոտի որդիներէն կը յիշուին Սմբատ եւ Վլասակ:

Աշոտի հաւաքանալէն հարբ իշխանութիւնք կ'ունցնի Մամիկոնեաններուն, նախ Գրիգորի եւ ապա անոր հոգոր Մաշեպի շտակուս ինչ մամանակս (Ղեւ. 121):

12. Սանակ որդի Բաղրատաւայ: Իւր ԴՅին Եգիս ստախկան ճկացոյցանէր ի վե-

բայ աշխարհիս պիտանի որդի Բաղարատայ
ի նոյն ասեմի իշխանին Աշտոտ, որ էր որդի
հարեցրոր նորուն (Ղեւ. 128)։ Բր որդիներէն
ծանոթ էն Աշտո եւ Բաղարատ։

19. Ամբաստ որդիս Աշտոտ։ 773ին, երբ
Մամիկոնեանները ապստամբեցան աքարա-
կան իշխանութեան դէմ, պարզեցուցանէին
զմեմ ապարադեան Ամբաստ որդի Աշտոտ
(Թ. 17)՝ հասանել տնիմ խորհրդի (Ղեւ.
132)։ Ամբաստ տկամայ տաւա իր հասանա-
թիւնը, որովհետեւ փեայ էր Մամիկոնեան-
ներուն։ Բր բանակը կը պարնէր Կարնայ ա-
ստմ. յայց Արնէլի ասփեւ հայ բանակի պար-
տութիւնը ոտիպեց զինքը թագու։ Կարնայ
պաշտարարը եւ ապահով անդ ժը ամբոնայ։
Բողբեանկի Արմնի գիւղի ասփեւ բախեցաւ
թշուառայն հեա, ինկան պատերազմի պաշտի
վրայ չի ասեմն Բաղարատուեան ապարա-
պեան Ամբաստ, եւ Մահակ՝ բարձակից եւ
նիգապակից նորին... եւ Մամուկ տէր Մա-
միկոնէից, որ էր... աներ Ապարադեանին
մեմին (Ղեւ. 131), չի հրտից ի մի. յա-
ւար Էրկուշարաթեւի, այս ինքն 775 թագի
24. Բէ. 2)։

2 Հրտից մի. կը համապատասխանէ 773ին
Ապրիլ 25. Գլ. աստի զեւր է մի կարգայ մի, աստ-
եայս համար երկուշարթի. 2. 2. Աշխ. Արա-
րատ. 775 կը նախնարէ 25 Ապրիլ 775, ասանց միս
զնկու որ այս զեւրին Բլ. զեւր է ուղղել Գլ. Մար-
կուարտ ապստամբութեան տարին եւ Արնէլի եւ
Արմնի կախիկը կը համարի անկի տեկամ 771 թ.
772 տարեներուն իջ 25 իմա, եւ Südaermenien.
էջ 77-780 հան.։

Սմբատ թողաց Երկու որդի՝ Այստ և Շապուհ :

20. ՀՎասակ որդի Այստայ, եղբայր Սմբատայ սպարապետի : (ՂԷ. 141, 146) Նոյնպէս ժողովեցան իր 771ի աշխատարարներն և իր տեսնութի իր անձը Արշէլի Տաղատաւորներն ձէլ 1775 թուորի : Չնկն թիւ յառաջ, ուր պարտուեցան շապուհ Կերեանց թէ Հասակ Կուսէն յետոյ փախաւ Վրաստան, իտոյս տարած յաղթանակին վրէժիեղբարներն առնիւ : և հան՝ Կարաբագ-Տոյք, հիմնեց Արդանուզի իշխանութիւնը : Վարդան պատմի : (ՀՀ 70) իր տոհմաւոր աշխուհ իր դնէ-սէն առաջ իշխանն իսմայէլի Աշոտի՝ որդայ Աւարներունի, որդայ Վասակայ, որդայ Այստայ շապուհ իշխանի՝ դերկիրն Վրաց, որոյ Երթեալ Շապանդեցաւ շանէ իրքան - և Կարաբն առաջ իմա պատիւ Կարապետաւորներն : . . . Բայց Կարապետաւորն Այստա իրքեանց ի Կարաբագ ժինչեւ ի Տիգրիս լեռնակողմորն հանգերն : Այս Աշոտէն անրեցան Արդանուզի իշխանութեան պայտաւորները, հմաւ. Մարկուարտ, ՀՀ 101-ա 150) :

21. Իսպարաւտ սպարապետ : Այսպէս տունաց հայրանունն իր յիւն դիւրը Ղեւանդ ի թիւ ունի հայ նախարարներու, որոնք իշխան Տաւադ Անճեւացոյ հետ մասնակցեցան Օթման ստաբիլներն արշաւանքին հիւսիսային ազգերու, զէժ և խորշակաւոր եղան

Գերբեկեցի առկէա 786ին (Ղեւ. 161)։ Անուես Բաղարատ Լեթապրեւէ կու տայ թէ աղարատեան Բաղարատեան նիւղին կը վերադարձի։ Հասանարէն Սուրեկ իշխանի սրդին էր, եղբայրն Աշոտի։

22. Ղեւոնդի յիշած Բաղարատեանի Վիսկովն՝ թարմակիցն էւ նիգակակիցն։ Մարտապարտակաին, որ 775, Ապրիլի 24ին ինկաւ Արմենի ճակատամարտին մէջ, հայրանաւոր ծանօթ չէ։ Թէրեւս ըլլայ Բաղարատի որդին։

23. Աշոտ օրդի իշխանին Աստուրաց։ Մտնու ժխարսեանց ի գործ Փետտակաւ տղէտին (Ղեւ. 142)։ Այսինքն 776ի տղտամարտութեան էւ յետագայ կռիւներուն։ Ինքը կրտսերն էր աղտամարտութեան օրերուն Խլաթի մէջ, ուր էր հրամանատարն Ամրարտեան թանակին զորախը։ Ստաթի Աշոտ իւր շնորհութիւնը տալանեց աղտամարտն գաւառաւորէն գորա, հասանարէն Խլաթի էւ Անձեւաւցեանց երկրի կողմերը։ Աղտամարտութեան ընկնելէն ետքը հասանակուն է կարծեմ թէ Արտաշէսէն Հայաստանի իշխան կարգուեցաւ Աշոտ։ Իսկ աղարատեանութիւնը յանձնուեալաւ (անոր եղբոր) Բաղարատի։ Այս տղտքին Աշոտի իշխանութեան տարիները երկարեցան մինչեւ 801։

Տաճատ Անձեւացի կտրն ծանանակ միայն կրցաւ վտրել Ամիրապետէն իրեն յանձնուած իշխանութիւնը (787—785)։

Արտֆիտեւ: 1775-ին ժրնշեա. ՏՈԿ չի յիշուիր յառուտեմէ Հոյսասանի իշխան, ժեր այս եւս խողորութիւնը կը դանկ հասանականութիւն: Վարդանի հետեւեալ տողերը ի նպատակ կը հնչեն այս եմթաղութեան: Վնասարան յայտարար գոյր եղիակապա մի Եղիկոստա առ Սէտա եւ Գանայր պարճուցանել զնա... Ահա այնորիկ վարձանի Սէտա ի ժաշինա եւ ասանս գիշխանութիւնն Սմբատ որդի ետրա առ մի. եւ արգա ժարասուցեալ ընդ յարից հազարաց հինգ հարիւր արամբ՝ պասկի ի Քրիստոս յամայն յականացն: Եւ եղբորք ետրա Իսաիի եւ Սահակ եւ Սահակ եւ Բազարաւ առեալ զմայրն իւրեանց շողան ի նիքիներս առ Ստա յաճի ածիրայ՝ սիրով լեկաշեալք ի նմանել: (Էջ 78):

Աղիկոսայի յարջը յուզուած խնդիր-նէրը տեղի ունեցան ՏՈՒՆ, ուղղակի Սմբատեան Սէտաի հետ, որոտի Սահակեան Սէտաի հետ անմիջական կապ չունին: Այս կէտի մէջ Վարդան տղքի աստիճանեցան է տարրեր ողորդիւր: Իսկ յաջորդ ժամրամտեութեանց համար իրեն տեղեկութիւններ հայթայթան կ'երեւայ Շապուհ պատմադիր: Կրկին ողորդիւրներու մէջ յիշատակուած Սէտաները Վարդան իշխանացուն է: Չեմ կրնար համակարծիք ըլլալ Ստրկուարաին (Էջ 67), որ Վարդանի հողորդան այս կարեւար ժամրամտեութիւնները անվարկական ողորդիւր ըստուած կը համարի: Արտֆիտեւ այսպէս

արհամարհումն են Վարդանի այս առիթբը, առեղծումն է Մարկոսեոսի քոյք թո՛ւ և, և քո՛ւ մը նկատմամբ Աշտու Սմբատեանի սրգիներու, որ միայն խնդիրք էր մթաղնէ և, նոր քարդութիւններ էր շտապեցնէ, առեղծ նորոտեւելու որ և, է կերպով պատմուածքէն շտապեւթեան:

Վարդանի ազբիրը Սահակեան Աշտու նկատի առեցած է հաւ. և, անո՛ր արգւտք առեղծները թաւած. և, որդէն Քաղարատ և Սահակ անուանները ցոյց էու տան, որ խոտքը Բաղրատանի առն Քաղարատեան նիւղի մաւսին միայն կրնայ ըլլայ:

24. Սմբատ, Գաւիթ, Բաղարատ, Սահակ, Մաշեղ, Հոթիմիմէ, Կ. Կ. նդիմէ և, ղոտեթ Աշտու Սահակեանի: Վարդանի գերբ յառաջ քերտած առեղծութիւններու համաժայն Աշտու մանտրնէն († 804) ետք իշխանութեան գլուխը տնցաւ իւր որդին Սմբատ, որ հողիւ տարի մը գայեղան իշխանութեան մէջ՝ վարտնեղան պատերազմի գլուխի գրայ իրպաթ կուտի մը մէջ՝ ճարտուցեղայ ընդ շորից հաղարաց նիւղ հարիւր տրամբ. առտի իր իշխանութեան մէջ տաւ ինն պէտք է հաշուել 804—805:

Պայտպատութիւնը տնցաւ Սմբատ ուղարակտի († 775) արգւտքն՝ Աշտուին, որ Բաղրատանի առն երկրորդ նիւղէն էր: Սմբատ իշխանի եղբորք իրենց մորը հեաթան Նիքիկեա (Ամիգ) տեաակցեղու ճեառ

յաֆ ամերայիս հետ կամ յոտ հետ խնդրելու
ունար շնորհիւ - ոչոք չըջանին ամերայեանս-
թիւան պանի վրայ կը բացվէր հարսուն էր
Թաշիզ (1786—801)։ Արտփհանի ամերայէն
տիրութիւնը բնութեան էջուն, ոչւար է բանի թէ բն-
ութեանը չեղար իրենց խնդիրքը։ Աւարայոյ
չըջանի պատմութեանն կը աւանուի թէ
Աշտուի արգիւր մեւք շերին Վասպուրական
Տարսն-Կարանայր (Անմաստցիք) գիծը։

25- Դասիք կը ներկայանայ խնամակար
Վասպուրականի (II - § 17, տե՛ս վերը՝
էջ 208)։

26- Բարաբարտ, ուէր Տարսնի, իշխան
իշխանոց Հայոց (II - § 19 - հմմտ. վերը,
էջ 204)։

Իւր հրեք որդիները կը բանաին Տարսնի
մէջ (Անորդիք 187)։ Եանտանի կը յիշուին՝
Աշտու Կիւրապաղաւ, իշխան Հայոց (Թոմս.
Արծը. 218)։ Կամ Կիւրապաղաւ Տարսնոյ
(անգ. 220, 221) և Դասիթ (II - § 22, 23)։

27- Անխաղ ստացաւ Կորդիք-Տաւրիքը
(Անմաստցիք երկրորդ) (II - § 18, տե՛ս էջ
273 և շար. 1)։

28- Իւր շնորհի մասին կը յու պատմաւ
թիւնը։ Թէրեւս ինքն ըլլայ Իւրայ իշխե-
ցողը (II - § 20)։

Իսկ գրեւոր՝ Հովսիփիմէ Վասպուրա-
կանի տիկինն էր, կինը Համգաւ-Համպաւայր
(հմմտ. վերը 207)։

Ա. Ա. Կիւրճիկեան Բարդուղէոս, կիկնն Մասնայի
որդւոյ Զորաւարի, տեսածն Արցանայ (սեւ'ա
էջ 266) :

Ա. Ա. կիկնն Մարտաւ Սպարապետի,
որդւոյ Աշոտ Մարտիրոսի :

Ա. Ա. Աշոտ Գ. սյուրի Ամբաստանայ սպարապետ
սկսելի. Մանգոստեանա Աստղիկ (էջ 170) : այս
չբնական չոյ իշխաններու յաջորդութիւնը կը
նշանակէ տայտէն, զիսկ ըստ իշխանացն
կարգի ինչ (յաջորդ) : զկնն Մարտաւոր որդւոյ
Աշոտայ՝ Աշոտ որդի Նորա, որ Մարտիրոս կոտ
չիւր՝ տմ'ա ինչ : Աստղիկ տեսն չտակցածն է իւր
տայտէն (Տեսնու չոտաւարի) : Եւ տայտէն
խանգարածն է Մարտաւարի տեսն իւր
որդւոյ ինչ : Ինչն չտակածն էն Վարդան
(էջ 82) : Եւ այդ, որունց իւրին մէջ տակ
Մարտաւար (16) : Այդիկ է որ Աշոտ յա
ջարդածն է իշխանութեան մէջ զկնն Մար
տաւոր որդւոյ Աշոտայ, իւրից յաջորդութեան
իւրաւորութիւնը չէ ժամանակայն չորդի Նորա,
իկն է տատայի որդի Մարտաւոր սպարա
պետի որդւոյ Աշոտայ : Աստի յայտնուելն
իւրիւրեւորութեան տակի տեսն է սպարա
պետի իւր Մարտաւ Աշոտի որդի Եւ իւր
Աշոտի Մարտաւ որդի իւրիւր զորդայի իւրին :
Այս անձնորդութիւնը կը տեսնուի նաեւ անկէ,
որ Աշոտի չոյրը Մարտաւ Երեւն իշխան չէ
Եւսն, այլ իւր տատաւորի, միւր Աշոտի
որդին Մարտաւ, ինչորդ տեսնուելու Վար
դաւի յաւաքութեան իւրին, տարի մը զանկն

խաղած էր իշխանական տիրապետով: Կ'ստու-
գայրկեմ Ռուսիոյի տեղիքն հարգայ՝ ողկնի
Սմբատայ որդւոյ Ռչոսայ (որդւոյ Սահա-
կայ)՝ Ռչոս որդի Սմբատայ (աղաքապետի)
որդւոյ Ռչոսոյն:

Ռչո քաղաքաւթեամբ իշխանութիւնը
Քաղաքաւթեմ տան Քաղաքաւթեմն ճիւղին
տեղացւ Վասակեանն ճիւղին. իսկ Քաղաքա-
ւթեմը (Ռչոսի որդիք) քաղաքացւն հարա-
ւային Հայաստանն եւ պարձեցին ինն իրքեւ
մասնակեան իշխաններ:

Ռչո Ռչոս Ռուսիոյիէն եւ Վարդանէն կ'ա-
նուանուի զմասակերս: Ռուսի մասնակերսն
Ռչոս. Ռուսիքա Ռարիք իրն Ռազմա կը կոչ-
վինքը Վերսիւթարաւ Ռուսիս իրն Սին-
քաւս պատրիկ Հայոցս (սեւ վարք), ոչո-
րնքն քաւ հայկապանն շնչման՝ Վայարաւս
Ռչոս որդի Սմբատայ իշխանն Հայոցս: Ռչո
յարթորեամբ իւր պատմադրքներս համա-
մայն կրան է սոցա հաւե իր որդին Սմբատ
աղաքապետ, որ Ռայարաւե կոչեցաւ:
(Ռուսիոյ, 166. Բալմ. Արմր. 173. Վարդան,
79):

Ռչոս հաւանորէն իր կցար Ռայարաւի
հետ գեւ տեղափահաւ էր, երբ Հայոց աղա-
քապետն Սմբատ որդի Ռչոսայ կը հունա-
տակուէր 175, Ռարի, Սինն Արմնիի կոսիքն
մէջ: Գարունն գերէնքն տեղացն երկու կը-
քարք աւանն են տրոգէն եւ հեամամուս են
հաւանորէնքս: Ռայարէն կը մղաին գեղ-
պէս:

Արշարունիք ևւ Շիրակ (սեւ ոյս մասին երկար՝ վերը էջ 17—20) ։

Շնին ի Դերեկոյ վարձանսն էր վերջին Կամարականն Ներսէ՛ : Արշարունիքի և Շիրակի տէրք : Եւնէն ի վեր Բաղրեանդի աղբերք՝ Մամիկոնեանք հնաշան էին հրապարակէն . զի մին ի յերկնայա տրդւոյ Մուշեղոյ Մամիկոնեանի † ԵՄՆ՝ իսկ վերջն յամստնութիւն Քաւարքի ուժեմն Բաւայեւոյն : իմկունս ասեցոյժ գնաց . ոյնքն փոքիւն Քաւարքի ուժոյժ պաշարանէ : Մամիկոնեանեանք կաշուաները ընդդէմ Բաղրաւանիներու , սրանք հար մըցտէիցիներն էին Մամիկոնեանեանքու : Եւ սրոյհետեւ հրահատ Կամարականի կիւր՝ տիկին Ծուլանիկ Մամիկոնեան էր և իր որդին Ներսէ՛ Կամարական վարձանսն էր անստանդ († ԵՄՆ) , ուստի Քաւարք կնոյ մաստնդուս թեան իրաւանքք կը տարածէր նաեւ Կամարականներու հողերու վրայ և կը խնարրանագրուէր գանձեր : Բայց Աշոտ և Ծաւարուհի , սրանց մայրն նոյնպէս Մամիկոնեան էր (ՂԵ . 151) , հաստատ իրաւունքով հրապարակ էլան և թէ զկնոյժ և թէ զբաժոյժ աշխատեցան տիրանայ Արշարունիքի և Շիրակի , նաեւ Բաղրեանդի : Ասողիկ (1196) իրանցոյժ Աշոտի մասին կը գրէ . զմա գանձադին տրտը զգաստն Արշարունեան յազդէն Կամարականաց և պարտնիսն ի կապոյտի ղԱրշարունիս փոխեաց . նայն միւսն

տակը ժողովրդամանրէն կ'արտայայտէ Վարդան (էջ 76)։ Վրոյ որդիքն Աժբատայ Աշոտ եւ Շապուհ հասարակ յատանեցին գնացրեալ իւրեանց։ Աւագ Քոչարոյ յազնաակեայ էր ժողովն ինչ յԱրշարունեայ եւ խորհէր տիրել ի մեռն կնոջն քոյր աշխարհին, պայն տոխն յինքեանս Աշոտ եւ Շապուհ - եւ երեսըր պնդամբքն Շիրակայ՝ հանին պարսն Բաժայէջի (այսինքն Քահաղայ) որ տեղ, եւ գրաւեցին յինքեանս պնիրակ եւ պէկոցք եւ պաւտուն Քաջայ։ Աւ աշտղն բոտ քախտին երեայ Աշոտի քաղի՝ շինէ պնամախ (իմա՝ զմեքն Շիրակայ) եւ յնակեցաւցանէ ի նմա պնդանիս իւրն։ Այս ետանանմեքր կը պատահին հասանորէն ՏՈՒՂԻ յառաջ։

Այս Աշոտն է, որք կը յիշէ Բագրատ. Վրոյր եւ իշխանն Բագրեւանդեայ եւ Արշարունեայ Աշոտ, որդի Աժբատայ, ի վանքս (Բաթրայ Մարարունիս) եւ ապա պնտակայս հաստատուն գրով եւ պնակայն ի Վանգոյս, ի ողտս վարդապետացն որ պարչութեան ստրուտն ունէին, եւ զտուրք պիքն յորինէին, որք էին երեսուն եւ վեց վարդապետքս (Հայտապատում, Բ. § 171)։ Տեսանք վերտգոյն (Բ. 17) թէ նաեւ Աշոտի պապն Աշոտ պատրիկ առանձին խեղճ տարան էր վանքիս։ Այս այցելութիւնը պատահուն բլլալու է ՏՈՒՂԻ յառաջ, այս ինքն նախ քան Աշոտի հայաց իշխան կարգուիլը. որտի այս միջո-

ցին ախրացած էր արդէն Ահում՝ Մազրեւանդի
և Արշարունքի։

ՅԱՆՔԻՆ, Էրբ Մժրտտ Ահումեան միտակց
իշխանութենէն հարբ ինկաւ պատեւարացի
դաշաի վրայ, փոխանարարութիւնն տնցաւ
Ահումին։ Այս հոգաւ տնչաւ չառնաւայն աւիա
բաղիտի կարգադրութեան։ Մժրտաի հոգ
բարբ, ինչպէս կ'երեւայ, Ահումի հետ հո-
մանայնութեամբ հետացան Կարգաւէն պէպի
հարաւ, սիրտնտոյն Տարունի, Մարդարեան-
կանի, Անանայեանց երկրի։ Իսկ Ահում փո-
խադրեց իշխանութեան կենդրոնը յԱնի ճի-
րակայ, ուր կը պնծուէր արդէն իր նստոցը
յառաջացոյն։

Ահումի իշխանութեան հասնելէն հարբ
պատահեցան հասնարէն հեռեւեար զէն-
քեր։ Արքայի տնակաւորութիւնը աւզահո-
թիւն յայանեց թէ այլապիմերա տնդոցար
յարմարութեանս անթարկուած են։ Ահում
փոխադրեց պանոնք Տայք (Վարդան, 77)։
Կախենքը Քահապի տուն հետ շարունակուե-
ցան, կը դրէ այն մասին Վարդան, զրայց
ստունն Քահապայ գորացեալ ի Դուին, իրքե-
հինդ հազարաւ կամեցաւ պնդ ի Տարան յիշ-
խանութիւնն Ահումայ արդայ Մժրտայ։ Իսկ
արքայահին այն և բաժն հաւտաւեցեալ էր
ընդդէմնոյս՝ շիմայեալ հաւտքան գորացն,
և կոտարեալ ի ծոցունի զերեք հազարան...
և Եսայուն էզրայք նորա ապաւանկեալ ի
կազմանն Դուինայ և աւեալ աւար բազում

դասնայքս 1781: Կր գժուարիմ հասաւաւ թէ
Տարան այս շրջանին Աշուրի իշխանութեան
մէջ բխար: Տիկէն ետքս այս կողման աւերն
էր Բաղարատս Աշուր Սահակեանի արդին:
Թերեւս Գորիսեքս ակնարկուած բնոյ հոս
«Տարուն» գրչութեամբ:

Քաշապի տան թշնամութիւնը Աշուրի
դէմ շրջափակեցաւ այս մեծ պարտութեամբ:
Վարդան (էջ 79) կր պատժէ նաեւ թէ
«Սիւսպար անի ի տանէ Քաշապայ շորիք հա-
գարսը կոտեալ բնոյ Աշուրի եւ բնոյ կարսը
իւրում հաւանոյ, մեռաւ Շապուհ ի պատեա-
րագին: Եւ զինի երկուց ամաց մեռաւ Աշուր
ի տան իւրում» (829):

Աշուրի որով հասաւ ի Հայս Թէպարատ
Ապրիկտայի թագիթը, գար ապարկած էր
Թովմաս Երսեռայէմի հայրապետը բնոյ մէջ
811—813 տարիներուն: Թ. Ապրիկտաւ նաեւ
տեմամբ ներկայացան է Աշուրին: Այս առ-
թիւ թղթակցած է Աշուր Abū Rūḥa Chabīb
ibn Chādha Տեղբորեցի աւարի վարդապետ-
արն հետ: Վերջինէս հասած են մեզի երկու
թուղթ, որոցուն տա պատրիկն Հայոց
Abū-Chabwās Asuchā ibn Sinbat: Աշուրի փառ-
փառն էր, որ աւարի համբաւաւոր վարդա-
պետն Հայաստան պայ եւ վերէն Ապրիկտայի
հետ: Բայց նա կ'ապարկէ իր փոխարէն էրխան
ապրիկտայը: Այս էջիւնը հաւանորէն նայն է
նաեւ որոգիւտագին հետ, որ ինչպէս Գրանիւ-
սիոս Թեյմաւնեցայ մէկ հաստատէն կ'ի-

ժամանք, եկաւ Հայաստան գիշերաւ Ապրիլու-
րայի չեաւ և զԱհաւ և անոր արգիւնէրն² եւ
տանց մեղքով քաջոր չոյնըստ պաշտօնաց
Ապրիլուրայի գորգապահաւթեան աւփեալ³ :

Ահաւի արգիւնէրէն ծանոթ է մեզի յա-
նաւանէ միայն Խժրատ :

Ահաւի ժամէն յետոյ իշխանութիւնը ան-
ցաւ Բաղարատի : Ահաւ Եսէնեկեանի արգ-
ւոյն :

30. Եսայուի որդի Խժրատոյ եղբայր
Ահաւոյ : Անոր խնդրանք զրեց Ղէւոնդ երէց
իւր Պատմութիւնը : Եսայու չի յետի
պատմութեան մէջ միշտ աւերմիւր իր եղբոր
Ահաւի : Կա ինչաւ Կոտի պաշտի գրայ 822 թին :
Իր ժամէն յետոյ չիմամէր (Խժրատ ուսերաւ
պեա) զմեայեալ որքոն՝ զարգիւն Եսայու,
ընտեկեցուցեալ զճառս յԱնի յապահագոս
(Վարդան, 79) : Եսայու չի արգիւնէրէն անա-
ւով ծանոթ է մեզի միայն Ահաւ (Ապրիլ,
144) : Իր ժամին ինչ ինչ տե՛ս գերը 17 և
չոր :

31. Խժրատ որդի Ահաւոյ, սարապան

² Քննել տես ինչ զեւ անոր ազգանից Ահաւ
(Ամենեկեան) իշխանի արգիւնէրն : Խոսք տուեց տա-
րափախ Բաղարատի և իւր եղբայրներու ժամին է :
Եսայու չիմարտմը Բաղարատի չեաւ անգիւնէնըս-
տով տե՛ս Ահաւեկեանութեան ճարտի մէջ :

³ Այս խնդրներու ժամին ժամրամանութիւններ
տե՛ս իմ Խաւեկեղարան չեաւապատմութիւններ : Ա
Վիճեմ 1922, էջ 118—120 եւն : Բաղարատեանոյ չիւ-
ղապատմեան չամար ինմ տալեկարգ տաւ իր չեա
Մարգարատի արգիւնութիւնը, որ չեաւ էր զիւ տա
զիւր Լանդպարէն :

Հալոց: Երբ կը գտնանէր յինի Ահաւ
պաարքիկ, իր որդին Սմրաւ կը գտուէր ի
Սամարա պատանոց. այս ժամին կը գլխի Ահաւ
գինի (166): Իսկ ի ժամկալքեան պատանոց
ի Սամարայ ի գրան արքանեանցն յաւուրս
Ռոյաին Հարանոց (166—167): Եւ այսպէս արք-
ձանեայ յՍՀ (167) թուականին՝ Էկն ի Հայո
Եւ շինեաց ձեռակերտ մի յԱրարանեաց
գաւառին եւ տնտեսանեաց Արարեայոց: Ռոյաին
մերապարմն անդի ունեցան է շինող իւր իւր
ժամուրնէն հաւրս: Իւրից յեն Ահաւիկի տո-
ղերը երբ կը գրէ թէ զգինի արքա (Ահաւոց
Նոր իւրոց՝ պայագրաւեաց գինիսանութիւնն)
Սմրաւ որդի ետրին, որ Արարանեան կոչեցաւ՝
ամա էւ. գաւն գի մինչեւ ՏՆ Սմրաւ պարս-
պապէս արարապէս էր: Հայաստանի իշխան
տնտեսանում էր Ահաւին Եւրո Բաղարաւ,
Ահաւ Սահակեանի որդին, Տարանի տէրը,
որ անեայ այս թուականէն (1626) կը կոչուէր
Իշխանոց իշխան: Նմա. Առիւ. Գրաւո-
թանակերացի, ՀՀ 116 (Կոյ. Տիւ.): Եւ
գաւն գի ի ժամանակին (1610) Բաղարաւ
Բաղարաւոյնի նրամանտար եւ իշխան իշ-
խանացս Հայոց գտանէր առ նմա: Կաւ Գու-
թողիկոսին Առիւտնեան Սփայեայ: Այս
շրջանին Սմրաւ կը եկեղեցանոց շինէ ապա-
րապէս (անոց 116): Այսպէս նաեւ Թոգմա
Արարանի (ՀՀ 107), խոսեալ ՏՆ գլխակերտ
ժողովին կը գլխի. Իշխան Տարանոց Բաղար-
աւ, գաւն գի անէր յայնժամ պայտաւ-

բուժիչն բարձունքու թիւն իշխանաց Հայոց, որ էր ի առնմէ Բաղրատունեաց: Միայն ՏՆԱՀն յեանց, երբ Բաղրատուն գերի տարուեացաւ Սամարայ, կարճ ժամանակով կ'երեւայ թէ կարգուեցաւ Սմբատ իշխան Հայոց:

Ի սկզբան, երբ գերադարձաւ Սմբատ Հայաստան, աւել իդաւ միայն Հայքենի կաշուածներուն: Քիչ յետոյ հասկացուի թիւն տարեւոյ ընդ Սեւազայի՝ աւտու ի նմանէ պատմիւ Հայքենի ապարասպետութեան՝ (Վարդան 75), «Հայքենի» ոչոքինքն իւր պատգին՝ Սմբատ ապարասպետի տեղահան ախտացոր: որ ապա փոխանցած էր Բաղրատոյի 1† 786) եւ ոչմուհեան գաղթած: գտնէ ժինչեւ 826 չի յիշուիք պատմութեան մէջ Հայ բանակի ապարասպետութեան տիրացոր: Սեւազայ խոստացած էր Բաղրատունի աւտ եւ կ'երեւայ թէ այս անտարարնով սեպհապանած էր ստապարասպետութեան պատմիւր: Այս պարագայի յուսարանութեան կրնան ծառայել Սոփ: Երեսնանակերտցոյ տուգէրս (էջ 115): Վրնկ Սեւազոյ ոմն ի պարտիկ առնմէ, որ տուեալ էր իւր կին քիւրաւսուտի ի Բաղրատունի տունէ եւ ի մեռն այնաքիկ զյուրով մասն երկրիս բանակալեալ տեղահանմարտի իմն տիրէր: Ենարչիւ այս դաշնակցութեան Սեւազայի Հոյ ոտտիկունի զէմ մղած պատերազմին մասնակցած էին նաեւ լմեն ապարասպետ Հայոց Սմբատ եւ Սահակ Սիւնեաց աւեր (ամգ, 111): Սոփհեան

Իսկա ա. ս. Մուհամեդի ս. արու Սուլթանի
Հայր 811—826 տարիներուն գտնուած է
Հայաստան, կը կարծէ Մարկուարտ թէ այս
պատերազմը տեղի ունեցած է 825/826ին։
Այս դէպքին պէտք է Սեւադայի Հեա կնքուած
խաղաղութիւնն եւ, ապարտպետութեան տառա-
ջումն ալ 825/826ին գնել։

Այս քայլը Մարտի Հետտեւտութեան
ժէկ տուտաւորեան է։ Զանազ Միջոտ Կաւ
Բազրատունի ժիւս իշխանական աստեղու
Հետ ասեղնէլ ներքին կարգ։ Այս գախնանա
տուտ իրեն կնս, թեան Դաւիթ Բազրատուն
այ քայլը, Այսա Սաւակեանի գտաւոր։ Այս
տմուսնութենէն ձեւն ժէկ աղբիկը տուտ
տպա Կարպիթ Բազրատունիներէն՝ Բազրա-
րատին, ինչպէս կը գկայէ Վարդան (79),
հե տմուսնացեալ (Միջոտ) ընդ թեան Դաւ-
թի՝ ձեանի երկուս որդիս՝ զԱյոս եւ զՇա-
պուհ։ Որպէ քայլն տուտ յամուսնութիւն
Բազարատայ որդւոյ Այոսի Կիւրապապաթիս,
ուստի տթերորդ ազգականութեան գծի
գրայ։

851ին Բուսեի որդի Այուսեթի կուտ-
նուարեց եւ Մամարա ազաթեկեց զԲազարա-
թիւանայ իշխանն եւ Տարունի տէրը, իրեն
Հեա Կաւ, զգտմենայն ազգատունն Կարա թ
տունը Բազրատունեայն եւ Արծրունեայ
տէրը Այոս, Բազարատի յեաորդին (Թուրմ.
1181)։

855ին Բազարատի ըախտին ըախաակից

ևչաւ նաեւ չափք Սմբատ սպարապետ
Հայոցն: Բուդայ գորավորն ուրիշ նախարարս
ներսւ չեա Սամաթա խաղապոսց նաեւ
գժմբաս (Թովմ. 191, Աս. 107), ուր եւ
փախնանկաւ չփախն Երխատար խաւառփա-
նութեանն (Ասոյթիկ, 130. Թովմ. Արծր.,
242):

Սմբատի սրդիներէն կը յիշուին՝ Աշոտ,
Շապուհ եւ Արաւ (Վարդան, 79. Թովմ.
Արծր., 218, 222): Ինձ կը թուի թէ ուղիղ
չէ Մարկուարտ, երբ յեղած Թովմատ Ար-
ծրանայ ժուի խաւերուն վրայ՝ Սմբատ
սպարապետի սրդիներու թուին ձէջ կը յիշէ
նաեւ Մուշեղ եւ Սմբատ Մոկաց իշխեցապ-
նէրսւ տնայեներք:

32. Աշոտ որդի Սմբատայ սպարապետի,
իշխանաց իշխան (855—885) եւ թագաւոր
Հայոց (886—890): Ասոյթիկ 108—110:

Աշոտի սրդիներն են՝ Սահակ, Շապուհ,
Սմբատ թագաւոր, Դանիթ, Սոփի, Մա-
րիամ (կրնն Վասակ Գաբուռի Ախեւեղ
տնայն), Ա. Ա. կրնն Գրիգոր Գեղեճիկի:

33. Շապուհ որդի Սմբատայ սպարա-
պետի: Մ. § 27:

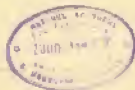
34. Արաւ որդի Սմբատայ, սպարապետ
Հայոց: Կը գրէ Թովմատ Արծրանի (Ըջ
221/222)՝ չրոյց իշխանաց իշխանն Աշոտ...
եւ Նրաման... տնն կորովի կըսար իւրոյ
Արաւայ Հայոց սպարապետի, զտուի պիղա-
կազմ պատարաստութեամբ: Կը յիշէ գինքը

Դանե Քառյօթի (ՎՃ 110)․ շխե ժամուկն Ռբառ ուղարկապետն Հայոց․․ Ելեալ ի Կապուտն աւան իմ արամբք ամենայն Հայոց գորուեկը խորտակել Դաւնապի բանակը յՍԷՆԱՐԱՆԻՅԱ։ Աւելի երկար կը պատմէ Ռբառի ժամին Ռաֆհաննէո Դրասխանապետացի․ զորոյց գտնեւ սպարապետութիւնն Հայոց աոյց Ռչում կըրոր իւրում Ռբառայ, որ կը այր բախնեմնայ և թիկնաւէա, սառչանմն և գեղեցիկ հասակաւ, կարմիր և աջակն ի պատերապմունա, որ և աջակցեալ իսկ կըրոր իւրում Ռչումայ, գամնեւեւան հնապանդկը ընդ ընդ Դաւնապետութեան, ի բազում կողմունա բազում անդամ արաթիւն ցուցեալ և հոշակաւոր և հոշակաւ ի մէջ բազմաց երեւեալ։ (ՎՃ 115)։ Ռչումի ժաշկն ետքը Ռբառ շխեքն գթապարաթիւնն հնաքէր Դաւնանէ։ (անդ, 111)։ և այլ պատմաւորաւ բախում անեցաւ կըրորորդւոյն Ռմբառի հետ․ բայց ի վերջոյ ստիւ պատեցաւ անդի տայ (անդ, 115—117)։

Ռբառ ուղարկապետի հրամանաւ թարգմանուած է Դանեա Քառթոյ Մեկնութիւնն Ռաֆհաննէո Աւետարանին։ Այս ժամին պիտի խաթմ տունեմքն յապետմոյ¹¹⁾։

¹¹⁾ Այս աղբիւրը արդէ գտնուի և պարտն յանձնուած էին, երբ յոս անաւ *Genealogia* Քառթի ՎՃ (Tasc. II. II—2, ՎՃ 10—77, Leipzig 1900) Ռառքչապետ Մարկուսայի մէկ երբ յապետն այս կիթիւ շաթ, *Die Genealogie der Bagradien und das Zerfall der Mar Ahas und Pa, Moses Xorenatsi*․ Վարդապետանայ

Հիմնական աշխատանքներու վրայ կը
ներկայացնենք վարչապետական առճամբաւոր
հետեւեալ որոշումներէ մէջ:



Ներդրումներէն եւ Մար Արարայ ու կեցն Մոգեւե-
նարեանայ մամուլներ: Գործողականքն բերմանը
չկրցայ այլ եւս եկաւի տանել Մարկարայի այս
շնորհներէ: Եւսեւ: Ամս-նի խմբագրութիւնը ծառ-
ցիւր է այս խղճումը իր խնդիրներէն իւրաքանչիւր
բաշխութեամբ ներկայացնել յեթեղանդներուն:

ՈՒՆԴԱԴԱՐԱՆԻ ՔԱՆՈՒՆԴԱՐԱՆ

—

| | | |
|-----------|----------|--|
| 13, 15 | 755 | 775 |
| 25, 10 | արարելքն | արարելքն |
| 31, 28-29 | | ան'ա այս ժամին (7 580)
ուր փութուած է ժըր
սեռութիւնը. |
| 37 8-10 | | Յովն. Կարճասանցի էր
Հմարտը այսպէս Զա-
րար խնամայի (7 1450):
1650ին էր խնայել իշխել
Սեւանի քանի տղաւոր
սեպեաւ. Կարճասանցի,
որ է ինքեւ էր պատրի-
ար այժմ Մեղքի տնի
(էջ 10. Թ. 1714. թղ.
1706-1): |
| 31 38 | | էջիւննի Տեւադրէր Թ
1723 (— Կար. 1681)
այժմ էր էջի 1702 Հա-
մարք: 1875ին ու-
սումնարիւնի էւ պոյն,
թղթաւումարնէր այժմ
Կար. էւ. բոս այժմ էր
գրուել Չեւեղի Պատ-
մութիւնը թղ. Եր-
171 ր. Եւպր' 172 ր—
218 ր. Պատմութիւն
Վրաց' 210—210 ր. Պատ-
միւն Երեւն' թղ. Եր
(— 3 ր. 1—1) տղիւնը
Վնաիւն ու սեպիւն — իւն |

